भूमिका ।

सहृदय बंधुगण । आज मैं आप के करकमलोंमें यह तीसचौबीसीपूजा पाठ उपस्थित करता हूं। इस ग्रंथ के रचयिता जैनसमाज के सुपरिचित काशी वासी कविवर वृंदावनदासजी हैं । जिनके रचित वृंदावनविलास, वर्तमान चौबीसी पाठ आदि अनेक ग्रंथ प्रचलित हैं इनका जीवनचरित "जैनग्रंथ रत्नाकरकार्यालय मुम्बई" द्वारा मुद्रित वृंदावनविलाश में छप चुका है इसलिये इस संक्षिप्त भूमिका में फिर से इनका जीवन चरित देना उचित नहीं समझा। इसमें लेशमात्र भी संदेह नहीं कि जो कार्य लोकहित की दृष्टि से किया जाता है उस में अधिक सफलता प्राप्त हुये विना नहीं रहती। इससे कार्यकर्ता का अविनाशी यश तो संसार मे फैलता ही है पर लोकोपकार भी अपार होता है। जैन साहित्य की रचना भी लोकोपकार जानकर ही हुई है । अमृतचंद सूरिने पंचाध्यायी के प्रारंभ में बहुत ही ठीक कहा है—

अत्रान्तरङ्गहेतुर्यद्यपि भाव. कवेर्विशुद्धतर. ।
हेतोस्तथापि हेतु साध्वी सर्वोपकारिणी बुद्धिः ॥

अर्थात् यद्यपि कवि (ग्रंथकार) के विशुद्धतर भाव ही किसी ग्रंथ की रचना के लिये प्रधान कारण हैं तो भी संपूर्ण प्राणियों के लिये हितकर विचार ग्रंथकार के परिणामों को अत्यत विशुद्ध बनाने में कारण हैं,अर्थात परोपकार करने वाली बुद्धि ही परिणाम सबंधी विशुद्धी की जननी है " लोकोपकार से प्रेरित होकर ही हमारे पूज्यपाद प्रात. स्मरणीय ऋपि महर्पियों ने और प्रौढ़ प्रतिभाशाली कवियों ने जैन साहित्य को सर्वाङ्गसुन्दर बनाया, पर दु'ख का विपय है कि हमारे उन आचार्य्यों की कृतिआ का जितना आदर और प्रचार होना चाहिये था, जैन समाजकी असावधानता और अदूरदर्शिता से उतना नहीं हुआ,हमारा बड़ा भारी संस्कृत साहित्य हमारे देखते २ नष्टप्राय,तथा लुप्तप्राय हो गया और होता चला जाता है और आगे भी यदि जिन वाणी माता के पुत्र इस ओर पूर्णतया लक्ष न देंगे तो एक दिन वह उपस्थित होगा जबकि उसका नामो-निशान भी सुनने में न आवेगा। पर खुसी की बात है कि कुछ दिन से समाज का ध्यान ग्रथ प्रकाशन की ओर भी आकर्पित हुआ है, दो एक संस्था भी इस ओर अग्रसर हुई हैं और कितने ही कार्यालयों ने भी इस ओर दृष्टि डाली है हम इन सस्था और कार्यालयों की स्थायी सफलता के अभिलापी है।

जो ग्रथ आज आप के सामने है वह एक पुजा पाठ है और छंदोबद्ध है तथा हिन्दी भापा में है। कुछ लोग भाषा के ग्रंथों को अनादर की दृष्टि से देखते हैं, पर हमारी समझ में उनके विचार भ्रममूलक ही कहना चाहिये। क्योंकि-

" भाव अनोखे चाहिये भाषा कोऊ होय "

वास्तव में तो कविता का महत्व कोई भाषा पर निर्भर नहीं है बल्कि भाव पर ही अधिक निर्भर है भाषा की रचना अच्छी होने पर भी, यदि उसमें उत्तम भाव नहीं है तो वह अनुपादेय होती है पर भावपूर्ण रचना किसी भाषा में क्यों न हो सहृदय पाठकों के लिये अवश्य ही वह रोचक होती है। इस ग्रंथ के विषय में भी यही बात युक्तियुक्त है, इसकी कविता ललित और सरस है। इस में शब्दों की सुंदरता के साथ २ भाव संकलन का समावेश कविता की सजीवता का परिचायक है।

इस ग्रंथ में जीवादितत्वों तथा मोक्षमार्ग का मुख्यतया विचार नहीं किया गया है पर ग्रथकारने इस ग्रंथ में भक्तिमार्ग, और उपासनामार्ग तथा अर्चना फल को सचित्र अंकित कर दिया है। आप इस ग्रंथ के किसी छंद को पढ जाइये आप के परिणामों में अवश्य ही एक अनिर्वचनीय फरक हो जायगा।

" देव पूजा " गृहस्थों के छह आवश्यक कर्मों में से प्रथम कर्तव्य है पर समय के परिवर्तन से दूसरे २ कर्तव्यों की तरह हमारा नित्य नैमित्तिक क्रिया-काण्ड भी अस्त प्राय हो गया है। यह बात हमारे लिये कितनी लज्जाजनक है कि जिन जिनेन्द्र भगवान की पूजा के लिये अतुलविभूतियुक्त देवेन्द्र भी हमेशह उत्सुक रहते हैं उन्हीं जिनेन्द्र भगवान की पूजा और प्रक्षाल करने के लिये

पुजारियों को रखना पड़ता है। इससे बढ़कर हमारी शिथिलता का क्या उदाहरण हो सक्ता है।

नित्य नियमादि पुजा पाठ तो सब जगह मिलते हैं और वे मुद्रित भी हो चुके हैं पर ऐसे २ पूजा पाठ प्राय, सब जगह नहीं पाये जाते हैं इसलिये इनके प्राप्त करने में बड़ी दिक्कते उठानी पड़ती है इन्हीं सब बातों को सोचकर भाई दुलीचंदजी ने इसे मुद्रित कराकर इसकी आवश्यकता की पूर्ति की। ग्रंथ का संपादन मैंने भरसक सावधानता पूर्वक किया है, इसके संबंध में मे इतना और कह देना आवश्यक समझता हूं कि "इसका संपादन उसी पुस्तक पर से किया गया है जिसे कविवर ने स्वयं अपने हाथ से लिखी थी"। तो भी इस में प्रमादवश या दृष्टिदोपसे कोई दोप रह गया हो तो विज्ञ पाठक मुझे क्षमा करेंगे। क्योंकि—

गच्छतस्स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः
हसन्ति दुर्जनास्तत्र क्षमां दधति सज्जना'।

३१-१-१७
बनारस

जैनसमाज का दास—
मुन्नालाल जैन
मालथौन [सागर]



नम सिद्धेभ्य·

काशी निवासी कविवर वृंदावनदासजी कृत–

तीसचौबीसी पूजा ।



प्रथम मंगलाचरन ।

दोहा–सिद्धसदन सुखददन जिन, मदनकदन अभिराम ।
विघ्नहरन मंगलकरन, तुम पद सदा प्रणाम ॥१॥
गत आगत वर्तत सकल, तीर्थंकर जगदीश ।
भरतैरावत पचं गिरि, नमों सातसै बीस ॥२॥

अथ मूलश्लोक अनुसार मंगलम् ।

दोहा-भवभयतें भयभीत है, शरणगही प्रभु आय ।
उदाशीन हो भोगतें, यह लखि परसौं पाय ॥३॥

अथ नामावलिस्तोत्र लिख्यते ।

(छद तामरस तथा चण्डी तथा नयमालिनी मात्रा १६) यथा—

तीर्थंकर जिनधीश नमस्ते । जिन षिभु शुद्ध मतीश नमस्ते ।
अकलंको महबोध नमस्ते । जिंष्णु केवली शोध नमस्ते ॥१॥
महानाद महनन्द नमस्ते । विदु उत्तम चिदुनद नमस्ते ।
स्वज्ञ स्वयं प्रभु विष्णु नमस्ते । विद्या ब्रह्म महिष्णु नमस्ते ॥२॥
कामोमेश अनत नमस्ते । शुभ शकर सुगतत नमस्ते ।
भीम अर्द्धनारीश नमस्ते । अंतकजीति धनीश नमस्ते ॥३॥
कर्त्ता हर्त्ता कर्म नमस्ते । स्वय ज्योति जिन पर्म नमस्ते ।
केवलदृग केवली नमस्ते । ईशभूत वच्छली नमस्ते ॥४॥
मृत्युंजय मुखचार नमस्ते । वेदज्ञानि श्रुतिपार नमस्ते ।

वेदकार शुचिधीश ननस्ते । हरि बृहस्पति सदीश नमस्ते ॥५॥
चन्द्रकलाधर ज्येष्ठ नमस्ते । ईशानो वृषभेष्ठ नमस्ते ।
द्वादशात्म श्रीमान नमस्ते । विधुःसुधी जिनधान नमस्ते ।
जै कोविद श्रीकंठ नमस्ते । आतमभू निरगाथ नमस्ते ।
रज्यभूव श्रेष्ठाय नमस्ते । जै जै जै जैदाय नमस्ते ॥७॥
कमलाशन ध्येभूव नमस्ते । गीतभित्त माधूव नमस्ते ॥
स्वामिबास वसुलांछ नमस्ते। सुग निरंजन निःकांछ नमस्ते ॥
निरअम्बर निररेक नमस्ते। निकल त्रिमल शांतिक नमस्ते ।
भववर्जित सुमतीय नमस्ते । चेतन चिद्रूपीय नमस्ते ॥
महउत्तमचेता सु नमस्ते । विद्मान्यो नेता सु नमस्
निगुण अकरता धीर नमस्ते । मत्सर मनमथचीर

---

१ सुख देने वाले । २ भूतकाल सम्बन्धी । ३ भ
कालके । ५ महाबोध । ६ कर्मोका जीतने वाला ।
जीतने वाली । ९ वात्सल्य युक्त ।

शोद्धिभर्त वृषकर्तृ नमस्ते । धर्मचक्रि वृषभर्तृ नमस्ते ।
बीतराग निरहार नमस्ते । मूलमागकर्तार नमस्ते ॥११॥
त्रिधाज्ञान सिद्धांत नमस्ते । शुभयः स्याद्वादांत नमस्ते ।
विधिवेत्ता वादीश नमस्ते । द्वैताद्वैत मुनीश नमस्ते ॥१२॥
सुनयोवर बोधक्ष नमस्ते । दो प्रमाण नय वक्ष नमस्ते ।
ऐकांतिक मतटार नमस्ते । सकल पाप परिहार नमस्ते ॥१३॥
घत्ता–जो नर तिरकालं नामविशालं यह शत आठ सुपाठ करै ।
सो जिन पदसारं लहि अविकारं शुक्त भुक्त जुत मुक्त वरै ॥१४॥

इति पठित्वा प्रणामं कृत्वा मंडलायामे मध्यभागे स्थापितकमलास्योपरि-पुष्पाञ्जलिं क्षपेत्।

अथ प्रथमजम्बूद्वीपे पूर्वापरविदेहे सीमंधर-जुगमंधर-बाहु-सुबाहु-चतुर्विंद्यमान-तीर्थंकरपूजा प्रारभ्यते ।

दोहा—सुर सुरपति पूजत सदा, विहरमान जिनचार ।
आदि मेरु सुविदेह में, थापौं भव भय टार ॥१॥

ॐ ह्रीं सीमंधरादिचत्वारः जिनाः अत्रावतरत अवतरत संवौषट् ।
ॐ ह्रीं सीमंधरादिचत्वारः जिनाः अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः ।
ॐ ह्रीं सीमंधरादिचत्वारः जिनाः अत्र मम सन्निहिताः भवत भवत वषट् ।

तोटक छंद—

जल उज्जल निर्मल गंध मई । प्रभु अग्र समग्र सुधार दई ॥
गिरिआदिय विद्य विदेहनिमें । जजिहौं जिनचारिसु गेहनिमें ॥१॥

ॐ ह्रीं सीमंधर-युगमंधर-बाहु-सुबाहु-तीर्थंकरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल निर्वपामि [इति स्वाहा] ॥ १ ॥

हरिचंदन केदलिनंदनलै । पद पूजनतैं दुख दंद टलै ॥गिरि०॥२॥

ॐ ह्रीं सीमंधर-युगमंधर-बाहु-सुबाहु-तीर्थंकरेभ्यो भवतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामि ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीयुगमंधराय अर्घ निर्वपामि ॥ २ ॥

सीतोदा दच्छिन गिरि आद । बाहुधरैं मृगलच्छन पाद ।
बिजया मातु पिता सुग्रीव । जजौं सुसीमा नगर अतीव ॥

ॐ ह्रीं श्रीबाहुजिनाय अर्घ निर्वपामि ॥ ३ ॥

सीतोदा उत्तर गिरि आद । श्री सुबाहु कपिलच्छ अवाद ।
निशिढिलराय सुनंदामात । जजौं अजोध्या जगविख्यात ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुबाहुस्वामिने अर्घ निर्वपामि ॥ ४ ॥

पूरन अर्घ बनायो रुष्ट । जजौं चरन चहुंजिनगुन पुष्ट ।
मिटै विघ्न दुख दारिद दुष्ट । प्रगटै पर्म शर्म शिव सुष्ट ॥

ॐ ह्रीं सीमधर-युगमंधर-बाहु-सुबाहु-तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामि ॥५॥

अथ जयमाला—

छंदरथोद्धता (वर्ण ११)

तीरथेश गुणधेश देवही । इंद चंद गन इंद सेवही ॥

वर्त्तमान सुविदेह वासकी । आदिमेरु जयमाल तासकी ॥१॥

छंद पद्धडी (लघ्वत मात्रा (१६)

जय श्रीमंधर जुगमंधरेश । जय बाहु सुबाहू तीरथेश ॥
गिरि प्रथम पुव्व पच्छिम बिदेह । ता माहि विराजतु हैं अवेह॥२॥
धनु पंच शतक तन उच्च सुच्च । थिति कोटि पुव्वकी है समुच्च ।
है केवलज्ञान विराजमान । जुतसमवशरन रचना महान ॥३॥
सुरनर खग पूजत चरन आन । गुन गान करत बहुभगत ठान ।
जहँ बानी खिरत त्रिकाल सार । भवि सुनत लहत आनँद अपार॥४॥
जहँ जिन गुनमें मुनि होय मग्न । शिवसम्पति लेकरि कर्मभग्न
शिव नगर डगर नित चलत जत्र । हैं सकल शलाके पुरुष तत्र ॥५॥
उतकृष्ट काल चौथो सदीव । जहँ वरततु है आनँद अतीव ।
प्रभु करत विहार जहाँ पुनीत । जुत समवशरन चवघाति जीत ॥६॥
गनधर आदिक चवसंघजुक्त । सो धन्यक्षेत्र वैदेह शुक्त ।
मैं जाचतु हौं तुमसों दयाल । भव सागरतें मोकौं निकाल ॥७॥

मति ढीलकरो करुनानिधान । यह अरज हमारी सुनहु कान ।
संसार कष्ट चकचूर चूर । आनंद अनूपम पूर पूर ॥८॥

घत्ताछद–

जय श्री जिननायक, गुनगनछायक, विघ्नविनायक, हौ सबही ।
"वृंदावन" ध्यावत, नितगुनगावत, वांछितपावतु है अबही ॥

ॐ ह्रीं सीमधर-युगमधर-बाहु-सुबाहु-तीर्थंकरेभ्यो महार्घं निर्वपामि ।

दोहा–प्रथम सुदर्शन मेरुके, विहरमान जिनचार ।
जो पूजै सो सकल सुख, लहै अनेक प्रकार ॥

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिंक्षिपेत्)

इति प्रथममेरु पूजा समाप्ता ॥१॥

अथ जम्बूदीपभरतक्षेत्रस्थवर्त्तमानचतुर्विंशति । पूजा प्रारभ्यते ।

छंद लोलतरग (वर्ण ११)

श्रीवृपभादि जिनेसुर सारं । चौविस राजतु हैं अविकारं ।
थापतु हौं पदपूजन हेता । दुःख विनाशि सबै सुख देता ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृपभादिवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनसमूह अत्रावतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्रीवृपभादिवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनसमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं श्रीवृपभादिवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनसमूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा ।

अष्टक ।

छंद लोलतरंग-(वर्ण ११)

नीरग हीर भरी हिमझारी । धार करों त्रयताप निवारी ।
आदि गिरिंद जिनिंद जितवा । वर्त्तत भर्त्त करों तसु सेवा ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीवृपभादिवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जल निर्वपामि ॥ १ ॥

चन्दन केशर कदली नंदा लैवासिपूजिनशै दुखदंदा ॥आदि०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चन्दनं निर्वपामि ॥ २ ॥

तंदुल मंदुल[1] पुंजधरीजै । सुंदर सार अखै सुख लीजै॥आदि०॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अक्षतान् निर्वपामि ॥ ३ ॥

केतुकि आदि प्रसून[2] चढ़ावो । शूलनिमूल सुशील बढ़ावों आ०॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्प निर्वपामि ॥ ४ ॥

नेवज सुंदर अर्पण कीजे । हे प्रभु मोहि निराकुल[3] दीजे ।आदि०।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिचतुर्विंशति-जिनेभ्यो नैवेद्य निर्वपामि ॥ ५ ॥

दीप उदोत करूं तुम आगै ।नाशिविमोह सुबोध सु जागै।आदि०।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीप निर्वपामि ॥ ६ ॥

धूप हुताशन माहिं उखेवों । कर्मजराय निजातम वेवों।आदि०॥७॥

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥ ७ ॥

---

१ उज्वल । २ फूल । ३ जिसमें आकुलता नहीं ऐसा मोक्ष ।

भेटधरौं फल प्रासुकलाई। द्यो शिवनग्रतनी ठकुराई ॥आदि० ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥ ८ ॥

अर्घ बनायचढ़ावहुं स्वामी। वेगकरो हमकों शिवगामी ।आदि०।९।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अर्घ निर्वपामि ॥ ९ ॥

प्रत्येक अर्घ ।

रूपचौपाई ॥ मात्रा १६ ॥

नाभिनंद वृषलच्छन धारी । कनक वरन कौशल अवतारी ।
पांच शतक धनु तुंगशरीरा । जजौं भरत वरतत यह धीरा ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभाय अर्घं निर्वपामि ॥ १ ॥

विजय मातु सुत सुवरन वरना । तनुधनु साढ़चार शतधरना ।
वंश इक्ष्वाकु अजित गज चरना । जजौं भरत यह आनंद भरना।२।

ॐ ह्रीं श्री अजिताय अर्घं निर्वपामि ॥ २ ॥

श्रावस्ती दिढ़रथके नंदा । चार शतक धनु कनक अमंदा ।

संभव वाजि चिहन पग धरना । जजौं भरत यह आनंद भरना ३

ॐ ह्रीं श्री संभवाय अर्घं निर्वपामि ॥ ३ ॥

सिद्धारथ सुत कौशलधनी । कपिलञ्छन अभिनंदन तनी ॥
वंशीक्ष्वाकु कनक तनु वरना । जजौं भरत यह भवभय हरना ॥४॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदनाय अर्घं निर्वपामि ॥ ४ ॥

वंश इक्ष्वाकु मेघरथनंदन । कोकाचिहन तन कनक अमंदन ।
सुमति तीनशत तनुधनु धरना । जजों भरतयह त्रिभुवन शरना॥५

ॐ ह्री श्री सुमतिनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥ ५ ॥

धारन पिता सुक्षीमा माता । कौशांबी छवि पद्म विख्याता ।
धनुषतुग ढाईसौ वरना । जजों भरत यह भवसरतरना ॥६॥

ॐ ह्री श्री पद्मप्रभाय अर्घं निर्वपामि ॥ ६ ॥

---

१ अनुभवन करों, जानो । २ जीव जन्तु राहित-शुद्ध । ३ अजोध्या ।

सुपरतिष्ठ 'पृथिवीदे' माय । हरित वरन दो सौ धनुकाय ॥
जिनसुपास काशी अवतरना । जजौं भरत यह अघअरि हरना ।७।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथाय अर्घं ॥७॥

मातु लछमना पितु महसेन । चंद चंद तन दुति सुखदेन ॥
डेढ़ शतक धनु तनु शशि चरना । जजौं भरत यह भवतप हरना ८

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥ ८ ॥

नृप सुग्रीव रमासुत सुन्दर । कुंदवरन तन विनत पुरंदर ॥
पुष्पदंत तनु धनु शत वरना । जजौं भरत यह आनंद भरना ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्ताय अर्घं ॥ ९ ॥

राजभद्रपुर दिढरथ नंदन । नब्बेचाप तन दुति अभिनंदन ॥
शीतल चिन्ह कलप तरु चरना । जजौं भरत कह दारिद दरना १०

ॐ ह्रीं श्रीशीतलाय अर्घं ॥ १० ॥

विष्णुतात विष्णुश्रीमाता । तनकन चाप असी विख्याता ॥
श्रेय सिंघपुर पातक हरना । जजौं भरत यह विपत विदरना ॥११॥
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथाय अर्घं ॥११॥

चंपापुर वसुपूज नरेसुर । बासुपूज जिन जजत सुरेसुर ॥
सत्तर धनुतनु मानिक वरना । जजौं भरत यह आतम तरना॥१२॥
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यनाथाय अर्घं ॥१२॥

नगर कंपिला सौर्य नरेश । कनक काय धनु साठ धरेश ॥
विमल बराह चिहन पगधरना । जजौं भरत यह आनँद भरना ।१३।
ॐ ह्रीं श्रीविमलाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

सिंहसेन नृप सुव्रत माय । नगर अजोध्या सुवरन काय ॥
धनु पँचास अनँत सुख धरना । जजौं भरत यह भवदधि तरना।१४।
ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

भानुपिता सुप्रभदे मात । रतनपुरी जांबूनद गात ॥
धनु पैंताल धरम तनु धरना । जजों भरत यह तारन तरना ॥१५॥
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

विश्वसेन ऐरादे मात । जनमें शांति नागपुर ख्यात ।
चालिस धनु तन त्रय पद धरना । जजों भरत यह आनँद भरना ॥
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

शूरसेन सुत मित्रा माय । छाग चिन्ह धनु पैंतिस काय ।
कुंथ हस्तनापुर कनवरना । जजों भरत यह त्रिभुवन शरना ॥१७॥
ॐ ह्रीं श्री कुंथनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

तात सुदरसन प्रभवति माता । हस्तनाग कुरुवंश त्रिख्याता ।
तीसचाप तन अर आरिहरना । जजों भरत यह आनँद भरना ॥१८॥

१ सोना । २ हस्तनागपुर ।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

पद्मावति तिय कुंभ नरेसुर । मिथुलेसुर श्रीमल्लिजिनेसुर ।
धनुपचीस तन हाटक वरना । जजौं भरत यह मनमल्लहरना ॥१९॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथाय अर्घं निर्वपामि १९॥

राजग्रह वप्रासुत सुन्दर । श्रीमुनिसुव्रत धरम धुरंधर ।
वीसचाप कच्छप पग धरना । जजौं भरत यह आनँद भरना ॥२०॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

मिथुल नगर विजयारथ नंदा । नामि सुहेम तन आनँद कंदा ।
कमल चिह्न पंद्रह धनुवरना।जजौं भरत यह आनँद भरना॥२१॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

समुदविजय शिवदेवी नंदन । नेमि नीलतन शंख सुछंदन ॥
तन धनु दश द्वारावति वरना । जजौं भरत यह तारन तरना ॥२२॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

विश्वसेन वामादे जननी। तनुदुति हरित हाथ नव गननी॥
काशी पार्श्वनाथ अवतरना। जजौं भगत यह आनँद भरना॥२३॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

सिद्धारथ त्रिशलादे माता। कुंडनग्र हरि चिहन विख्याता॥
सातहाथ तन सनमति धरना। जजौं भगत यह तारन तरना॥२४॥

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमानाय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

दोहा—वृषभादिक चौवीस जिन, वरतमान यहि थान।
पूजौं पूरन अरघसौं, देत विमल कल्यान॥१॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरान्तेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामि।

जयमाला।

दोहा—गुन अनंत भगवंत तुव, को करि सकै बखान।

---

१ तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव। २ हस्तनागपुर। ३–४ सोना।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिन अत्रावतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिन अत्र मम सन्निहितभव भव वषट् स्वाहा ॥

अष्टक ।

मोतीदाम छंद–

लिया भर झारिय निर्मल नीर । करौं त्रयधार हरो भवपीर ॥
सुदर्शन भर्त्ततनें गत एव । जजौं नित चौविस श्रीजिनदेव ॥१॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो, जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामि ।

सुगंध घँसाय पवित्र अपार । चढ़ाय हरौं भवताप विकार ॥
सुदर्शन भर्त्ततने गत एव । जजौं नित चौविस श्रीजिनदेव ॥२॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनभ्यो सुगन्धं ॥२॥

अखंडित तंदुल पुंज धरंत। सबै दुख दरिद चूरिकरंत ॥
सुदर्शन भर्त्ततने गत एव। जजौं नित चौविस श्रीजिनदेव॥३॥
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अक्षत ॥३॥

प्रसून सुरद्रुम आदिअनेक। चढ़ाय हरों सरमूल तितेक ॥
सुदर्शन भर्त्ततने गत एव। जजौं नित चौविस श्रीजिनदेव॥४॥
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो पुष्पं ॥४॥

छहोंरस पूरित नेवज लाय। चढ़ावत रोग छुधा नाशिजाय ॥
सुदर्शन भर्त्ततने गत एव। जजौं नित चौविस श्रीजिनदेव॥५॥
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्यं ॥५॥

प्रकाशित दीप धरों ढिग लेय। प्रभूमोहि ज्ञानसु केवल देय ॥
सुदर्शन भर्त्ततने गत एव। जजौं नित चौविस श्रीजिनदेव ॥६॥
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं ॥६॥

सुखेवत धूप सुगंधित पर्म । ततच्छन दुष्ट जरैं वसुकर्म ॥
सुदर्शन भर्त्ततने गत एव । जजौं नित चौविस श्रीजिनदेव ॥७॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं ॥७॥

अदोषितलेफलसुंदरएव । धरोढिगद्यौशिवहे जिनदेवलं सुदर्शन०॥

ॐ ह्रीं सुर्दशनमेरुभरताती तचतुर्विंशतिजिनेभ्यो फलं ॥८॥

चढ़ावतअर्घप्रमोदसमेत । अनर्घ पदस्थततच्छनदेत सुदर्शन०॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभरतानीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अर्घं ॥९॥

अथ प्रत्येकार्घ ।

पाईता छंद-(मात्रा १४)

निरवान जिनेसुर ध्यावों । निरवान सुथानक पावों ॥
यह जंबूभारत सुंदर । नितंतीत जजंति पुरंदर ॥

ॐ ह्रीं श्रीनिर्वाणाय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

भवसागर तारन हारे । जिन सागर पर्म उदारे । यह० ॥

ॐ ह्रीं श्रीसागराय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

नित साधु सुध्यावतजाकों। जिन साधु नमों नित ताकों। यह

ॐ ह्रीं श्री महासाधवे अर्घं निर्वपामि ॥३॥

मल वर्जित श्री विमलेशा। नित दायक सौख्य असेशा ।यह० ॥

ॐ ह्रीं श्री विमलप्रभाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

शुद्धाभ विशुद्ध सरूपी । मति शुद्ध करैं शिव भूपी । यह० ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धाभाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

जुग श्रीधर श्रीधर स्वामी । भवि श्रीकरतार नमामी ।यह०॥

ॐ ह्रीं श्रीधराय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

सब जीव मित्रता दाता । जिन दत्तनाथ विख्याता । यह०॥

ॐ ह्रीं श्रीदत्तनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

---

१ अतीत-भूतकाल सम्बन्धी ।

अमलप्रभ नाम जिनेशा । मल नाश कियोजुअसेशा ।यह०॥
ॐ ह्रीं श्री अमलप्रभाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

जग जंतु अनंत उधारे । प्रभु उद्धरनाथ हमारे । यह० ॥
ॐ ह्रीं श्री उद्धराय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

कर्मेंधन भस्म करैया । जिन अग्निनाथ सुखदैया । यह०॥
ॐ ह्रीं श्री अग्निनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

वरछायक संजम दाता ! जिन संजमनाथ विख्याता । यह० ॥
ॐ ह्रीं श्री संयमाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

सुर पुष्पांजलि पद देवैं । जिन पुष्पांजलिकों सेवैं॥ यह० ॥
ॐ ह्रीं पुष्पाजलिने अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

नाना गुन गन भंडारी । शिव गुणा अधिपति भौतारी । यह० ॥
ॐ ह्रीं शिवगुणाधिपाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

अरि चूरे जुत उतसाहा । शिवधाम लहे उतसाहा । यह०॥

ॐ ह्रीं उत्साहाय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

जिन ज्ञान विज्ञान बताई । जिन ज्ञाननेत्र सुखदाई । यह० ॥

ॐ ह्रीं ज्ञाननेत्रायार्घं निर्वपामि ॥१५॥

जुत परमैश्वर्य विराजे । परमेसुर श्री जिनराजे । यह० ॥

ॐ ह्रीं श्री परमेश्वराय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

विमलेसुरकों उर ध्यावों । गुन निर्मल आतम पावों । यह० ॥

ॐ ह्रीं श्री विमलेश्वराय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

गुन सकल जथारथ धारी । जय श्री जथार्थ भव तारी । यह०॥

ॐ ह्रीं श्री यथार्थाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

जसरास लोकमँह छायो । सुजशोधर देव कहायो । यह० ॥

ॐ ह्रीं श्री यशोधराय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

कलिकर्म कलंकनि चूरे। जिनकृष्णा स्वच्छगुनपूरे। यह० ॥

ॐ ह्री श्रीकृष्णाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

वर केवल सन्मति दाता। जिन ज्ञानमती जगताता। यह० ॥

ॐ ह्रीं श्रीमतिज्ञानाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

सुविशुद्धमती जिननामी। सुविशुद्धि दायक स्वामी। यह० ॥

ॐ ह्री श्रीविशुद्धमतये अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

श्री भद्रनाम जिन जनों। गुनसार[1]थीक उर आनों। यह० ॥

ॐ ह्रीं श्री भद्राय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

शुभ शांति करैं जगमाहीं। जिन शांति सुशान्ति दाहीं। यह०॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

सोरठा—मेरु सुदरशन सार, भरततीत चौबीस जिन।
जजौं भरत भरतार, पूरन आनंद दीजिये ॥

१ चारों प्रकार के देव।

ॐ ह्री श्री भरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामि ।

जयमाला ।

लोलतरंग छंद—

श्रीमततीत जिनेसुर देवा । सेवतु हैं सुर चारिउ भेवा ॥
जम्बुव भारततीत विशाला । तासतनी जयमाल रसाला ॥१॥

तोटक छन्द—

निरवानकरं निरवान जिनं । सुख सागर सागर नाम गिनं ॥
क्ति साधुनतं जिन साधुमहा । विमलप्रभ भाव पुनीत लहा ॥२॥
जिन शुद्धअभा भवदाघ हर । जिन श्रीधर नित्य सुश्रीयकर ॥
जिनदत्त सदा शुभ कर्म करैं । अमल प्रभ कर्म कलक हरैं ॥३॥
जगजंतु उधारन उद्धरनं । अरि इंधन अग्नि जिनं शरन ॥
जिन संजम संजम दायक हैं । पुहपांजलिजी शिवलायक हैं ॥४॥
शिवराज गणाधिप सुंदर हैं । उतसाह नमत पुरंदर हैं ॥
जिन ज्ञान सुनैन अमंदित हैं । परमेसुर सत सुर बंदित हैं ॥५॥

। चंदन केदलीनंदन सीर । घॅासिकर जजत हरत भवपीर ॥
हरो भव पीर । जै जै जिनवर गुन गंभीर ॥ जम्बूभरतभ० ।
ॐ ह्रीं जम्बुभरतभावीजिनेभ्यश्चंदनं निर्वपामि ॥२॥

शुक्त मुक्त जनु तंदुल हीर । पुंज धरत दारिद दुख चीर ॥
हरो भवपीर । जैजै जिनवर गुन गंभीर ॥ जम्बूभरतभ० ।
ॐ ह्रीं जम्बूभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अक्षतान् निर्वपामि ॥३॥

सुमन सुमन सम सुमन धेरत । समर सूल निरमूलन हेत ॥
हरो भवपीर । जैजै जिनवर गुन गंभी॥ जम्बूभरतभ०
ॐ ह्रीं जम्बूभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥४॥

नव्य गव्य रसरंजित सार । जजत चरन प्रभु आकुलटार ।
हरो भवपीर । जैजै जिनवर गुन गंभीर ॥ जम्बूभरतभ० ।
ॐ ह्रीं जम्बूभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ॥५॥

दीपक जोत उदोत करंत । आरति करत मोहतम अंत ॥
हरो भव पीर । जैजै जिनवर गुन गंभीर ॥ जम्बूभरतभ० ।

ॐ ह्रीं जम्बूभरतभावीजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

खेवों धूप उड़े यह धूम । करत भरम जरि उड़े सुधूम ॥
हरो भवपीर । जैजै जिनवर गुन गंभीर ॥ जम्बूभरतभ० ।

ॐ ह्रीं जम्बूभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

प्राशुक फल कल वर्जित लाय । हरत विघन जिनचरन चढ़ाय ॥
हरो भवपीर । जैजै जिनवर गुन गंभीर ॥ जम्बूभरतभ० ।

ॐ ह्रीं जम्बूभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो फलं निर्वपामि ॥८॥

परम पुनीत धरों ढिग अर्घ । वेग देहु पद मोहि अनर्घ ॥
हरो भवपीर । जैजै जिनवर गुन गंभीर ॥ जम्बूभरतभ० ।

ॐ ह्रीं जम्बूभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अर्घं निर्वपामि ॥८॥

प्रत्येक अर्घ।

मोतीदाम छंद (वर्ण १२)

समन्वित पद्म उभै परकार। महावर पद्म जिनेश्वर सार॥
अनागत जम्बुव भारत थान। जजों जिन भव्य सरोरुह भान॥
ॐ ह्रीं महापद्माय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

सबै सुर सेवत सूरजिनिंद। अतत्त्वच्छपातमकों दिनं इंद॥
अनागत जम्बुव भारत थान। जजों जिन भव्य सरोरुह भान॥
ॐ ह्रीं सूरदेवाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

प्रभा भुवि मंडित सुप्रभ देव। प्रबोधक भव्य भजो वसु भेव॥
अनागत जम्बुव भारत थान। जजों जिन भव्य सरोरुह भान॥
ॐ ह्रीं सुप्रभाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

---

१ अतत्त्वरूपी रात्रिके अंधकारका। २ सूर्य।

स्वयंप्रभ देव स्वयं मतिवंत । स्वयं सरवज्ञ स्वयं भगवंत ॥
अनागत जम्बुव भारत थान । जजों जिन भव्य सरोरुह भान ॥

ॐ स्वयंप्रभाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

छंद तोटक (प्रस्तार० ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ एवं वर्ण १२)

सरवायुध आयुध ज्ञान धरैं । अरि कर्म ततच्छन चूरि करैं ॥
यह जंबुव भारत आगत है । तिनकों जजतें मन पागत है ॥

ॐ ह्रीं सर्वायुधाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

जगदेव जगत्रय नायक हैं । त्रिजगद्गुरुजी सब लायक हैं ॥यह०

ॐ ह्रीं जगदेवाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

विसदोदय देव प्रनाम करों । विसदोदय दायक ध्यान धरों ॥यह०

ॐ ह्रीं उदयदेवाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

रविकोटि प्रभा जहँलाजतु है । सुप्रभा जिनको छवि छाजतु है ॥यह०

ॐ ह्रीं प्रभादेवाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

उदकेस जिनेश देयाकित हैं। सुमतेस महेश निशांकित हैं॥यह०

ॐ ह्रीं उदकाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

जिन प्रश्न सुकीरत ध्यान धरों। सब संशय भर्म प्रहारकरों॥यह०॥

ॐ ह्रीं प्रश्नकीर्तये अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

जसुकीरतसार जगत्त उदै। उदये वर कीरत नाम लहै॥यह०

ॐ ह्रीं उदयकीर्तये अर्घं निर्वपामि ॥११॥

जय वर्तत जास त्रिलोक विषें। जयवर्त जिनेश नमामि शिषें॥यह०

ॐ ह्रीं जयकीर्तये अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

छद रथोद्धता (प्रस्तार० SISIIISISIS वर्ण ११) यथा—

ज्ञान केवल प्रकाश के सही। पूर्ण बुद्धि भवितारि हैं यही॥

---

१ इस पूजा में ११ वें तीर्थंकर उदयकीर्ति है सोसंस्कृतपाठमें यह नाम है। इसके बदले में संस्कृत पाठमें १६ वें तीर्थंकर निर्मलजी अधिकार हैं।

पूजि हों सुजिन होनहार हैं। जंबु भारत विषैं उदार हैं ॥

ॐ ह्रीं पूर्णबुद्धाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

निःकषाय विषयादि तीत हैं। निःकषाय निरद्वंद भीत हैं ॥पूजिहों०

ॐ ह्रीं निःकषायाय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

कर्म भर्म मल छै अशेष हैं। सो जिनेश विमले सुभेस हैं ॥पूजिहों०

ॐ ह्रीं विमलप्रभाय अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

जासकौ अतुलहै प्रभावना। सो जिनंद बहुलेश ध्यावना ॥पूजिहों०

ॐ ह्रीं बहुलाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

है विचित्र त्रय गुप्त जास के। चित्रगुप्त नमि पादतासके ॥ पूजिहों०

ॐ चित्रगुप्ताय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

हैसमाधि सुखगुप्त सारजी। सो समाधि जिन गुप्त धारजी ॥पूजिहों०

ॐ ह्रीं समाधिगुप्ताय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

श्री स्वयंभुव प्रनाम मैं करों। तासके सुगुन दामही धरों ॥पूजि हों०

ॐ ह्रीं श्री स्वयंभुवे अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

जिनके कल्यानक माहि आय। सुर चतुर निकायक जजैं पाय ॥५॥
मैं वदतु हों मन वचन काय। पूजों पद आठो दरवलाय ॥
तुम भगत करों नाटक मचाय। द्रिम द्रिम द्रिम द्रिम मादल बजाय६
तुम तारन तरन हरन कलेश। जै जै जै जै जै जै जिनेश ॥
भव सकट दूर करो दयाल। "वृंदावन" वंदतु हैं त्रिकाल ॥७॥

घत्ताछद–

जै मेरु सुदरशन, आनँदवर्पन, भरत अनागत देववरा।
जिननाथ नमामिय, चित्तधरामिय, ज्यों शिवपामिय विघ्नहरा ॥

ॐ ह्रीं जबुभरतभावीजिनसमूहेभ्यो महार्घ निर्वपामि ॥

सोरठा–जो पूजै मनलाय, जंबूभरत भाविष्य जिन।
सो भवि सुरपुर पाय, अमल अचल शिवपुर लहै ॥१॥

इत्याशीर्वादः।

इति जंबूद्वीपभरतभावीचतुर्विंशतिजिनपूजा समाप्ता ॥३॥

अथ जंबूद्वीपैरावतवर्तमानचतुर्विंशति
जिन पूजा लिख्यते ।

वसंततिलका छंद-(वर्ण १४)

जंबू सुउत्तरविषें वरक्षेत्र छाजे । ऐरावतख्यतित वर्त्तत श्रीसमाजे ।
श्रीबालचन्द्र जिन आदि समस्त देवा ।
थापौं यहां त्रिविध नाथ करों सु सेवा ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपैरावते वर्तमानचतुर्विंशतिजिना अत्रावतरत अवतरत संवौषट् ।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपैरावते वर्तमानचतुर्विंशतिजिना अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठःठः ।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपैरावते वर्तमानचतुर्विंशतिजिना अत्र मम सन्निहिताःभवत भवत वषट्

अथाष्टक ।

नाराच छंद-(वर्ण २८)

सुजान्हवीय वारि हेमभ्कारिमें भरों सही ।
त्रिधार देत हों प्रभू हरो त्रिरोग सो गही ।

जजामि जंबू उत्तरे जिनेश वर्त्तमान जी ।
सुरेश औगनेश जासु धारत सुध्यानजी ॥
ॐ ह्री जंबूद्वीपैरावते वर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो जल निर्वपामि ॥१॥
कपूर देवतारु चंदनादि गंध पावने ।
चढ़ावते समस्त पाप तापकों नशावते । जजामि० ॥
ॐ ह्री जम्बूद्वीपैरावते वर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यश्चन्दनं निर्वपामि ॥२॥
अखड शाल थालमें उजाल जोतवंत हैं ।
धरंत पुंज कर्म कुंज भर्मको हरंत हैं । जजामि ॥
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपैरावते वर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो अक्षतान् निर्वपामि ॥३॥
सरोज केतुकी चमेली पुष्प भांति भांतिके ।
गूंथाय पूजियों सुदेव दाम पांति पांति के ॥ जजामि० ।
ॐ ह्री जम्बूद्वीपैरावते वर्त्तमानजिनेन्द्रेभ्यो पुष्प निर्वपामि ॥४॥

रथाल मोदकादि सद्यसार सुष्ट मिष्ट हैं।
निरोगता प्रकाश हेतु पूज सिष्ट इष्ट हैं ॥ जजामि० ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावते वर्त्तमानजिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्य निर्वपामि ॥५॥

अमोल दीपकों उदोत तास आरती करों ।
समस्त कर्म भर्म नाश ज्ञान भान विस्तरें। जजामि०।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावते वर्त्तमानजिनेन्द्रेभ्यो दीप निर्वपामि स्वाहा ॥६॥

दशांग धूप अग्नि माहि खेय हों हुलासों ।
सुधूम धूमके मनों नचै मचै सुवाससों ॥ जजामि०।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपैरावते वर्त्तमानजिनेन्द्रेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

सुपक्क और पुनीत आम्रकाम्रकादि ल्याइयो ।
चढ़ाय वीतराग मोक्ष थान हेतु पाइयो ॥ जजामि० ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावते वर्त्तमानजिनेन्द्रेभ्यो फलं निर्वपामि ॥८॥

जजामि जंबू उत्तरे जिनेश वर्त्तमान जी ।
सुरेश औगनेश जासु धारत सुध्यानजी ॥

ॐ ह्री जंबूद्वीपैरावते वर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो जल निर्वपामि ॥१॥

कपूर देवतारु चंदनादि गंध पावने ।
चढ़ावते समस्त पाप तापकों नशावते । जजामि० ॥

ॐ ह्री जंबूद्वीपैरावते वर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यश्चन्दनं निर्वपामि ॥२॥

अखड शाल थालमें उजाल जोतवंत हैं ।
धरंत पुंज कर्म कुंज भर्मको हरंत हैं । जजामि ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपैरावते वर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो अक्षतान् निर्वपामि ॥३॥

सरोज केतुकी चमेली पुष्प भांति भांतिके ।
गूँथाय पूजियो सुदेव दाम पांति पांति के ॥ जजामि० ।

ॐ ह्री जम्बूद्वीपैरावते वर्त्तमानजिनेन्द्रेभ्यो पुष्प निर्वपामि ॥४॥

रशाल मोदकादि सद्यसार सुष्ट मिष्ट हैं ।
निरोगता प्रकाश हेतु पूज सिष्ट इष्ट हैं ॥ जजामि० ।

ॐ ह्री जम्बूद्वीपैरावते वर्त्तमानजिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्य निर्वपामि ॥५॥

अमोल दीपकों उदोत तास आरती करों ।
समस्त कर्म भर्म नाश ज्ञान भान विस्तरें । जजामि० ।

ॐ ह्री जम्बूद्वीपैरावते वर्त्तमानजिनेन्द्रेभ्यो दीपं निर्वपामि स्वाहा ॥६॥

दशांग धूप अग्नि माहि खेय हों हुलासों ।
सुधूम धूमके मनों नचै मचै सुवाससों ॥ जजामि० ।

ॐ ह्री जंबूद्वीपैरावते वर्त्तमानजिनेन्द्रेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

सुपक्क और पुनीत आम्रकाम्रकादि ल्याइयो ।
चढाय वीतराग मोक्ष थान हेतु पाइयो ॥ जजामि० ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावते वर्त्तमानजिनेन्द्रेभ्यो फलं निर्वपामि ॥८॥

जलादि अष्ट सुष्ट पुष्ट द्रव्य अर्घ में धरा ।
तुम्हें चढ़ाय नाथजी अनर्घ थान विस्तरा ॥ जजामि० ।

ॐ ह्री जम्बूद्वीपैरावते वर्त्तमानजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं निर्वपामि ॥९॥

प्रत्येकार्घं ।

दोहा--बाल चंद समसुख बढ़त, बालचंद जिन जोय ।
जंबू ऐरावत विषैं, वरतमान जजि सोय ॥

ॐ ह्री बालचन्द्राय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

सुव्रत सुव्रत देत नित, सेवत सुव्रत लोय ।
जंबू ऐरावत विषैं, वरतमान जाजि सोय ॥

ॐ ह्री सुव्रताय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

करम काठ कों अग्नि सम, अग्निसेन जिनचंद ।
जजों जंबु ऐरावते वरतमान सुख कंद ॥

ॐ ह्री अग्निसेनाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

त्रिभुवन में आनॅद करन, नंद सेन सुखदेन ।
जंवैरावत वरत जाजि, कवि कुल काम दधेन ॥
ॐ ह्री नंदसेनाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

भव्यनि कों श्री देतवर, सुख सागर श्रीदत्त ।
नमों जंबु ऐरावतें, जजों सु जै वरदत्त ॥
ॐ ह्री श्रीदत्ताय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

व्रतधारक नित नमत जिहिं, ऐसे व्रतधर देव ।
वरतत जंवैरावतें, करों तास पद सेव ॥
ॐ ह्री व्रतधराय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

शोम सोम सम सुख सदन, शोमचंद जिन चंद ।
जजों जंबु ऐरावतें, वरतमान गुन कंद ॥
ॐ ह्री शोमचन्द्राय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

धारें दीरघ दृष्टिवर, धृत दीरघ जिन देव ।
जंबैरावत वरतते, जजों ध्यान धरि एव ॥

ॐ ह्री धृतदीर्घाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

शत पुष्पक जिनवर जजों, शत पुष्पनि करिबीर ।
जंबैरावत वरतते, हरत मदन सर पीर ॥

ॐ ह्री शतपुष्पाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

सुख अनंत भोगत सदा, शिवशत नाम जिनेश ।
जंबैरावत संत जजि, सेवत शेष महेश ॥

ॐ ह्री शिवशतये अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

श्रेय मार्ग उपदेशियो, जिन श्रियांश श्रीजुक्त ।

---

१ सस्कृत पूजामें 'शतपुष्पक' नाम लिखा है तसको कविने 'शतपुष्प' नाम समझ कर ऐसाही दोहे में गूथा है । खपुस्तक में भी ऐसाही पाठ है ।

जंबैरावत संत जाजि, दीजे भुक्त सुमुक्त ॥

ॐ ह्रीं श्रेयांशाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

श्रुति जलतें मल करम ध्वै, श्रुति[1] जल भरा पवित्र।
जंबैरावत संत जाजि, जै जिन त्रिभुवन मित्र ॥

ॐ ह्रीं श्रुतिजलाय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

बल अनंत संजुक्त श्री, सिंहसेन सुखदेन।
जंबैरावत वरत जाजि, दारिद दुरित रहेन ॥

ॐ ह्रीं सिंहसेनाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

कीन क्रोध उपशांत जिन, लीन शांत उपशांत।
जंबैरावत सत जाजि, मिटत सकल भवभ्रांत ॥

ॐ ह्रीं उपशांताय अर्घं निर्वपामि १४।

---

१ सस्कृत पूजा के स्वयजल तथा स्वयंज्वल पाठ लिखा है कविने उसको श्रुतिजल नाम रक्खा है।

तीन गुप्त जुतजे धरैं, गुप्ताशन निज ध्यान ।
जंबैरावत संत जजि, गुप्ताशन भगवान ॥

ॐ ह्रीं गुप्ताशनाय अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

वीरज विसद अनंत करि, डारे करम निर्वीर्य ।
जंबैरावत संत जजि, जै अनंत वरवीर्य ॥

ॐ ह्रीं अनतवीर्याय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

निजनिधि भव्यनि देतु हैं, आपु निकट सु बुलाय ।
जंबैरावत संत जजि, पार्श्वनाथ जिनराय ॥

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

श्री जिनवर अभिधान नित, भोगत परम निधान ।
जंबैरावत संत जजि, नमों जोर जुगपान ॥

ॐ ह्रीं अभिधानाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

मरुत देव सेवत सदा, श्री मरुदेव जिनेश ।
जंबैरावत संत जजि, मेटत कुमति कलेश ॥
ॐ ह्री मरुदेवाय अर्घं निवपामि ॥१९॥

शोभा विमल विभूति जुग, धारैं श्रीधर सार ।
जंबैरावत संत जजि, तार तार अवतार ॥
ॐ ह्रीं श्रीधराय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

इंद चंद नागेंद जस, गावत सुरस सुकंठ ।
जंबैरावत संत जाजि, जै जिन श्याम सुकंठ ।
ॐ ह्रीं श्यामकठाय अर्घं निर्वपामि २१॥

विघन सघन वन दहन कौं, अगिन अग्निप्रभु पुष्ट ।
जंबैरावत संत जजि, द्यो शिव संपति सुष्ट ॥
ॐ ह्रीं अग्निप्रभाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

दाहक करम कबंधके अग्निदत्त जिनराज ।
जंबैरावत संत जाजि, यह शिव सहज इलाज ॥

ॐ ह्रीं अग्निदत्ताय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

वीर धीर सेवत चरन, वीर सेन जिनचंद ।
जंबैरावत संत जजि, हरैं सकल दुखदंद ॥

ॐ ह्री वीरसेनाय अर्घं निर्वपामि ॥ २४ ॥

छद चौपाई--(मात्रा १५)

प्रथम मेरु ऐरावत सुन्दर । वरतमान जिन जजत पुरंदर ॥
चौविस जिनवर धरम धुरंधर । जजों ध्यान अपने उर मंदर ॥

ॐ ह्री जम्बूत्तैरावते वर्त्तमानजिनेन्द्रेभ्यो महार्घं निर्वपामि ॥ २५ ॥

जयमाला ।

छद घत्तानंद (मात्रा २३)

जै सदगुण जुक्ता, भवभय मुक्ता, आनंद भुक्ता, शुक्त वरा ।

दारिद् तम खंडा, भानु प्रंचडा, जे ब्रह्ममंडा, मंड करा ॥ १ ॥

छंद पाद्धड़ो--(मात्रा १६ लव्वंत)

जै वालचंद सुव्रंत व्रतेन, जै अग्निसेन अरु नन्दिसेन ।
श्रीदत्त जयति व्रतधर उदार । श्री शोमचन्द्र घृत दीर्घसार ॥ २ ॥
शतंपुष्प शिवसन श्रियांशदेव । श्रुति जल जै सिंह सुसेन एव ।
उपशाति सुगुप्तासन जिनिद । सुअनंतवीर्य प्रभु पार्श्वचद ॥ ३ ॥
अभिधान मरुत श्रीधर दयाल । जिनश्याम कंठ अगिनि प्रभाल ॥
जै अग्नि दत्त जै वीरसेन । तव गुन अनत कवि कह सकै न ॥४॥
शुचि वुद्धि सिंधु सिद्धांत पार । दुति मारतड परचडहार ॥
तन स्वेद रहित निरमल लसत । शुकसेत वरन समचतुर वंत ॥५॥
संस्थान प्रथम अति रूपवान । तन शौरभ शुभ लच्छन प्रमान ।
अतिवल प्रियवच भापतमहेश । दुरभिक्ष हरन नभगताजिनेश॥६॥

१ यहा पर कविवर ने अपने वनाये हुए छद में 'शतपुष्पक' 'नामको' भी विगाड़ कर शतपुष्प लिख दिया है । कपुस्तक में भी शतपुष्प ऐसाही पाठ है ।

जियबाधा विनुनित सुख लहंत । तरु फल फूलित शंका हरत ॥
मुख चार सरव विद्या अधीश। उनमेष रहित दृग जय जगदीश ७
नख केश वृद्धितें रहित सुष्ट । धुनि मागधि सब जिय प्रीति पुष्ट ॥
दिग शोभित भूतल मुकरजेम । मारुत सुगंध दायक सुखेम ॥८॥
गंधोदवृष्टि सुर रचत पद्म । फल भार शालि नुतशर्म सद्म ॥
निरमल अकाश सुरजय उचार। कवला अहार वर्जित निहार ॥९॥
वृषचक्र दिपै मंगल सुदर्व । वसुप्रातिहार्यनव लब्ध सर्व ॥
इत्यादि अनंत सुगुन निधान । " वृन्दावन " वंदत जोरि पान ॥१०॥

घत्ता--जै दीनदयाला, गुन मनिमाला, ऐरावतथित दीप यही ।
सुर नर मुनि वंदत, पाप निकंदत, दीजे मोकूं मुक्त मही ॥

ॐ ह्रीं-जम्बूद्वीपैरावते वर्त्तमानजिनेन्द्रेभ्यो महार्घं निर्वपामि ॥११॥

आर्याछंद—जो पूजै मानलाई, जंबू ऐरावते सुथित भाई ।
चौबीसों जिनराई, सो पावै भुक्ति मुक्ति ठकुराई ॥१२॥

इत्याशीर्वाद. ।

इति श्री जंबूद्वीपैरावतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनपूजा समाप्ता ।

अथ जंबूद्वीप ऐरावतातीतचतुर्विं-शतिजिनपूजा प्रारभ्यते ।

इंद्रवज्रा—

नागेन्द्र के उत्तर भाग सोहे । ऐरावत क्षेत्र सुनेत्र मोहे ॥
तामें अतीतं जिनराज राजें । थापों तिन्हें मुक्ति समाज काजें ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावतातीतचतुर्विंशतिजिना अत्रावतरत अवतरत संवौषट् ।
ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावतातीतचतुर्विंशतिजिना अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठःठः ।
ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावतातीतचतुर्विंशतिजिना अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् स्वाहा ।

अथाष्टक ।

वा—रमनीय जल दमनीय मल कमनीय कल शमनीय है ।
नीय दुख पमनीय सुप अमनीय रुप गमनीय है ॥

जै तीत त्रिभुवन मीत सुरगिर सीत ऐरावीत है।
धरि प्रीति ताहि जजीत परम पुनीत धरमलहीत है॥
ॐ ह्री जम्बूद्वीपैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जल निर्वपामि।

भवताप, विकल कलाप, रुज संताप, आपु बिनाशिया।
मोकों करो, निजसम, जगतमैं, जजहु गंध सुवासिया॥जै तीत०।
ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यश्चदनं निर्वपामि॥२॥

अति सेत द्रग छवि देत मलय समेत तंदुल लेत है।
धरि पुंज हरि कलि कुंज जगजसगुंज शिव भुंजेतहैं। जैतीत०।
ॐ ह्री जम्बूद्वीपैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अक्षतान् निर्वपामि॥३॥

जगशूल मनमथ धूलकों निरमूल तुम सम कूलये।
यह फूललै सुखमूल पूजों भूल मेटि अतूलये॥ जैतीत०।
ॐ ह्री जम्बूद्वीपैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो पुष्पं निर्वपामि॥४॥

प्राशुक सुरस मृदु नयन मन रंजित विभंजित है छुधा ।
नैवेद्य सों निरखेदतें निरखेद पद पावत बुधा । जैतीत त्रिभुवन० ।
ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्य निर्वपामि ॥५॥

तमखंड दुति ग्रहमंड मांडि अखंड दीप समंडिया ।
परचंड मोह विहंडि केवल मारतंड उमंडिया । जैतीत० ।
ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

दशगंध धूप अनूप लै शिव भूप सनमुख खेय हों ।
दहि करम भरम मरम जानित निज, परम धरम सुचेय हों ॥ जैतीत०।
ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

फल सकल अकल ललित मलित मल दलित दालिद दीनता ।
सुख फलित कलित अचलित पद उछलित शिव अमलीनता । जै०।
ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥

आनंद कंद जिनंद चंद अमंद वंदन कीजिये ।
वसु दरव छंद सुछंद दै निरफंद थानक लीजिये । जैतीत० ।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अर्घं निर्वपामि ॥९॥

अथ प्रत्येकार्घं ।

छंद चौपाई–(मात्रा १५)

कल्यानक पांचो जिन पाय । पंच रूप सो जिन सुखदाय ।
जंबू ऐरावत गत मोख । जजों मोहि समकित रस पोख ॥

ॐ ह्रीं पंचरूपाय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

नाना जन सेवें जसु पाय । श्रीजिनधर सो मोहि सहाय । जंबू० ।

ॐ ह्रीं जिनधराय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

शमता धरें धरासमधीर । सांप्रतीक सो गुन गंभीर ॥ जंबू० ।

ॐ ह्रीं सांप्रतीकाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

दुर्जय जीति फुरी सद्वीर्य। सो जिन उर्ज्जयंत जुत धीर्य॥जंबू० ।

ॐ ह्रीं उर्ज्जयंताय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

छायक नवों लब्धि लहि जेह । आधि छायक जिनवर हैं तेह ॥ जंबू।

ॐ ह्रीं अधिक्षायकाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

जगदानंद देत अविकार। अभिनंदन जिन जगदाधार॥ जंबू०।

ॐ ह्रीं अभिनदनाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

रतन तीनके ईश महान । सो रतनेश नाम भगवान ॥ जंबू०।

ॐ ह्रीं रत्नेशाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

शिव रामाके ईसुर जेह । रामेसुर जिन कहियत तेह ॥ जंबू०।

ॐ ह्रीं रामेश्वराय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

पांचों तन जिनकीनो भंग। अंगोत्थित जिनसो शिवसंग॥ जंबू०।

ॐ ह्रीं अंगोत्थिताय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

धरमविधान बतायो सार। सो विन्याश देव अविकार ॥ जंबू० ।

ॐ ह्रीं विन्याशाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

रागद्वेप हत पोखें धर्म । सो अरोष जिन द्यौ शिवशर्म ॥ जंबू० ।

ॐ ह्रीं अरोपाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

नाना विधि विधान शिवभाप । सो सुविधान नाम अभिलाप ॥ जंबू० ।

ॐ ह्रीं सुविधानाय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

अपुनरभव दिढवृत्तव्रताय । सो जिन विप्रदत्त सुखदाय ॥ जंबू० ।

ॐ ह्रीं विप्रदत्ताय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

काम कुमति करि हरिसम धीर । श्रीकुमार जिनवर वरवीर ॥ जंबू० ।

ॐ ह्रीं कुमाराय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

प्रगट गुरूगुन गिरि समजान । सो जिन सर्वशैल उरआन ॥ जंबू० ।

ॐ ह्रीं सर्वशैलाय अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

अतिशय परम मुनिन कहदेत । सो परभंजन जिन भवसेत ॥ जंबू० ।

ॐ ह्रीं प्रभंजनाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

जसु जसरास भऱ्यो जगमेव । सो सौभाग्न शुभाकृत देव ॥ जंबू० ।

ॐ ह्रीं शौभाग्नाय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

कुमति छपातम मर्द्दन कीन । नाथ दिवा¹कर परम प्रवीन ॥ जंबू० ।

ॐ ह्रीं दिवाकराय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

विमल व्रतनि के सागर सार । श्रीव्रतविंदु भवोदधि तार ॥ जंबू० ।

ॐ ह्रीं व्रतविंदवे अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

सिद्ध करत भविजन के काज । सिद्ध²सुकर्त्ता श्रीमहाराज ॥ जंबू० ।

ॐ ह्रीं सिद्धकर्त्रे अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

महाज्ञान प्रकट्यौ ननधीर । सो जिनवर हैं ज्ञान शरीर ॥ जंबू० ।

ॐ ह्रीं ज्ञानशरीराय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

---

१ । संस्कृत पूजामें 'दिनकर' नाम है । कविवरकी कविता में दिनकर शब्द आया नहीं इसलिये 'दिवाकर' नाम रख दिया है । (२) संस्कृत पाठमें 'सिद्धिकर' नाम है । कविवरने, सिद्धसुकर्त्ता नाम बनाया है ।

बांछितार्थ सुख दायक जोय । कलपद्रुम जिनवर हैं सोय ॥ जंबू॰ ।

ॐ ह्रीं कलद्रुद्रुमाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

जसु तीरथ सार्थक फलदेत । सो तीरथ[1] फल सुगुननिकेत ॥ जंबू॰ ।

ॐ ह्रीं तीर्थफलाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

जासु प्रभा जग रमत सुहात । सो वीरम[2] मम रक्षक ख्यात ॥ जंबू॰ ।

ॐ ह्रीं वीरमप्रभाय अर्घं निर्वपामि २४॥॥

मोदकछंद प्रस्तार (ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ वरन २१)

पूरन अर्घ बनाय मनोहर । पूजत हौं प्रभुजी भय मौहर ॥

---

१ मूलमें तीर्थनाथ नाम है कविवरने अपनी कविता में 'तीर्थफल' नाम बना दिया । २ कविवरके हाथकी लिखी प्रतिके छंदमें तो 'सो वीरम मम' ऐसा लिखा है और मन्त्रमें वीरमप्रभ लिखा है और संस्कृत मूलमें चौईसवें तीर्थका नाम 'फलेश' लिखा है ।इस कारण हमने मन्त्रमें फलेशाय बनाया है ।

मेरु सुदर्शन को ऐरावत । तीत जजैं शिव संपाति पावत ॥

ॐ ह्रीं जम्ब्वैरावतातीतचतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो महार्घं ।

अथ जयमाला ।

घत्ताछंद—भवविपाति विमुक्ता, ।शिवपद जुक्ता भुक्ता शुक्ताशर्म वरा ।
मद मदन विहंडन, दारिद खंडन, आँनँद मंडन पर्मपरा ॥१॥

मोतीदाम छंद--

नमों जिन पंचसरूप महान । जिनंधर आतम ज्ञान बखान ॥
नमों नित सांप्रतिकाय अमद । सदाजय उज्जयथंत सुछंद ॥२॥
अधिह्वभिनंदन रत्न सुईश । रमेसुर जैति अंगोज्झित धीश ॥
नमों विनयांश अरोप जिनेश । नमों सुविधान सुविप्रदतेश ॥३॥
कुमार नमों सब शैल प्रभंज । नमों सब भाग दिवाकर कंज ॥
सदा व्रतविदु करों परनाप । करै सब सिद्ध जथा पदनाम ॥४॥
नमो जिन ज्ञानशरीर अनंत । सदा कलपद्रुम शर्मकरंत ॥

नमों नित तीर्थफली भगवंत। सदा विरमप्रभ विघ्न हरंत ॥५॥
विशुद्ध बुधार्णव वर्द्धनचंद। विवेक सरोज प्रमोद दिनंद ॥
सुरेश नरेश खगेश फनेश। गनेशनमें धरि प्रीति अशेश ॥६॥
किये जगजंत अनत उधार। वखानत जासु लहै नहिं पार।
दयावृष तत्त्व बखान जिनेश। कियो शिवमंदिर माहि प्रवेश ॥७॥
अनत गुनाकर एक सरूप। नमों नित चित्त विषैं शिवभूप ॥
बुलाय प्रभु हमकौं निजपास। तुरंत मिलै शिव सम्पत्ति रास ॥८॥

घत्तानद–जैजै जिनस्वामी, त्रिभुवन नामी पंच सुरूपादिक निपुनं।
जंबू ऐरावत, तीत कहावत, गुन अनंत मुनिवृंद थुनं ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपैरावतातीतजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि ॥९॥

शोरठा–जो पूजै मनलाय, जंबैरावततीत जिन।
सो सुरनर पदपाय, अनुक्रम शिव तियकों वरै ॥ इत्याशीः।

इति श्री जम्बूऐरावतातीतपूजा समाप्ता।

अथ जंबूऐरावतभावीचतुर्विंशतिजिनपूजा ।

अडिल्ल–प्रथममेरु उत्तर ऐरावत जानिये ।
होनहार चौबिस जिनेसुर मानिये ॥
थापों इत चित लाय सुपूजन कारने ।
हे प्रभु तिष्ठो आय भवोदधि तारने ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपैरावतभावीचतुर्विंशतिजिना अत्रावतरत अवतरत संवौषट् ।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपैरावतभावीचतुर्विंशतिजिना अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः ।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपैरावतभावीचतुर्विंशतिजिना अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् ।

अथाष्टक ।

रेखता–

अमल जल धारिकें झारी । धार त्रय देत अविकारी ॥

प्रभू सुनके अरज म्हारी । करम मल मेटि दुखकारी ॥
प्रथम गिरि उत्तरं जानों । सुखद एरावतं मानों ॥
भविष्यत सार चौवीशी । जजों जिन ज्ञानमें दीशी ॥

ॐ ह्रीं जंवूद्वीपैरावते भावीजिनेभ्यो जल निर्वपामि ॥१॥

केदली नंदघासि चंदन । करों जिन चंद पद बंदन ॥
हरो दुखदंद भौ फंदन । करो आनंद जग बंदन ॥ प्र० भ० ।

ॐ ह्रीं जंवूद्वीपैरावते भावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चन्दनं निर्वपामि ॥२॥

अखंडी शालिशित डंडी । सुमंडी पुंज दुति चंडी ॥
विहंडी विघ्न की मंडी । उमंडी शौख्य ब्रहमंडी ॥ प्र० भ० ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावते भावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अक्षतान निर्वपामि ॥३॥

सुमन मन घ्रानको रंजै । सुमनमथ जंगकों भंजै ॥
धरत ढिग पुंज अलिगुंजै । सुजस सुखशील भविभुंजै ॥ प्र० भ० ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावते भावीचतुर्विंशतिजिनेभ्य पुष्प निर्वपामि ॥४॥

तुरत नैवेद्य ले नीके । मधुर रस पूरितें घीके ॥
करन निरवेद पदवीके । धरों उरध्यान श्रीजीके ॥ प्र० भ० ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावते भावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्य निर्वपामि ॥५॥

सुजग मग दीप उजियारा । प्रभू तनमें लखे सारा ॥
मनो यह ध्यान शिखि धारा । दहत वसुकर्म कंतारा ॥प्र०भ०॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावते भावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीप निर्वपामि ॥६॥

दशंगी गंध बहुरंगी । वरंगी वन्हिमें चंगी ।
उखेयें धूम मिसि नाचे । दहत अरि कर्मकों माचे ॥ प्र० भ० ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावते भावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूप निर्वपामि ॥७॥

विघ्न तरु निघ्न के करता । समरचों मुक्त तीभरता ॥
परम फल पक्करस गरता । नयन मनमोद आदरता ॥प्र० भ०॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावते भावीचतुर्विंशति जिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥

दरवलै अष्ट परकारा । अरघ तसु सुष्ट करधारा ।
करो भवभाव निरवारा । शरन जगराज मैं धारा ॥
प्रथम गिरि उत्तरें जानों । सुखद ऐरावतें मानों ।
भविष्यत सार चौबीसी । जजों जिन ज्ञानमें दीसी ॥

ॐ ह्री जम्बूद्वीपैरावते भावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अर्घं निर्वपामि ॥१॥

अथ प्रत्येकार्घ ।

इन्द्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्राछद—

सिद्धार्थदेवं सव सिद्धकर्ता । सिद्धप्रियं सर्व समृद्ध भर्ता ।
जबू महैरावत होनहार । पूजों चतुर्विंशति देव सार ॥

ॐ ह्री सिद्धार्थाय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

अंतर्वहिः सर्वकलंक चूरे । श्रीदेवदेवं विमलेस पूरे ॥ जंबू०॥

ॐ ह्रीं विमलाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

कर्मारिकों जीति विजैसु पायो। जै घोषनामा जगमें कहायो॥जंबू०॥

ॐ ह्रीं जयघोषाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

आनंद सेनं धृत पर्म शर्मं। जगद्गुरूर्वीतित कर्मभर्मं॥ जंबू०॥

ॐ ह्रीं आनंदसेनाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

श्रीस्वर्ग संमंगल देव मोहे। उत्पत्ति में मंगल स्वर्ग होहे॥जंबू०॥

ॐ ह्रीं स्वर्गमंगलाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

वज्रेश जाको नित नाम ध्यावें। जिनेश सो वज्रधरं कहावें॥जंबू०॥

ॐ ह्रीं वज्रधराय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

निर्वाणको मार्ग जिन्हों प्रकाशे। निर्वाण सो मार समस्त नाशे।जंबू

ॐ ह्रीं निर्वाणाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

---

१ संस्कृत मूल पाठमें चौथे तीर्थंकरका नाम 'नंदिसेन' है कविवरने उसकी जगह 'आनंदसेन' नाम रक्खा है।

सुकोशलेसं सुगुनं अनंते । आभ्यंतरे कोशविषै धरंते ॥ जंबू०॥

ॐ ह्रीं सुकोशलाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

अनंत संसार जिन्हों विनाशे । अनंतस्वामी गुननंतराशे । जंबू० ॥

ॐ ह्रीं अनंताय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

अष्टादशों दोषनिवार डारे । सोई जिनेसं विमलं हमारे ॥ जम्बू० ॥

ॐ ह्रीं विमलाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

नमों सदा अमृतसेन स्वामी । विज्ञान वारानिधि पारगामी ॥जम्बू०।

ॐ ह्रीं अमृतसेनाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

ध्यानाग्नि में कर्म सुकाठ जारे । श्री अग्निदत्त भविवृन्दतारे जंबू०।

ॐ ह्रीं अग्निदत्ताय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

अथ जयमाला—

जंबूसुमाद्रिऐरावतक्षेत्रगाजे । तामें भविष्यत जिनेश जितेविराजे ॥

पूज़ों तिन्हें भगतभाव हिए धराई। पूर्णार्घसों तुरित भुक्त सुमुक्तदाई
ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावते भावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि ॥२८॥

जयमाला।

घत्ताछंद—

जयविपतविहंडित, शिवमगमंडित, अतिथ अखंडित, शुद्धमती।
निजनिधि वरदायक, सब विधिलायक, जे निज नायक, बुद्धपती॥१॥

तोटक छंद—

जय सिद्ध सुअर्थ जिनद्वरा। विमलं जयघोष अदोष करा॥
जय नंद सुसेन अनंत मती। जय स्वर्ग सुमंगल बाल जती॥२॥
जय वज्रधरं निरवान महा। जयधर्म धुजी सिद्धसेनकहा॥
महसेन नमों रवि मित्रपदं। सतसेन सुचंद जिनंद सदं॥३॥
महचंद श्रुतांजन नायक हैं। मम देव सुसेन सहायक हैं॥
जय सुव्रत नौमि जिनिंद सदा। प्रणमामि सुपार्श्व प्रमोद ददा॥४॥

जगनंदन सुकोशलदेव नमं। सु अनन्त नमों विमल प्रशमं ॥
स्वरदामृतसेन जिनिंद नमों। जय अग्निसुदत्त कलंक दमों ॥५॥
तुम मंगल मूरत देव वरा। तिन सेवत शक्र सुचक्र धरा ॥
गुन शारद नारद गान करें। भव वारिद पारद पाय परें ॥६॥
गिरि आदिक साधन भाषिय है। जस गावत आनंद पाविय है ॥
शरनागत पालन जानि सही। भवि "वृंद" गही चरनाम्बुजही ॥७॥
घत्ता—जयजय मुक्तसाधन, भव भयबाधन, नित आराधन, साधगनं।
ब्रह्मादिकसेवन, नितगुनवेवन, आनंदव्वेवन, मुक्त मनं ॥ पूर्णार्घ्यं ॥

[illegible] ([illegible] १३)

होनहार जिनराज सेवई। जेतु उत्तम यशवंत जई ॥
सो समस्त सुख भोगि के यहां। धर्म शर्म भवि लेहु है उहां ॥१॥

इत्याशीर्वादः।

इति श्री अनागतचौबीसी तीर्थंकरजिनपूजा समाप्ता ॥

अथ धातुकीद्वीपपूर्वविजयमेरुसम्बंधिविदेहस्थ-चतुर्विहरमानजिनपूजालिख्यते।

छंद सुदरी–

दुतिय द्वीप सुपूरब मेरुके। विहरमान जु चार सुदेर के॥
तिनहिं थापतु पूजन कारने। प्रभु हमें भव सागर तारने॥

ॐ ह्री धातुकीविजयमेरुविदेहसस्थितविहरमानचत्वार' जिना अत्रावतरत अवतरत संवौषट्।

ॐ ह्रीं धातुकीविजयमेरुविदेहसस्थितविहरमानचत्वारः जिना अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः।

ॐ ह्री धातुकीविजयमेरुविदेहसंस्थितविहरमान चत्वार जिनाःअत्रमम सन्निहिता भवत भवत वषट्।

अथाष्टक।

(चाल द्यानतरायजी कृत नंदीश्वराष्टक की अनेक रागों में) यथा–

छीरोदधि सो सुरराय, नित प्रति सेव करै।

प्रभुपो पै सो न सोहाय, लाजनि पाँय परे ॥

संजातक आदि जिनन्द, चारों सुखकारी ।

गिरि विजय विदेह सुछंद पूजत नरनारी ॥

ॐ ह्रीं धातुकीखण्डमेरुचत्वारःविदेहस्थविद्यमानजिनाः संजातस्वयंप्रभऋषि-भाननअनंतवीर्यतीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामि ॥ १ ॥

सुरपति अति प्रीति बढ़ाय, दिव्य सुगंध धरें ।

हमचंदन चरन चढ़ाय, भव आताप हरें । संजातक० ॥

ॐ ह्रीं धातुकीखण्डमेरुचतुर्विदेहस्थविद्यमानजिनसंजातस्वयंप्रभऋषभा-नन अनंतवीर्यतीर्थंकरेभ्यो चन्दनं निर्वपामि ॥ २ ॥

सित वासित वासमनीय, हामित सेत कलं ।

सुखगामित पुञ्ज धरीय, नाशित पापमलं ॥ संजातक० ॥

ॐ ह्रीं धातुकीखण्डमेरुचतुर्विदेहस्थविद्यमानजिनसंजातस्वयंप्रभऋषभान-न अनंतवीर्यतीर्थंकरेभ्यो अक्षतान् निर्वपामि ॥ ३ ॥

वृंदार इंद मंदार सुमन चढ़ावत हैं ।
हम फूलनि पूजि उदार, शील चढ़ावत हैं ॥ संजातक०

ॐ ह्री धातुकीविजयमेरुचतुर्विदेहस्थविहरमानजिनसजातस्वयमभऋपिभाननअनंतवीर्यतीर्थंकरेभ्यः पुष्प निर्वपामि ॥ ४ ॥

सुरनायक अमृत रास पास धराय जजैं ।
हम नेवज मिष्ट सुवास, पूजहिं दुख भजैं ॥संजातक० ।

ॐ ह्री धातुकीविजयमेरुचतुर्विदेहस्थविहरमानजिनसंजातस्वयंमभऋपिभाननअनंतवीर्यतीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ॥ ५ ॥

मनि दीप शचीपति लेय, आरति भक्त करै ।
यह दीप धरों उमगेय, संशय भाव हरै ॥ संजातक० ।

ॐ ह्रीं धातुकीविजय मेरुचतुर्विदेहस्थविहरमानजिनसंजातस्वयंमभऋपिभाननअनंतवीर्यतीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥ ६ ॥

दिवगंध सुगेश अशेष, खेवत भाव धरं ।
हम धूप उखेय महेश, ज्यों अरि कर्म जरें ॥ मंजातक० ।

ॐ ह्रीं धातुकीखिण्डमेरुचतुर्विदेहस्थविहरमानजिनसंजातस्वयंप्रभऋषिभानन अनंतवीर्येश्वरेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥ ७ ॥

फल पक सुगंधम सार, वासव आनि धरे ।
हम पूजत फल भरि थार, विघन समूह टरे ॥ सजातक०

ॐ ह्रीं धातुकीखिण्डमेरुचतुर्विदेहस्थविहरमानजिनसंजातस्वयंप्रभऋषिभानन अनंतवीर्येश्वरेभ्यो फलं निर्वपामि ॥ ८ ॥

वसु दरव अनूपम आन, इंद्र चढावत हैं ।
हम अरघ जजें धरि ध्यान शर्म बढावत हैं ॥ संजातक० ।

ॐ ह्रीं धातुकीखिण्डमेरुचतुर्विदेहस्थविहरमानजिन संजातस्वयंप्रभऋषिभानन अनंतवीर्येश्वरेभ्यो अर्घं निर्वपामि ॥ ९ ॥

प्रत्येकार्घ ।

शोरठा--संजातक रवि अंक, सीतोत्तर अलकापुरी ।
देवसेन सुनिशंक, जजों देव सेना. तनुज ॥

ॐ ह्रीं धातुकीखडपूर्वविजयमेरुसीतोत्तरानेकशोभाविराजमानपट्खडमडल-मडितअलकापुरी तत्र विरह्मानभगवान श्रीसंजातकाय अर्घ निर्वपामि ।

दोहा--शसि लच्छन पग स्वयं प्रभु, सीता दच्छिन ख्यात ।
मित्रभूत विजयानगर, जजों सुमंगल मात ॥

ॐ ह्री धातुकीविजयमेरुसीतादच्छिणानेकशोभाविराजमानविजयानगरस्थ-श्रीस्वयंप्रभाय अर्घ निर्वपामि ॥२॥

पद्धड़ी छद--

रिषभानन हरि पग में सुहात । कीरत नृप वीर सुसेन मात ॥
सीतोदा दच्छिन में प्रमान । जजि नगर सुशीमा गुन निधान ॥

ॐ ह्रीं धातुकीखंडविजयमेरुसीतोदादक्षिणसुसीमानगर अनेकशोभाविराजमानविद्यमान श्री विशालनाथ अर्घं निर्वपामि ।

चौ०–मेघराय सुत मंगल जननी । श्री अनंत वीरजगजतननी ॥
सीतोदा उत्तर उर धरनी । जजौं अजोध्या भवसर तरनी ॥

ॐ ह्रीं धातुकीखंडविजयसीतोदाउत्तरअयोध्यानगरस्थ विद्यमानजिनश्रीअनंतवीराय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

छंद चौपाई—

श्रीपत तीरथनाथ नमामी, मेरु विजै मुनिंद्र महामी ।
चारित संघ समोशृत माहीं पूजत पूरन आनँद पाहीं ॥

ॐ ह्रीं धातुकीविजयमेरुसनानिर्मितविंशत्यविद्यमानजिनसंजातस्वयंप्रभुऋषिभाननअनन्तवीर्यतीर्थंकरेभ्यो महार्घं निर्वपामि ॥५॥

अथ जयमाला ।

घत्ता–जै जै जिन सुंदर, गुनगनमंदर, जगजतपुरंदर धर्मधरा ।

संशयमतवर्जन, शिवमगशर्ज्जन, नितधुनिगर्ज्जन, मेघवरा ॥१॥

कामिनीमोहन छद–

जयति जिनचंद आनद अमृत करन ।
जयति जिनभानु भवि कमल मोदति करन ॥
जयति जिनमेघ कल्यान वारिद भरन ।
जयति जिन समवशृतातिथि अमित दुति धरन ॥१॥
जयति जिन परम वृष तत्त्व उद्धित करन ।
जयति जिन दिव्य लक्ष्मी लसित शित चरन ॥
हरत भवि शोकतर सुमन नभते परत ।
दिव्य वानी सुनत भविक भवसर तरत ॥ २ ॥
चमर जॅहॅ अमर ढारत सुसिंघाशनं ।
देहकी कांति भवशांति प्रतिभाशनं ॥
दुन्दुभीनाद शिर छत्र अनुपम लसत ।
ज्ञान दृग शर्म वीरज अनते वसत ॥ ३ ॥

गुन अगम आपुके कौन बरनन करै ।
इंद गनइंद लज्जित सुपांयन परै ॥
थिगिर थिगि थिगुर तुव भगतमें माचही ।
ततथता अततता ग्रुंगत गन नाचही ॥ ५ ॥
झननन झननन नूपुरै बाजहीं ।
किनिनिनि किनिनिनि किंकिनी छाजहीं ॥
तामद्दि ममामद्दि मारगि धुनि करत है ।
द्रिम द्रुदिम धिधिधिधि मुरज आदरत है ॥ ६ ॥
ताल कंसाल करनाल बीनादि लै ।
ममसुर सहित बाजै सुमद लय मिलै ॥
करत गुनगान अमलान भगवानके ।
कोई जय गरत ध्यावत अमर थानके ॥ ७ ॥
केइ मुनि होत केइ मोपगुर जात हैं ।
आपुके निकट अद्भुत मनोवान हैं ॥

धन्य तुमदेव धनी थान सोहै सही।

नमत तुमकौ मिलत परम पदकी मही ॥ ७ ॥

घत्ता-जैजिनगुनमंडित, अमल अखंडित, नितनुतपंडित, प्रीतिधरैं।

चारों सुखदायक, विघन विनायक, दास सहायक, पापहरैं ॥

ॐ ह्रीं धातुकीविजयमेरुचतुर्विदेहस्थविरहमानजिनसंजातस्वयंप्रभऋषभाननअनंतवीर्यतीर्थंकरेभ्यो महार्घं निर्वपामि ॥८॥

छंद सवैया तथा कवित्त--(मात्रा ३१)

विजय मेरुके शुभ विदेह में, चारों तीर्थंकर अविकार।

समवसरन रचना जुत राजत, कबहुंक करत जिनेश विहार ॥

तिनके पदपंकज कों पूजे जो प्रानी गुनमाल उचार।

समकित सहित भोग इंद्री. सुख अति इन्द्री सुखलहै अपार ॥८॥

इत्याशीर्वादः।

इति श्रीविजयमेरुसम्बंधीचतुर्विंहरमानजिनपूजा समाप्ताः।

अथ विजयमेरुभरतवर्त्तमानचतुर्विंशति-जिन पूजा प्रारम्भ्यते ।

पाइता छंद-(मात्रा १४)

दुति धातुकी दीप प्रमानों । गिरि विजय सुदक्षिन मानों ।
जिन वरतमान चवबीसं । इत थापतु हौं जगदीशं ॥

ॐ ह्रीं विजयमेरुभरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिना अत्रावतरत अवतरत संवौषट् ।

ॐ ह्रीं विजयमेरुभरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिना अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः ।

ॐ ह्रीं विजयमेरुभरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिना अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् ।

अथाष्टक ।

द्रुतविलम्बित तथा सुन्दरी छंद-

निगमनीर गहीर सुन्हावजी । कल्म धार कलंक नशावजी ।
विजय दक्षिन भारत दक्षिये । वर्तमान जिनेसुर पूजिये ॥

ॐ ह्री विजयमेरुभरतवर्त्तमानचतुर्विशतिजिनेभ्यो जल निर्वपामि ॥२॥

कदलि नंदन चंदन वावनं । भजि जिनंद सुदंद नशावनं ॥ वि० ।

ॐ ह्री विजयमेरुभरतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनभ्यश्चन्दन निर्वपामि॥१॥

शितनिशेश हिमामिय तन्दुलं । धरत पुंज अमंदन दंदलं ॥वि० ।

ॐ ह्री विजयमेरुभरतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अक्षतान निर्वपामि ॥३॥

समरशूल निमूलन कारनें । सुमन शौरभि ले करि धारनें ॥वि०।

ॐ ह्री विजयमेरुभरतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥४॥

रुजक्षुधा तुमनें चकचूरिया । धरत हौं चरु लै रस पूरिया ॥ वि०।

ॐ ह्री विजयमेरुभरतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्य निर्वपामि ॥५॥

तुवविमोहविनाशक मैं लखा।जजातिदीप निजानंदकों चखा। वि०।

ॐ ह्री विजयमेरुभरतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीप निर्वपामि ॥६॥

अगर चंदन धूप सुधूमकै । हवत कर्म उड़े जरि घूमके । वि० ।

ॐ ह्रीं विजयमेरुभरतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

परम पावन आनि फलावली। दिगधरों मोहितार उतावली॥वि०

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फलं निर्वपामि ८॥

अरघ मैं तुम सन्मुख लेत हों। भवसमुद्र जलंजलि देतहों॥ वि०

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्र वर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामि ॥९॥

प्रत्येकार्घ।

नाराच छंद- युगादि देव ध्याइये सदैव शीश नाइये।

अनादि भूल भाव त्याग आपु शुद्ध पाइये॥

तृतीयदीप पूर्वमेरु भर्त्तवर्त्तमान हैं।

जजों जलादि सों तिन्हैं सुमुक्त मुक्तदान हैं॥

ॐ ह्रीं युगादिनाथ अर्घं निर्वपामि ॥१॥

सिद्धांत शुद्ध साधियो सिद्धांत देवने सही।

समिन्द्र सिद्ध देत हैं अनंत धर्मको मही॥ तृतीय०॥

ॐ ह्रीं सिद्धांताय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

महेशनाथनें अशेष वस्तुकों विलोकिया ।
तिसी प्रकार भासियो गनिंद इंद धोकिया ॥ दुतीय०।
ॐ ह्रीं महेशनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

सदैव हैं सहाय पर्म शर्म मार्ग जानको ।
मुनिंद वृंदकर्त्त हैं सुपर्म अर्थ ध्यानको ॥ दुतीय० ।
ॐ ह्रीं परमार्थाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

नरेश और सुरेश श्रीगनेश जाहि ध्यावहीं ।
वरं सुसेनके सुकीर्त्ति किन्नरिंद गावहीं ॥ दुतीय० ।
ॐ ह्रीं वरसेनाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

सुभव्यकौं भवाब्धितें उधारकों सुधीर हैं ।
जिनेश श्रीसमुद्धर नमों नमों सुवीर हैं॥दुतीय० ।
ॐ ह्रीं समुद्धराय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

---

१ संस्कृत पूजामें पाचवें भगवानका 'वरसेन' नाम नहीं है 'समुद्धर' है । किंतु अठारवे तीर्थंकर 'त्रिपुष्टि' है तो कविवरने ग्रहण नहीं किया है ।

नरिंद औ सुरिंद नाग इंद चंद सेवहीं ।
जिनेश भूषेग्याकों अशेस धर्म वेवहीं ॥ तुतीय० ।
ॐ ह्रीं भुजगनाथाय नमः निर्वपामि ॥७॥

सुबोध भानुतें त्रिलोक को प्रकाश कर्त्त है ।
उदोतनाथ जी सुधर्म कर्म भर्म हर्त्त है ॥ तुतीय० ।
ॐ ह्रीं उदोतनाथाय नमः निर्वपामि ॥८॥

विशुद्धसार आर्जवादिको धरे विराजही ।
नमामि नित्त आज्ञतें समस्त दुःख भाजहीं ॥ तुतीय० ।
ॐ ह्रीं आर्जवाय नमः निर्वपामि ॥९॥

त्रिनाशि मान मे अर्घ को हरै कल्याणजी ।
अभि जिनेश को जपें मिलै सुमुक्त देशजी । तुतीय० ।
ॐ ह्रीं अभयाय नमः निर्वपामि ॥१०॥

अकंप रूपराजही अनंत शक्ति साजही ।
जिनेश अप्रकंप कौं जजें दरिद्र भाजही ॥ दुतीय० ।

ॐ ह्रीं अप्रकपाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

शरीर पद्मवर्ण है सुपद्म सद्मकर्ण है ।
सुपद्मनाथ सेवतें सुहोत पद्म वर्ण है ॥ दुतीय० ।

ॐ ह्रीं पद्मस्वामिने अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

सुभव्य पद्मराशिकों दिनंद श्रीजिनंद हैं ।
सुपद्म नंदि वंदनैं अमंद पद्म कंद है ॥ दुतीय० ।

ॐ ह्रीं पद्मनंदिने अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

गनेश वृंदकौं महा सु प्रीय आपु लागते ।
प्रियंकर प्रभू भजें कलेश दूर भागते॥ दुतीय० ।

ॐ ह्रीं प्रियकराय-अर्घ निर्वपामि ॥१४॥

पुनीत पुन्य जासके जपें तुरंत होत हैं।
सुकृत्तनाथ देव तीनलोकमें उद्योत हैं॥ तृतीय० ।

ॐ ह्रीं सुकृत्तनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

समस्त दुःख चूरियो सुभद्र मुख प्रसियो ।
सुभद्र देवको नमों तुमो कलंक चूरियो ॥ तृतीय० ।

ॐ ह्रीं सुभद्रनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

मुनीश चंदजी अमंद चंद रूप हैं महा ।
त्रिलोक जीवको अनंद कंद देत हैं कहा॥ तृतीय० ।

ॐ ह्रीं मुनिचन्द्राय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

[illegible] 'भद्रेश' नाम है [illegible] उसकी जगह 'सुभद्रेश' [illegible] है।

सुपंच मुष्टि केशसीसतें उपारियो वरं ।
सुपंच मुष्टि देव सेव केवल प्रभाधरं ॥ दुतीय० ।

ॐ ह्री पचमुष्टये अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

सुगंग की छटा समान स्वच्छ कीर्त जासकौ ।
सुगांगयेय सय आश पूरते सुदासकौ ॥ दुतीय० ।

ॐ ह्री गागयिकेनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

चहूं प्रकार संग जासके गुनं अराधहीं ।
गणां सु नाथ देव शोभनीक सार साधहीं ॥ दुतीय०।

ॐ ह्री गणाय अर्घं निवपामि ॥२०॥

समस्त अंग सुंदराकृती सुदीप्तकौं धरै ।
जु सर्व अंगदेवजी सुपाप पुंजकौं हरै ॥ दुतीय० ।

---

१ सस्कृत पूजामें गागिक वा 'गांगिकनाथ' नाम है । २ संस्कृत पूजामें गणनाथ नाम है ।

ॐ ह्रीं नमिनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

पुनीत पूर्ण ब्रह्मके पदस्थ में विराजहीं ।

सु ब्रह्मइंद्र नायकेश चक्र सुक्र साजहीं ॥ तृतीय० ।

ॐ ह्रीं नेमिनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

मुनिंद्र जासकों नमें समस्त दुःखकों दमें ।

जिनंद इंदवन्त भुक्ति मुक्ति शक्त यों हमें ॥ तृतीय० ।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

जिनेश पूजनीक नें दया विधान भासिया ।

दया सुनाथ सेवतें सुकर्म भर्म नाशिया ॥ तृतीय० ।

ॐ ह्रीं महावीराय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

चौपाई—धातु दीप जिनबिंब बखान । भरतक्षेत्र वर्तन भगवान ॥

पूजों चरन जोर जुगपान । पूरन अरघ अमल गुनखान ॥

१ किसी पूजा में ... की जगह 'मिलती' नाम है ।

ॐ ह्रीं विजयमेरुभरतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि ।

जयमाला ।

घत्ता–सतसंपतिजुत्ता, विपतिविमुत्ता, आनंदभुत्ता, मुत्तावरा ।
चौवीसजिनंदा, गुननिधिचंदा, नमत सुरिंदा, भरत भरा ॥१॥

तोटकनामछंद–

जयवंत जुगादि जिनेश सदा । भ्रम भंजन देव सिद्धांत वंदा ॥
सु महेश कलेश अशेष हरैं । परमारथ आतम शर्म भरैं ॥२॥
वरसेन जगज्जन तारत हैं । सु समुद्र भौ दुख टारत हैं ॥
जिन भूधर अष्टम भूमि पती । जयवंत उदोत उदोत मती ॥३॥
नित आर्ज्जव आर्ज्जव भाव धरे । भयनाश अभै जिनराज करैं
अप्रकंप निकंप दशा करि हैं । जिन पद्म सुसद्म रमाभरि हैं ॥४॥
जिन पद्म सुनंद अमंद कला । सुप्रियकर कर्म कलंक दला ॥
सुकृतारथ साम सुभाव करैं । नित भद्र समुद्र सुभद्र भरैं ॥५॥
मुनिचंद्र भवातप चूरत हैं । जिन पंचसु मुष्टि अक्रूरत हैं ॥

ॐ ह्रीं धातुकीखंडविजयमेरुभरतक्षेत्रभूतनचतुर्विंशतिजिना अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः।

ॐ ह्रीं धातुकीखंडविजयमेरुभरतक्षेत्रभूतनचतुर्विंशतिजिना अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट्।

अथाष्टक।

(नाम जिनाष्टक सामान्य श्री जगराम कृत)

कनक रकाबी के विषै, मनि भृंग भर जलसार।
धार करौं तिहुं भाव सौं, मम कर्म कलंक निवार॥
तीन जिनेसुर पूजिये, गिरि विजय सुभारत जाय।
नमन प्रभ आदिक सदा, जिहिं पूजत सुर नर राय॥ तीन०।

ॐ ह्रीं धातुकीखंडविजयमेरुभरतक्षेत्रभूतनचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जलं निर्वपामि॥१॥

चंदन घसि कपूर नीर सौं, भवताप विनाशन हेत।
जिनराज चरन चढाइये, प्रभु अजर अमर पद देत। तीन०।

ॐ ह्री धातुकीद्वीपविजयमेरुभरतभूतचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चन्दन निर्वपामि॥२॥

तंदुल शित सुन्दर शोभने, मुकता फल शशि समलेय ।
पुंज धरत उच्छाह सों, प्रभु मोहि अखय पद देय ॥ तीत०।

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपविजयमेरुभरतभतचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽक्षतान्निर्वपामि॥३॥

कमल केतुकी आदि दे, बहु फूल सुवास उदार ।
तुम पद पद्म चढ़ाय हों, मम समरशूल निरवार॥ तीत०॥४॥

ॐ ह्री धातुकीद्वीपविजयमेरुभरतभूतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्प निर्वपामि॥४॥

षट रस करि पूरन सार है, नेवज इन्द्री वलकार ।
तासों तुम पद पूजि हों, मम छुधा रोग निरवार॥ तीत०।

ॐ ह्री धातुकीद्वीपविजयमेरुभरतभूतचतुर्विंशतिजिनभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि॥५॥

दीपक दुति उद्दित है महा, घट पट परकाशनहार ।
तासु आरती मैं करौं, मम तिमिर मोह निरवार ॥ तीत० ।

ॐ ह्री धातुकीद्वीपविजयमेरुभरतभूतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि॥६॥

कृष्णागर अगर कपूरका, वरगंध ढवों तुम पास ।
कर्म जरैं मम कर्मो, तनु धूप उड़ै परगास ॥ तीन जिने० ।
ॐ ह्रीं धात[illegible]जिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

ऋतु फल्कल वर्जित सोहने, दृग मनको अति सुखदाय ।
नामौं तुम पद पूजि हौं, मम विघन सघन नशिजाय ॥तीन०
ॐ ह्रीं धातु[illegible]जिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥

यह आठौं द्रव्य सँवारिके, नमि आठौं अंग उदार ।
अष्टम छिति मोहि दीजिये, तुम आठौं गुनगनधार ॥ तीन० ।
ॐ ह्रीं धातु[illegible]जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामि ॥९॥

प्रत्येकार्घ ।

[illegible] ([illegible])

तीन तीन की प्रभा अनूप ज्ञान में लसे ।
सो जिनेश [illegible] सो हिय बसे ॥

धातु दीप पूर्व मेरु भर्त्त भूत जांनियो ।

तासुको पदाञ्ज पूज कर्म भर्म भांनियो ॥

ॐ ह्रीं रत्नप्रभाय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

वीतराग भाव जास में प्रशस्त शोभितं ।

सो अमित्त देव चित्त मो करो अछोभितं ॥ धातु०।

ॐ ह्रीं अमितोय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

संभवेशने अशेस भौ कलेश भांनियो ।

आत्म संपदा सुहेत पर्म धर्म जांनिये[1] ॥धातु०।

ॐ ह्रीं संभत्राय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

सर्व ही कलंक पंकते अटंक हैं महा ।

निःकलंकनाथ सेवतें कलंक कों दहा ॥ धातु०

ॐ ह्रीं अकलंकाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

---

१ सस्कृत पूजामें 'अमितनाथ' नाम है ।

कोटचंद जोति जास जोति तें लजात है।
चन्द्रस्वामि देवसो त्रिलोक में विख्यात है ॥ धातु०
ॐ ह्रीं चन्द्रस्वामिने नमों निर्वपामि ॥५॥

सर्व जीवकों पुनीत पुन्य लाभ देत हैं।
देवसो शुभंकर प्रमोद वृंद हेत हैं ॥ धातु०
ॐ ह्रीं शुभंकराय नमों निर्वपामि ॥६॥

साम्भूततत्त्व सर्व जास ज्ञानमें लसें।
तत्त्वनाथ देव सो त्रिलोक भर्मकों नसें ॥ धातु०
ॐ ह्रीं तत्त्वनाथाय नमों निर्वपामि ॥७॥

सर्व अंग सुन्दरं दृष्टि तुष दायकं।
स्वामि सुन्दरं नमामि सो समुद्र तारकं ॥ धातु०
ॐ ह्रीं सुन्दराय नमों निर्वपामि ॥८॥

कर्म सर्प्प दर्प्प हारि देव सो पुरंदरं ।
जास पाद पद्मकों जजैं भजैं पुरंदरं ॥ धातु० ।
ॐ ह्रीं पुरंदराय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

जासकों सुरेश औ नरेश वृंद सेवहीं ।
मैं जपों सदैव सो जिनेश स्वामि देवहीं ॥ धातु० ।
ॐ ह्रीं स्वामिने अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

देह दीप्तवान मान लक्ष्मी निधान हैं ।
देवदत्त देवनित्त भुक्ति मुक्ति दान हैं ॥ धातु० ।
ॐ ह्रीं देवदत्ताय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

आठ काठ जारिकैं सुमुक्ति वास देत हैं ।
वासवं सु दत्त दास वासवं सचेत हैं ॥ धातु० ।
ॐ ह्रीं वासवदत्ताय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

पद्धड़ी छंद—

जै रत्नप्रभ जै अमित देव। जै संभव जै अकलंक देव ॥
जैचंद्र जयति शुभ कर पुनीत। जै तत्त्वनाथ सुंदर सुमीत ॥२॥
जै देव पुरंदर जयति स्वामि। जै देववृत्त वासव नमामि ॥
जै श्रेय त्रिभुवन तेजवान। प्रति यों रक निद्धारथ महान ॥३॥
जै अमलनाथ सजम सुसैन। देवेंद्र प्रेयर जग विश्वसेन ॥
जै मेनानंद श्रैनप्रनाथ। परनीत जिनेसुर सुकन साथ ॥४॥
है सिद्धगान गुन अमल जुक्त। नायक समकित जिहिं परम युक्त ॥
जिहिं ज्ञान दरस सुख है अनंत। वीरज अवगाहन सकतवन्त॥५॥
अति सूक्षिम अव्याबाध धार। वर अगुरु लघु अनुपम उदार ॥
इत्यादि अमल गुन हैं अनंत। गनधर में कहत न लहत अंत ॥६॥
ससनर आकृति निर्मल अमल। तहँ एक रूप आतम रमन ॥

[illegible] इन्हें पद्धड़ी छंद भी कहते हैं। (२) [illegible]
[illegible] दिया है।

सो जगत नाथ करुना निधान। मम उरमें अब कीजे सुथान ॥७॥
संसार दुक्ख चक चूरचूर । समता शिव मंगल पूरपूर ॥
यह विघ्न महीरुह खंडखंड । आनद अनूपम मंडमंड ॥८॥
तुम से दाता लखि जगत राज । क्यों जांचो लघु संसार काज ॥
शिवराज हेत मोहि देह देह । तजिकै विलंब सुधि लेहलेह ॥९॥

घत्ता–जै जिन जेवंता, सुगुन अनंता, ध्यावत संता, मोद भरा ।
"वृंदावन" वंदत मन आनंदत, जै जै जै शिव रमनिवर ॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपविजयमेरुभरतभूतचतुर्विंशतिजिनेभ्य: पूर्णार्घं ।

दोहा–जो पूजै जिन दरव विधि, भाव सहित लवलाय ।
विजय भरत अतीत सो, सुरशिव सम्पत्ति पाय ॥

इत्याशीर्वाद: ।

इति श्रीविजयमेरुभरतभूतचतुर्विंशतिजिनपूजा समाप्ता ।

अथ विजयमेरुभरतभावीचतुर्विंशति जिनपूजा ।

अथ [illegible]

शोभा सागर धातु द्वीप त्यन्दिय ताके दिशा पूर्व है ।
तामें मेरु विजै विराजत महा सौवर्णभा कूर्व है ॥
ताकी दक्षिण क्षेत्र भारत विषै भावी चतुर्विंशती ।
थापों सिद्ध सुनाथ आदिक यहां श्रीसम्मदाके पती ॥

ॐ ह्रीं [illegible] जिना अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं [illegible] जिना अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः ।
ॐ ह्रीं [illegible] जिना अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् ।

अष्टक ।

[illegible] गंगाजल भर कनकझारी, शीर्षध लवन्त पियार ।
जनम जरामृत मेटन कारन, धारकें गुनगार ॥

दुजेमेरु के जजि, भरत भविष्यत ध्याय । दूजे मेरुके०।

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपविजयमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जलं निर्वपामि

केसर चंदन कदली नंदन, दाह निकंदन लाय ।
विघन ताप नाशनके कारण, जजों चरन उमगाय ॥ दूजे० ॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपविजयमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यचन्दनं निर्वपामि।२।

सोम समान सुखद शुचि सुंदर, तंदुल मंदुल लाय ।
अखै संपदा कारन पूजा, वीतराग तुमपाय ॥ दूजे० ॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपविजयमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽक्षतान्‌निर्वपामि

सुमन सुवरन सुगंधित पावन, सुवरन थार भराय ।
समर शूल निरमूलन कारन, तुम पद पदम चढ़ाय ॥ दूजे०॥४॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपविजयमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनभ्यः पुष्पंनिर्वपामि

नाना विधि पकवान वनावों, देखत मन ललचाय ।
छुधारोग निरवारन कारन, भेट करों शिरनाय ॥ दूजे मेरुके० ।

ॐ ह्रीं भानुकीर्तिप्रमुखचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि॥५॥

केवलभानु प्रकाश चराचर, तुम देखत जिनराय ।
दीप धरों ढिग नेह सहित द्रुत, ज्यों उर तिमिर नशाय ॥ द्रुजे० ।

ॐ ह्रीं भानुकीर्तिप्रमुखचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि॥६॥

करम काठ तुम ध्यान अगिन में, भसम करयो जगराय ।
दसविधि गंध सुगंधों यातें, ज्यों वसुकरम जराय ॥ द्रुजे०

ॐ ह्रीं भानुकीर्तिप्रमुखचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि॥७॥

आतम ज्ञान अनिंदित आनंद, अतुल सुफल तुमपाय ।
पूजों प्रासुक फलसों तुमपद, ज्यों शिव फल सुखदाय ॥ द्रुजे० ।

ॐ ह्रीं भानुकीर्तिप्रमुखचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फलं निर्वपामि॥८॥

आठ दरब नर लेय मनोहर, अरघ सजे उमगाय ।
बाजत द्रिम द्रिम द्रिम मृदंग गत, पूजत प्रीति बढाय ॥ द्रुजे० ।

ॐ ह्रीं भानुकीर्तिप्रमुखचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अर्घं निर्वपामि॥९॥

प्रत्येकअर्घ ।

छद लोलतरंग

सिद्ध वधूवर सिद्धसुनाथं । सिद्ध करैं सुविशुद्ध सनाथं ॥
पूजत हौं तिनकौं नुत शीशं । भाविय भर्त्त दुतीय गिरीशं ॥

ॐ ह्री सिद्धनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

सम्यक्त सार सवै गुनधामी । श्रीगुन सम्यक देव नमामी ॥पू.हौं०

ॐ ह्री सम्यग्गुणाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

नाथ जिनिंद सदानंद धारी । सो प्रभुजी सुधि लेहु हमारी॥पू.हौ०

ॐ ह्रीं जिनेद्रनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

शुद्ध चिदातम रूप विराजैं । सम्पतिनाथ सदासुख साजैं ॥ पू.हौं०

ॐ ह्री संपन्नाथाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

---

१ सस्कृत पूजाम 'संपन्नाथ' नाम लिखा है ।

ऊरध मध्य अधोपति सेवैं । स्वामिय सर्व जिनाधिप वेवैं ॥ पू. ह्रां०

ॐ ह्रीं सर्वस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामि ॥५॥

जो परतक्ष लखैं सब लोकं । सो मुनि नाथ हरै दुख थोकं ॥ पू० ।

ॐ ह्रीं मुनिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥६॥

इष्ट विशिष्ट पुष्ट चेष्टा । सो सुविशिष्ट महेष्टित चेष्टा ॥ पू० ।

ॐ ह्रीं विशिष्टाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥७॥

जासु समान नहीं जग कोई । सो जिन अद्वित नामक होई ॥ पू० ।

ॐ ह्रीं [illegible] अर्घ्यं निर्वपामि ॥८॥

तत्त्वस्वरूप प्रकाश विराजै । वचन सुधांति भजैं भ्रमभाजैं ॥ पू० ।

ॐ ह्रीं [illegible] अर्घ्यं निर्वपामि ॥९॥

---

१. [illegible] पाठ है [illegible] किया है ।

उत्तम पर्व उदोतक स्वामी । पूर्व जिनेश नमों शिवगामी ॥ पू० ।

ॐ ह्रीं पर्वनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

देव अकामुक कों नितवंदो । वांछित आनंद पाय अनंदो ॥ पू० ।

ॐ ह्रीं अकामुकाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

शुक्ल सुध्यान बलें अरि चूरे । ध्यान सुनाथ जगद्गुरु पूरे ॥ पू० ।

ॐ ह्रीं ध्याननाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

कल्प जिनेश समस्त प्रकारें । आतम को अविकल्प विचारें ॥ पू० ।

ॐ ह्रीं कल्पजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

बंध सतावन आश्रव द्वारें । संवर रोकत संवर धारें ॥ पू. हो०

ॐ ह्रीं संवराय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

स्वच्छ जिनेसुर स्वच्छ स्वरूपं । स्वच्छजती जपि हैं शिव भूपं ॥
पूजत हों तिनकों नुत शीशं । भाविय भर्त दुतीय गिरीशं ॥

ॐ ह्रीं स्वच्छनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

आनंदनाथ अनंत सुखी हैं । पूरन ब्रह्म सुमोख मुखी हैं ॥ पूजत हों० ।

ॐ ह्रीं आनंदनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

उद्योत जासु प्रभा रवि ते हैं । देव रवीप्रभ सुप्रभ से हैं ॥ पूजत हों० ।

ॐ ह्रीं रविप्रभाय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

चंद्रवो प्रभ तें प्रभभारी । चंद्रप्रभं जिनमूरति धारी ॥ पूजत हों० ।

ॐ ह्रीं चंद्रप्रभाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

आनंद कंद चिदानंद वंदो । देव सुनंद जनानंद कंदो ॥ पूजत हों० ।

ॐ ह्रीं सुनंदाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

तीनहु लोक मुनें धुनि जाको । देव सुकर्ण नमों पद ताको ॥ पूजत हों० ।

ॐ ह्रीं सुकर्णाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

नीलय कर्म उदै जड़ सोहे । देव सुकर्म जिनेसुर मोहे ॥ पूजत हों० ।

ॐ ह्रीं सुकर्माय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

जो ममता पद मुक्त भये हैं । सो अममं शिव जुक्त नये हैं ॥ पूजत हों० ।

ॐ ह्रीं अममाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

पारसनाथ शिवालय स्वामी। भव्यनिकों भवपार लगामी। पूजतहों०

ॐ ह्री पार्श्वनाथाय अर्घ निर्वपामि ॥२३॥

शास्वत आनंद कंद धरैया। शास्वतनाथ कलंक हरैया।। पूजतहों०।

ॐ ह्री शास्वताय अर्घ निर्वपामि ॥२४॥

सुदरी तथा द्रुतिविलवित छंद।

दतिय दीपसु पूरव भारते। जिन भविष्यत सद्गुण धारते॥
जजहु पूरन अर्घ चढ़ायजी। हमहिं ऑनंद कंद बढ़ायजी॥

ॐ ह्री धातुकीद्वीपविजयमेरुभात्रीचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पूर्णार्घं।

जयमाला।

घत्ता–जै जिन रमनीयं गुन कमननीयं अघदमनीयं पूजपदं।

---

१ संस्कृत पूजामें "स्वस्थस्थाख्याजेन ध्येयं स्वास्थ्यसेवकयोगिभिः" ऐसा पाठ है जिसपर से भगवान का नाम 'स्वस्थ, ऐसा निकलता है परतु कविवरने न मालूम 'स्वच्छनाथ' कहासे गृहण करके लिख दिया है।

जै शिव गमनीयं व्रत जमनीयं जुत सुमुनीयं नौमिसदं ॥१॥

[illegible] (मात्रा १६)

जिननाथ भगवान नमस्ते । सम्यक गुन अमलान नमस्ते ॥
जै जिनिंद गुन खान नमस्ते । [illegible] महान नमस्ते ॥२॥
सर्व [illegible] गुनगान नमस्ते । मुनि नायक शिवचारा नमस्ते ॥
जै [illegible] नमस्ते । अविकार जिन शिष्ट नमस्ते ॥३॥
[illegible] भगवन्त नमस्ते । [illegible] सार धन नमस्ते ॥
जै [illegible] धीर नमस्ते । [illegible] नमस्ते ॥४॥
[illegible] नमस्ते । [illegible] मंगल दान नमस्ते ॥
[illegible] नमस्ते । आनन्द कंद अंक नमस्ते ॥५॥
[illegible] नमस्ते । [illegible] नमस्ते ॥
जै [illegible] नमस्ते । [illegible] नमस्ते ॥६॥
[illegible] नमस्ते । [illegible] नमस्ते ॥
[illegible] नमस्ते । [illegible] नमस्ते ॥७॥

विजय भरतभावीय नमस्ते । चौविस शिवतिय पीय नमस्ते ॥
हरिहर नुतनित पाय नमस्ते । अमल अचल पददाय नमस्ते ॥८॥
पंच कल्यानक ईश नमस्ते । गुन अनंत जगदीश नमस्ते ॥
तारन तरन उदार नमस्ते । भविक "वृंद" आधार नमस्ते ॥९॥

घत्ता--जै जिन गुनदामं, अति अभिरामं जौजित कामं, काम ददं ।
जै मुनिगन रंजन, भ्रमतम भंजन, शिवसर मंजन, ज्ञानसदं ॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपविजयमेरुभरतभावीजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि ॥१०॥

शोरठा--दरव भाव विधि लाय, विजय भरतभावी जिन ।
जोजन जजन कराय, सो नर सुरशिव सुखलैहै ॥११॥

इत्याशीर्वादः ।

इति श्रीविजयधातुद्वीपभरतभावीचतुर्विंशतिजिनपूजा समाप्ता ।

अथ श्रीधातुकीद्वीपपूर्वविजयमेरुऐरावतक्षेत्रस्थ वर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनपूजा ।

दोहा—द्वितिय दीप गिरि विजयके, ऐरावतके मांहि ।
वर्तमान चौबीस जिन, थापों ही हुलसाहि ॥

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिऐरावतक्षेत्रवर्त्तमानजिना अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिऐरावतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिना अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः ।
ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिऐरावतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिना अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् स्वाहा ।

अथाष्टकं ।

चाल—सुनो जिनराज अरज मेरी ।
विजयमेरु उत्तर ऐरावत वर्तमान हेरी ॥ टेक० ॥
उज्ज्वल जल शमनाग्नि समान, धार तीनदेरी ।
जनम मरन मल रोग हरो प्रभु, करो न अवदेरी ॥ सुनो० ।

ॐ ह्री विजयमेरुउत्तरैरावतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जल निर्वपामि ॥१॥

कदली नंदन चंदन घॅसि करि, प्राशुक जल सेरी ।
भवतप हरन चरन परवारों, परमशांति देरी ॥ सुनो जिनराय० चरुं॥
तदुल शशि सम शित अखंड शुभ, सौरभ अविधेरी ।
पुंज धरत दुख दंद हरत, ऑनंद कंद देरी ॥सुनो०॥ तंदुल ॥
समर सुभटनर अमर सकल जन, जेर करत घेरी ।
ताहिकियौ निरमूल जजें हों, फूल ललित लेरी ॥सुनो०॥ पुष्पं ॥
निरआकुल सुख अमल अतिंद्री अनुपम तुम पेरी ।
चरु चढ़ाय जुग चरन जजौं ज्यों, टरै व्यांधि मेरी ॥सुनो०॥ चरुं॥
केवल भानु प्रकाश चराचर, तुम निरखत हेरी ।
दीपक सों तुम करों आरती, तिमिर मोह खेरी ॥सुनो०॥ दीपं ॥
करमकाठ तुम ध्यान आगिनिमें दहनकीन हेरी ।

धर सुगंध उखेय जजौं पद, जगहि अरि सेवैगी ॥सुनो०॥ धूपं ॥
मोग फलाफल अमल अनूपम तुम सुभोगनेगी ॥
नाम धामके हेत जजौं पद, प्रासुक फलसेती ॥ सुनो०॥ फलं ॥
तुम अनर्घ समता रस राशी, अविनाशी होगी ।
हम पूजत पद अर्घ धार मन, हरो जगत फेरी ॥
सुनो जिन राज अरज मेरी ।
मिले सक उत्तम गुणगन वनमान होगी ॥ अर्घं ॥

॥ पंचकल्याणक ।

अषाढ़ शुक्ल-सुकल चामर नाग, देव अपाश्रिम नमतु हैं ।
जजौं नमन मनलाय, निज पावन सेत जिन ॥१॥

ॐ ह्रीं अभिनन्दन जी निर्माति ।

सुरहैं जिनराय, सुगन्ताय पद हस्तु हैं ।

जजों चरन लवलाय विजयैरावत संत जिन ॥२॥

ॐ ह्रीं पुष्पदंताय अर्घं निर्वपामि ।

इंद्र जजत नित जाहि, अरिहंता अरिहंत सो ।
नित प्रति पूजौं ताहि, विजयैरावत संत जिन ॥३॥

ॐ ह्रीं अरिहंतायार्घं निर्वपामि ।

चारित रुचिर धराय, देव सुचारित चित हरन ।
पूजत सुरपति पाय विजयैरावत संत जिन ॥४॥

ॐ ह्रीं सुचारित्राय अर्घं निर्वपामि ।

शुद्धध्यान सुखदाय, शुद्धानंदधरें सदा ।
जजत सकल सुरराय, विजयैरावत संत जिन ॥५॥

ॐ ह्रीं शुद्धानंदाय अर्घं निर्वपामि ।

मोद अमंद धराय नंदग मोदत जगत सब ।

जजत विघन विनशाय, विजयैगवत संत जिन ॥६॥

ॐ ह्रीं नमशाय अर्घं निर्वपामि ।

पद्माकर जिनराय पद्माकर तसुदास घर ।

पूजत विपति पलाय, विजयैगवत संतजिन ॥७॥

ॐ ह्रीं पद्माकराय अर्घं निर्वपामि।

उदयानंद जिनराय, आनंद सिंधु बढ़ावहीं ।

जजतैं दुरित नशाय, विजयैगवत संत जिन ॥८॥

ॐ ह्रीं उदयानंदाय अर्घं निर्वपामि ।

रुक्म इंदु जिनराय, रुक्म इंदुसम द्युति धरैं ।

पूजत दारिद जाय, विजयैगवत संत जिन ॥९॥

ॐ ह्रीं रुक्मेंद्राय अर्घं निर्वपामि ।

श्रीहृदयानंद जिनराय, भजत मिटत विनिन अघ ।

पूजत वांछित दाय विजयैरावत संत जिन ॥१०॥

ॐ ह्री कृपालाय अर्घं निर्वपामि ।

लोकालोक लखाय, प्रोष्ठिल केवलज्ञान में ।
जजत जगत सुखदाय, विजयैरावत संत जिन ॥११॥

ॐ ह्री प्रोष्ठिलायार्घं निर्वपामि ।

प्रगट सिद्ध पददाय, सिद्धेसुर सिवतिय रमन ।
पूजत गनफन पाय, विजयैरावत संतजिन ॥१२॥

ॐ ह्री सिद्धेसुराय अर्घ निर्वपामि ।

वचपियूष सरशाय अमृत इंदु जिनराय तें ।
जजत परम पद, पाय विजयैरावत संत जिन ॥१३॥

ॐ ह्रीं अमृतइंदुजिनाय अर्घं निर्वपामि ।

स्वामिनाथ जिनराय सुगत देत शिव हेत नित ।

पूजन मनवचकाय, विजयेगवन मंन जिन ॥१४॥

ॐ ह्रीं स्वामिने नमः निर्वपामि ।

मेल्लिग जगराय शिवसाधन हेन हैं ।

पूजन वांछित दाय विजैंयगावन संन जिन ॥१५॥

ॐ ह्रीं मेनिगणाय नमः निर्वपामि ।

नाम अग्य सुभदाय, श्री सग्नाथ सुगुननिध ।

पूजन हों शिग्नाथ विजैयगवन संन जिन ॥१६॥

ॐ ह्रीं दर्शनाय नमः निर्वपामि ।

आनंद भन रागाग मेघनंद जिन त्रिजग शुत्र ।

जजन भजन भवभाग विजैंयगवन मंन जिन ॥१७॥

ॐ ह्रीं मेघनाथ नमः निर्वपामि ।

नंदकेश जिनराग केशल्याोंवि आनंद धर ।

पूजन पाप पलाय विजैयगवन मंन जिन ॥१८॥

ॐ ह्रीं नदकेशाय नमः निर्वपामि ।

हरिहर प्रीत उपाय हरि जिन पदपंकज जजत ।
पूजत विघन विलाय विजयैरावत संत जिन ॥१९॥

ॐ ह्रीं हरिजिनाय अर्घं निर्वपामि।

जै अधिष्ट जिनराय शिष्ट इष्ट दातार वर ।
पूजत अरघ चढाय विजयैरावत संत जिन ॥२०॥

ॐ ह्रीं अधिष्टाय अर्घं निर्वपामि ।

शांतिक सब सुखदाय जोगारूढ निपुनमती ।
जजों जुगल तसुपाय विजयैरावत संत जिन ॥२१॥

ॐ ह्रीं शांतिकाय अर्घं निर्वपामि ।

आनंद संपति दाय नंद स्वामि भवि वृंदकों ।
पूजत पाप पलाय विजयैरावत संत जिन ॥२२॥

ॐ ह्रीं नंदस्वामिने अर्घं निर्वपामि ।

त्रिभुवनपति थिरनाथ कुंद पार्श्व नित सेवहीं।
जजन चरन उमगाय विजयैरावत संत जिन ॥ २३ ॥
ॐ ह्रीं [illegible] अर्घं निर्वपामि।

करि उर अधिक उपाय, देव [illegible]कौं भजौं।
विघन हरन सुखदाय, विजयैरावत संत जिन ॥२४॥
ॐ ह्रीं [illegible]नाथ अर्घं निर्वपामि।

[illegible]—

सजे वसुदर्व पुनीतपुनीत। वजे सब साज सुनीत सुनीत।
जजौं उर आनंद पाय सुपाय। विजैगिर उत्तर भागसुथाय ॥२५॥
ॐ ह्रीं [illegible] अर्घं।

अथ जयमाला।

[illegible] (मात्रा ३२)

जैजै जिनेश अनुपम दिनेश भूगनम निरंज नाशन अशेष।

सेवत सुरेश वेवत गनेश महिमा महेश कारन कलेश ॥
गुन अतुल भेश मुनि भजत शेश शिवबल्लभेश हरि अरि प्रवेश।
हम शरन देश आये जगेश-भवसिंधुते समुद्धर रमेश ॥१॥

चौपाई छंद—

जै जिनराय अपश्चिम स्वामी। पुष्पदंत जैजै शिवगामी ॥
जै अरिहंत संत जन ध्यावे। देव सु चारित चित हरषावैं ॥२॥
सिद्धानद सुछंद जिनिंदा। जैजै नंदग आनँद कंदा ॥
जै पदमेश परमपद दाता। उदै नंद जै जगविख्याता ॥३॥
जै रुक्मेदु इंदु दुतिधारी। जै कृपाल करुना विस्तारी ॥
प्रेष्ठिलदेव परम वैरागी। जै सिद्धेश्वर शमता पागी ॥४॥
अमृतदेव ज्ञानामृत पूरे। जै स्वामी जिहि भव भै चूरे ॥
भैनिलांग अनंग मद गंजन। जै सरवारथ जन मन रंजन ॥५॥
मेघनंद आनँद जल पूरन। नंदकेश जिन भ्रमतम चूरन।
जै हरि देव जजत हरि पादं। जै अधिष्ट जिन कृतमरजाद ॥६॥

जैजै शांतिक शांति करैया । नंद स्वामी मम विपत हरैया ॥

कुंद पार्श्व जस राशि समलोकं । देव विरोचन मोचन शोकं ॥७॥

न पाउ रोग ईश सुखसागर । वरधमान जस जगत उजागर ॥

मुनिवृन्द सुरनर किन्नर नागर । गावत जस नाचत रससागर ॥८॥

द्रिम द्रिम द्रिम द्रिम मांदल बाजै । छम छम छम घुंघरू पग छाजै ।

कटकिंकिनी किनिनिनिनिनिकूजै । पग नूपुर झिनिनिनिनिनि गुंजै ॥९॥

गद गद गद पाठक धुनि दै है । धुंगुन धुगन गत थेई थेई सो है ॥

तट तट थर पट नाद नटंनै । मधुर मधुर सुर सुजस रटंनै ॥१०॥

इन समान गुन भगत करै है । भव भव जनित कलंक हरै है ॥

तब इंद्रन पद जुग कर जोरी । करी प्रन भर भावा भोरी ॥११॥

जै जैजै गुनसुंदर भवभय भंजन पुरंदर अनंतवरा ।

हम जनन पुरंदर मम उरमंदर अमलतपंदर भानुवरा । टेक

भुजंगप्रयात छंद ।

जजै उत्तरैरावतें वर्तमानं । विजै मेरुके जे सुधी बुद्धिवानं ।
लहैं ते इहां सौख्य इन्द्रीजनीत । अतिंद्रि लहैं फेरि होवें निचीतं ।

इत्याशीर्वादः ।

इति श्रीविजैमेरुऐरावतवर्तमान चौवीशीपूजा समाप्ता ।

अथ विजैमेरुऐरावतातीत पूजा लिख्यते ।

स्थापना छंद नंदि श्वराष्टक भाषाका—

गिरि विजय सुर उत्तर सार एरावत सो है ।
तित तीत जिनेश उदार सुरनर मन मोहै ॥
थापौं उर प्रीत लगाय पूजन हेत सही ।
प्रभु आपु विराजा आय दायक मुक्तिमही ॥१॥

ॐ ह्रीं धातुकी द्वीप विजयमेरु ऐरावतातीत जिन-अत्रावतर अवतर संमौ-षट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं पावापुरीशिखरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो जिन । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं
ॐ ह्रीं पावापुरीशिखर निर्वाणक्षेत्रेभ्यो जिन अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्थापन ।

अथाष्टक ।

चंडरुद्र भाषा ३२ ।

सुरसरितवार प्रासुक अपार भरि हेम भार थारा निकार ।
हे जग अपार जिनवर उधार सुथिल्ल सवार मल्ल करम टार ॥
गिर विजे धार उत्तर सिंगार नित तीन चारि अरु बीस सार ।
पूजों निहार प्रभु मो अपार संसार सागर तार तार ॥

ॐ ह्रीं पावापुरीशिखरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो जलं निर्वपामि ।

कर घनसार शीतल निहार चन्दन उदार घसिले सार ।
पूजों प्रचार जिनगुन अपार भवताप हार सुखद अपार ॥ गि०

ॐ ह्रीं पावापुरीशिखरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो चंदन ।

अक्षत विमल दीर्घ सघन अभिराम अति सुगंधकार ।

तसु पुंजरक्ष सुंखभुजस्वक्ष कलिकुंजनक्ष शिवगक्षसार ॥ गि०।

ॐ ह्री धातुकीद्वीपविजेमेरुऐरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो तंदुल ।

यह मदनशूल सब जगतमूल कारक अकूल तुमकिय निमूल ।
तातें सुफूल धरिहों अधूल प्रभुदे अतूल शुभ शीलमूल ॥गि०।

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपविजैमेरुऐरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं ।

खाजे रसाल मोदक विशाल भरि कनक थाल प्राशुक सुहाल ।
सो हेदयाल तुमनिकट हाल धरि नमतभाल आकुलनिकाल गि०

ॐ ह्री धातुकीद्वीपविजैमेरुऐरावतातीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो नैवेद्य निर्वपामि

दाहक अमंद दीपत सुछंद सो जजि जिनिंद जगवंद चंद ।
भ्रमतमनिकंद केवलदिनंद प्रगटै अफंद सुखवृंद नंद ॥ गि०

ॐ ह्री धातुकीद्वीपविंजमेरुऐरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं ।

दशगंध आन सौरभ अमान खेवत प्रमान वसुकरम हान ।
दिशिदिशि उड़ान मनु मेघजान निरततसयान केकीसुजान॥गि

ॐ ह्रीं पाण्डुशिलायां जिनेन्द्राभिषेकप्राप्तानन्तगुणजिनजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ।

फल पक्व मिष्ट नवशिष्ट इष्ट मेलि थाल पूजों जगिष्ट ।
हनि अष्टदुष्ट शिव दे सुपुष्ट हैविशद दृष्ट दायक अभिष्ट ॥ ७॥

ॐ ह्रीं पाण्डुशिलायां जिनेन्द्राभिषेकप्राप्तानन्तगुणजिनजिनेभ्यः फलं निर्वपामि ।

जलफल मिलाय वसु अंगनाय बाजनबजाय सुख सुजशगाय।
मन श्रीजिनाग मनवचनकाय वंछितलहाय भवभय नशाय ।
गिरि विजयथाग उत्तर सिंगार तितर्तान चाअक वीसमार ॥
पूजों निहार प्रभुमो अबार संसारअपारतें तार तार ॥

ॐ ह्रीं पाण्डुशिलायां जिनेन्द्राभिषेकप्राप्तानन्तगुणजिनजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामि

अथ प्रत्येकार्घ ।

चौपाई मात्रा १६

कनकरूप महागिरि जानों । भद्रक वन्न वज्रजिन मानों ।
दक्षिण दीप गिरि विजय सुदर्शन अनीत जिन पूजों ॥१॥

ॐ ह्रीं वज्राय अर्घं निर्वपामि ।

उदय विशुद्ध सदा जिन धारे।उदयदत्त जिनवर अविकारे।।दु०ऐ०

ॐ ह्रीं उदयदत्ताय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

सूरवीरवर सूर्य जिनंदा । भजों भविक मोदनगन चंदा । दु०ऐ०।

ॐ ह्रीं सूर्याय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

पुरुषोत्तम नित सेवत जाकों । पुरुषोत्तम जिनसदनसुधाको।दु०ऐ०

ॐ ह्रीं पुरुषोत्तमाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

भविकवृंदकों शरन सहाई । शरणस्वामि त्रिभुवनके राई ।दु० ऐ०

ॐ ह्रीं शरणाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

भवि समोध दायक शिवधामं । श्री अवबोध करों परनामं ।दू०ऐ०

ॐ ह्रीं अवबोधाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

परम पराक्रम क्रांति धरैया । निर्घटकजिन विपति हरैया।दू० ऐ०

ॐ ह्रीं निर्घटकाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

अगम पराक्रम जामें सोहै। सो विक्रमजिन जनमन मोहै॥ दु०गृ०

ॐ ह्रीं विक्रमाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

हरिहर इंद्र चंद पद वंदै। सो हरिंद केवल अभिनंदै ॥ दु०गृ०

ॐ ह्रीं हरिंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

मनि शिवपथ पंथी पायेयं। परिब्रितिजिन मुनिगन ध्येयं॥ दु०गृ०

ॐ ह्रीं परिब्रितिजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

भविजनकों पद दे निर्वानं। जिन निरवान सू भगवानं॥ दु०गृ०

ॐ ह्रीं निर्वाणाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

दोनों धर्मधुराधर स्वामी। धर्महेत पद परम नमामी॥ दु०गृ०

ॐ ह्रीं धर्महेताय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

चतुरानन चतुरानन चरवानं। देव चतुर्मुख मंगल मानें॥ दु० गृ०

ॐ ह्रीं चतुर्मुखाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

इंद नरिंद चंद पद वंदै। सुकृतइंद जन वृंद अनंदै॥ दु० गृ०

ॐ ह्री सुकृतेंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

श्रुति अंबुद्धि भविजन श्रुतिद्धारे । देव श्रुतंबुधि अंबुधि तारे ॥ दु ०ऐ०।

ॐ ह्री श्रताम्बुधाये अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

आदितसम तन विमल दिपै है । विमलादित जिन करम खिपै है ॥ दु.ऐ

ॐ ह्रीं विमलादित्याय अर्घ निर्वपामि ॥१६॥

देव देवपति नमत अनेकं । देवदेवजिन नमों चिदेकं ॥ दु० ऐ०।

ॐ ह्री देवदेवाय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

धरनी धर धरनेंद्र सुरेंद्रं । सेवत नित धरनेंद्र जिनेंद्रं ॥ दु० ऐ०।

ॐ ह्री धरनेंद्राय अर्घ निर्वपामि ॥१८॥

भविजन भव जलतें उद्धारे । तीरथ नाथ नमों अविकारे ॥ दु०ऐ।

ॐ ह्री तीर्थनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

परमानंद निरंतर भोगी । उदयानंद शुद्ध उपयोगी ॥ दु० ऐ०।

ॐ ह्री उदयानंदाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

सम्वाग्य पद सिद्ध प्रदाता । सम्वाग्य जिन त्रिभुवन ताता ॥द्रु०गे
ॐ ह्रीं सर्वांग अर्घं निर्वामि ॥२१॥
धनिक कह धनधान्य चढावें ।धार्मिक जिन जन मुक्त चढावें ॥द्रु०गे०
ॐ ह्रीं धार्मिनाय अर्घं निर्वामि ॥२२॥
गगन क्षेत्र के भवि शिर नावें । क्षेत्रस्वामि सो प्रीत चढावें ॥द्रु०गे०
ॐ ह्रीं क्षेत्रस्वामिने अर्घं निर्वामि ॥२३॥
इंद्र चंद्र दिन इंद्र भजें हैं । जिन हरिचंद सुबोध सजे हैं ।
दुनियाँ गिरि विजय पद पूजो । भगवन अतीत जिन पूजो ॥
ॐ ह्रीं भगिनाय अर्घं निर्वामि ॥२४॥
सेज-पुष्प अन्न बनाय वर पूजों उच्चर ध्यान ।
विजयभगवन तीन जिन नमों जोरि जुग पान ॥२५॥
ॐ ह्रीं विजयभगवानाय पूर्णार्घं निर्वामि स्वाहा ।

अथ जयमाला ।

घत्तानंद छंद ।

अविचल थल जुत्ता, शिवसुख भुक्ता, उक्तिनिरुक्ता, मुक्तिधरा ।
भ्रमतम शतखंडा, आनंद मंडा, जैं जै जै शिव रमनि वरा ॥१॥

कामिनी मोहन छंद–

जयति वज्रेश वज्रेश पूजत चरन ।
जय उदय दत्त सुख उदय भविजन करन ॥
जयति जिनसूर्य भविजलज के सूर है ।
जयति पुरुषोत्तमं ज्ञानरस पूर है ॥२॥
शरन स्वामी त्रिजगजीव कों शरन हैं ।
देव अवबोध बुधि विसद विस्तरन हैं ॥
जयति विक्रम करम शत्रु तुम चूरियौ ।
जयति निरधंद तुम सामरस पूरियौ ॥३॥
जजत हरिइंद हरिइंद पद आइकैं ।

भजन परमेश्वरिसहि त्रिभुवन ध्यानकैं ॥
देख निरवान निरमान निज दासकों ।
हरसके देख जिन पूरि भरि मासकों ॥४॥
चतुरमुख देख नित चतुर मुख सेवते ।
सकल जिनराज गुन सकल जन वेवते ॥
देख श्रुतिसिंधु मतिसिंधुनें नाहरों ।
विमल आदित्य सम मुकत पिम्नागहीं ॥५॥
देख समकों चतुर्मेव सुर सेवते ।
देख धरनेंद्र गुन सुमुन मन वेवते ॥
नाथ संसार जगत जालनें कारियो ।
उदय आनंद चानंद मोहि चारियो ॥६॥
जगत सम्यान सम्यान दातार को ।
पार्श्व देख जिन परम आधार को ॥
देख स्वामी सुकल पंथ दायक सदा ।

देव हरिचंद पद शरन हमने गहा ॥७॥

ए चतुर बीस जगदीश नित वंदिये ।

विजय ऐरावतें तीन अभिनंदिये ॥

तरन तारन हरनें करम जगजन्त के ।

गुन अमल अचल अनुपम लसै संतकै ॥८॥

ज्ञान द्रिग शर्म वीरज विशद लसत हैं ।

सो परमदेव मो मन सदा वसत है ॥

अरज कर जोरि जुग करहुँ सुन लीजिये ।

धरम के नदकौं परम सुख दीजिये ॥९॥

गता–जैजै करुनाकर मोह तिमरहर ज्ञानदिवाकर उदयकरा ।
संशयतम भंजन मुनिमन कंजन रंजन जै जै विघन हरा ।

अथाशीर्वादः । चावाले छंद ।

जो पूजे जिनराय पाय जुग दरव भाव विधि मोदधरे ।
धातु दीप गिरि विजयेरावत तीत जगत जन भीत हरे॥

सो पावे धन धान्य पुत्र प्रिय मित्र कलत्र प्रवीन वरे।
सुगति होय चक्रपति ह्वैकें धर्मचक्र धरि मुक्ति वरे॥

इति धातुकीद्वीपविदेहक्षेत्रस्थविंशतिजिनपूजा समाप्ता।

अथ भावीचतुर्विंशतिजिन पूजा प्रारभ्यते

नंदीश्वराष्टक की चाल।

वर धातुकी द्वीप विशाल पूरब मेरु कहा।
तिन दक्षिण भरत विशाल शोभा देत महा।
तहँ भावी जिन चौबीस सब विधि ज्ञायक हो।
थापूं हौं मैं जगदीश दास सहायक हौ॥

ॐ ह्रीं भाविचतुर्विंशतिजिन अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं भाविचतुर्विंशतिजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं भाविचतुर्विंशतिजिन अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनं।

अथाष्टकं ।

चाल सुन्दरी छन्द ।

परम पावन वारि सुधारिये । जजत हौं मलकर्म निवारिये ।
दुतिय दीप विजै अइरावते । जिन भविष्य जजौं मनभावते ॥

ॐ ह्रीं विजयैरावतभावीजिनेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल ।

कदलिनंदन चंदन लेइयै । जजतु हौं भवताप उछेइयै ।दु०।

ॐ ह्रीं विजयैरावतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चन्दनं ।

सुरभि तंदुल मंदुल लाइये। निकट धारि अखे पद पाइये ॥दु०॥

ॐ ह्रीं विजयैरावतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो तंदुलं निर्वपामि ।

समरशूल निमूलन कारने ।सुभग फूल धरों मदटारने ॥ दु०

ॐ ह्रीं विजयैरावतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ।

चरुरशाल मनोहर लैधरों । सकल आकुलकल्मषकों हरों ।
दुतिय दीप विजैऐरावते । जिन भाविष्य जजों मन भावते ॥

ॐ ह्रीं त्रिलोकगतनभोत्तमाजितजिनेभ्यो चरु निर्वपामि ।

तिमिरनाशक दीपक भारती। करत हौं प्रभु सन्मुख आरती॥दु०

ॐ ह्रीं त्रिलोकगतनभोत्तमाजितजिनेभ्यो दीप निर्वपामि ।

अगर आदि दशांग सुधूपजी। दहत कर्म जरें सु विरूपजी॥दु०

ॐ ह्रीं त्रिलोकगतनभोत्तमाजितजिनेभ्यो धूप निर्वपामि ।

फल सुपक मनोग रसाल हैं। जजत वांछित देत विशाल हैं।दु०।

ॐ ह्रीं त्रिलोकगतनभोत्तमाजितजिनेभ्यः फल निर्वपामि ।

जल फलादिक को मजि अर्घ है। जजत आनंद होत अनर्घ है॥

दुतिय दीप विषै पुरावने। जिन भविष्य जजो मन भावने॥

ॐ ह्रीं त्रिलोकगतनभोत्तमाजितजिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामि ।

अथ प्रत्येकार्घ।

दोधक [illegible] ।

वीर जिनराज आस्त्र गोमं, राग विरोध तिन्हैं निज थोकं ।

धातु वजै गिरि उत्तर जाई । भवियदेव जजौं शिरनाई ॥

ॐ ह्री वीरनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

देव विजै अरि जीत विराजै । सुदर श्री उर अंतर छाजै ॥ धा०

ॐ ह्रीं विजयाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

सत्यप्रभु बच सत्य बखानैं । सत्य प्रभाजुत भौतम मानैं ॥धा०

ॐ ह्री सत्यप्रभाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

विष्टर जासु मृगेंद्र लसै है । देव मृगेन्द्र कुकर्म नशै है ॥ धा०

ॐ ह्रीं मृगेन्द्राय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

चिंतित लाभ सुदेत जिनिंदा । देव सुचिंतमनी सुखकंदा ॥ धा०

ॐ ह्री चिंतामणिनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

शोक समूह विनाश करै हैं । आनंद थोक अशोक भरै हैं ॥धा०

ॐ ह्री अशोकाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

कर्म गयंग मृगेन्द्र समानं । सो द्विमृगेंद्र नमों भगवानं ॥ धा०

ॐ ह्रीं त्रिगेंद्राय नमः निर्वपामि ॥७॥

नष्ट कियो अरि अष्ट प्रकारा । श्री उपशाशिक पर्म उदारा ॥धा०

ॐ ह्रीं उपशाशिकाय नमः निर्वपामि ॥८॥

चन्द्रसमान सु आनन सो है । पद्मसुचंद्र जगज्जन मो है ॥धा०

ॐ ह्रीं पद्मचंद्राय नमः निर्वपामि ॥९॥

भव्यक मोदनि इंदु समानं । बोधक इंदु नमों धरि ध्यानं ॥धा०

ॐ ह्रीं बोधकेन्दवे नमः निर्वपामि ॥१०॥

छंद चौपाई—

चिंता उतपन्न हैं पाला । चिंता हिम श्री जिनगुनमाला ।

धातु त्रिजे गिरि उत्तर आई । भाविचंदन जजों सिरनाई ॥११॥

ॐ ह्रीं चिंताहिमाय नमः निर्वपामि ॥११॥

साहस उर उत्साह धरे है । उत्साहक जिन पुन्न रहे है ॥ धातु त्रिजे०

ॐ ह्रीं उत्साहकाय नमः निर्वपामि ॥१२॥

शिव सुख सहित अपासिक देवा। चतुनिकाय करें सुरसेवा॥धा०

ॐ ह्री अपासकाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

करम ज्वाल कँहॅ मेघसमाना। जै जलदेव जगत मनमाना॥धा०

ॐ ह्री जलदेवाय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

अरिको घातन जाकौं लागै। नारिकदेव भजें भय भागै ॥धा०

ॐ ह्री नारिकाय अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

शांति सुधारस मेघ जिनिंदा। जै अनिंद्य जिन आनंदकंदा। धा०

ॐ ह्री अनिंद्याय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

नाग इंद आदिक सुर सेवैं। नाग इंद जिन मेटि कुटेवैं ॥धा०

ॐ ह्री नागेंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

नीलोत्पल सम श्याम विराजै। नीलोत्पल जिन समता साजैं॥धा०

ॐ ह्री नीलोत्पलाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

मेरु समान अकंप सरुपं। अप्रकंप करुणा रस कूपं ॥धा०

ॐ ह्रीं भगवान अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

हित कारज में पुन्न स्वामी । नमों पुरोहित जिन शिवगामी ॥धा०

ॐ ह्रीं पुरोहिताय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

पापताप भव भेदन हारे । भिद्‌कनाथ नमों अनिकारे ॥धा०

ॐ ह्रीं भिद्‌काय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

सदा भगतके पास विराजें । पार्श्वनाथ भजतें भय भाजें ॥धा०

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

वच प्रवृत्त तज निर्वच स्वामी । दिव्य ध्वनि उपदेशक नामी ॥धा०

ॐ ह्रीं निर्वचनाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

शेष दोष तजि मग प्रकाशे । नाथ विशेष मोक्ष सुखराशे ॥

भातु विजे गिरि उत्तर जाई । भाविन देव जजों शिरनाई ॥२४॥

ॐ ह्रीं गिरिनाराय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

दोहा—आठ दरबके अरघसों पूजों चन्न जिनेश ।

विजयैरावत भावि तव नाशत सकल कलेश ॥

ॐ ह्रीं विजयैरावतभावीचतुर्विंशति जिनेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामि ।

अथ जयमालं ।

घत्ता—परपरनति चूरन समता पूरन जै जिनराज अनंतगुनी ।
नित सुर जश जंपत अंत कुकंपत सेवत संपत होत धनी॥१॥

चौपाई छंद ।

बीर जिनेश नमैं धरि धीरं । विजै देत नित विजै गहीरं ॥
सत्य पद्म जिन सत्य प्रभावी । सदा मृगेन्द्र सुरेन्द्र जजावी ॥२॥
चिन्तामनि चितचिंतित पूरैं । सदा अशोक शोक चक चूरैं ॥
मृगपति सदा नमें दुमृगेंद्रं । उपवाशिक जै जैति जिनेंदं ॥३॥
पद्मचद मुनि कैरव चदा । बोधकेतु भवि कमल दिनदा ॥
चिताहिम मम आरति नाशैं । उत्साहक उत्साह प्रकाशैं ॥४॥
हे अपाकि जिन हरि भवपाशी । सदा देवजल जिन अविनाशी॥
नारक गति नारक जिन भंजै । जगत पूज अनिद मनरंजै ॥५॥

२०

नाग इन्द्र नागिंद्रनि ध्यावैं । नीलोत्पल जिन दुति दरशावैं ॥
भमकंप पद देत अकर्णा । शिव शिव दिये पुरंशिव जंपा ॥६॥
मेरक कर्म भजो जिन सिद्ध । पार्श्वनाथ जिन मन आनन्द ॥
निर्वाणा गुनरतन अगोचर । श्रीनिर्वाण शिव पांग करोतर ॥७॥
ग नवतीस भविजन स्वामी । त्रिजगमह नरायन नामी ॥
गनधर अमरनि पावन पर ध्यावैं । गुनसागरको पार न पावैं ॥८॥
तिनमों अरज करों कर जोरी । हरो सब भवबाधा मेरी ॥
आठ कर्म मोहि घेरि रहे हैं । इन सब दुख अनंत सहे हैं ॥९॥
सो दुख दूरि करो जिन स्वामी । बारबार पदपद्म नमामी ॥
मनो अरज किंप नव भारी । शुभ्रावनको मनहरि नारी ॥१०॥

घत्ता—जै जै जिनभानं, भूगतमहानं, भविकमलानं, मोदकरं ।
शिवमग परकाशक, जै जमनाशक, केवलबोध अगाधधरं ॥१॥

ॐ [illegible] ।

महिन जिनेश गुनावन वान । त्रिय गिरिके सुजजे धरि ध्यान ।

मिले मनवंछित आनंद ताहि । अनुक्रम सों शिवधाम लहाहि ॥

इत्याशीर्वादः

इति श्रीविजैमेरुऐरावतभावीचौवीशीपूजा समाप्ता ।

——*०*——

अथ श्रीधातुकीदीप अचलमेरु संबंधी पूजा ।

(प्रथम चारि विदेहनिके चारि विरहमान पूजा प्रारभ्ते)

द्रुतविलंबित तथा सुन्दरी छंद ।

दुतिय दीप सुधातुकि सोहनों, अचलमेरु तहां मनमोहनों ।
तसु विदेहनिमें जिन चार हैं, तिनहिं थापत आपत टार हैं ॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुविदेहसंस्थितविहरमानजिन सूरप्रभ-विशालकीर्ति वज्रधर चंद्रानन अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं अचलमेरुविदेहसंस्थितविहरमानजिन सूरप्रभ-विशालकीर्ति वज्र धर चंद्रानन अत्र तिष्ठ ठ:ठः स्थापन ।

ॐ ह्रीं [illegible] जिन गुणगण [illegible] जलं निर्वपामि स्वाहा ।

अथाष्टक चाल टप्पा की ।

प्रभु पूजों हो चरना । त्रितिय मेरु सुविदेह में॥प्रभू०॥ ॥टेक॥

उज्ज्वल जल भरि कनक भृंगमें धाग मनमुख करना ।

जनम मरन मल धोय दुरित भव, सागर पार उतरना ।

प्रभू पूजों हो चरना । तृतिय मेरु सुविदेह में ॥ प्रभू पूजोहो०॥

ॐ ह्रीं [illegible] जिन सुगन्ध-[illegible] जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामि स्वाहा ।

केसर चंदन केवली नंदन कुंकुम धासिकर घसना ।

जजत जिनेसुर चरन कमल जुग भवाताप परिहरना ॥प्रभू॥

ॐ ह्रीं [illegible] जिन [illegible] संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामि ।

तंदुल अमल निशाकर से शुभ सुवरन थारी भरना।
पुंज धरत जिनराज चरन ढिग तुरंत अखे सुख वरना॥प्रभू॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुविदेहसंस्थितविहरमान जिन सूरप्रभ-विशालकीर्ति वज्रधर चन्द्राननाय तंदुलं निर्वपामि।

कमल केतुकी वेलि चमेली सुमन सुमन सम वरना।
समरशूल निरमूल करनकों जजों जगत गुरु चरना॥प्रभु०॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुविदेहसंस्थितविहरमान जिन सूरप्रभ-विशाल कीर्ति वज्रधर चन्द्राननाय पुष्पं निर्वपामि।

नव्य गव्य पकवान विविध मनमोदन मोदक करना।
अंजुलि मंजुलि जोर जजन पद क्षुधारोग निरवरना॥प्रभु०॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुविदेहसंस्थितविहरमान जिन सूरप्रभ-विशालकीर्ति वज्रधर चन्द्राननाय चरुं निर्वपामि।

दीपक जोत उद्योत होत तम खोत धूम विनु धरना।

तासों जजन जगनिरवि तुमपद तिमिर मोह विघटना ॥प्रभु॥

ॐ ह्रीं अत्यन्मेरुविदेहक्षेत्रस्थविद्यमानजिन सुरप्रभ विशालकीर्ति वज्र-धर चन्द्राननाय दीपं निर्वपामि ।

धूप दशांग सुगंधित लेकर खेवत सनमुख करना ।
आठकाठ अग्निमें जरें सो धूप धूम विस्तरना ॥प्रभु०॥

ॐ ह्रीं अत्यन्मेरुविदेहक्षेत्रस्थविद्यमान जिन सुरप्रभ-विशालकीर्ति वज्र-धर चन्द्राननाय धूपं निर्वपामि ।

आम्र कामरक अनार सार फल भार लिये शुचि वरना ।
तासों जजन विघन परिहरिकर तृप्ति मुक्तफल धरना ।प्रभु०

ॐ ह्रीं अत्यन्मेरुविदेहक्षेत्रस्थविद्यमान जिन सुरप्रभ-विशालकीर्ति वज्र-धर चन्द्राननाय फलं निर्वपामि ।

जलफल सकल मिलाय मनोहर अरघ करत गुन वरना ।
पूजत चरन जुगल जिनवरके पूजन वंछित करना ॥

प्रभु पूजों हो चरना, तृतीय मरुसों विदेहे में। प्रभू पूजोहो०॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुविदेहसस्थितविहरमान जिन सूरप्रभ-विशालकीर्ति वज्रधर चंद्राननाय अर्घं निर्वपामि।

अथ प्रत्येकार्घं।

चाल नंदीश्वराष्टक की

सूरप्रभ सूरज चिन्ह शिवमग दरशावें।
भद्रातें जनम जु लिन्ह विजयपुरी गावें॥
नृप नागराज महाराज सीतोत्तर जानो।
तृतियाचल अचल समान पूजत सुखमानो॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपपश्चिममेरुपट्खडमंडलमडितविदेहक्षेत्रस्थ चक्रवर्त्यादि सेवित समवशरणादिविभूतिसयुक्त श्रीसूरप्रभाय अर्घं।

सीता दिग दक्खिन मान अचलाचल सोहै।
सुविशाल कीर्त भगवान चंद चिहन मोहै।

नर पुंडरीक पुर जान राय विजयापति हैं ।
विजया जननी गुणखान पूजत जापति हैं ॥

ॐ ह्रीं धातुकीखंड पश्चिममेरु सीतानदी दक्षिणे [illegible] ॥२॥

जिन वज्र धरेश महेश शंख निहन गजे ।
सीतोदा दक्षिन देश अनन्तानन्त छाजे ॥
नगरीय सुसीमा मातु मरस्वति मनमें है ।
पदमारथ नृप मम आतु पूजन सुख हो है ॥

ॐ ह्रीं धातुकीखंड [illegible] ॥३॥

चंद्रानन आनन चंद्र वृषभ ध्वजा धारी ।
पद्मावति मात अमंद अनन्तानन्त भारी ॥

सीतोदा उत्तर धाम पुंडरीक नीमें ।

वलमीक पिता अभिराम पदमावति जी में ।

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपअचलमेरुसीतोदाउत्तरभागे पट्खडमंडलमडितचक्रवर्त्यादि-सेव्यमानसमवशरणादिशोभाविराजमानविहरमानश्रीचंद्राननाय अर्घं॥४॥

चहुसंग सहित वृपभाप, करत विहार सही ।

गनधर सेवत अभिलाप, पावत मोप मही ॥

पद पूरन अरघ चढ़ाय सेवंत हौं स्वामी ।

मोहि आतमज्ञान बढ़ाय कीजे शिवगामी ॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपअचलमेरुविदेहसस्थितविहरमानजिन सूरप्रभ विशाल कीर्ति वज्रधर चन्द्राननाय पूर्णार्घं ॥

अथ जैमालं ॥

घत्ता–जै चारि जिनंदा आनंदकंदा विहरमान दुखदंद हरा

समवश्रृत स्वामी त्रिभुवन नामी विश्रामी सुविदेह वरा ।

मोतीदाम छंद—

नमों जिन सूर प्रभु अभिराम । जगज्जन कंजनिकों दिनस्वामि ।
विनाश सुकोमल नग सरवज्ञ । गनेन्द्र जपैं गुन गावत तज्ञ ॥२॥
सदा जग मध्य महेश जिनेश । कुकर्म कुलानल वज्र समेश ।
नमों जिनचंद्र सु आनंद कंद । सुभव्यकमोद प्रमोदन चंद ॥ ३ ॥
समवसृत मंडित राजत एव । विभूत अनूप लसै स्वयमेव ॥
सुरेश सदा पद सेवत आन । गनेश करैं जस तत्व बखान ॥४॥
नरेन्द्र अशेष नमैं करजोर । अनेक सुभव्य सुनैं धुनि घोर ।
अनादि मिथ्यात मिटावन हेत । लहैं केइ केवल ज्ञान अनंत ॥५॥
केइ मुनि श्रावकको गहि सूत्र । लहैं सुरसंपति पूरन पुत्र ॥
केइ सुरसुंदर भक्ति करंत । बजावत गान समाज गहंत ॥६॥
नचै केइ भाव बनाय पुनीत । रचै पग नूपुर अद्भुत गीत ॥
तनांतननंतननं तनतोर । करै ध्वनि किंनि किनिकिनि घोर ॥७॥
तथा थमथा थमथा थिनकार । नचै तत थुंगत थुंगत पदसार ॥

नौ.नौ. १०५ प. १०५

द्रिम द्रिमि द्रिमिनाद करै मिरदंग। सुरान्बित चग उपंग अभग॥८॥
तनंननतान महानभनंत । इनादि समाज सजत महंत ॥
समौभ्रृत माहि वन्यौ सुख साज। वनै नहि भाषत सो सब आज९
हमें यह आश लगी जगदीश। मिलै कब दर्शन हे गुनईश।
वुलाय समीप सुनों तुम वेन। लहौं निज आतम ज्ञान सुचैन १०
घत्ता-जै जै गुन छायक त्रिभुवननायक विघनविनायक बोधमहा
बंदतगननायक नितसुखदायक अव सब लायक शरणागहा
ॐ ह्रीं अचजमेरुविदेहसस्थितविहरमानजिनेंद्रेभ्यो महार्घंनिर्वपामी।

कवित—

सूरप्रभ सु विशालकीर्त जिन वज्र धरेश अगम गुनधाम।
चंद्रानन ये चार तीर्थपति अचल विदेहनि में विसराम ॥
कबहुक करहिं विहार कबहुं थित समवशरन शोभित अभिराम
तिनहिं जजत मनवंछित सुखलहि मुकत होहि तिहि करो प्रनाम

शालि अखंडित उज्जलौ हो, शशिसम द्युति दमकाय ।
पुंज धरत तुम चरन ढिग हो, देहु अखैपद गाय ॥ सदा ॥
ॐ ह्रीं नन्द्येकभरतनैमानचतुर्विंशतिजिनेंद्रेभ्यो अक्षतं निर्वपामि॥३॥
बेल चमेली केतकी हो, सुमन सुमन ममलाय ।
तातें तुम पद पूजते हो, समर शूल नशिजाय ॥ सदा० ॥
ॐ ह्री नन्द्येकभरतनैमानचतुर्विंशतिजिनेंद्रेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥४॥
खाजे ताजे साजके हो, मोदन मोदक लाय ।
तासों तुम पद पूजते हो, क्षुधारोग नशि जाय ॥ सदा० ॥
ॐ ह्रीं नन्द्येकभरतनैमानचतुर्विंशतिजिनेंद्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि॥५॥
दीपकजोति सुहावनी हो जगमगात सुखदाय ।
तासों आरती करत हौ हो, तिमिर मोह निशि जाय ॥सदा०॥
ॐ ह्रीं नन्द्येकभरतनैमानचतुर्विंशतिजिनेंद्रेभ्यो दीपं निर्वपामि॥६॥

कृष्णागर आदिक दशों हों, गंध सुगंधित लाय ।
धूप उखेवों चरन ढिग हो, अष्ट करम जरि जाय ॥ सदा० ॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेंद्रेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

मधुर रसीले पावने हो, श्रीफल सुंदर लाय ।
तासों तुम पूजा करत हो मुकत महाफल पाय ॥ सदा० ॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतवर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥

जल चंदन को आदि दे हों आठों दरव मिलाय ।
सो ले तुम आगे धरों हों संकट कोट नशाय ॥
सदा श्रीजिनवरका, पूजा करों सुखदाय ।
अचलमेरु दच्छिन दिशा हो भरतक्षेत्र दरशाय ।
वरतमान चौबीस जिनको पूजत सुरपत पाय ॥सदा श्रीजिन०

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतवर्तमानचतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं निर्वपामि ॥

अथ प्रत्येकार्घ ।

चौपाई ३२—

जगदानंद कंद सुख वृंदा । विश्वचंद जिन आनन चंदा ॥
अचल मेरु भारत सुखदाई । वर्तमान पूजौं जश गाई ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं विश्वचन्द्राय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

सकल धरम मारग परगाशे । कपिल देव शमता सुख राशे ।
अचल मेरु भारत सुखदाई । वर्तमान पूजौं यश गाई ॥ २॥

ॐ ह्रीं कपिलाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

वृषनायक वृषभेश्वर स्वामी । सुभग शील संजुत शिवगामी । अ०

ॐ ह्रीं वृषभाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

आनम जोनि माहिं सब व्यापा प्रियद्र्यान जिन विगतकलापा अ०

ॐ ह्रीं प्रियतेजाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

विषय अंग अनंग मदगंजन । ध्यावो भविक मोद मन रंजन अ०

ॐ ह्रीं [illegible] अर्घं निर्वपामि ॥५॥

चारित रुचिर पात्र अभिरामी । चारित नाथ जिनेस नमामी ।अ०

ॐ ह्रीं चारित्राय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

शमदमप्रशमसहित नितराजै । प्रशमस्वामि जमजीति विराजै ।अ०

ॐ ह्रीं प्रशमस्वामिने अर्घं निर्वपामि ॥७॥

प्रभादित्य पद तिहुं जग वंदैं । आदत प्रभा जीति आनंदैं ।अ०

ॐ ह्रीं प्रभादित्याय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

छंद पाइता मात्रा १४ ।

जिन मुजकेश पद ध्यावो । मन वांछित आनंद पावों ।
तृतियाचल भारत माहीं । पद पूजों वस्तनु आहीं ॥९॥

ॐ ह्रीं मुंजकेशाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

तपसों तन दीपत जाको । जिन पीतवास कहि ताको ॥तृ०॥

ॐ ह्रीं पीतवासाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

नर ईश सुभग डर्ग । नमनै तु सुगनिग गीगं ॥ तुरीनाथ० ॥

[illegible]

दुग्धा मुद्रा कहि मीनों । जिन दयानाथ अपलीनों ॥तु०॥

[illegible]

सु नक्षत्रगति नम काना । सु नक्षत्रगति जिनगाथा ॥तु०॥

[illegible]

चतुर्थ गयंद मुगिंद । जिन सिंहनाथ सु जिनिंद ॥तु०॥

[illegible]

हर पेखत हर मोहे । जिन चक्रपी मन मोहे ॥तुरीना०॥

[illegible]

जिन नाद जगी मुनिराजा । जिनके अधीन सब काजा ॥तु०॥

[illegible]

समवशरण रची धागि । श्रीपाल सबोहनि नागि ॥ तुरीना०॥

ॐ ह्रीं श्रीमालाय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

तिँहु जोग हनेसु अजोगी । निज जोगे सुधारस भोगी ॥तृ॥

ॐ ह्रीं अयोगाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

सु अजोगनाथ पद सेवो । सब जोग समग्री लेवो ॥तृतीया०॥

ॐ ह्रीं अजोगनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

करिकों हरि जेम विदारें । तिमि काम रिपु मद मारें ॥तृ०॥

ॐ ह्रीं कामरिपवे अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

सब दंभारंभ हरे हैं । शिव हेतारंभ करै हैं ॥तृतीयाचल०॥

ॐ ह्रीं आरभाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

जिन धर्मचक्र रथ नेमं । जिन नेम करैं सब खेमं ॥तृतीया०॥

ॐ ह्रीं नेमिनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

तिँहु ज्ञान गर्भतें धारी । जिन गर्भ ज्ञान अविकारी ॥तृतीया०॥

ॐ ह्रीं गर्भनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

जयजय यादव कुल जनम [illegible]। जयजय सम्पति [illegible] ९
जयजय गुन आगन [illegible]। जयजय अनुभव [illegible]।
जयजय [illegible] अव [illegible]। जय जय गुन [illegible] मदान १०
जयजय [illegible] संत [illegible]। [illegible] गुन [illegible]।
[illegible] श्री सौ दयाल। हरि [illegible] मगन रजा [illegible] ॥ ११॥

[illegible] जै जै हरनागन मोहनमनहरन सकल भव्यजन [illegible]।
[illegible] 'वृंदावन' श्रीन सौं मन हो जिन संपति सदन भग ॥
[illegible]
[illegible] —जो पंजे मनल्याय, अनन्द भल [illegible]।
सो मन वंछित पाय अजगामर पद हीं लहै ॥

[illegible]।
[illegible]।

अथाचलमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिपूजा प्रारभ्यते ।

तोटकछन्द-

तृतीयाचल भारतभूत जिनं । चौवीश महासुख सिंधु गिनं ।
तिहु थापतु हौं इत जोरिकरं । प्रभु आय विराजहु पापहरं ॥

ॐ ह्रीं अचलभरतातीतजिन-अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वाननं स्वाहा: ।
ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ:ठ: स्थापनं ।
ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतातीतजिन-अत्र मम संनिहितो भवभव वषट् स्वाहा: ।

चाल प्रभू पूजोंरे भाई ।

तुम पद पूजों शिरनाई । जासों पातक जात पलाई ।
अचलमेरु दक्षिणा दिशा हो भरततीत जिनराई ॥तुम०॥टेक॥
हिमवन गिरिगत गंगाजल वर, सुवरन भृंग भराई ।
तासों पूजत चरन कमल जुग, तृषा रोग मिटि जाई। तुमपद० ॥

[illegible] निरखि ॥१॥

कदलीनंदन चंदन बावन कुंकुम मंच घसाई ।
विपन नाग निरखान कानन पूजों पद पुनगाई ॥ तुमपद०॥

[illegible] निरखि ॥२॥

तंदुल शालविशाल वोनि जुग गमक दमक दरसाई ।
पुंज धरन तुम चरन कमल ढिग लहत अखिंद गई ॥ तुम० ॥

[illegible] निरखि ॥३॥

मगन सुमन सम सुगन भार भर सुमन नगन सुगदाई ।
नाहि तुमपद पदम जजौं जिमि ममरजाल नशिजाई ॥ तुम० ।

[illegible] निरखि ॥४॥

नव्य गव्य मनमोहन मोदक नानि ताजे ल्याई ।
सो तुम लिरख धरौं जिनशायक देह निराकुलताई । तुम० ॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्य निर्वपामि ॥५॥

घृत पूरित अथवा कपूरमनि दीपक जोति लगाई ।
आरति करत हरत सब आरत आतम जोति जगाई ॥ तुमपद० ॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

अगर तगर कृष्णागर चंदन देवदारु सब लाई ।
धूप उखेवतु हों तुम आगे ज्यौं वसुकरम जराई ॥ तुमपद० ॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्य धूपं निर्वपामि ॥७॥

आम्रकाम्रक अनार सार फल प्राशुक पक्व धराई ।
पूजौं तुम पदप्रीत लाइकें ज्यों वांछित पदथाई ॥ तुमपद०॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो फल निर्वपामि ॥८॥

जल फल सकल मिलाय मनोहर अरघ कियौ उमगाई ।
नाचिराचि शिरनाइ समरचौं ज्यौं अनर्घ पदपाई ।

तुम पद पूजौं शिवनाई जासों पातक जात पलाई ।
अन्तरंग बहिरंग श्रिया सो, भगवंत जिनराई । तुमपदपूजौं०
ॐ ह्रीं [illegible] अर्घं निर्वपामि ।

अथ प्रत्येकार्घं ।

[illegible] —

ज्ञानेश धर्म ज्ञानाम जानन वस्तु सबै ।
तुनिवानन्द मागन धार नीत जजामि अबै ॥१॥
ॐ ह्रीं [illegible] अर्घं निर्वपामि ।
मिन मिन मकरन्द जगमीन त्रिभुवनकौ प्यारे ।
तुनिवानन्द मगन अनीत पूजन भवतारे ॥२॥
ॐ ह्रीं [illegible] अर्घं निर्वपामि ।
जिन शांतिनाथ जिनवर शांति कौ करही ।

तृतियाचल भरत जिनाय तीत जजौं अवही ॥३॥

ॐ ह्रीं शान्तिनाथाय अर्घं निर्वपामि ।

जिन सुमति सुमति दरशाय सुमतिनकों प्यारे ॥

तृतियाचल भारत ध्याय तीत जजों सारे ॥४॥

ॐ ह्रीं सुमतिनाथाय अर्घं निर्वपामि ।

मनमथ मद मंथनहार आदि जिनेश कहा ।

तृतियाचल भरत उदार भूत जजामि महा ॥५॥

ॐ ह्रीं आदिजिनाय अर्घं विर्नपामि ।

अतिव्यक्त जगोत्तम रीत तीरथ व्यक्त करें ।

तृतियाचल भारततीत पूजत पाप टरें ॥६॥

ॐ ह्रीं अतिव्यक्ताय अर्घं निर्वपामि ।

जिन कलासेन भगवान सकल कलाधारी ।

गिर आनन्द भगन गनधान पुजन नमनामि ॥७॥

ॐ ह्रीं ...नाथ नौ निर्वामि ।

जिन कर्म पथि बन देव अचमद चृति द्यो ।

तुनिवाचन्द भगन सुमेव नीत पुनीत भयो ॥८॥

ॐ ह्रीं ...नाथ नौ निर्वामि ।

मुनिनायक शुद्ध ... सिद्ध स सिद्ध हूँ ।

मुनिमानन्द भगन मधुक नीन जजामि वे ॥९॥

ॐ ह्रीं ... नौ निर्वामि ।

भव भाव प्रभुत निरंजन देव प्रभुन किया ।

मुनिमानन्द भगन अमृत नीन धगामि किया ॥१०॥

ॐ ह्रीं ... नौ निर्वामि ।

... धरे निज भवि मोक्षपथ भजे ।

तृतियाचल भारत पर्म तीत जिनेश जजैं ॥११॥

ॐ ह्रीं सौधर्माय अर्घं निर्वपामि ।

तमभानन आनन सार देव तमोदीपं ।

तृतियाचल भरत अधार तीत जजामीपं ॥१२॥

ॐ ह्रीं तमोदीप्ताय अर्घं निर्वपामि ।

जिन वज्र भजैं वज्रेश वज्र शरीर धरें ।

तृतियाचल भरत महेश तीत जजामि वरें ॥१३॥

ॐ ह्रीं वज्राय अर्घं निर्वपामि ।

सुप्रवृद्धनाथ जिन स्वामि सेवत शुद्धमती ।

तृतियाचल भरत जजामि तीत अभीत जती ॥१४॥

ॐ ह्रीं प्रवुद्धनाथाय अर्घं निर्वपामि ।

निरबंध प्रबंध जिनंद कीर्त प्रबंध कहा ।

नृतियानन्द भग्न मुहंद नाति जजाणि महा ॥२७॥

ॐ ह्रीं रत्नाय अर्घ्यं निर्वपामि ।

केवल बुधिभान अनीत गति पंकज पाँयें ।

नृतियानन्द भग्न अनीत पूजत दुख मोयें ॥२६॥

ॐ ह्रीं अनीताय अर्घ्यं निर्वपामि ।

जिन सुगुण भविक आनंद बालक गुनगावौं ।

नृतियानन्द भग्न मुहंद नीत जजौं पावौं ॥२७॥

ॐ ह्रीं गुणनाथ अर्घ्यं निर्वपामि ।

परमागम देव पुनीत उपमा नीत नहीं ।

नृतियानन्द भग्न अनीत पूजत ज्ञान महीं ॥२८॥

ॐ ह्रीं स्वर्णाभाय अर्घ्यं निर्वपामि ।

मोहादि परीजा विनाश हीन अकोप जिनं ।

तृतियाचल भरत जजास तीत निचीत गिनं ॥१९॥

ॐ ह्रीं अकोपाय अर्घ निर्वपामि ।

जिन निष्ठित देव उदार पूजत इष्ट मिलैं ।
गज भरत तृतिय गिरि सार संकट कोट टले ॥२०॥

ॐ ह्रीं निष्ठिताय अर्घ निर्वपामि ।

मृगनाभि शरीर सुगंध पावन सुखकारी ।
तृतियाचल भरत अवंध तीत जजों भारी ॥२१॥

ॐ ह्रीं मृगनाभये अर्घ निर्वपामि ।

देवेंद्र जिनेंद्र मुनेंद्र इंद्र भजें सारे ।
तृतियाचल भरत महेन्द्र तीत जजों प्यारे ॥२२॥

ॐ ह्रीं देवेंद्राय अर्घ निर्वपामि ।

मुनिवृंद पदस्थित देव सेवत गुनगाई ।
तृतियाचल भारत ऐव तीत जजों भाई ॥२३॥

ॐ ह्रीं [illegible] निर्वपामि।

जिननाथ नमों धरि प्रीत [illegible] मुक्तमही।

[illegible] पूजत शर्म लही ॥२४॥

ॐ ह्रीं [illegible] निर्वपामि।

दोहा—गगन अग्र [illegible] के नमों नमन धरि प्रीत।

अनन्त [illegible] जगतपति [illegible] विघन [illegible] ॥

ॐ ह्रीं [illegible] पूर्णार्घं निर्वपामि।

अथ जैमाल।

दोहा—जै जिन गुननागर सुजस उजागर [illegible]।

जै जग [illegible] "वृंद" [illegible] ॥

[illegible] छंद—

[illegible] । जिननाथ [illegible] ।

[illegible] ॥

जिन आदि अनादि विवाद हरैं। अतिव्यक्त चिदातम व्यक्त करैं।
प्रणमामि कलाधर सेन जिन। जित कर्म जिनं अमलीन गिनं॥३॥
भवि बोधक देव प्रबुद्ध सही। परिवृत्त करै भवि मुक्तमही।
सव धर्म निजातम धर्म धरैं। तम दीपित कर्म कलंक हरे॥४॥
प्रभुवज्र सवै दुख चूर करैं। सुप्रबुद्ध महारिपु क्रुद्ध हरैं।
निरवध प्रवध प्रनाम करो। सुअतीत जपों भवसिंधु तरों॥५॥
सुमुखेश महेश दयाधर हैं। सुपलोपम मोह विथाहर है।
विनुकोप अकोप सु शत्रुहरैं। जिन निष्ठित इष्टित पुष्टकरैं॥६॥
मृगनाभ अनंत गुनाकर हैं। नित देव सुइंद सुधाधर हैं।
अति उच्च पदस्थ पदस्थ करैं। शिवनाथ प्रमोद प्रसस्त भरैं॥७॥
चउवीश येई जगदीश महा। तृतियाचल भारततीत कहा॥
गुनसार अनत धरें नित हैं। द्रगज्ञान सुवीरज सजुत हैं॥ ॥८॥
सुख सूछम ना लघुना गुरुता। अवगाह अवाध सदा पुरता॥
निररूप सरूप चिदातम हैं। भवव्याधि व्यतीत शुचातम हैं॥९॥

उर भासत जोति प्रकाशनु हैं । भ्रमभाव मृगामद नाशनु हैं ॥
निरदोष अदोष अलोभ भये । अमलीन अलीन अदीन भये ॥
अमलं अमलं अचलं अकलं । अभयं अगदं अरुजं अजरं ।
इन आदि अनंत धरे गुन हैं । निज नित्तु जिन्हें सुमरामुन हैं ॥११॥
तुमको सुरनाथ नमो जिनजी । भवसागर सौं निरवार भयौ ।
निज आतम जोति उद्योत करो । तुम्हदास जिन्हें सम्मुख करो ॥१२॥
घत्ता—जै जै जिनस्वामी शिवपुरगामी सुगुनजगनामी देवमहा ।
"वृंदावन" पावन शीस नवावत वांछित अर्थ प्रसन्न कहा ॥
ॐ ह्रीं [illegible] ।

छंद—चौबीसन अनन्त अतीत भगवन्त जजै सुभागी ।
इह भांति विधि गहित सु जो नर है बड़भागी ।
नर भव सुख धनधान्य सकल मनवांछित पाई ।
क्रमक्रम होइ पुनीत चक्रपति ह्वै शिव जाई ॥

इत्याशीर्वादः ।

इतिश्री अचलभरतातीतचतुर्विंशतिजिनपूजा समाप्ता ।

अथाचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशति जिन पूजा ।

अडिल छन्द ।

दुतिय दीप सुविशाल धातुकी सोहनों ।
पश्चिम अचल सुमेरु भरतमन मोहनों ।
होनहार चोवीश जिनेसुर सारजी ।
थापो पूजन हेत प्रभू सुपधारजी ॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिन अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ:ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीजिन अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् स्वाहा।

त्रिभंगी अघनाशक छन्द ।

हिमवनगत गंगा जलभरि भृंगा सुचि सरवंगा सुखकारी ।

नृप नंदन स्वामी भाग दामी तृषा नशावनि अनिभारि ॥
गिरि अन्दकिरनै आनि छविछाजै भनन्नपाजै सुरसाजै ।
तिन भाषितंदने चर्चितं पदं कृतपद सेवं दुख भाजै ॥
ॐ ह्रीं [illegible] निर्वपामि ॥१॥
चपि चावलनंदन करत्नी नंदन [illegible]निकंद गौनचं ।
करि तुणपद्मंदन हे जिननंदन हरि भवफंदन भवकरं ।गि०जि०।
ॐ ह्रीं [illegible] निर्वपामि ॥२॥
मंकुल सुनि मंडित जापि छविमंडित पुनउमंडित मनहारि ।
सुरवरि निरंडित गुनगनमंडितशगिकवितखंडित तिनभागि ।गि०।
ॐ ह्रीं [illegible] निर्वपामि ॥३॥
मक्लान्द नशानन तुम प्रभु पानन जीन्ह खुधक्षन जानिमई ।
[illegible] दिगमन भावन [illegible] आनिमई ॥ गि०।

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥४॥

पटरस करिशजित क्षुधाविभंजिन चरु दुखगंजित मृदुसो हे ।
तुमपद पूजत जगजशकूजत शिववर हूजत मन मोहे । गि०ति०

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्य निर्वपामी ॥५॥

दीपगतमखडन द्युतिदिगमडन सत्रब्रह्मगंडन मोदकरा ।
सो तुम ढिगवारों श्रुति विस्तारों भ्रमतमटारों बोधकरा ॥ गि०ति०

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीप निर्वपामि ॥६॥

दशगंध बनाई तुम ढिगलाई हे जिनराई जशगाई ।
खेवों उमगाई हरष बढ़ाई करम जराई शिवपाई ॥ गि०ति०

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

फल पक्वसुहावन मनललचावन विघननशावन लै आयौ ।
तुम पदतर धारत दारिदहारित सुखविसतारत उमगायौ ॥गि०ति०।

ॐ ह्रीं अनन्तचतुर्दशीव्रतजिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥

जलफल सरसाजे बाजन बाजे विविध समाजे जुत राजे ।
नृप सेवन काजे के महागाजे भगत काजे शिव पाजे ॥
गिरि अचल विराजे अति छवि छाजे भा[illegible]साजे सुख साजे ।
जिन भावित अर्घं चढ़ावत हम कुलवंत सबें दुख भाजे ॥

ॐ ह्रीं अनन्तचतुर्दशीव्रतजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामि ॥९॥

अथ प्रत्येकार्घ ।

सोरठा—इक्ष्वाकवंश जिनराय, काटि कर्म हो सकल ।
उत्कृष्ट शिवपद पाय, अनन्त भावसों जजौं ॥१॥

ॐ ह्रीं ऋषभजिनाय अर्घं निर्वपामि ।

अजितनाथ जिनदेव, घातिक चक्र हनो महा ।
जगतनाथ कहि सेव, अनन्त भाव भावों जजौं ॥२॥

ॐ ह्रीं चक्रहस्ताय अर्घं निर्वपामि ।

बहुनृप सेवत पाय, द्वेप रहित कृतनाथ जिन ।
मोपर होहु सहाय, अचल भरत भावी जजों ॥३॥

ॐ ह्रीं कृतनाथाय अर्घं निर्वपामि ।

परमेसुर जिनचंद चंदवदन छवि देत नित ।
हरत सकल दुखदद अचल भरत भावी जजों ॥४॥

ॐ ह्रीं परमेश्वराय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

मनहर मूरत जास, देवसु मूरत जगत हित ।
जस कीरतकी राश अचल भरत भावी जजों ॥५॥

ॐ ह्रीं सुमूर्तये अर्घं निर्वपामि ॥५॥

मुक्तकांत जिन स्याम, मुकत रमनिवर मुकत कर ।
नमों कांति सुखधाम, अचल भरत भावी जजों ॥६॥

ॐ ह्रीं मुक्तिकान्ताय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

केशसमूह उपार. व्रतधारें निःकेश जिन ।

सो मो पतित उधार. अचल भरत भावी जजों ॥७॥

ॐ ह्रीं निःकेशाय अर्घं निर्वपामि ।

देव प्रशस्तिक सार, देत प्रशस्त महान सुख ।

मम दुखदंद निवार, अचल भरत भावी जजों ॥८॥

ॐ ह्रीं प्रशस्तिकाय अर्घं निर्वपामि ।

निराहार जिनसार कमलाहार वितीत नित ।

सो मम विघन निवार, अचल भरत भावी जजों ॥९॥

ॐ ह्रीं निराहाराय अर्घं निर्वपामि ।

भजों अमूरत देव विमल शांति चिद्रूपघन ।

करत शचीपति सेव. अचल भरत भावी जजों ॥१०॥

ॐ ह्रीं अमूर्तार्य अर्घं निर्वपामि ।

चार वरग नित जाहि सेवित सो द्विजराज जिन ।
नमों जोरकर ताहि अचल भरत भावी जजों ॥१०॥

ॐ ह्रीं द्विजनाथाय अर्घं निर्वपामि ।

श्रेयनाथ भगवान, श्रेयकरैं पातक हरैं ।
देत सकल सुखथान अचल भरत भावी जजों ॥१२॥

ॐ ह्रीं श्रेयनाथाय अर्घं निर्वपामि ।

छंदनाराच ।

रुजादि दोष नाशिकें निजात्म शुद्ध भाशियो ।
प्रबोधि भव्य वृंदकों अरुज्जकर्म नाशियौ ॥
नमामि पाद पंकजं सुइंद्र जासकों भजें ।
तृतीय मेरु भारते भविष्यतं जिनं जजै ॥१२॥

ॐ ह्रीं अरुजाय अर्घं निर्वपामि ।

समस्त देव सेवही सदैव देवनाथकों ।
भवाब्धि डूबते गहो जिनेश वेगि हाथकों । न०तृ० ॥१४॥

ॐ ह्रीं देवनाथाय अर्घं निर्वपामि ।

समस्त दीनपै दया धरें दयाधिके जिन ।
निजातम स्वभाव में विराजने सदा तिन । न०तृ०१५।

ॐ ह्रीं दयाधिकाय अर्घं निर्वपामि ।

सुपुष्पनाथ नायकं सुपर्म धर्म दायकं ।
सु पुष्पचाप घायकं प्रशस्तशील लायकं । न०तृ० ॥१६॥

ॐ ह्रीं पुष्पनाथाय अर्घं निर्वपामि ।

नरेश औ सुरेश वृंद जाहि नित्य सेवही ।
नेरनाथ देवमो भवाब्धि नाव सेवही न०तृ० ॥१७॥

ॐ ह्रीं नरेशाय अर्घं निर्वपामि ।

समस्त जीवपे दया धरैं सदा विराजहीं ।
प्रती सुभूतकों भजें अशेष क्लेश भाजहीं ॥न०तू०॥१८॥

ॐ ह्रीं प्रतिभूताय अर्घं निर्वपामि ।

दिविंद भाव निंदचंद वितरंद ध्यावही ।
सुनाग इंद देव सेवते सुशर्म पावही । न०तू०॥१९॥

ॐ ह्रीं नागेंद्राय अर्घं निर्वपामि ।

महा तपोदिके धनी तपोधिकं अराधही ।
नमों सदा तिन्हें समस्त पर्म शर्म साधही । न०तू०॥२०॥

ॐ ह्रीं तपोधिकाय अर्घं निर्वपामि ।

दशोंदिशा विषें सुव्याप्त कीर्त जास है रह्यो ।
दशाननाख्य देव सेवते सुबोधको गह्यों । न०तू०॥२१॥

ॐ ह्रीं दशाननाय अर्घं निर्वपामि ।

उभे प्रकारको तपादि तासके धनी सही ।
अरण्यनाथकों नमामि देत मुक्तकी मही। न०तृ०॥२२॥

ॐ ह्रीं अरण्यनाथाय अर्घं निर्वपामि ।

अनंगके दशों अनीनकों विनाश कीन है ।
दशा सुनीककों नमों सदैव सो प्रवीन है । न०तृ०॥२३॥

ॐ ह्रीं दशानीकाय अर्घं निर्वपामि।

सदा अक्षोभ राजही पुनीत भाव साजही ।
जिनेंद्र शान्तिकं भजें दरिद्र दुख भाजही ।
नमामि पादपंकजं सुरेंद्र जासकों भजें ।
तृतीयमेक भारते भविष्यतं जिन जजें ॥२४॥

ॐ ह्रीं शान्तिकाय अर्घं निर्वपामि ।

रथोद्धता-अष्टद्रव्य सब ल्याजिकें वरं, नात्रिशात्र गुनगायहीधरं।
पूजिहो अचल भारते महा, होनहार चवनीश जे कहा॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामि।

अथ जयमाला।

घत्ता-जै जिन कलपद्रुम दयावेलि तुम सुमन सुजसगम कंतवरा।
फल शिवसुरमंडित विपति विहंडित वांछितार्थपद पुष्टकरा॥

पाद्धड़ी छंद—

जै रक्तकेश आनंद भेश। जै चक्रहस्त नुत शक्रशेष॥
कृतनाथ कृतारथ करत भव्व। परमेसुर पूरत ज्ञान सव्व॥१॥
जय देव सु मूरत मदनभंग। जय मुक्तकांत शिवकांत संग॥
निःकेश केश तजि व्रतधराय। जय जय प्रशस्तपद परमदाय॥२॥
जय निराहार अविकार बुद्ध। जय जय अमूर्त जिन सुगुन शुद्ध
द्विजनाथ मोहि दुखतें निकार। श्रेयो गति मो दै श्रेयसार॥४॥

जय अरुज हरो मम रोग रुद्र । जय दयानाथ स्तुति वेगि लेव ॥
प्रणमामि दयाधिक दयाधीश । जे पुष्पनाथ गुननिधि जगीश ॥५॥
नरनाथ नमैं नरनाथ पाय । प्रतिभूत गहन गुनगन जिनाय ॥
नागेंद्र देव नागेंद्रराज । निज देव तपोनिध सुखसमाज ॥६॥
जय जैति दशानन सुजशराश । आरणत्रकके सुर असुर दास ॥
नित नमो दशाधिक निपुन देव । शाश्विक जिनवर पद करो सेव॥
ए धातुद्वीप गिरि अचल नाम । नित भरत भविष्यत सुगुन धाम
मुनिमंडल नित चित धरत ध्यान । सुरनरखगणजत चरन आन॥८॥
ये तारन तरन हरन कलेश । निर्दोष मोक्षपोषक महेश ।
त्रिभुवन जनमन पंकज दिनंद । गुणसागर वर्द्धन सदय चंद॥९॥
"वृंदावन" सेवत जुगलपाय । जिमि त्रिवनमनन तनछिन विलाय॥
अब शरन गही प्रभु दीन जान । भवसागरतैं मोकों निकार ॥१०
धत्ता—जैजै जिननायक सबविधिलायक ज्ञायकभाव अनंतधनी
भवतापनशायक शांति बढ़ायक तुम गुन नित चित जपत जनी

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि ।

आर्या छं०—जो पूजे मनलाई, तृतियाचल भारतेश सुखदाई ।
भावी त्रिभुवनराई, सो पावे मुक्त मुक्तकुराई ॥

इत्याशीर्वादः ।

इति अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनपूजा सम्पूर्णा ।

अथाचलमेरुऐरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिन पूजा ।

रोडक छंद—

दुतियदीप अभिराम अचल पश्चिम छवि छाजे ।
ताकी उत्तर माहि क्षेत्र ऐरावत गाजे ॥
वरतमान चौवीश तहां त्रिभुवन के नायक ।
थापतु हों करजोर इहां आवो वरदायक ॥

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनअत्रावतरअवतर संवौषट् आह्वाननं

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशति जिन—अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा ।

(चाल षोडश कारण भाषाकी पूजा ताके अष्टकी)

सकल सुखदान, पूजों चरनकमल अमलान । सकल सुख० ।
अचलाचल ऐरावतथान, वरतमान जनकंजन भान । स०टेक॥
मुनिमनसम जलउज्वल आन, धारकरत सन्मुखदुखहान । स०

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जलं निर्वपामि ॥१॥

चंदन कदलिनंदनमान, घसि लसि शशि सम समतादान । स० ।

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चंदनं निर्वपामि ॥२॥

तंदुलमंदुल उज्जल भान, पुजवियुंजन शिवपददान । स०

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो तंदुलं निर्वपामि ॥३॥

सुमन मल्लि अलि गुंजन आन, धरत हरत उर मदन विनान । स०

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥४॥

नेवज तुरितपुरितरसथान,जजतभजत आकुल कलकान । स०

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्य निर्वपामि ॥५॥

दीपक जोत दिपत दुतिवान, जजततुरित उरतिमिर नसान । स०

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

अगरदहतवसुकरम दहान धूम घूम यह तास उडान । स०अ०

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूप निर्वपामि ॥७॥

फलकलदलनचलन शिवथान,तुमढिगधारत विघ्नविलान । स०

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फल निर्वपामि ॥८॥

जलफलसकल विमल शुभ आन, अरघ जजत करि अनुभो पान ।

सकल सुखदान, पूजों चरन कमल अमलान । सकलसुख०

अचलाचल ऐरावत थान, वरतमान जनकंजन भान । स०॥

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

अथ प्रत्येकार्घ ।

चौपाई छंद—

साधित नाम जिनेश नमामी । जिनको ध्यावत हैं शिवगामी॥
धातु अचल ऐरावत थानों। वरतमान पूजों धरि ध्यानों ॥१॥

ॐ ह्रीं साधितनाथ अर्घं निर्वपामि ॥१॥

जिनस्वामी त्रिभुवन आधार। सेवत संघ चार परकार॥धा० व०

ॐ ह्रीं जिनस्वामिने अर्घं निर्वपामि ॥२॥

स्तमितेंद्रिय जिनंद मितेंद्रीय। नमित इंद्र जे अनिइंद्रीय॥धा० व०

ॐ ह्रीं स्तमितेंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

अत्यानंद जिनंद अभिराम । आनंदमंदिर शिवपुरधाम। धा० व०

ॐ ह्रीं अत्यानंदाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

पुष्पकोत्पुल्ल जिन ईश। फुल्लित कमलनयननिशिदीश। धा०व०

ॐ ह्रीं पुष्पकोत्पुल्लाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

त्रिभुवन मंडनमुंडन सल्ल। मुंडक नाम नमों निरमल्ल। धा०व०

ॐ ह्रीं मुडकाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

महतहते कंदर्प प्रचंड। सेवत सुरनरनाग रमंड। धा० व०।

ॐ ह्रीं महताय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

मदनसिंघ प्रणमों करजोर। वेगि प्रभु भवसंकल तोर। धा०व०

ॐ ह्रीं मदनसिंघाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

इंद्र समूह नमैं पदकंज। हसमिंद्र जिन मो भै भंज। धा०व०

ॐ ह्रीं हंसमिंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

इंद्रचंद ढिग सेवत पाय। चंद्र पार्श्वजिन गुनसमुदाय। धा०व०

ॐ ह्रीं चंद्रपार्श्वाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

भविकअब्जबोधकाजिमभान। अब्जबोधजिन सुगुननिधान। धा०

ॐ ह्रीं अब्जबोधाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

जिनको रूप रुचिर दरशात। जिनवल्लभ सो जगविख्यात। था०

ॐ ह्रीं जिनवल्लभाय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

छंद मोतीदाम।

विभूति अनूप लसे जुगजास। विभूत जिनेश नमों सुखराश।
तृतीय सुराचल उत्तर थान। जजों ऐरावत वर्तमु मान ॥१३॥

ॐ ह्रीं विभूताय अर्घं निर्वपामि।

कुकुष्णजिनेश सुखामृतकुंड नमें जिनकों नित वासवकुंड ॥ तृ०

ॐ ह्रीं कुकुष्णाय अर्घं निर्वपामि॥१४॥

सुवर्ण शरीर लसे सुखदाय। सुवर्णशरीर नमों जिनराय॥ तृ०।

ॐ ह्रीं सुवर्णशरीराय अर्घं निर्वपामि॥१५॥

सदा जगमें जयवंत सरूप। नमों हरिवास सुधारस कूप॥ तृ०।

ॐ ह्रीं हरिवासाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

नमैंनित मीतधरं भवि जाहि। नमों प्रियमित्र धरो उर ताहि।तृ०।

ॐ ह्रीं प्रियमित्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१७॥

निजातम धर्म समस्त धरेय। सुधर्म जिनेसुर कर्म हरेय। तृ०।

ॐ ह्रीं सुधर्माय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१८॥

प्रिया रतनेश जिनेश नमाम। रमाशिव संग कियौ विसराम।तृ०।

ॐ ह्रीं प्रियारत्नाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१९॥

सवैसुर आनंद धारि नमंत। सुनादित नाथ नमों भगवंत।तृ०।

ॐ ह्रीं नंदनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२०॥

अखड पदस्त लियौ जिनराज। नमों असुनीक सवै सुखसाज।तृ०।

ॐ ह्रीं अश्वानीकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२१॥

सुपर्व जिनेशनि गर्व लशेय। सदा समद्रिष्टिय चित्तधरेय।तृ०।

ॐ ह्रीं पर्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२२॥

तननतनन ततनन तितनाई । मननननननन फिरि फिरनाई ॥१०॥
झमझमझमझमझमझमकंनी । दमदमदमदमदमदमकंनी ॥
भगतभार उर अतुल धरे हैं । सकलकला तुम प्रगट करे हैं ॥११॥
निजभव सकलसफल तब करहीं भगति प्रमाद करमदल मलहीं ॥
धन्य देव तुम त्रिभुवन तारन । अधारन शरन जगत उद्धारन ॥१२॥
सौंपे कृपा करो जगनायक । देहु मोक्षसुख अविचल दायक ।
बसो सदा उर अंतर मोरे । "वृन्दावन" वदत कर जोरे ॥१३॥
घत्ता-जै जै शिवमंडन भवशत खंडन इंद्रनिंदडन शुद्धमती ।
तृतिये युगवत सुरपति ध्यावत वर्तमान जिन बुद्धपती ॥१४॥
ॐ ह्रीं तत्त्रैगतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि ।

सोरठा-जो पूजे मनलाय वर्तमान जिनराजपद !
तृतियैगवन ध्याय सो मन सुख लहि शिववरै ॥

इत्याशीर्वाद ।

इति श्री तत्त्रैगोगतो वर्तमान पूजा समाप्ता ।

अथाचलमेरु ऐरावतेऽतीत जिन पूजा प्रारभ्यते ।

स्थापना-(चाल नंदीश्वराष्टक की)

दुतिदीप अचल गिरराज ऐरावत जानों ।
तित तीत नमों जिनराय चौविश थुति ठानों ॥
थापों त्रिविधा करजोर हे त्रिभुवन स्वामी ।
इत आय हरो दुःख घोर कीजे शिवगामी ॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपाचलमेरुऐरावतातीजिन अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वानन
ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपाचलमेरुऐरावतातीजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपाचलमेरुऐरावतातीजिनअत्रममसन्निहितोभवभववषट्स्वाहा।

अथाष्टक-(प्रभु पूजोरे भाई)

नित पूजोरे भाई मुक्तरमन जिनराजकौं नित० ।
अचलमेरु उत्तर ऐरावततीत सकल सुखदाई ।

सुरसुरेश पद पूजत जाके तनमन प्रीत उपाई । नि० ॥टेक॥
मोहमहामल घोय प्रभु तुम क्षायक समकत पाई ।
जान्हवीय जलसों हम पूजें। क्षायक सम्यक दाई ॥ नि०अ०॥
ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपाचलमेरुऐरावतातीतजिनेभ्यो जलं निर्वपामि ॥१॥
ज्ञाना वरनी नाश प्रभु तुम ज्ञान अनंत उपाई ।
चंदन सो पद पूजों जातें ज्ञान अनत लहाई ॥ नि०अ० ॥
ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपाचलमेरुऐरावतातीतजिनेभ्यो सुगंधं निर्वपामि ॥२॥
दरश आवरन नशिनाथ तुम दरश अनंत जगाई ।
तदुल अमल लेय पद पूजों ज्यों अनंत द्रिग पाई ॥नि०अ०
ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपाचलमेरुऐरावतातीतजिनेभ्योऽक्षतं निर्वपामि ॥३॥
अंतराय अरि चूर प्रभु तुम बल अनंत उपजाई ।
फूल थाँ तुम चरन कमल ढिग ज्यों अनंत प्रभुताई ॥नि०अ०

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपाचलमेरुऐरावतातीतजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥४॥

क्षुधावेदनी नाशि लियौ तुम निरआकुल ठकुराई ।
चरु चढ़ाय पूजों पदपकज ज्यौं अबाध पदपाई ॥नि०अचल०

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपाचलमेरुऐरावतातीतजिनेभ्यो नैवेद्य निर्वपामि ॥५॥

आयुकरम अवगाहन गुन मम रोकि रह्यो जिनराई ।
दीप चढाय जजों प्रभु तुमको जिमि सों गुन उदय कराई ॥नि०

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपाचलमेरुऐरावतातीतजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

नाम करम सूछिम गुन ढकिकें जग वहु नाच नचाई ।
धूप दहों तुम चरनन आगे सो गुन प्रकट कराई ॥ नि०अ०॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपाचलमेरुऐरावतातीजिनेभ्यो धूप निर्वपामि ॥७॥

गोत अगुरुलघु गुन मम रोक्यौ वहु विधि जग भरमाई ।
फलसों पूजत यह फल पावों अजर अमर ठकुराई ।नि०अ०॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपाचलमेरुऐरावतातीतजिनेभ्यः फल निर्वपामि ॥८॥

जल फल सकल ललित लेकर में भगत भाव उमगाई ।
जजत तुम त्रिभुवन के नायक मनवांछित सुखपाई ॥
नित पूजोरे भाई, मुक्त रमनि जिनराजकों । नित पूजो रे०
अचलमेरु उत्तर ऐरावत तीत सकल सुखदाई ॥
सुर सुरेश पद पूजत जाके तनमन प्रीत लगाई ॥ नित पू० ।
ॐ ह्रीं भानुकीर्तिपानन्ध्रमेरुऐरावतातीतजिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामि ॥८॥

अथ प्रत्येकार्घ ।

दोहा—सुरगिर सम गुरु जगतगुरु श्रीसुमेर जिनराय ।
अचलैरावत तीत पद पूजों मन वचकाय ॥१॥
ॐ ह्रीं सुमेरवेऽर्घ्यं निर्वपामि ।
जिनकृत जिनकृत मोद जग मुक्त रमनिपति न्याय ॥ अ०
ॐ ह्रीं जिनकृतनाथ नर्घं निर्वपामि ॥२॥

कैटभनाथ जपों सदा मनवांछित उपजाय ॥ अचलै०॥३॥

ॐ ह्रीं कैटभनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

श्री प्रशस्त जिनचंद कों पूजत पाप पलाय ॥ अचलै०॥४॥

ॐ ह्री प्रशस्ताय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

निरदै जिन अरि दमन किय दया धुरंधरं राय ॥ अचलै०॥५॥

ॐ ह्री निर्दयाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

निजकुल कमल दिनंद हैं श्रीकुलकर जिनराय ॥ अ० ॥६॥

ॐ ह्री कुलकराय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

वर्धमान गुन वृद्धजुत उदय अपूरव पाय ॥ अचलै० ॥७॥

ॐ ह्री वर्द्धमानाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

अमृत इंद्र गुनवृंद प्रभु अमृत इंद्र पदपाय ॥ अचलै० ॥८॥

ॐ ह्री अमृतेंद्रवे अर्घं निर्वपामि ॥८॥

संख्यानंद जिनंद नित आनंद अमित कराय ॥ अच०॥९॥

ॐ ह्रीं मत्स्यानंदाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

कल्पद्रुम सम देत सुख कल्पकृत जिनराय ॥ अर्घ० ॥१०॥

ॐ ह्रीं कल्पकृताय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

मेघत हरि नित तासको श्रीहरिनाथ जिनाय ॥ अर्घ०॥११॥

ॐ ह्रीं हरिनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

बहु स्वामी त्रिभुवन तिलक सेवत त्रिभुवन पाय ॥ अ० ॥१२॥

ॐ ह्रीं बहुस्वामिने अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

छंद मारच्चन प्रस्तार ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ भान वर्ण १०

भद्र जिनेसुर भद्र भरें । आनंद अवुधि वृद्ध करें ।

भेरूतीय ऐरावत है । तीन जजें सुख पावत है ॥१४॥

ॐ ह्रीं भद्रेशाय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

श्रीप्रविपात जिनेश वरा कर्म कुलाचल भेद करा ॥ भे०ती

ॐ ह्रीं प्रविपाताय अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

पूरन ब्रह्म विचार जती । ब्रह्म सुचारित्र शुद्धमती ॥मे०ती०॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचारित्राय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

मुक्तसती जुत केलि करैं । नाथ वियोखित दुःख हरैं ॥मे०ती०

ॐ ह्रीं वियोपिताय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

शाक्षियरूप त्रिलोक लखैं । नाथ अशाक्षिक शर्म चखैं ॥ मे०

ॐ ह्रीं अशाक्षिकाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

चारित सेन प्रनाम करौं ज्यौं जिन चारित भार धरा ॥मे०ती०

ॐ ह्रीं चारित्रसेनाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

जो परणामिक भाव यंहै सो परणामिक देव कहै ॥ मे०ती०

ॐ ह्रीं परिणामिकाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

शाश्वत आनंद देत हमें शाश्वतनाथ कलंक दमें ॥ मे०ती० ॥

ॐ ह्रीं शाश्वतनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

श्रीनिधिनाथ प्रनाम करों ज्यौं निधि सार सुधाम भरों ॥मे०

ॐ ह्रीं निमिनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

कौशिकनाथ दयाल महा दारिद दुक्ख कुकर्म दहा ॥ मे०ती०

ॐ ह्रीं कौशिकाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

श्रीधरमेश जिनेश नमो आनदकंद समस्त पमो ।
मेरुतृतीय परावत है तीन जजें सुखपावत है ॥२४॥

ॐ ह्रीं धर्मेशाय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

गीतागन छंद ।

तृतिय सुराचल उत्तर जान । अतीत जिनेश महागुनवान ।
जजों पद पूरण अर्घ चढाय । कलेश अशेष सबै नशिजाय ॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपानन्तमेरोरावतातीतजिनेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामि ।

जयमाला ।

पद्य जै जै करुनावन मन्दिर पावनतर सेवकजन आनंद करा ।
जै जै जयदायक सब विधिलायक कर्मकलंक अशेष हरा॥१॥

पाद्धड़ी छंद—

जै जै सुमेरू थिर मेरु जेम। जै जै कृत जिनकृत सुकृत छेम।
जै कैटभ अघकानन हुताश। जैजै प्रशस्त भवि भरत आश ॥२॥
जै निर्दय जिन जुग दयाईश। जै जै कुलकर नुत सकल ईश ॥
जै वर्द्धमान गुन वृद्ध सुष्ट। जै अमितिद्रिय आनंद पुष्ट ॥३॥
जै सख्यानंद अनंत ज्ञान। जै कलपकृत कृत सुख निधान ॥
हरिसेवत नित हरिनाथ देव। वहुस्वामि सकल सुर करतसेव ॥४॥
जै भार्गव भवतप दमन सूर। जै भद्रदेव भवि भद्रपूर ॥
प्रविपातन जिन दारिद्र हर्ण। जिन ब्रह्मचारि चारित्र भर्ण ॥५॥
जै जैति वियोषित शिव रमेश। जै जैति अशाक्षिक भवतरेश ॥
जै चारितसेन दयाल धीर। परिनामक जिनवर हरत पीर ॥६॥
शाश्वताजिन शाश्वत थान देत। निधिनाथ निधान करत निकेत ॥
कौशिक जिन कौशिकराज देहि। धरमेश तुरित भवतार देहि ॥७॥
ए भूत चतुरविंशति जिनेश। गिरि अचलैरावत सुगुन भेश ॥

गनधर मुनिध्यावत सुजश राश। सुर असुर जासके भये दास॥८॥
नर विद्याधर सेवत त्रिकाल। गुन गावत नाचत चरन भाल॥
किन्नर नारद तुंबर अवस्य। हा हा हू हू विश्वासुवस्य॥९॥
ए नाचत थेइ थेइ थेइ उमंग। लय तान तान गावत सुरंग॥
तमलां त्रम्लां द्रिमि द्रिमि मृदंग। मनायदि माग्रादि मारगिसग१०
पगनूपुर झननन झनननाय। कटकि किनि किनिनिनिनिनि सुनाय
करताल ताल करमें लसंत। किरिकिरि झुकि झुकि भावरि रचन११
रसराग प्रगट जुत करत भक्त। पावत समाज सम्यक्त व्यक्त॥
हम तुम पद वंदत बार बार। नृप चंदनंद भवि "वृंद" तार॥१२॥
घत्ता—जै जै जगंजन भ्रमतम भंजन भविकंजन जिनराजवरा।
तिन मुनिजनवंदन पाप निकंदन पावन आतम ज्ञानवरा॥
ॐ ह्रीं भानुदर्शितानन्तगुणालंकृतनाथजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि॥१३॥
मालिनी छंद—गुनिगन अनगमेक उनरैगावते हैं।
तिन अजिन जिनमंमध्य के भावने हैं॥

तिन पद जुगसारं जो जजै प्रीतलाई ।
सुरनर सुखसार भोगि सो मुक्ति जाई ॥

इत्याशीर्वाद –

इति श्रीअचलमेरुऐरावतातीत चौवीसी पूजा संपूर्णा ।

अथ अचलमेरुऐरावतभावीजिन पूजा प्रारभ्यते

लक्ष्मीधरा छंद ।

मेरु तीजोमहाशोभनीकं लसै । क्षेत्रऐरावते उत्तरे सो वसे ॥
तासमें भावतव्यं जिनेसं कही । थापिहों अत्र आवो प्रभूजीसही

ॐ ह्रीं अचलैरावतभावित्रिचतुर्विंशति जिन अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वानन ।
ॐ ह्रीं अचलैरावतभाविचतुर्विंशति जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः स्थापन ।
ॐ ह्रीं अचलैरावतभावीजिन अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा ।

छंद सारंगी ध्वनि सब गुरु वर्ण ।

गंगा भंगा पानी चंगा झारी धारी आनी है ।

धारा तीनों ताकी दीनों तीनों तापं हानी है ॥
तीजो मेरं ताके हेरं ऐरावतं राजें हैं ।
भावी देवं कीजे सेवं जो आनंदे साजें हैं ॥
ॐ ह्रीं धातुकिखंडद्वीपाचलमेरुपूर्वविदेहभाविजिनेभ्यो जलं निर्वपामि ॥१॥
कुंकूमाद्यै गंधं सारं करपूरेचं ले आयो ।
अंतुत्कृष्टा घूपा सुष्टा दुष्टा तापं कूं घायो ॥ ती० भा० ॥
ॐ ह्रीं धातुकिखंडद्वीपाचलमेरुपूर्वविदेहभाविजिनेभ्यश्चन्दनं निर्वपामि ॥२॥
शाला आला शुद्धं बुद्धं मुक्ता के से शुक्ता हैं ।
सो ले सारा पुंजे धारा भौ में सो हो मुक्ता है ॥ ती० भा०
ॐ ह्रीं धातुकिखंडद्वीपाचलमेरुपूर्वविदेहभाविजिनेभ्यो अक्षतं निर्वपामि ॥३॥
नेना प्राना कों आमोदे गंधे फूले आना है ।

---

१ [illegible] । २ [illegible] ।

तासों स्वामी सेवों आमी कामों वाना हाना है ।।ती० भा० ।।

ॐ ह्रीं धातुकिद्धीपाचलमेरुऐरावतभाविजिनेभ्य पुष्पं निर्वपामि ।।४।।

फेनी श्रेनी खाजे ताजे साजे मिष्टा पुष्टा है ।

सो लै थारी आगे धारी वाधा नष्टा दुष्टा है ।। ती० भा० ।।

ॐ ही धातुकिद्धीपाचलमेरुऐरावतभाविजिनेभ्यश्चरु निर्वपामि ।।५।।

वी को दीयौ ऐसो लीयो जासौ भांतैं नाशा है ।

तासों पूजे ऐसो हूजै तीनों लोकं भाशा है ।। ती० भा० ।।

ॐ ही धातुकिद्धीपाचलमेरुऐरावतभाविजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ।।६।।

गंधा धारं धूपोदारं खेवों वन्ही माही है ।

कूरं कर्म होवे चूरं धूमा घूमोडाही है ।। ती० भा० ।।

ॐ ही धातुकिद्धीपाचलमेरुऐरावतभाविजिनेभ्यो धूप निर्वपामि ।।७।।

पुंगी नारंगी जंवीरा एला केला लाए हैं ।

तासो सेवों आपा वेवों साता "वृंदो" पाये हैं॥ ती० भा०॥

ॐ ह्रीं धातुकिद्वीपाचलमेरुऐरावतभाविजिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥

आठों द्रव्यों सेती पूजों आछे बाजे बाजे है।

नाचों राचों शर्ण आवो मोक्ष स्थान पाजे हैं॥

तीजो मेर ताके हैं ऐरावतें राजे हैं।

भावी देवा कीजे सेवा सो आनंदे साजे हैं॥

ॐ ह्रीं धातुकिद्वीपाचलमेरुऐरावतभाविजिनेभ्यो ऽर्घं निर्वपामि ॥९॥

अथ प्रत्येकार्घं।

लोलतरंग छंद—

श्री रवि इंद जिनंद नमामी। स्वेदविनाऽजिन अजित स्वामी।

मेरु तृतीय ऐरावत थानों। भाविय देव जजों थरि ध्यानों॥१॥

ॐ ह्रीं रविइंद्रार्घं निर्वपामि ॥१॥

निर्मल काय जसे सुखदाई । श्री सुकुमालक मोहि सहाई । मैं०
ॐ ह्रीं सुकुमालिकाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

प्रश्रितवंत नमो भगवंता । क्षीर समान सुरक्त धरंता । मे० भा०
ॐ ह्रीं प्रश्रितव्रतेऽर्घं निर्वपामि ॥३॥

श्रीकुलरत्न जिनेसुर मानों । चारित्र थान समान प्रमानों ।मैं०॥४॥
ॐ ह्रीं कुलरत्नाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

धर्म जिनेसुर आनंदकारी । आदि शरीर लसे अविकारी ।मैं०॥५॥
ॐ ह्रीं धर्मनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

शोम जिनंद अमंद प्रतापी । सुंदररूप सुधारस वापी ।मे०॥६॥
ॐ ह्रीं शोमजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

श्रीवरुणेंद्र जिनिंद नमामी । सोरभकाय धरें अभिरामी ।मैं०॥७॥
ॐ ह्रीं वरुणेन्द्राय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

श्रीअभिनंदन आनंददाता । साष्ट सहस्र सुलक्षणगाता ।मे० ॥८॥

ॐ ह्रीं अभिनन्दाय अर्घ निर्वपामि ॥८॥

श्रीसरवेश नमों वर ज्ञानी । अप्रमितं बल जासु वखानी ।मे०॥९॥

ॐ ह्रीं सर्वेनाथाय अर्घ निर्वपामि ॥९॥

नेन महाप्रिय है हितकारी । नाथ सुदिष्ट नमों भवतारी।मे०॥१०॥

ॐ ह्रीं सुदिष्टनाथाय अर्घ निर्वपामि ॥१०॥

छंद तोटक—

जसु अर्थ सुमागध वेन खिरे । जिन शिष्ट नमों भवसिंधुतिरे ॥

तृतियाचलको परगवत है । भवतव्य जजें सुखपावत है ॥॥११॥

ॐ ह्रीं शिष्टजिनाय अर्घ निर्वपामि ॥११॥

जगजीव परस्परमित्र भये । जिन धन्यतने परभाव लये ॥ तृ०

ॐ ह्रीं सुधन्याय अर्घ निर्वपामि ॥१२॥

फलफल सबे रितुके निवसे । जह सोमशशी प्रभुजी हुलसे ॥तृ०

ॐ ह्रीं सोमचन्द्राय अर्घ निर्वपामि ॥१३॥

छितदर्प्पनतुल्य प्रकाश धरैं। जहँ क्षेत्र अधीश निवास करैं ॥तृ०

ॐ ह्री क्षेत्राधीशाय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

नित आनंद अंबुधि वृद्ध करै। सु सदंतिकनाथ दरिद्र हरे ॥तृ०

ॐ ह्रीं सदंतिकाय अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

अनुकूल बयार पुनीत वहै । जहँ श्रीजिनराज जयंत अहै ॥तृ०

ॐ ह्री जयताय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

तृण कटक धूलि विनाशित है। जिनराज तमोरिपु मोचित है॥तृ०

ॐ ह्री तमोरिपवेऽर्घं निर्वपामि ॥१७॥

जलगंध समेत पुनीत परै । जिन निर्मल सो मम पाप हरै ॥तृ०

ॐ ह्री निर्मलाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

नभमें कनकंजन पैं चलही । कृत पारस विघ्न सबै दलही ॥तृ०

ॐ ह्रीं कृतपार्श्वाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

फलभार सबैथल धान्य नये । जिनबोधसुलाभप्रभाव भये ॥तृ०

ॐ ह्रीं अभिनन्दाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

श्रीसरवेश नमों वर ज्ञानी । अप्रमितं बल जासु बखानी ।मैं०॥९॥

ॐ ह्रीं सर्वनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

नैन महाप्रिय है हितकारी । नाथ सुदिष्ट नमों भवतारी॥मैं०॥१०॥

ॐ ह्रीं सुद्रिष्टनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

छंद तोटक—

जसु अर्थ सुमागध वैन खिरे । जिन शिष्ट नमों भवसिंधुतिरे ॥
तृतियाचलको ऐरावत है । भवतव्य जजें सुखपावत है ॥॥११॥

ॐ ह्रीं शिष्टाजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

जगजीव परस्परमित्र भये । जिन धन्यतने परभाव लये ॥ तृ०

ॐ ह्रीं सुधन्याय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

फलफूल सबै रितुके निवसे । जह शोमशशी प्रभुजी हुलशे ॥तृ०

ॐ ह्रीं शोमचंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

छितदर्पनतुल्य प्रकाश धरैं। जहँ क्षेत्र अधीश निवास करैं ॥तृ०

ॐ ह्री क्षेत्राधीशाय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

नित आनंद अंबुधि वृद्ध करे। सु सदंतिकनाथ दरिद्र हरे ॥तृ०

ॐ ह्रीं सदंतिकाय अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

अनुकूल वयार पुनीत वहै । जहँ श्रीजिनराज जयंत अहै ॥तृ०

ॐ ह्री जयताय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

तृण कटक धूलि विनाशित है। जिनराज तमोरिपु मोचित है॥तृ०

ॐ ह्री तमोरिपवेऽर्घं निर्वपामि ॥१७॥

जलगंध समेत पुनीत परै । जिन निर्मल सो मम पाप हरै ॥तृ०

ॐ ह्री निर्मलाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

नभमें कनकंजन पैं चलही । कृत पारस विघ्न सबै दलही ॥तृ०

ॐ ह्री कृतपार्श्वाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

फलभार सबैथल धान्य नये । जिनबोधसुलाभप्रभाव भये ॥तृ०

ॐ ह्रीं गोधराभाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

नमनिर्मल औ दिगसुन्दर है। चहुनन्द नमंत पुरंदर है॥ तृ०

ॐ ह्रीं चहुनन्दाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

सुरटेरत हैं भविजीवनिकों। जिनदिष्ट सुभावन पावनकों। तृ०

ॐ ह्रीं दिष्टस्वामिने अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

वृषचक्र धरें अरिचक्र हरें। जिन कुंकुम आभ सुवर्ण करें ॥तृ०

ॐ ह्रीं कुंकुमाभाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

वसु मंगल द्रव्य पुनीत धरें। जिनवक्ष सु ईश कलेश हरें॥
तृतीयाचलको ऐरावत है। भवतव्य जजें सुख पावत है॥

ॐ ह्रीं वक्षेशाय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

यह पूरन अर्घ लियो करमें। पद पूजन हों प्रभुको घरमें ॥तृ०

ॐ ह्रीं भावीचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽर्घं पूर्णार्घं निर्वपामि स्वाहा।

जयमाला।

घत्ता–जै जै जै मंडित पूरन पंडित विघ्न विहंडित ज्ञानधरा।
सेवक प्रणरक्षक त्रिभुवन लक्षक लक्ष अमंदित देतवरा ॥

(छंद तामरस तथा नयमालिनी तथा चंडी)

जै रवीइन्द जिनन्द नमस्ते। सुकुमालिक जगवंद नमस्ते ॥
प्रभोवंत महंत नमस्ते। जै कुलरत्न भवंत नमस्ते ॥ २ ॥
धर्मनाथ कृत शर्म नमस्ते। शोमनाथ पद पर्म नमस्ते ॥
वरुणानाथ दुखहरण नमस्ते। अभिनंदन सुखकरन नमस्ते ॥ ३ ॥
सर्वनाथ निर्दोष नमस्ते। जिन सुदिष्ट कृतमोख नमस्ते।
शिष्टनाथ कृत इष्ट नमस्ते। जै गुनन्य धुनि मिष्ट नमस्ते ॥ ४ ॥
शोमचंद निकलंक नमस्ते। क्षेत्राधीश निशंक नमस्ते ॥
जै सदंतक जिनेश नमस्ते। जै जयन वषमेश नमस्ते ॥५॥
देव तमोरिपु नाथ नमस्ते। निर्मल जिन सुखदाय नमस्ते ॥
जै कृतपारशनाथ नमस्ते। बोध लाभ शिव साथ नमस्ते ॥६॥

जै चन्दनंद अमंद नमस्ते । द्रिष्ट स्वामि सुखकंद नमस्ते ॥
कुंकुमाभ निरफद नमस्ते । जै चक्षेश अदंद नमस्ते ॥७॥
ए भावी चौबीश नमस्ते । अचलैरावत धीश नमस्ते ॥
सेवन इंद समस्त नमस्ते । जानन जुगपत वस्तु नमस्ते ॥८॥
विघ्नमहीधर विज्जु नमस्ते । जै ऊरधगति रिज्जु नमस्ते ॥
मुकतिरमनि सह शिज्जु नमस्ते । त्रिभुवन आनद किज्जु नमस्ते
ध्यावत सज्जन संत नमस्ते । पावतु है भव अंत नमस्ते ॥
गुन अनंत अविकार नमस्ते । तारन तरन उदार नमस्ते ॥१०॥
सकल कलेश निरवार नमस्ते । दारिद दुख परिहार नमस्ते ॥
वांछित पद दातार नमस्ते । "वृंदावन" विस्तार नमस्ते ॥११॥
घत्ता—जै जै जिननायक, विघनविनायक सबसुखदायक देववरा ।
हम शरनें आये शीशनवाये गुनगन गाये सेवकरा ॥१२॥
ॐ ह्रीं धातुकिखंडीपाचलमेरुऐरावतभाविजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि ।

अथाशीर्वादः । गीताछंद—

जो दरव अरु वरभाव सेती जजै जिन चौवीशजी ।
वर धातुदीप अचल सुऐरावते भावी ईशजी ॥
सो पुत्रमित्रकलत्र संपत सुख लहै नवनीतजी ।
पुनिशक्र चक्रतनौ सुपद लहिहोइ मुक्त निचीतजी ॥

इति श्रीअचलैरावतभावी चौवीशी पूजा संपूर्णां ।

तृतियमेरु संबंधी पूजा संपूर्णा ।

अथ पुष्करार्द्धद्वीपमंदिरमेरुसंबंधीविरद्दमान जिनचारिपूजा प्रारभ्यते ।

छंद अमृतध्वनि त्रिभंगी पर ।

दमकततनसारं रविशशिधारं अतिद्युतिधारं सुखकारं ।
भ्रमतम शतखंडन शिवमगमंडन कलुषविहंडन दुखदारं ॥

त्रितिदीप सुहेरं मंदरमेरं पूरवेदरं थुति सज्जै ।
तित विहर सुमानं चहु भगवानं सुगुननिधानं धुनिगज्जै॥१॥
गज्जज्जव धुनि सज्जजनसुनि रज्जज्जनमन ।
सज्जज्जम नम भज्जज्जम गम मज्जज्जन नन ॥
चंच्चच्चरन सुंधाशुभम्भरन सुसच्चस्समकत ।
ठःठः थपत सुजैजै जपत प्रभादंद्मकत ॥२॥

ॐ ह्रीं मदिरमेरुविदेहस्थविहरमानजिन चंद्रबाहु-भुजगमभ-ईश्वर-नमीश्वर अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं मंदिरमेरुविदेहस्थविहरमानजिन चन्द्रबाहु-भुजगमभ-ईश्वर-नमीश्वर अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन ।

ॐ ह्रीं मदिरमेरुविदेहस्थविहरमानजिन चन्द्रबाहु भुजंगमभ ईश्वरनमीश्वर अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा ।

अथाष्टकं।

प्रमिताक्षरा छंद—

जल भृंग माहि भरि धार करों। पदपूजि नाथ दुखदोपहरों।
त्रिति द्वीपमंदिर विदेहनिमें। जिनचार सार जाजि गेहनिमें॥
ॐ ह्रीं चंद्रबाहु-भुजंगप्रभ ईश्वर-नमीश्वरेभ्यो-जन्ममृत्युविनाशाय जलं ॥१॥

वरगंध चंदन कपूर घसै। जिनराज पूजि भवताप नसै ॥त्रि०
ॐ ह्रीं चद्रबाहु-भुजगप्रभ-ईश्वरनमीश्वरेभ्यो संसारतापनाशाय गंधं ॥२॥

शुभशालि मुक्त मनु शुक्त समांतसुपुंज युंज भवदुःख गमं ॥ त्रि०
ॐ ह्रीं चद्रबाहु-भुजंगप्रभ-ईश्वरनमीश्वरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षत ॥३॥

निरदोप फूल सुख मूल महा। तुव अग्रधारि सरशूल दहा॥त्रि०
ॐ ह्रीं चद्रबाहु-भुजगप्रभ-ईश्वरनमीश्वरेभ्य कामबाणनाशाय पुष्पं ॥४॥

रसपूर सारचरु भूरिकरा। जजते क्षुधादि अरिकूर हरा ॥ त्रि०
ॐ ह्रीं चद्रबाहु-भुजगप्रभ-ईश्वरनमीश्वरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ॥५॥

मनि दीपजोत तम नाशतु हैं। पद सेवतें सुगुन भासतु हैं॥त्रि०

ॐ ह्रीं चंद्रबाहु-भुजंगप्रभ-ईश्वरनमीश्वरेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

दशगंध खेयमन माचतु है। मनु धूमधूम मिशि नाचतु है ॥त्रि०

ॐ ह्रीं चंद्रबाहु-भुजंगप्रभ-ईश्वरनमीश्वरेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

रसमिष्ट शिष्ट फल सुष्ट धरों । जिनचंद वृंद सुखकंद वरों॥त्रि०

ॐ ह्रीं चंद्रबाहु-भुजंगप्रभ-ईश्वरनमीश्वरेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥

वसुद्रव्य सर्व सजि अर्घकरों । पद पूजिसार शिवनारि वरों ॥
त्रिति दीप मंदिर विदेहनिमें । जिन चार सार जाजि गेहनिमें ॥

ॐ ह्रीं चंद्रबाहु-भुजंगप्रभ-ईश्वरनमीश्वरेभ्यो अर्घं निर्वपामि ॥९॥

अथ प्रत्येकार्घ ।

आर्या छंद-पुष्करमंदिर एवं, सीतोत्तर विहरमान जिनदेवं ।
श्रीचंद्रबाहु सेवं, समवश्रुत संस्थित वसूमेवं ॥१॥

रेणुकमाता ख्याता, नमों पिता देवनंद विख्याता ।
नगर विनीतं जाना, जजों सदा पद्मअंक सुखदाता॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपे मंदिरमेरुमवधिमीतोत्तरतटे पट्खंडमंडलमंडितचक्रवर्त्यादिसेव्यमानविहरमानजिन चन्द्रबाहुस्वामिने अर्घं ॥१॥

पुष्करमंदिर जानं सीता दच्छिन विदेहथित मानं ।
देव भुजंग प्रमानं, पूजों समवशृत भगवानं ॥१॥

महिमा माता जानों, पिता महाबल दयाल गुनवानों ।
लच्छन चंद्र प्रमानों विजया नगरी त्रिलोकपति थानों ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपे मंदिरमेरु सीतादक्षिणतटे पट्खड मडलमंडित चक्रवर्त्यादि सेव्यमान जिन भुजगप्रभाय अर्घं ॥२॥

पुष्करमंदिर जोंहे सीतोदा दक्षिणे सुमन मोहे ।
ईश्वर स्वामी सोहैं ताहि जजें सर्व संपदा होहैं ॥१॥

ज्वाला जननी राजैं, नगर सुसीमा अनूप छवि छाजै ।
गलमेन जासु गजे, रवि पदमें चिन्ह कोटि रविलाजे॥२॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपे मन्दिरमेरुसीतोदादक्षिणतटे पद्मखंडमंडलमंडित चक्रवर्त्यादिसेव्यमानविहरमानजिन ईश्वरनाथाय अर्घं ॥३॥

पुष्कर मंदिर नामी, सीतोदा उत्तरेंसु अभिरामी ।
श्रीनेमीश्वर स्वामी, समवशरनस्थित जजामि शिवगामी ॥१॥
सेना माता जाकी, पिता नमों वीरराण शुभ ताकी ।
वृषलच्छन पद्मा की, नगर अयोध्या प्रमोदपद् माकी ॥२॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपे मन्दिरमेरुसीतोदायाउत्तरतटे पद्मखंडमंडलमंडित चक्रवर्त्यादिसेव्यमानविहरमानजिन नमीश्वराय अर्घं ॥४॥

सुंदरी छंद—

त्रितिय पुष्करद्वीप सुहावनो । प्रथम मंदिर मेरु तहा वनो ॥

तसु विदेहनि में जिन चार हैं । जजत होत भवोदधि पार हैं ॥

ॐ ह्रीं चन्द्राहभुजंगमभद्रेश्वरनमीश्वरेभ्योऽर्घं पूर्णार्घं निर्वपामि ।

अथ जयमाला ।

घत्ता—जैजै जगवंदन कलुषनिकंदन त्रिभुवनजन आनंद करा ।
जै केवलभानं भूमनमहानं भविकमलानं मोदभरा ॥१॥

तोटक छंद—

जै श्रीजिन चंद सुबाहु महा । जै जंनि भुजंग प्रचंग कहा ।
ईश्वर नाथ अनाथ हितू । नमि प्रभव नाथ त्रिलोक पितू ॥२॥
दीपहि मंदर अंक बसे । निवसे शुभ जत्र विदेह बसे ॥
धनुष द्वादश जोजन हैं । भवि सारत यत्र प्रयोजन हैं ॥३॥
रस को कोई पान करे । बसु कर्मनि को धरि ध्यान हरे ॥
करैं बहु भांति नहां । गुन गावत नाचत भाव महा ॥४॥
बजु हैं मननं सननं । धुनि नूपुर है झनन झनन ॥
झिनि गुंजत किननंनं । सुर लेत केई ननन तनन ॥५॥

केइ वारह भावन भावत हैं। अपनो गुन आपु लखावत हैं ॥
केइ चारित भार सम्हारत हैं। केइ कर्म नतच्छन जारत है ॥६॥
यह धन्य विदेह सुथान सही। शिव मारग नित्त चलै चितही ॥
जह आपु विहार पुनीत करैं। चवसंघ लिये अघ सघ हरैं ॥७॥
गनराज जहां धुनि झेलत हैं। भवि को सब संशय टेलत हैं ॥
रतनत्रय भवि उदोत करैं। सुनिकै भविजी शिवनारि वरैं ॥८॥
हम जाचतु है तुमसों जिनजी। निज संनिधि द्यो विनती सुनजी ॥
तुव वैन सुधारस पान करों। लखि रूप सबै दुखदद हरों ॥९॥

घत्ता—जैजे जिनदेवं सुरकृत सेवं सुगुनअछेवं शुद्धमती।
शिवसपति दायक विघनविनायक जै जै जै चिद्रूपपती ॥

ॐ ह्रीं चद्रवाहु-भुजंगम-ईश्वर-नमीश्वरेभ्यो महार्घं निर्वपामि ॥१०॥

वसंत तिलका—आशीर्वादः।

श्रीपुष्कराद्धं मह मंदिर मेरु काजे।

ताकी विदेहनि विषै जिनराज राजे ॥
पूजें तिन्हे भविक जो बहु भक्ति लाई ।
सो सर्वसार सुखभुक्त सु मुक्त जाई ॥

इति मदराचलमेरुविराजमानविरहमानजिनपूजा समाप्ता ।

अथ पुष्करार्द्धद्वीपेमंदिरमेरुभरत वर्त्तमानचौवीशीपूजा ।

छन्द कुण्डलिया—

मदरमेरु विराजई पुष्कर पूरव वोर
ताकी दच्छिन में लसै भरत क्षेत्र शुभ ठोर ॥
भरत क्षेत्र शुभ ठोर तहां त्रिभुवन हितकारी ।
वरतमान चोवीश ईश पूजे नर नारी ॥

जिन्ह को गुन उर ध्याय मुदित मन जजत पुरंदर ।
तिन्ह को थापों इहां जहां जिनवर को मंदर ॥

ॐ ह्रीं भरत वर्तमान जिन चतुर्विंशतिअत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं भरत वर्तमान चतुर्विंशति जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनअत्रमम सन्निहितो भवभव वषट्सन्नानं।

अथाष्टकं ।

(चाल जततालं आदि में)

भवसागर तारोजी, दीन दयाल जिनेसुर जी । भव० ।
पुष्करदीप शिखरमंदिर के दच्छिन भरत विराजै ।
वरतमान चौबीश जिनेसुर पूजत भव भै भाजेजी ॥भौ०॥टेक॥
गंगाजल भरि कनक भृंग में तन मन प्रीत उपायो ।
धारा तीन करत पद आगे करम कलंक हरायो जी ॥ भव०॥

ॐ ह्रीं भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनसमूहेभ्यो जलं निर्वपामि ॥१॥

केशर चंदन कदली नंदन दाहनिकंदन लायो ।
शिव तिय जिनवर तुम पद पूजत सब दुखदंद नशायोजी ॥ भो० ॥

ॐ ह्रीं भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनसमूहेभ्यो गंधं निर्वपामि ॥२॥

तंदुल मंदुल शौरभि मंडित अमल अखंड सोहायो ।
पुंज धरत दुखदंद हरत सुखकंद भरत मनभायोजी ॥ भव० ॥

ॐ ह्रीं भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनसमूहेभ्यस्तंदुलं निर्वपामि ॥३॥

सुमन सुमन सम सुवरन थारी सुवरन थार भरायो ।
मनमथमदमथ नाथ तुम्हे लखि हाथ साथ शिरनायोजी भो०

ॐ ह्रीं भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनसमूहेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥४॥

घेवर बावर फेनी श्रेनी खाजे ताजे भायो ।
क्षुधारोग निरवारन कारन मनमुख ले शिरनायोजी ॥ भो० ॥

ॐ ह्री भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनसमूहेभ्यश्चरुं निर्वपामि ॥५॥

जगमग जोति होत दश दिश में ऐसो दीप अनायौ ।
तासो तुम पद पूजत संशय विभ्रममोह नशायौजी ॥भौ०॥

ॐ ह्री भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिन समूहेभ्योदीपं निर्वपामि ॥६॥

दशविध गंध पुनीतम लै करि खेवत शौरभि छायौ ।
अष्ट करम मम दुष्ट जरत है धूम धूमसु उड़ायौजी ॥भौ०॥

ॐ ह्री भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनसमूहेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

सुरस वरन रसना मन भावन पक्क सुफल उपगायौ ।
पूजत चरन कमल जिनवर के विघनसमूह नशायौजी ॥भौ०॥

ॐ ह्री भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनसमूहेभ्यः फल निर्वपामि ॥८॥

आठों दरव मिलाय मनोहर हरष हरष गुनगायौ ।
पूजत चरन कमल जिनवर के शिवतरु वीज वुवायौ ।

भौ सागर तारो जी दीन दयाल सुरेसुरजी ॥भव॥
पुष्कर दीप शिखर मंदर के दच्छिन भरत विराजे।
वरतमान चौवीश जिनेसुर पूजत भौ भै भाजे जी भवसा० ॥
ॐ ह्रीं भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिन समूहेभ्योऽर्घं निर्वपामि ॥१॥

अथ प्रत्येकार्घं

पाईता छंद—

शत आठ कोश सुभिक्षं। जिन जगन्नाथ क्रिय सुच्छं।
गिरि मंदिर भरत सुहायो। जजि वरतमान सुखपायो ॥१॥
ॐ ह्रीं जगन्नाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१॥
नभ माहि चलै जिन स्वामी। जिन देव प्रभाश नमामी। गि० २।
ॐ ह्रीं प्रभाशाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥
नाहि जीव जहां वध हो है। जिन सूर स्वामि मम सो है। गि० ३

ॐ ह्रीं सूरस्वामिनेऽर्घं निर्वपामि ॥३॥

नहि कवलाहार करैं हैं। भरतेश कलैश हरै हैं ॥ गि० ४ ॥

ॐ ह्रीं भरतेशाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

उपसर्ग वितीत विराजे। जिन दीर्घानन छवि छाजे। गि० ५

ॐ ह्रीं दीर्घाननाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

चतुरानन मूरति दरसे। सुनिजात कीर्त सुख सरसे। गि० ॥६॥

ॐ ह्रीं विजातकीर्तयेऽर्घं निर्वपामि ॥६॥

सब विद्या के पति जानों। अवशानन सो पहिचानों। गि० ७

ॐ ह्रीं अवशाननाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

तन की न परै परछाईं। सुप्रबोधन देव कहाहीं। गि० ॥८॥

ॐ ह्रीं प्रबोधनाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

द्रिग में न निमेष लगे हैं। सुतपोनिधि ज्ञान पगे हैं गि० ९

ॐ ह्रीं तपोनिधयेऽर्घं निर्वपामि ॥९॥

नखकेश बेंढ नहि जाकौ । जिन पावक नाम सुताकौ ॥गि०

ॐ ह्रीं पावकाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

छन्द रथोद्धता—

शोक चूरन अशोक वृक्ष है । सो जिनेश त्रिपुरेश इच्छहैं ।
पुष्करार्द्ध गिरि मंदरें सही । भर्तवर्तत जजामि हों यही ११

ॐ ह्रीं त्रिपुरेशाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

पुष्पवृष्टि नभतें जहां परै । शोगतेश सरशूल कों हरे ॥पु०

ॐ ह्रीं शोगताय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

दिव्यवेन सुखसों जहां खिरै । श्रीयवास सुखराशकों भरै ।पु०

ॐ ह्रीं श्रीवासाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

चोंर चौसठ सुरेश ढारही । श्री मनोहर कलेश टारही ।पु० १४

ॐ मनोहराय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

सिंहपीठ पर जे विराजही । श्री जिनेश शुभकर्म छाजही॥पु०

ॐ ह्रीं शुभकर्मसाय अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

कायकांति कृतमंडला कृतं । इष्ट सेवक सुचित्त में धृतं ॥ पु०

ॐ ह्रीं इष्टसेवकाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

देवदुंदुभि अकाश में वजैं । श्रीजिनेंद्र अमलेंद्र मैं भजै ॥ पु०

ॐ ह्रीं अमलेंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

तीनछत्र तिहु रत्नसे लशै । धर्मवाश जिन त्रासकों नशै ॥ पु०

ॐ ह्रीं धर्मत्रासाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

छंद मोतीदाम—

अनंत सुखायक ज्ञान महान । प्रशाद जिनेश धरें अमलान ।
सुमदर भारत दच्छिन खेत । जजों जिन वर्तत हैं छविदेत ॥

ॐ ह्रीं प्रशादाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

अनंत अगाध लशै द्रिग जास । प्रभामृग अंक भरैं भविआश ॥सु०।

ॐ ह्रीं प्रभामृगांकाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

अनंत सुखामृत अदभुत कूप । नमों अकलंक निशंकसरूप ॥सु०॥

ॐ ह्रीं अकलंकाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

अनंत अवाधित वीरज जास । नमों स्फटिक प्रभुकों शिवआस ।सु०

ॐ ह्रीं स्फटिकप्रभाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

छंद भुजंग प्रयात ।

हनें दोष अष्टादशौं मूलसेती । गनेंद्रं जिनेंद्रं नमों मुक्तहेती ।
जजों मंदिराख्या चले भर्त थानों गुणग्रामधारी प्रभूवर्तमानों ॥

ॐ ह्रीं गनेंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

चिदानंदकोध्यानधारे विराजैं । नमोंध्यानस्वामी असह्यध्यान माजें
जजों मंदिराख्याचले भर्त थानों । गुणग्रामधारी प्रभुवर्तमानों॥

ॐ ह्रीं ध्यानजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

लोलतरंग छंद—

पूरन अर्घ वनाय पुनीतं । पूजतु हौं सबही जिनमीतं ।

अडिल्ल छंद

जो पूजे चौबीस जिनेसुर देवजी ।
पुष्कर मंदर भरत विराजे येवजी ॥
सो मनवांछित सार सरव सुख पायजी ।
शक्र चक्र पद भोगि मुक्त पुर जायजी ॥

इत्याशीर्वादः ।

इतिपुष्करद्वीपभरतवरतमानचौवीशी पूजा समाप्ता ।

अथ मंदरमेरुभरतातीतचौबीशीपूजामाह

छंद माधवी सवैया सिंघावलोकन मुक्तपदग्रस्त यथा

मंदिर मेरु विराजतु है नित पुष्करदीप विषैं आति सुंदर ।
सुंदर दच्छिन भर्त वसै तित तीत जिनेसुर धर्म धुरंधर ॥

धर्म धुरंधर सेवतु हे गुन वृंद सुध्यावत जाहि पुरंदर ।
जाहि पुरंदर ध्यावतु ताहि सुथापहु पूजन को जिन मंदर ॥

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिन अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वानन
ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिन-अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन ॥
ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतजिन अत्र मम संन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा ।

गीता छंद-

कलधौत वरन उतंग कुल गिरि गंग चंग सुवार है ।
भरि कनक झारी धार ढारी जनम मरन निवार हे ॥
वर दीप पुष्कर मेरुमंदर पूर्व अति छवि छाजई ।
तसु भरतातीत जिनेश पूजत सकल भौ भै भाजई ॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतजिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल ।

वरमलय चंदन कदलिनंदन सुजलसंग घशात हे ।
तुम चरन पुष्कर पूजते भवताप तुरति नशात है ॥वर०॥

ॐ ह्री मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चंदनं निर्वपामि ॥२॥

शित शालि दुति उजियाल हीर हिमाल ते अति सोहनों ।
तसु पुंज परम वियुजते सुख भुंजते मनमोहनों ॥वर द्वीप०॥

ॐ ह्री मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यस्तंदुलं निर्वपामि ॥३॥

पुष्कर कदंब कुरंड केतक सुमन सुमन समान है ।
तुव चरन पुष्कर पूजतें प्रभु नशत मनमथ बान है ॥वर०॥

ॐ ह्री मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥४॥

पक्वान सुरस सवार सुवरन थार भर कर में लिया ।
तासों समर्चत चरन जुग दुख दोष कों पानी दिया ॥वर०॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ॥ ५ ॥

दुति दीप दिपत दिगंतरा ले सकल घटपट भास है ।
तासों उतारत आरती जिनपर प्रबोध प्रकाश है ॥वरद्वीप०॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीप निर्वपामि ॥६॥

दशगंध खेय हुताश माही मोद उर धरि संत हे।
वसु करम भरम जरंत ताको धूम घूम उडंत हे ॥वरद्वी०॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

ऋतु जनित फल कलरहित सुंदर पक्व मिष्ट मनोगता।
तासों समरचत चरनजुग वांछित भविक सुख भोगता ॥व०॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥

जल फल विमल वसुदरव को शुभ अरघ थार विषै करों।
कर जोरि जुग तुम चरन चरचत तुरित भौसागर तरों।
वर दीप पुष्कर मेरु मंदर पूर्व अति छवि छाजई।
तसु भरत तीत जिनेस पूजत सकल भो भै भाजई ॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामि ॥९॥

छंद तामरस तथा नाराच ।

तीर्थस्वामी सेइयै सदैव शर्म वेइयै,
कर्म भर्मनाशि शुद्ध पर्म धर्म लेइयै ॥
सुपुष्करार्ध मंदराचले सुभर्त खेत है,
पूजिये अतीत देव भुक्त मुक्त देत है ॥१३॥

ॐ ह्री तीर्थस्वामिने अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

धर्म धीश पर्म धर्मको प्रकाश कर्त हैं,
धर्मचंद नंदकौं पुनीत पुन्य भर्त हैं ॥पु०॥

ॐ ह्री धर्माधीशाय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

क्षमा धरी अधीश धारणेश सीस नावहीं,
पुनीत ध्यान धारिके अमीत शर्म पावही ॥पु०॥

ॐ ह्री धरणेशाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

प्रभाव जासु लोक में प्रसिद्धसिद्धदाय है,
नमों प्रभाव देव जो विशुद्धबुद्ध पाय है ॥पु०॥
ॐ ह्रीं प्रभावायऽर्घं निर्वपामि ॥१६॥

अनादि देव ध्याइये निशंकितंग पाइये,
अनादि शुद्ध बुद्ध रिद्ध सिद्ध को उपाइये ॥पुष्करार्ध॥
ॐ ह्रीं अनादिदेवाय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

नमों अनादि सुप्रभं विषादवादवर्जितं,
निकांछितंग दायकं कलंक संत तर्जितं ॥पुष्करार्ध॥
ॐ ह्रीं अनादि प्रभायऽर्घं निर्वपामि ॥१८॥

सर्व तीर्थनाथकूं सदैव माथ नाइये,
ग्लान भाव नासि शुद्धभावना लहाइये ॥पु०॥
ॐ ह्रीं सर्वतीर्थाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

निरूपमाय श्रीजिनाय ऊपमा अतीत हैं।
अमूढ़ भाव देत हैं कलेश सो वितीत हैं॥पु०॥
ॐ ह्रीं निरूपमाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

कुमार मार वर्जितं सुभव्यवर्ग्ग सर्जितं।
सु सोपगूहनांग देत अब्द शब्द गर्जित ॥पु०॥
ॐ ह्रीं कुमाराय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

विहार गेह देवने त्रिलोक वस्तुकों लखा,
जु धर्मसों डिगे तिन्हें सुधर्म में थिरा रखा ॥पु०॥
ॐ ह्रीं विहारग्रहाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

धारणे श्वरेशकों सुरेशवृंद वंदते,
वातसल्य अंग पाय पापकों निकंदते ॥पु०॥
ॐ ह्रीं धारणेश्वराय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

विकाश देवने समस्त वस्तुकों विकाशियौ,

सुमार्ग्ग की प्रभावना दिखाय पाप नाशियौ ॥

सुपष्कराद्धं मंदिराचले सुभर्त खेत है,

सुपूजिये अतीत देव भुक्त मुक्त देत है ॥२४॥

ॐ ह्रीं विकाशाय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

छंद सुंदरी तथा द्रुतविलंवित—

जल फलादि मिलाय मनोहरं । अरघ पूरन कीन सुभोहरं ।

जजत पुष्करमंदिर भर्त है। जिन अतीत महासुख कर्त हैं ॥२५॥

अथ जयमाल ।

घत्ता—जै केवल चंदा उदय अमंदा आनंदकंदा निरदंदा ।

कृतभविक कमोदं परमप्रमोदं ज्ञानमहोदं सुखवृंदा ॥१॥

पद्धड़ी छद ।

जै मदनकदन मदनेंद्र देव, मूरति स्वामी कृत सुख स्वमेव ।
नीराग स्वामी विनु रागदोष, जै जै प्रलवित जगत्तपोष ॥२॥
पृथ्वीपति मो भव उदधि तार, चारित निधि कुमति कलेश टार।
अपराजित प्रभु पद परम देह, जै जै सुबोध सुधि वेग लेह ॥३॥
वुद्धेश करे कमला सुधाम, वैतालिक जिन पद को प्रनाम ।
जै जै त्रिमुष्ट वर इष्ट देत, मुनि बोधक जिन भवसिन्धु सेत ॥४॥
तीरथ स्वामी मेटत कलेस, जै धर्म शीश सेवत सुरेश ।
धरनेश नमत धरनेश शीश, प्रभवेश परमपावन जगीश ॥५॥
जै जै अनादजिन गुन समुद्र, जै जै अनादि प्रभ नमत रुद्र ।
जै सर्वतीर्थ त्रिभुवन पुनीत, निरूपम अनुपम गुन जगत मीत ॥६॥
श्रीजिनकुमार प्रत्यूह खंड, जै जै विहार ग्रह सुख उमंड ।
धरणेश्वर जगदाधार पर्म, जै जै विकासजुत पर्म शर्म ॥७॥
ए तीत जिनेसुर भरत थान, गिर मंदर पुष्करदीप जान ।

चौथे गुन सात प्रकृत विनाश, सातैं त्रय नौ छतीस नाश ॥८॥
दशयेक द्वादशं सोल चूर, ऐ त्रेसट छै केवल प्रपूर ।
चौदहे बहत्तर तेर हान, सिव थान बसे करुना निधान ॥९॥
तुम गुन गावत सुर असुरराय, नाचत ताथेइ थेइ पग चलाय ।
द्रिमि द्रिमि धिधि तवलां मुरजनाद, संसाग्रदि मांरगी मुरपुरतवाद
पगनूपुर झननननननाय, कटकिं किनि किनिनिनिनिनि सुहाय ।
बहु हाव भाव रसको वताय, तननननन तनन तान गाय ॥११॥
पट पटपट पाटह नाद मिष्ट, दुंदुभि बीनादिक साज सिष्ट ।
सजि साज भगत तुव करत देव, निज जनम सफल करते सुमेव १२
तुम धन्य अमल गुनगन निधान, भवसागर तारन तरन जान ।
हम शरन गही मन वचन काय मन वांछित सुख द्यो हे जिनाय १३
घता—जै जनप्रनरक्षक अरिअहितक्षक, वस्तुविवक्षक दक्षपतो ।
सेवत सुर जक्षक लखि शिवगच्छक जै गुन कक्षक स्वच्छमती
ॐ ह्रीं मदरमेरुभरतातीतजिनसमूहेभ्यो महार्घं निर्वपामि ।

दोहा—पुष्कर मंदर भरत के, तीत जिनंद दयाल ।
जो पूजे सो सकल सुख लहे भविक गुनमाल ॥

इत्याशीर्वाद ।

इति मंदिराचलभरतातीत चौवीशीपूजा समाप्ता ।

अथ भावी चौवीशी पूजा प्रारभ्यते ।

छंदचित्र पवर्तवध वाईसा ।

आय सही वे हरे अति आरति इंद थुने तिहितें जु सया ।
हो इत थापत मंदर के परतच्छ सु भर्त भविष्य तया ॥
मर्म विनाशक आतम भाशक भव्यजीव कंहं शर्म दया ।
आय सेव तिथु हो पमजी सु जीभव हो थुति सेसय आ ॥

ॐ ह्रीं मदरमेरुभर्त भावी जिन अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् अह्वानन
ॐ ह्रीं मंदरमेरुभर्त भावी जिन अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभर्त भावी जिन अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् स्वाहाः ।

							आ							
							ध							
							स							
						ह्रा	वे	ह						
					रैं	अ	ति	आ	र					
				ति	इ	दं	धु	ने	ति	हि				
			तैं	जु	स	या	ह्रीं	इ	त	था	प			
		त	मं	द	र	के	प	र	त	छ	क्षु	भ		
	र्त	भ	वि	व्य	त	या	भ	मं	वि	ना	श	क	श्रा	
त	म	भा	श	क	भ	व्य	र्जी	व	कॅ	हॅ	श	मं	द	या
							सु							

सुदगी तथा द्रुतविलंबित छंद—

सुर नदी जल उज्जल पावनो, त्रिविध कर्मकलंक नशावनों।
त्रितिय दीप सु मंदर जानियै, भरत भाविय पूजन ठानियै ॥
ॐ ह्रीं मंदरमेरु भरत भावी जिन जन्म जरामृत्यु विनाशाय जल।
कदलिनंदन चंदन सो घसै। जजत ही भवदंदनकों नसै। त्रि०
ॐ ह्रीं मंदरमेरु भरतभावि जिन ससारतापविनाशाय चदनं निर्वपामि ॥२
विमल मंदुल तंदुल आनिये। धरत पुंज सबे दुख हानिये। त्रि०
ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतभावी जिनेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये तदुल निर्वपामि ॥३॥
सुमन सौरभिरंग सोहावनो। जजत शूल समस्त नशावनों। त्रि०
ॐ ह्रीं मदरमेरुभरतभावि जिनेंद्रेभ्यःपुष्प निर्वपामि ॥४॥
शशि सुधासम नेवज लै धरा, जजि पदांबुज रोग क्षुधा हरा। त्रि०
ॐ ह्रीं मंदरमेरु भरत भाविजिनेभ्यश्चरुं निर्वपामि ॥५॥
तमविनाशक दीपक जोत है, करत आरति ज्ञान उदोत है॥ त्रि०

ॐ ह्रीं मंदरमेरु भरत भाविजिनेभ्यो दीप निर्वपामि ॥६॥

अगर चंदन आदिक धूप है, जजत होत सुगंध अनूप है ॥ त्रि०

ॐ ह्रीं मंदरमेरु भरत भाविजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

रित फलोत्तम पक्व रशाल है। जजत आनंद होत विशाल है त्रि०

ॐ ह्रीं मदरमेरु भरत भाविजिनेभ्य. फलं निर्वपामि ॥८॥

जल फलादिक को सज अर्घ है, जजत पावत थान अनर्घ है।

त्रितिय दीप सुमंदर जानिये, भरत भाविय पूजन ठानिये ॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरु भरत भाविजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामि ॥९॥

अथ प्रत्येकार्घ

छंद नंदीश्वराष्टक की

क्षित क्षिमापती गुनवृंद देव वसंत धुजं।

गिर मंदर भरत सुछंद भाविय देव पुजं ॥१॥

ॐ ह्रीं वसतध्वजाय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

वृषमार्द्दव गुनमानिमाल श्रीत्रिजयंत सही ।
गिर मंदर भरत विशाल भाविय सेवतही ॥२॥

ॐ ह्रीं त्रिजयताय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

वृष आर्ज्जव आर्जव एव श्रीस्त्रिस्थंभ कहा ।
जजि मंदिर भरत सुदेव भाविय नाथ महा ॥३॥

ॐ ह्रीं स्त्रिस्थंभाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

वचसत्य रतनके खान खान परम ब्रह्म जिनं ।
गिर मंदर भरत सुथान भाविय सेय तिनं ॥४॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्माय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

जुग शौच धरमके मूलनाथ अवालीशं ।
जजिमंदर भरत अतूल भाविय नुतशीशं ॥५॥

ॐ ह्रीं अवालीशाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

जुगसम दमजम जुत देव नाथ प्रवादिक हैं ।
जजिमंदर भरत लखेव भावियतादिक हैं ॥६॥

ॐ ह्रीं प्रवादिकाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

दो विधि तपसागर चंद भूमानंद जिनं ।
गिर मंदर भरत अफंद भावि जजामि तिनं ॥७॥

ॐ ह्रीं भूमानंदाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

जुगत्याग धरमके मूल त्रिनयन जिन जानों ।
गिर मंदर भरत अतूल भावित भजि ध्यानों ॥८॥

ॐ ह्रीं त्रिनयनाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

परिगहग्रह त्याग जिनेश श्रीविद्वेष जती ।
गिर मंदर भरत भवेश पूजत शुद्धमती ॥९॥

ॐ ह्रीं विद्वेषाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

परमातम प्रशंग महेश्य ब्रह्माचार धरा ।

गिर मंदर भरत जिनेश भाविय सेवकरा ॥१०॥

ॐ ह्रीं परमातमप्रशंगाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

भूमिंद्र चंद्र नागिंद्र भूमिंद्रेश जपैं ।

गिर मंदर भरत गनिंद भाविय पाप खपैं ॥११॥

ॐ ह्रीं भूमिंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

गोपाल लांगली सेय गोस्वामि हि सदा ।

गिर मंदर भरत भवेय पूजों ताहिअदा ॥१२॥

ॐ ह्रीं गोस्वामिनेऽर्घं निर्वपामि ॥१२॥

कल्यान प्रकाशित स्वामि पंच उछाह धरें ।

गिर मंदर भरत यजामि भाविय विघ्नहरें ॥१३॥

ॐ ह्रीं कल्याणप्रकाशिताय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

दुति मंडित मंडल ईश मंडलनाथ नमें ।

गिर मंदर भरत भवीश पूजत पाप दमें ॥१४॥

ह्रीं मंडलेशाय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

चौपाई-लक्ष्मी जासु पदांबु वसै है, देव महा वसवेस वहै है।
पुष्कर पूरव मंदर जानों भाविय भर्त जजों धरिध्यानों॥ १५॥

ॐ ह्रीं महावसवेऽर्घं निर्वपामि ॥१५॥

जनम स्नान सुमेर पवित्रं,तेज उदै जिनसों जगमित्रं ॥पु० १६

ॐ ह्रीं तेजउदयाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

चारित धारि हरे सब कर्मं, दिव्य जोतिपी जिनगुनपर्मं॥पु० १७

ॐ ह्रीं दिव्यज्योतिषे अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

घाति विघाति प्रबोध धरैया, जेति प्रबोध कुबोध हरैया॥पु० १८

ॐ ह्रीं प्रबोधिताय निर्वपामि ॥१८॥

मुक्तसती आलिंगन होरे, श्री अभयंक नमों जगतारे ॥पु० १९

ॐ ह्रीं अभयंकाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

मुक्तिया जु कटाक्ष चलावैं, जो परसो प्रमितेश कहावैं॥पु० २०

ॐ ह्री प्रमिताय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

दिव्य स्फारक श्रीजिनदेवा, चार प्रकार करैं सुरसेवा ॥ पु० २१
ॐ ह्रीं दिव्यस्फारकाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

जे व्रतव्रात अघात धरैया । ते व्रत स्वामी दोष हरैया ॥ पु०
ॐ ह्रीं व्रतस्वामिनेऽर्घं निर्वपामि ॥२२॥

जो निधि दुर्लभ है जगमाहीं,सो निधिनाथ जपैं निपजाही॥
ॐ ह्रीं निधिनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

कर्म कलंक निशंक खिपाये, देव निकर्मक नाम कहाये ।
पुष्कर पूरव मंदर जानों, भाविय भर्त जजों धरि ध्यानों ॥२४॥
ॐ ह्रीं निकर्मकाय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

दोहा–श्रीपुष्कर पूरव दिशा भरत भविष्यत देव ।
पूजों पूरन अर्घ सों विघनमिटे स्वयमेव ॥
ॐ ह्रीं मंदरमेरु भरत चतुर्विंशतिजिनेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामि ।

अथ जयमाला ।

घत्ता–जै जै जनरक्षक शिवमग वक्षक चारितकक्षक स्वक्षवरा ।

जै लक्षअलक्षक सर्वविलक्षक दक्षक पक्षक रक्षकरा ॥

छंद नैमालिनी—

धरम ध्वज पशात धुज जैजै , त्रिजयंते नमों अरुज जैजै ।
त्रिस्थंभन भवभंजन जै जै, परम ब्रम्ह मुनि रंजन जै जै ॥२॥
अवालीश छ्यालिशगुन जै जै, श्री प्रवादिक परमधुन जै जै ।
भूमानंद कंद जस जै जै, त्रिनयन त्रिजग लसत वस जै जै ॥३॥
विद्वेपिक निरसगिक जै जैं, परमातम परसगिक जै जै ।
भूमिंदक शतेन्द्र नुत जै जै, गोस्वामी गनेन्द्र नुत जै जै ॥४॥
शुभ कल्यान प्रकाशित जै जै, मंडल आतम भासित जै जै ।
महावसत्र वासवनुत जै जै, उदै तेज समरस जुत जै जै ॥५॥
दिव्य जोति चतुरानन जै जै, श्रीप्रवोध भवभानन जै जै ।
अभैअंक जगजानन जै जै, प्रमित परम पहिचानन जै जै ॥६॥
दिस्करक सुख सागर जै जै, व्रत स्वामी नुत नागर जै जै ।
श्रीनिधान निधि दायक जै जै, जिन निःकर्म सहायक जै जै ॥७॥

अथाष्टकं ।

लक्ष्मीधरा छंद—

जान्हवी नीरसों हेमझारी भरों, धार दे तीन तीनों विथाकों हरों
पुष्करार्द्धे गिरे मंदरैरावते, वर्तमानं जजे शर्मकों पावते ॥

ॐ ह्रीं मदराचलैरावतवर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो जलं निर्वपामि स्वाहा ।

केदलीनंदनौ चंदनं बावना, पूजते तासुसों शांतिता पावना । पु०

ॐ ह्रीं मदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चदन निर्वपामि ।

देवजीरादिसे शालि शोभामई पुंजकों धारते शर्म साता लई । पु०

ॐ ह्रीं मदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यस्तदुलं निर्वपामि ।

पुष्करं पुष्कराद्या धरें पुष्करं, कामनाशै सही पुष्करं दुष्करं पु०

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यःपुष्प निर्वपामि ।

नव्यगव्यादि नैवेद्यनी के किये, थार में धारते सुक्खसाता लिये पु०

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चरुं निर्वपामि ।

दीपसों हे प्रभू मैं करो आरती, ज्ञान उद्योतता दीजिये भारती । पु०

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ।

अग्नि माहीं दशों गंध खेवो सही, अष्ट दुष्टैं जरैं धूमघूमे वही पु०

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ।

आम्र काम्रादि एलासु केला लये, पूजतैं विघ्नका आज्ञु पानी दये

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फलं निर्वपामि ।

नीर गंधादि ले अर्घ कीनों वरा, पूजतैं कर्मकैंतारसों निस्तरा
पुष्कराद्धे गिरे मंदरैरावते, वर्तमानं जजै शर्मकों पावते ॥

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामि ।

अथ प्रत्येकार्घ ।

द्रुति मध्यक छंद—

शंकर शंकरते जगमाहीं, धर्म उदोतक सो निज आहीं ।

१ जन्म मरण जरा । २ भारती सरस्वती । ३ ज्ञानावरणादि । ४ कर्मरूपी जंगल ।

मंदर मेरु सु उत्तर जानों, वरततु है अयरावत थानों ॥१॥
ॐ ह्रीं शकराय अर्घं निर्वपामि ।

कौनन कर्म हुताशनसे है, जिनवर अक्ष सुवाश कहे है। म०२
ॐ ह्रीं अक्षराशाय अर्घं निर्वपामि ।

सर्व उपाधि निवारि सुखदा। अनुभव मग्न सुनग्न जिनंदा। मं०
ॐ ह्रीं नग्नाय अर्घं निर्वपामि ।

नग्न सुआदि महातप धारी, अमल महा नगनाधिप भारी। मं०
ॐ ह्रीं नग्नाधिपाय अर्घं निर्वपामि ।

चौपाई–नष्ट किये पाखंड अनेक, नष्ट पखंड नमों शिरटेक ।
मंदर ऐरावत भगवान वरतत है पूजों धरि ध्यान ॥५॥
ॐ ह्रीं नष्ट पाखंडाय अर्घ निर्वपामि ।

१ अग्नि ।

षोडशसुपन लखे जसु माय। स्वप्नवोधजिन सो सुखदाय मं०

ॐ ह्री स्वप्नप्रबोधाय अर्घं निर्वपामि॥६॥

द्वादशतप विधि निधि दातार। नमों तपोधन जिन अविकार मं०

ॐ ह्रीं तपोधनाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

पुष्पकांड खंडन दुखदंद। पुष्पकेतु मंडन सुखकंद ॥ मं० ॥

ॐ ह्रीं पुष्पकेतवेऽर्घं निर्वपामि ॥८॥

दशों धरम परकाशक स्वामी। धार्मिक जिन पदपदमनमामी। मं०

ॐ ह्रीं धार्मिकाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

चंद्रकेतु चंद्रानन सुष्ट, किल्विषहरत करत सुख पुष्ट ॥ मं० ॥

ॐ ह्रीं चंद्रकेतवे अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

वीते राग दोष समुदाय। मो निज वीत राग सुखदाय। मं०

ॐ ह्री वीतरागाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

महाजोति धारी धरमज्ञ। श्री अनुक्त जपैं उरतज्ञ ॥ मं० ॥

ॐ ह्री अनुरक्ताय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

आतम जोत उदोत करंत । उद्योतक निज शिवतियकंत मं०

ॐ ह्रीं उद्योतकाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

भविउर तिमिर करत चकचूर तमोपेक्ष जिन गुनगन पूर । मं०

ॐ ह्रीं तमोपेक्षाय अर्घं निर्वपामि॥१४॥

माधव मधुसेवें पदपद्म । श्री मधुनाथ देत शिव सद्म । मं०

ॐ ह्री मधुनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

चक्र गदाधर गनधर वृंद । श्रीमरु देव नमें सानंद । मं०

ॐ ह्री मरुदेवाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

शमदमजमजुत केवलभान श्रीदममाय जपों धरि ध्यान । मं०

ॐ ह्री दममाय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

वृषचक्री वृषकेत लशंत । वृषदायक वृषभेसुर संत । मं०

ॐ ह्री वृषभेसुराय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

पांडुशिलातन क्रांतिपवित्र। नमों शिलातन त्रिभुवनमित्र। मं०

ॐ ह्रीं शिलानाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

विश्वमाहि जिनसम नहिं नाथ। विश्वनाथ सो हैं शिवसाथ। मं०

ॐ ह्रीं विश्वनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

मोतीदाम छद।

गनेंद्र सुरेंद्र नरेंद्र खगेंद्र जपैं नित चित्त महेंद्र जिनेन्द्र।
सुपुष्कर पूरव मंदर जान। जजों अयरावत संत महान॥

ॐ ह्रीं महेन्द्राय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

जगज्जन आनँद अंबुधि चंद। अनंत सुखाकर नंद जिनंद। सु०

ॐ ह्रीं नंदाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

शरीर प्रभातम भंजन जास। तमोनिभ नाथ महा जशरास। सु०

ॐ ह्रीं तमोनिभाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

सुब्रह्म विचारन तारन ब्रह्म । नमों जिन ब्रह्म सुधारन ब्रह्म ॥
सुपुष्कर मंदर पूरब जान । जजों अयरावत संत महान ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मधारणाय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

शोरठा–आठों दरब बनाय आठों अंग नमायकें ।
जजों हरप उरलाय चदु गिरि ऐरावत जिनं ॥

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामि ।

अथ जयमाला ।

घत्ता–तुव सुजशविशाला गुन मनिमाला परमरशाला सुकुमाला ।
नर सुरगपताला पति तिरकाला कृतनुतमाला सुखसाला ॥

छद कामिनी मोहन तथा आर्या शखला ।

सारसुखकारसंकर जिनेसुरमहा॥स्वच्छअक्षीणपदअत्तवासी लहा॥
मग्न आनंद में नग्न जिननायकं भग्नसंताप नग्नाधिपं लायकं ॥

आर्या—पाखंड मुंड खंडन नष्ट पाखंड देवअरि दंडन।
श्रीस्वप्नबोध मंडन नमों नमों मेंट मेंट भवहंडन ॥२॥

कामिनीमोहन छंद—

मेटि भवहंडनं तपोधन मुक्त है पुष्पकेतुकजिनं परम सुख जुक्त है।
आतमोद्धरन धरमेशस्वामी कहा चंद्रकेतू नमों होत साता महा॥

आर्या—साता महाउपाई तजि रागै वीतराग जिनराई।
अनुरक्त मुक्तदाई ज्ञानानंद नमों जिनराई ॥४॥

कामिनी मोहन छंद—

नायशिर इंद वंदंति उद्योतित जे तमोपेक्षितं सारसुख जो जितं॥
नमों मधुनाथशिवसाधनिरदोपहै जैति मरुदेव सुखदेव भवि पोपहैं॥

आर्या छंद—पोपाहि शमदम सुष्ट श्रीदममाय जिनेन्द्र गुनपुष्टं।
जै वृषभेश अदुष्ट लोचकृतं केशपंचकर मुष्टं ॥६॥

कामिनी मोहन छंद—

पंचकरमुष्ट मह शिलातनतपधरे जैति जिन विश्वनाथं शकल भैहरै॥

नमत शतइंद माहेन्द पद पकजं। नद आनद दाता जगत रजन॥
आर्या छंद–रंजन जन भव भंजन तमोनिधी दोष दुष्ट दुखगंजन।
श्रीब्रह्मधार भञ्जन नमों नमों ज्ञान नैनन के अंजन॥
अंजनं मोखमगगामिके हैं सही,जैति चऊबीसजगराज सुखकेमाही
पुष्करे मंदिरैरावते वर्त ही,पंचकल्यानपाते ध्याय भवि तर्तही॥९॥
आर्या–भवतर्तहि लखि देवै सुर ध्यावैं नाय भाल पद सेवें।
नाचें चहुं गति लेवें साजैं बाजै रसाल बहु भेवे॥१०॥
कामिनी मोहन छंद—
साज बाजैं रसालैं सुबहु भेवजी सम्रादसंसाम्रादिसारंगी धुनि लेवजी
झिनिनिनिनि झिनिनिनिनि झलरी बाजई।
धिकट धुनि धथप धुनि द्रिम सुरज साजई॥
आर्या–बाजई वीनानाद तननननन तान लेत अहलादं।
सनननाट अवादं कृत सुरसुर साल ताल तलपादं॥१२॥
कामिनी मोहन—
तालतलमाद वादिते जो बाजई,तासु उपमान कहु जगत मे छाजई॥

धन्य जिनचंद गुनवृंदपदवंदही, गायजस आज हम लेत आनंद ही॥

घत्ता—जै मनमथमंथक नित शिवपंथक कृतश्रुत ग्रंथक ग्रंथपती।

जै करुना मंदर जजत पुरंदर धरम धुरंधर शुद्धमती ॥१४॥

रथोद्धता छंद—

पुष्कराद्धंवर पुव्व में कहा, मंदिराद्रि अयरावते महा।

वर्तमान पद जो जजै सही, वांछितार्थ पदलेत सो सही ॥१५॥

इत्याशीर्वाद।

इति मंदिराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिपूजा समाप्ता।

अथपुष्कराद्धद्वीपेमंदिराचलैरावतातीत पूजाप्रारभ्यते

स्थापना धनुपबंध—

दोहा—चतुरथ गिरिवर उत्तरें जिन जे तीत प्रमान।

तिनहि सुथापतु भावसों उपजे पदनिरवान॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपेमंदराचलैरावतातीतजिनअत्रावतरअवतरसंवौषट् आह्वानन
ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपेमंदराचलैरावतातीतजिनअत्रतिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन
ॐ ह्रींपुष्करार्द्धद्वीपेमंदराचलैरावतातीतजिनअत्रममसंनिहितोभव भव वषट्स्त्रा।

अथाष्टक तालजत्त होली की चाल में

गिर मंदिर उत्तरथान पूजों तीतकों ॥ गिर० ॥ टेक ॥
पदमद्रह गतनीर सार शुभ कनक कुंभ भरिआन ।
धार करत तुम चरनन आगे करम कलंक नशान ॥ पूजों० ॥१॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपे मंदराचलैरावतातीतजिनेभ्यः जलं निर्वपामि ।

बावन चंदन कदली नंदन केशर संग घशान ।
भवतपहरन चरन परि पूजत विघन तपतकी हान ॥पूजों०॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपमंदाराचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो गंध निर्वपामि ।

शालि अखंडित शौरभि मंडित शशि सम द्युति दमकान ।
अषै संपदा कारन पूजों हे जिनवर धरि धान ॥ पूजों० ॥३॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमदराचलैरावतातीतजिनेभ्यस्तंदुलं निर्वपामि ।

सुमन सुगंधित प्राशुक लीनों गुंजत अलिगन आन।
पूजत चरन कमल जिनवर तुव मनमथ वान नशांन॥पूजों०॥३॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमदराचलैरावतातीतजिनेभ्य: पुष्प निर्वपामि ॥

घेवर वावर फेनी श्रेनी सौरभ सरस महान ।
छुधा रोग निरवारन कारन जजों निराकुल दान ॥ पूजों० ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमदराचलैरावतातीतजिनेभ्यश्चरु निर्वपामि ॥

मनिमय दीप उदोत होतवर हे जिन भ्रमतमभान ।
तासों आरति करत जगत गुरु उपजे आतम ज्ञान ॥पूजों०॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमदराचलैरावतातीतजिनेभ्य: दीपं निर्वपामि ॥

अगर तगर कृष्णागर चंदन धूप सुगंध अमान ।
खेवत धूमकेतु मँहि ताको जरत दुरित दुख दान ॥पूजों०॥

ओं ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमंदराचलैरावतातीत जिनेभ्यो धूप निर्वपामि ।

श्रीफल पक्व मनोहर पावन । मधुर रसीले आन ।
पूजत मनवांछित परिपूजत अनुक्रम अनुपम थान । पूजों०

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमंदराचलैरावतातीतजिनेभ्यः फल निर्वपामि ।

जलफल आदि दरव वसु साजे अरघ ललित वरदान ।
नाचिराचि शिरनाय समरचत मिलत विमल सुखथान । पूजों०॥

ओं ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमंदराचलैरावतातीतजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामि ।

अथ प्रत्येकार्घ ।

लोलतरंग छन्द--

जे उपगारिय वैन बखानैं । ते कृतनाथ नमों धर ध्यानैं ।
पुष्कर मंदिर उत्तर मानों । तीत जजों अईरावत थानों ॥१॥

ॐ ह्रीं कृतनाथाय अर्घं निर्वपामि ।

इष्ट विसिष्ट प्रविष्ट करैं हैं । श्री उपविष्ट अरिष्ट हरैं हैं ॥पु०॥

ॐ ह्रीं उपविष्टाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

मोहमहा तमभंजन भानं । आदित देवनमों गुनखानं ॥ पु० ॥

ॐ ह्रीं आदितदेवाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

अष्टम भूमि सुथानकवासी।श्रीअसथान नमों अविनासी ॥पु०॥

ॐ ह्रीं अस्थानिकाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

चन्द्रसमान प्रमोद प्रकाशी । देव प्रचंद नमों सुखरासी ॥पु०॥

ॐ ह्रीं प्रचंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

वेणूके जस गावत देवा । वेनुक गावत हैं वहुभेवा ॥ पु० ॥

ॐ ह्रीं वेणुकाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

कोटिकभानु छिपे छविदेखें। नाथत्रिभानु विभूतिविशेखें ॥पु०॥

ॐ ह्रीं त्रिभानवे अर्घं निर्वपामि ॥७॥

ब्रह्मसु ब्रह्म जिनेसुर स्वामी । ब्रह्मविकाशक ब्रह्म नमामी॥पु०

ॐ ह्रीं ब्रह्मब्रह्माय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

वज्रशरीर लसे जसु आदी वज्र सुअंग नमों निरवादी ॥पु०॥

ॐ ह्रीं वज्रागाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

वैरविरोध निरोधन हारे, श्रीअविरोधन है अविकारे । पुष्कर० ॥

ॐ ह्रीं अविरोधनाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

पापप्रकृत्त सबै चकचूरे, जैति अपाप जिनाधिप पूरे ॥ पु० ॥

ॐ ह्रीं अपापाय अर्घनिर्वपामि ॥११॥

लोक अलोक लखे जसरासी लोक सुउत्तर ग्यान प्रकाशी॥पु०॥

ॐ ह्रीं लोकोत्तराय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

इंद्रवज्रा छंद—

जलाधिशेपं जिनराज स्वामी जगत्रयी ईशपदं नमामी ।
सुपुष्करे मंदर मेरु सोहै । ऐरावतें तीत जजामि जोहै ॥१३॥

ॐ ह्रीं जलाधिशेपाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

विद्योदितु द्योतित वोधलोके। विद्यापती सेवत देय धोके ॥सु०॥

ॐ ह्री विद्योतिताय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

सुमेरसे गोर सुमेरनाथ भवाब्धि में डूबत थामि हाथ ॥सु०॥

ॐ ह्रीं सुमेरवे अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

श्री भावितं भव्य समस्त सेवें। आनंद देवें भवनाव खेवें ॥सु०॥

ॐ ह्रीं भाविताय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

समस्त पे वच्छल लच्छकारी। नमों नमों वच्छल स्वच्छधारी॥सु०

ॐ ह्रीं वच्छलाय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

अतिंद्रियज्ञान प्रकाश कीनों। नमों जिनालं जिन ध्यानभीनों॥सु०

ॐ ह्रीं जिनालयेऽर्घं निर्वपामि ॥१८॥

पापं सरोजं दहने तुषारं। नमों तुषारं जिन शर्मकारं॥सु० ॥

ॐ ह्रीं तुषाराय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

निर्विघ्नदाता भुवनेस स्वामी। आनंद वारानिध चंद्रनामी ॥सु०॥

ॐ ह्री भुवनेशाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

कंदर्प सर्प्पापहरं खगेशं सुकामस्वामी प्रणमें जिनेशं ॥सु०॥

ॐ ह्रीं सुकामाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

आनंदकंद जिनचंद वंदं देवाधिदेवं प्रणमों अमंदं ॥ सु० ॥

ॐ ह्री देवाधिदेवाय अर्घ निर्वपामि ॥२२॥

आकारिमं देवपरं पवित्रं निरूपमं रूप अरूपचित्रं ॥ सु० ॥

ॐ ह्रीं आकारिमाय अर्घ निर्वपामि ॥२३॥

विनीतनें नीत सबै वतायो विनीत सेयें निज नीत पायौ ॥
सुपुष्करें मंदरमेर सोहे ऐरावते तीत जजामि जोहै ॥२४॥

ॐ ह्रीं विनीताय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

वसततिलका छद—

जै तीततीर्थपति मंदरपुष्करार्धे। ऐरावते परमआतम धर्मसाधे।

ताकों समर्चंत सुपूरन अर्घधारी पावे समस्तसुख सो उभयप्रकारी॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपमंदराचलैरावततातीतजिनेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामि ।

अथ जयमाला ।

घत्ता—जे जिन मलवर्जित अरिकरितर्जिति घनमिवगर्जित वैनवरं
भवि जनमनसार्जित सुमति उपर्जित विघनविवर्जित चैनकरं॥

३० मात्रा का छंद—

वदामो कृत नंदा मदा पंदासे आनंदा दान ।
इष्टं शिष्टं नष्टानिष्टं श्रीउपविष्टं पुष्टादान ॥
शुद्धं बुद्धं हैं निःक्रुद्धं देवादित्यं सुष्टामान ।
स्वक्षक्षेमा हृद्दा वृद्दा स्थानीकं संरम्भोमान ॥२॥
त्रिभ्वव्यापि हैं अयापी प्राप्तंदापी लक्ष्मीमान ।
शोभाधारी जे भौनारी श्रीवेगांक जै जै जै वान ।
मार्तंडा भाखंडं मह चड जोत श्रीश्रीमान् ।

ब्रह्मब्रह्मा ब्रह्मज्ञानी ब्रह्मापेक्षी ब्रह्मध्यान ॥३॥
वज्राधीशं कृतनुतशीसं श्रीवज्रांगा वज्रांगान ।
ध्याता ध्येयं ग्याता गेयं अवबोधनजुत शसैहान ।
पापात्यक्ता आपाजुक्ता भुक्ता मुक्ता शंमौंधान ।
लोकालोक सर्वविलोकं लोकोत्तर श्रीशोभावान ॥४॥
हेयादेय समुद्र विमंथन ग्रंथ निर्ग्रंथ जलाधिपवान ।
अविर्तियद्भुत ज्ञानोद्योत विद्योत सद्विद्यादान ।
ध्यानी ग्यानी हैं निःकंपी मानो मेरु सुमेरु समान ।
मानी भावैं भावित के गुन धीरज वीरज सुकृत खान ॥५॥
निच्छल स्वच्छल सत सुवच्छल वच्छल लच्छित लच्छविधान
चक्री शक्रधरैं वृषचक्र जिनाले देव नमैं हैं आन ।
सातासाता जुग्मविमुक्ता जुक्ततुपारं मुक्तस्थान ।
तातातीतों लोकतने हैं श्रीभुनेसुर कृतकल्यान ॥६॥
जीवाजीवादे प्रत्यक्षं वक्तोलक्ष सुकामजितान ।

धर्माधर्म विशेष विकाशे श्रीदेवाधिमुदेवमहान् ॥

कर्त्ताकर्त्ता भुक्ता मुक्ता आकारिक कीनों विख्यात।

नीतानीत विनीत बताये नीतमती मानै है आन ॥७॥

जे चौबीसा पुष्करमंदर ऐरावर्त्त के तातान।

ताकों इंदै चंद गनिंदै, वंदै हैं नागिंद आन।

ताकों सेवैं हैं जे प्रानी ते होवैं श्रीशोभावान

पूजाठानै गुनउर आनै "वृंद" नरिंद धरैं हैं ध्यान ॥८॥

घत्ता—जे श्रीजिनकुंजर हरि भवपिंजर कीरति गुंज रही जगमें

जै मुक्तधरापति जुक्तमहामति मंगलदायक श्यों मगमें ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपमंदरऐरावतक्षेत्रातीतजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि।

अथाशीर्वाद। अडिल्लछंद—

पुष्करमंदरऐरावत जिन तीत जी।

पूजत सुरनर नारि तिन्हे धरि प्रीतजी।

जो सेवै मनलाय हरष उमगायजी ।
सो सुरनर सुख भोगि परमपददायजी ।

इति श्रीपुष्करार्धं पूर्वमंदराचलैरावत २४ पूजा संपूर्णा ।



अथ पुष्करार्द्धं मंदराचलैरावते भाविपूजा प्रारभ्यते।

कमलवद्ध चित्र—

दोहा—चवथवग्नि वर वतावते वनै वरावतवनाव
भावदेव भव भाव सव आव आव सिवराव ॥

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविजिन अत्रावतरअवतर सवौषद् आह्वानन ।
ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापन ।
ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविजिन अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहाः

अथाष्टकम् ।

(चाल नंदीश्वराष्टक भाषाद्यानतरायजी कृततालजत्तादिमें बने है)

यह सलिल कलिल मलहार भारी माही भरा ।
पदपंकज पूजत सार मेटत जनम जरा ॥
वर पुष्कर मंदर मेर उत्तर माहि वसे ।
ऐरावत भावत हेर पूजत पाप नसै ॥१॥

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविजिनेभ्यो जन्मादिविनाशाय जलं निर्वपामि ।

घसि चंदन केसर सार सौरभि भृंग भरा ।
तुम चरन कमल परवार भौ आताप हरा । वर०॥२॥

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चंदन निर्वपामि ।

हिम हीर शशीसम सेत तंदुल मंदुल से ।
तसु पुंज वियुंज धरेत वारिद दुःख नसै । वर०॥३॥

ॐ ह्रीं मदराचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यस्तंदुलं निर्वपामि ।

यह काम महाजग शूल आपु निमूल किया ।

यातैं लेकर वर फूल पूजत खोल हिया। वर०॥४॥

ॐ ह्री मन्दराचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः पुष्पं निर्वपामि।

जग रोगवली इक भूख दूपत सब प्रानी।

ताको तुम नासि अरूप नेवज मैं आनी। वर०॥५॥

ॐ ह्रीं मन्दराचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि।

तुम ज्ञान प्रकाश जिनेश लोकालोक लखें।

हम दीप चढ़ाय महेश आपा आप चखें। वर०॥६॥

ॐ ह्री मन्दराचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो दीपं निर्वपामि।

तुम कर्म कलंक विनाश आतम शुद्ध भये।

हम खेवत धूप सुवास नाचत कर्म चये। वर०॥७॥

ॐ ह्री मन्दराचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि।

तुम पाय अतिंद्रिय शर्म पर्म पुनीत फलं।

फलसौं पूजों तजि भर्म दीजो मोक्ष थलं। वर०॥८॥

ॐ ह्री मंदराचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः फलं निर्वपामि ।

तुम आनँद कंद जिनद सब दुख दंद हरे ।

हम अरघ लेय अभिनंद पूजत भक्त धरे ॥

वर पुष्कर मंदर मेर उत्तर माहि वसे ।

ऐरावत भावत हेर पूजत पाप नसे ॥९॥

ॐ ह्री मंदराचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामि ।

अथ प्रत्येकार्घं ।

चौपाई छंद।

विसद सुखद जस पूरन चंद । नमों जशोधर जगदानंद ।

पुष्कर पूरव मंदर मेर । जजों भाविष्यैरावत हेर ॥१॥

ॐ ह्री यशोधराय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

परम सुकृत पद दायक पर्म। सुकृतदेव कृत नितजिनधर्म।पु०॥
ॐ ह्री सुकृताय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

अभै घोषनाकृत जगजेन। अभैघोष जिन निजगुन देन।पु०॥
ॐ ह्री अभैघोषाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

दायक पद निर्वाण उदार। श्रीनिर्वाण नमों भवतार। पु० ॥
ॐ ह्री निर्वाणाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

शुद्ध सकलव्रत जिनके पास। सो व्रतवास भरत भाविआश।पु०॥
ॐ ह्रीं व्रतवासाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

राजनिके राजा पदसेय। सो अतिराज राजपद देय। पु० ॥
ॐ ह्रीं अतिराजाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

ध्यान अश्व चढ़के शिवलीन नमों अश्वजिन परमप्रवीन। पु०॥
ॐ ह्री अश्वजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

अर्जुनवर्न विवर्जित मान,जै अर्जुन जिन गुनमनि खान।पु०।

ॐ ह्रीं अर्जुनजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

धरम सुधाधरतें मिय चखें, तपश्चंद्र सो चिद्गुन लखें ॥ पु० ॥

ॐ ह्रीं तपश्चंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

पंच परावर्तन चकचूर । शारीरिक जिन समता पूर ।पुष्कर०।

ॐ ह्रीं शारीरिकाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

मनवांछित पद देत मिलाय। नमों महेश्वर जिनके पाय ।पु०।

ॐ ह्रीं महेश्वराय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

सुंदर ग्रीव लखत द्रिगचैन । श्रीसुग्रीव नमों निरऐन ।पुष्कर०।

ॐ ह्रीं सुग्रीवाय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

दिढ़ प्रहारतें अरि खैकीन । दिढ़प्रहार समतारस भीन । पु० ।

ॐ ह्रीं दिढप्रहाराय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

दयानीत जग जस विख्यात दयानीत जिनवर वरगात ॥ पु०॥

ॐ ह्रीं दयानीताय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

पाडता छंद-जिन अंवरीख पद सेवों निरदोप निजातम वेवों ।
गिरि मंदर पूज रचावों अयरावत भारत भावों॥१५॥

ॐ ह्रीं अवरीपाय अर्घं निर्वपामि १५।

जश नारद तुंवर गावें । जिन तुंवर सों लय लावें ॥गिरि०॥

ॐ ह्रीं तुवराय अर्घं निर्वपामि॥ १६॥

विफलीकृत कामकलका । जिन सर्व शील जु अटका ॥ गि०॥

ॐ ह्रीं सर्वशीलाय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

जनमोच्छव सार धरें हैं । प्रतिजातक पाप हरेहैं । गिरि०॥

ॐ ह्रीं प्रतिजातकाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

जित इंद्रिय दिव्य भए हैं । सुअतिंद्रिय शर्म लए हैं । गि०॥

ॐ ह्रीं जितेंद्रियाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

तप आदिततें अति तेजा । तप आदित भवि शिवभेजा । गि०

ॐ ह्रीं तपादित्याय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

रतनत्रय क्रांत धेरं हें। शिव रतनकीर्ण सुवेरं हें। गिरि०॥
ॐ ही रतनकिरणाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥
दिवसाधिप सेवत आई। प्रणमामि दिवेश सदाई ॥ गिरि०॥
ॐ ह्रीं दिवेशाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥
शुभ लच्छन लच्छित गीता। जिन लांछित सो जग तीता॥गि०॥
ॐ ह्रीं लाछनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥
निज शुद्ध प्रदेश करैया। सुप्रदेश कलेश हरैया।
गिरि मंदर पूज रचावों। अयरावत भावित भावों ॥२४॥
ॐ ही सुप्रदेशाय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥
लोलतरंग छंद।
पूरन अर्घ बनाय पुनीतं। पूजत हों जिनके नुत मीतं ॥
मंदर उत्तर भाविय सारं। वदत "वृंद" करो भवपारं ॥२५॥
ॐ ही मंदराचलैरावत भाविचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामि।

अथ जयमाला ।

घत्ता—जै चिद्गुन दर्पन भविसंतर्पन शिवदिव अर्पन विघ्नहरा।
जै जै भगवंतं कृत भव अंतं अतुल अनंतं ज्ञानधरा ॥१॥

तोटक छंद—

प्रणमामि जशोधरसार जसी । कृत सुकृत सुकृत देव वसी ।
जय घोप अभै जिन शुद्धमती । निरवान नमो निर्दोप जती ॥२॥
व्रतवास सदा भवत्रास हरैं । अतिराज नमों सुखकंद करैं ॥
नित अश्वजिनेश विपाद हरैं । जिन अर्ज्जुन अर्ज्जुन कीर्ति करैं३
चंद जिनद गनिंद भजे । सु सरीरिक पाय संतद जजैं ।
र मेर महेश महा । पद ग्रीवक ग्रीवसु देत कहा ॥४॥
सु प्रहार दिढप्रहर । प्रणमामि दयानिन भीत धरं ॥
संवर अवर ईप गहा । जश गावत तुंवर तुंवरहा ॥५॥
सव सील महामनि भूखन हैं । प्रतिजात सदा निरदूखन है ।
सुख शुद्ध अतिंद्रिय चूखन है । तप आदित ज्ञान अदूखन हैं॥५॥

रतनत्रय रत्न सु कर्ण धरैं । सु दिवेश महामल जीर्ण करैं ।
जिन लांछन लांछित बोधकला । सुप्रदेश अशेष कलेश दला ॥७॥
वर पुष्कर मंदर मेर लसै । अघरावत उत्तर तास वसै ।
तसु भाविय तीरथ नाथ सही । गुनध्यावत पावत मोच्छ मही ८
तिनसों अरदास करों नितही । प्रभु भक्ति सदा निवसो चित ही ।
तव आगमज्ञान रहो हियमें । नित आतमध्यान जगो जियमें ९
रतनत्रय प्रापत होहु सही । जिहिं ते झट पाइय मोच्छ मही ।
जब लौं न मिलै जिनराज हमें । तवलों इतनों हम नित्त पमें ॥१०॥
शिवसाधन जोग सदैव मिलो । अनुभौ रस अद्भुत चित्त पिलो ।
दुखदारिद विघ्न विनाशकरो । सुखसंपतसार सु गेह भरो ॥११॥

घत्ता-जै शिवसरमंजन कलमलभंजन मुनिमनकंजन रंजकरा ।
जै सदयनिरंजन भविद्रिगअंजन विपतिविगंजन तंज हरा ॥

ॐ ह्री मंदराचलैरावतभावि चतुर्विंशति जिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि ।

अथाशीर्वादः । चौबोल छंद-

आठों दरव मिलाय गाय गुन जो पूजे जिनराज जती ।
पुष्करद्वीप तुरित मंदिर गिर ऐरावत भावत सुमती ॥
सो जन पुत्र मित्र धन जोवन वांछित लाभ लहत है अती ।
शक्र चक्र अनुभूति पायके "वृंदावन" है मुक्तपती ॥

इति श्रीपुष्करार्द्धद्वीपे मंदराचलैरावतभाविपूजा समाप्ता ।
इति चतुर्थमेरुपूजा संपूर्णा ।

अथ पुष्करार्द्धदीपे मेरुसंबंधी विदेहक्षेत्र संस्थित विहरमान पूजा प्रारभ्यते ।

छंद सारंगी धुनिवर्ण १५

आपा शुद्ध चैतन्यं मे जे धीरं साधें बैठे ।

जा देखें है हों शं जीमें निग्रथायों श्यो पेठे ॥

सो ह्यांते मे चाहों तेरो सेवा स्वामी नौ मामी ।

पाचै मेरं वेदे हों में थापों ह्यां चारों स्वामी ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धद्वीपपश्चिमविद्युन्मालीमेरुकेविदेहक्षेत्रसंबंधी चारिविहरमान श्रीवीरसेनमहाभद्र देवजशअजितवीर्य जिन-अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठतिष्ठ ठःठ स्थापनं । अत्रमम सन्निहितो भवभव वषट् स्वाहाः ।

अथाष्टकम् ।

(चाल भाषा सिद्धाष्टक द्यानतविलासकी)

नीर विमल शीतलमहा भरि कंचनझारी लाय ।

तुम पद पदम चढ़ाइयौ मम करम कलंक नशाय ॥

विद्युन्माली मेरुके लखि चारि विदेह महान ।

समवसरन जुत पूजिहों चहु विहरमान भगवान । वि०।

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपपश्चिमविद्युन्मालीमेरुविदेहस्थचतुर्विंहरमानजिनेभ्यः श्री-
वीरसेन-महाभद्रदेवजश-अजितवीर्येभ्य जन्मजरामृत्युविनाशाय जल निर्वपामि ।

केशर चंदन बावनों घसि कदलीनंद मिलाय ।
तुम चरनन पर पूजते सब विघन सघन मिटिजाय ॥वि०॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपपश्चिमविद्युन्मालीमेरुविदेहस्थचतुर्विंहरमानजिनेभ्यः श्री
वीरसेन-महाभद्र-देवजश-अजितवीर्येभ्यश्चंदन निर्वपामि ।

शालि अखंडित सेत हैं शुभ पुंज धरंत सुधाय ।
दारिद्र द्रुम दुखनाशिकें सुख अखय संपदा पाय ॥वि०॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपपश्चिमविद्युन्मालीमेरुविदेहस्थचतुर्विंहरमानजिनेभ्यः
श्रीवीरसेनमहाभद्र-देवजश-अजितवीर्येभ्यस्तदुलं निर्वपामि ।

फूल सुगंध सुवास है अलिगुंजत जापै आय ।
सो तुम आगे धारते सब समरशूल नशिजाय ॥वि०॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपपश्चिममेरुविदेहस्थचतुर्विंहरमानजिनेभ्यः श्रीवीरसेन-म-

हाभद्र-देवजश अजितवीर्येभ्यः पुष्पं निर्वपामि ।

नेवज सज सुरस सुगंधता मन नेन स्सन सुखदाय ।

सो लै तुम आगे धरों मम रोग क्षुधा नशिजाय ॥ वि०॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपपश्चिममेरुविदेहस्थचतुर्विहरमानजिनेभ्यः श्रीवीरसेन-महाभद्रदेवजश अजितवीर्येभ्य: नैवेद्य निर्वपामि ।

यह दीप प्रकाश महालसे निरधूम नयन प्रिय लाय ।

तासों तुम आरति करों उर आरततम छै जय । वि०।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुविदेहक्षेत्रस्थविहरमानजिनेभ्यः श्रीवीरसेन-महाभद्रदेवजश-अजितवीर्येभ्यः दीपं निर्वपामि ।

दशगंध सुगंध उखेइये जिन तुम चरनन ढिग लाय ।

करम कलंक जरैं सही मो धूम घुम उडाय ।विहरमा०॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुविदेहक्षेत्रस्थविहरमानजिनेभ्यः श्रीवीरसेन महाभद्रदेवराज अजितवीर्येभ्यः धूपं निर्वपामि ।

फल पक्क रसीले पावने भरि हाटक थार मगाय ।
दारिद विघन विनाशियै हम पूजत हैं शिरनाय ॥ वि० ॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुविदेहक्षेत्रस्थविहरजिनेभ्यः श्रीवीरसेन महाभद्रदेव जश अजितवीर्येभ्यः फलं निर्वपामि ।

जल फल वसु दरव संजोयके कर जोरि जजों शिवराय ।
आनंद संपति दीजियै अरिनाश करो जिनराय ॥ वि० ॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुविदेहक्षेत्रस्थविहरमानजिनेभ्यः श्रीवीरसेन महाभद्रदेव जश अजितवीर्येभ्यो अर्घं निर्वपामि ॥

अथ प्रत्येकार्घ ।

चौपाई छंद—

पुष्कार्द्ध गिर पश्चिम शीता । उत्तर पुंडरीक नी मीता ।
भानु मातु भुविपाल नरिंदा वीरसेन ऐरावत छंदा ॥

ॐ ह्रीं वीरसेनाय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

पुष्करार्द्ध गिर पश्चिम शीता दक्षिन विजै नगर नवनीता ।
देवराज सुउमादे जननी । महाभद्र जजि शशि पग जननी ॥

ॐ ह्री महाभद्राय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

पुष्करार्द्ध गिर पश्चिम लसे सीतोदा जम सुशिमा वसे ।
गंगा माश्रव भूत नरेसुर स्वस्ति लच्छ देवजस जिनेसुर ॥

ॐ ह्री देवजशाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

पुष्करार्द्ध गिर पश्चिम गनों सीतोदा उत्तर तट भनों ।
अजितवीर्य नगरीय अजोध्या मातु कननिका कमल सुवोध्या

ॐ ह्री अजितवीर्याय अर्घ निर्वपामि ॥४॥

दोहा—समव शरन शोभा सहित विहरमान भगवान ।
पूजत सुरनर नागपति हम पूजत धरिध्यान ॥

ॐ ह्री त्रिगुन्माल्ली मेघविदेह क्षेत्रस्थविहरमानजिनेभ्यः श्रीवीरसेन महाभद्र

देवजश अजितवीर्येभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामि ॥

अथ जयमाला

घत्ता—जै केवलदिनमनि मोहतिमिरहनि भव्यसरोजनि मोदकरा
शिवराय दिखावन जे जगपावन पापनशावन विघ्नहरा १

नैमालनी तामरस चंडी छंद—

वीरसैन गुनसेन नमस्ते । महाभद्र सुखदेव नमस्ते ॥
सदा देव जेशदाय नमस्ते । अजित वीर्य पदध्याय नमस्ते ॥२॥
तीर्थंकर अमलान नमस्ते । संजुत केवलज्ञान नमस्ते ।
समवसरन थित देव नमस्ते । इंद चंद गनसेव नमस्ते ॥३॥
छ्यालिश गुनभंडार नमस्ते अशरन जन आधार नमस्ते ।
वानी खरत त्रिकाल नमस्ते । झेलत गनधर हाल नमस्ते ॥४॥
दरसावत सब तत्त्व नमस्ते । गहत जहां भविसत्व नमस्ते ।
केइ श्रावक व्रतधार नमस्ते । केई होत अनगार नमस्ते ॥५॥
केई करम प्रजाल नमस्ते । लहत केवल विशाल नमस्ते ।

केइ अघान विघात नमस्ते । शिवपुरकों मुनिजात नमस्ते ॥६॥
केइ आतम अनुभवत नमस्ते । सांत सुधारस पवत नमस्ते ।
इत्यादिक वृष रीत नमस्ते । चलत मुकतमग नीत नमस्ते ॥७॥
सदा अगम गुनवंत नमस्ते । जै जै शिवतिय कंत नमस्ते ।
मम मनसा परिपूर नमस्ते । रहो सु आप हजूर नमस्ते ॥८॥
सेवो जुगपद कंज नमस्ते । भवबाधा मम भंज नमस्ते ।
तुम प्रसाद हानि कर्म नमस्ते । होहु आप सम पर्म नमस्ते ॥९॥

घत्ता—जै जै गुनसंचन दूषन रंच न देव अवंचन ज्ञानघने ।
तुम सेवत सज्जन वाजतवज्जन गावतभज्जन भावरते १०

ओं ह्रीं विद्युन्मालीमेरुविदिक्षेत्रस्थविहरमान जिनेभ्यः श्रीवीरसेन महाभद्र देवजश अजितवीर्येभ्यः महार्घं निर्वपामि ।

अथाशीर्वादः-गीताछंद—

जश गाय गुन उर ध्याय दरव मिलाय जो शिरनाईजी ।

पूजै सदा जिनराय पुष्कर अरध पश्चिम जाइजी ॥
श्री वीरसेन सु आदि चार विहारमान विदेहमें ।
सोनर सुरग सुख भोग आतम सुख लहे शिवगेहमें ॥

इति श्री विद्युन्माली मेरु के विदेहक्षेत्रस्थ विहरमान पूजा समाप्ता ।

अथ विद्युन्मालीमेरुके भरतक्षेत्र संबंधी वर्तमाना २४ जिनपूजा ।

लोलतरग छंद—

विद्युतमालिय मेरु विराजै । दक्खिनभर्त सुतामधि छाजे ।
चौविश वर्तसुमान जिनंदा । यापतु हों सुखसागर चंदा ॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरत वर्तमानजिनअत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वाननं अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहाः ।

अथाष्टकं ।

(चाल-मोहि राखो हो शरना) टप्पा—

हम पूजैं हो चरना । वर्तमान जिनराजके ।हम०।
विद्युन्माली मेरु विराजत दच्छिन भरत सु वरना।
चौविश जिन सुरनरमुनिगन धर सेवत पातकहरना।हम०टेक।
प्राशुक जलभरि कनकभृंगमें धार तीन सो ढरना ।
जनम मरन मल धोय तुरित भौ सागर पार उतरना ।हम०।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेभ्योजन्मादिविनाशाय जलंनिर्वपामि

बावनचंदन कदलीनंदन घस सुगंध विसतरना ।
भवतप हरन चरन जुग पूजत विघन ताप निरवरना ।हम०॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेभ्यो गधं निर्वपामि ॥२॥

तंदुल मंदुल शशिसम शोभत अजिय जुगत जसु वरना ।

पुंज धरत तुम चरनकमल ढिग अखै संपदा करना ।।हम०।।

ॐ ह्री त्रिद्युन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेभ्योऽक्षतं निर्वपामि ॥ ३ ॥

सुवरन सुमन सुगंधित शोभित सुवरन थारी भरना ।

मनमथ मथन चरनतर धारत समरशूल छैकरना ।हम०।

ॐ ह्रीं त्रिद्युन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेन्द्रेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥ ४ ॥

नव्य गव्य पकवान वनायो मधुर सुरस मृदु धरना ।

क्षुधा रोग निरवारन कारन पूजत हों तुम चरना ।हम०।।

ॐ ह्रीं त्रिद्युन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेन्द्रेभ्यश्चरुं निर्वपामि ।

जग मग जोत होत दीपगकी तासों आरति करना ।

तिमरमोह निरनासि तुरित निज आतमजोत सुधरना ।हम०।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेन्द्रेभ्यो दीपं निर्वपामि ।

दशविध गंध मनोहर लै जिन सनमुख खेवन करना ।

करम काठकों जारि प्रभू यह विनती वहुविध करना ।हम०॥

ॐ ह्री विद्युन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेन्द्रेभ्यो धूप निर्वपामि।

सुरस मधुर रितु फल कलवर्जित रसन नैनमन हरना ।
चरचत चरन जुगल जिनवरके मुकतरमनिकूं वरना ।हम०॥

ॐ ह्री विद्युन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेन्द्रेभ्यः फलं निर्वपामि ।

जल फल सकल मिलाय अरघकरि सुजश विविधविधिवरना।
जजों तुमें त्रिभुवनपति जिनवर भवबाधा परिहरना ।
हम पूजैं हो चरना, वरतमान जिनराजके । हम पूजें० ।
विद्युन्माली मेरु विराजित दच्छिन भरत सु वरना ।
चौविश जिन सुरनर मुनिगनधर सेवत पातक हरना ।हम०।

ॐ ह्रीं विद्युन्माली मेरु भरत वर्तमान जिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामि ।

अथ प्रत्येकार्घ ।

दोहा–हितकारी सर वांगके श्री सर्वांग जिनेश ।
जजों भर्त वर्तत महा विद्युत नाम नरेश ॥१॥

ॐ ह्री सर्वांगस्वामिनेऽर्घं निर्वपामि ॥१॥

प्रभव अनूपमकूं धरें देव प्रभाकर भेस । ज० वि०॥२॥

ॐ ह्रीं विद्युत्प्रभाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

श्री पद्माकर पद्मद्युति पद्मा देत अशेश । ज० वि०॥३॥

ॐ ह्रीं पद्माकराय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

बल अनंत बलनाथमें शोभत नवल निवेश ।ज० वि०॥४॥

ॐ ह्रीं बलनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

तिहू जोग निरवार निज जोगनाथ गुनभेस ।ज० वि०॥५॥

ॐ ह्री जोगीश्वराय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

सूक्ष्म क्रिया प्रतिपात क्रिय । सूक्ष्म अंग निपुनेस ।ज०वि०॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्मांकाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

चल मल दोष वितीत है । चला तीत वृतदेश ।ज०वि० ॥

ॐ ह्रीं चलातीताय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

ध्वांत ध्वंस करता अखिल । देव कलंक येश ।ज०वि०॥

ॐ ह्रीं कलंकाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

पर परनत परित्याग क्रिय । श्रीपरित्याग महेश ।ज०वि०॥

ॐ ह्रीं परित्यागाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

विधि पोषक सोपक अविधि श्रीनिषेधक जिनेस ।ज०वि० ॥

ॐ ह्रीं निषेधकाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

पाप हरन सुख करन सब ॥ पाप प्रहार जगेस ।ज०॥

ॐ ह्रीं पापप्रहारकाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

मुकत वधू वर-विमल गुन । मुक्त चंद बुधि भेस ।

जजों भर्त्त वर्त्तन महा । वि्युन मालि नगेस ॥१२॥

ॐ ह्रीं मुक्तचंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

छन्द सारवती—

ग्यान मई अभकाश जिनं । वामव सेवत पाय तिनं ।
विद्युत मालिय भर्तमहा । वर्त्तन पूजत सुक्खलहा ॥१३॥

ॐ ह्रीं अभकाशाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

अस्त रु नास्त पदार्थ कहे । श्री जै चंद कलेस दहे ।त्रि०॥

ॐ ह्रीं जैचंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

अन्तर बाह्य हरे मलको । देहु मलाधर ग्यो पलको ।त्रिभु०॥

ॐ ह्रीं मलधारिणे अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

स्याद सु अस्त पदार्थ कहे । जैति सु संजत कर्म दहे ।त्रि०॥

ॐ ह्रीं सुसंजताय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

स्याद सु नास्तिय वस्तु भने । निरमल श्रीमल सिंधुवने ।त्रि०॥

ॐ ह्रीं मलैसिन्धवे अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

स्याद्कंथचित अस्त परं । स्वक्ष गुनाकर अक्ष धरं ।त्रि०॥

ॐ ह्रीं अक्षधराय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

अस्त अकथ्य कंथचित है । जैति धरा गुन संचित है ।त्रि०॥

ॐ ह्रीं धराय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

नास्ति अकथ्य कथचित है । देव गणाधिप दोष दहै ।त्रि०॥

ॐ ह्रीं गणाधिपाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

अस्त रु नास्त अवाच कथं । चित्त अकामिक पाप मथं ।त्रि०॥

ॐ ह्रीं अकामिकाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

सातहु भंग अभंग भने । नित्य विनीत अनीत हने ।त्रि०।

ॐ ह्रीं विनीताय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

राग रु दोष वितीत सदा । वीतित राग जिनेश वदा ।त्रि०।

ॐ ह्रीं वीतरागाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

आनंद अंबुधि वृद्ध करै । शुद्ध रतानंद मोद भरैं ।
विद्युत मालिय भर्त महा । वर्तत पूजत शर्म लहा ॥२४॥

ॐ ह्रीं रतानन्दाय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

शोरठा छंद-विद्युत माली मेरु, पुष्करार्ध पूरव दिशा ।
भरत संत जिन हेर, पूजों पूरण अर्घ सों ॥२५॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपविद्युन्मालीमेरुभरतस्थवर्तमानजिनेभ्यो पूर्णार्घं ।

अथ जयमाला ।

घता-जै जै जगवंदित पाप निकंदित नित आनंदित शुद्धमती ।
जुत विभव अमंदित सदयसुछंदित जै निरफंदित बोधपती ।

पद्धड़ी छंद—

जय जगतहितू सर्वांगदेव । वंदामि प्रभाकर गुन अछेव ।
जै पद्माकर पद्मानिधान । बलनाथ तनें मुनि धरत ध्यान ॥२॥
जै जोगीश्वर सुर नमत पाय । सूक्ष्मांग नमों मन वचन काय ।

सकल अनूप ॥३॥
जै चलातीत निश्चल सरूप । जै जैति कलंक सुख अनूप ॥३॥
परित्याग नमों करजोर चित्त । जै जै निषध जिन जगपवित्त ।
जै पापप्रहारी हरन पाप । जै मुक्तचंद भविहरन ताप ॥४॥
जै अप्रकाशक प्रकाश ज्ञान । जयचंद जिनंद दयानिधान ।
मल धारी जिन शिवधाम देत । जै जैति सुसंजत सुगुनसेत ॥५॥
मलसिंधु विमल गुन देत सार । प्रणमामि अच्चधर जगत तार ।
जै धरादेव मिव धरा दाय । जै जैति देवगण नितसहाय ॥६॥
सुरगज अगामिक नमत आन । नित नीत निपुन सु विनीतबान
जै वीतराग करुना निधान । लब्ध देतु रतानंद सकल थान ॥७॥
ए चौविश जिनवर वरतमान । निधुतमाली गिर भरत जान ।
जिहि सेवत वासव मुदित अंग । गुन ध्यावत गावत साजसग८
द्रिमि द्रिमि धिधिकटवाजत मृदंग । संसाग्रदि साग्रादिसारगिचंग
किनिनिनिनिनिनिनि किंकिनि करत । करतलसुरान्वितधुनिधुरन्त
ता थेइ थेइ थेइ थेइ धरत पाव । ताना थेइ थुंगत थुंगत चलाव ।
धुगतां धुगता गतवजे पुष्ट । तननननन तान अलापि सुष्ट ॥१०॥

इत्यादि समाज मिलाय इंद । तुव जशगावतु हैं हे जिनंद ।।
तुम पंच कल्यानक ईश पर्म । गुन सागर अगम अनंत शर्म ११॥॥
हम शरन गही दुख खंड खंड । मन वांछित आनंद मंड मंड ॥
भव बाधा मेरी मेंट मेंट । शिवराधा सों कर भेंट भेंट ॥१२॥

घत्ता—जै जै गुनमूरत अनुपमसूरत आनँद पूरत पर्मपती ।
"वृंदावन" ध्यावत शीसनवावत वांछित पावत शर्म अती १३

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपविद्युन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि ॥

अथाशीर्वाद—शार्दूलविक्रीडित छंद—

जो पूजे मनलाय पाय जिनके सद्द्रव्य औ भावसों ।
विद्युन्मालिय भर्त वर्तनु महा ताकों जपैं चावसों ॥
सो पावे धन धान्य शर्म सकलं शक्राधि ह्वै के सही ।
चक्री होय अतिंद्रि आनंद लहै श्रीसिद्ध की जो मही ॥

इति विद्युन्माली मेरुभरतवर्तमान पूजा समाप्ता ।

अथ विद्युन्माली मेरुभरतातीत जिन पूजा प्रारभ्यते।

दोहा–विद्युन्मालीय मेरु के भरततीत जिनराय।
थापों चौविश सुगुननिधि आय आय प्रभु आय॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपे विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनसमूह अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा

अथाष्टकं।

वसंततिलका छंद—

सज्ञान्हवीय जल उज्वल हेमझारी धाराकरों त्रिविध रोग हरो हमारी
श्रीपुष्करार्द्धगिरिविद्युतमालिनामी पूजोंसुभर्तवरतीतजिनेशस्वामी।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जलं निर्वपामि॥

काश्मीरचंदनकपूरसुगंधपूरेतसोंसमरचतप्रभु भवतापचूरे।श्री०।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चंदनं निर्वपामि ॥

मुक्ता समान सित तंदुलसार सोहे,
धारंत पुंज मनवांछित सुक्ख हो है । श्री० ।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यस्तंदुलं निर्वपामि ॥

कुंदारु विंद्वर केतुकि पुष्पसारे,
हे नाथ धारहुँ इहां हर शूलम्हारे । श्री० ।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥

नानाप्रकार चरुसार रसाल लायो,
तासों समरचत क्षुदा दुखको नशायो । श्री० ।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चरू निर्वपामि ॥

बाती कपूर घृत पूरित दीपकीनों,
ताकों चढ़ाय निज आतम ज्ञान लीनों । श्री० ।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीप निर्वपामि ॥

कृष्णागरु प्रमुख धूप अनूप खेवों,

कर्मौघ दाहि निज आतमरूप वेवों । श्री० ।

ओं ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥

कामाम्रजाम शुभ पक्वलवंग एला,

इत्यादि सोचत मिले शिव संगवेला । श्री० ।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥

गंगा जलादि सब द्रव्यफलर्घ साजे,

बाजे बजे जजत पाप समस्त भाजे ।

श्रीपुष्करार्द्ध गिरि विद्युतमालिनामी,

पूजों सुभर्तवरतीत जिनेशस्वामी ।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामि ॥

अथ प्रत्येकार्घं ।

मोदक छंद—

पद्मसुचंद महा छवि आनन । भाषतधर्म अदोप पुरानन ।
विश्रुतमालियमर्त विराजत तीतजजें भवि ऑनंद साजत ॥

ॐ ह्रीं पद्मचंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

सद्गुणरत्न विभूपन भूषित रत्नशरीर नमों निरदूषित । वि० ।

ॐ ह्रीं रत्नांगाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

जोगि यजोगनि द्वार निहारत । देव अजोग निजोगनिवारत । वि०

ॐ ह्रीं अजोगाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

दायकसिद्ध सु अर्थ पुनीतम । श्रीसरवारथ सिद्ध अभीतम । वि०

ॐ ह्रीं सिद्धार्थाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

श्रीकृपनाथ किये कृप कर्मनि । दीस शरीर हरो भवि भर्मनि । वि०

ॐ ह्रीं कृपनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

इंद सुचंद सदा पद सेवत । श्रीहरिचंद निजातम वेवत ॥वि०।

ॐ ह्रीं हरिचन्द्राय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

द्वादशभेव सभा जशगावत । सद्गुणजुक्त गुणाधिप ध्यावत॥वि०।

ॐ ह्रीं गुणाधिपाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

या भव औ परभौ सुख कारन । देव परत्र कलेश निवारन॥वि०

ॐ ह्रीं परत्रेकाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

पूरन ब्रह्म पदाविन्त राजत । ब्रह्म सु नाथ प्रभाछवि छाजत॥वि०

ॐ ह्रीं ब्रह्मनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

आँनँदकंद चिदानँद स्वामिय । श्रीमुनिचंद नमैं शिवगामियवि०

ॐ ह्रीं मुनिचन्द्राय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

श्रीकुल दीपक दीपक वंदिय । दायक मोखपुरी अभिनंदियवि०

ॐ ह्रीं कुलदीपकाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

राजनिके पाति पूजत पंडित । राजरिपी रिपिपंकति मंडित वि०

ॐ ह्री राजर्षये अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

भव्यप्रबोधक धर्म सु भाषत । देव विशाख निजानंद चाखत वि०

ॐ ह्रीं विशाखाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

नाथ अनंदित आनंद मंदिर । हैं निकलंक नमंत पुरंदर ।वि०।

ॐ ह्री आनंदिताय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

छंद इन्द्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्रा ।

जे भानुसे दीप्त धरें शरीरं वंदों रवि स्वामि जिनें सधीरं ।
श्रीपुष्करे विद्युत मालि नामी पूजों सदा भर्त अतीत स्वामी ॥

ॐ ह्री रविस्वामिनेऽर्घं निर्वपामि ॥१५॥

श्रीसोमदत्तं प्रणमामि देव । आनंदकंदं शतइंद सेव ।श्री०।

ॐ ह्री सोमदत्ताय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

जेकाम शत्रू कहि छीन कीनों नमों जयस्वामि महाप्रवीनों श्री०

ॐ ह्रीं जयस्वामिनेऽर्घं निर्वपामि ॥१७॥

जे मोक्षलक्ष्मी जुत केल कर्ते। ते मोक्षनाथं भवतीन हर्ते।श्री०

ॐ ह्रीं मोक्षनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

निसर्गसम्यक्तसुव्यक्त दाता सो अग्रभावी जगमेंविख्याता।श्री०

ॐ ह्रीं अग्रभानवेऽर्घं निर्वपामि ॥१९॥

ध्यावों सदा सो धनुपांग स्वामी धनुर्धरेशार्चित मुक्तधामी।श्री०

ॐ ह्रीं धनुपांगाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

सुधाधरं व्यक्त उतंगकाया श्रीमुक्तनाथं प्रणमों जिनाया।श्री०

ॐ ह्रीं मुक्तनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

रोमांचकों ध्यावत शर्म पावे आनंद रोमांच तुरंत आवे।श्री०

ॐ ह्रीं रोमान्चाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

प्रसिद्ध संबंध सुसिद्ध धारी। प्रसिद्ध नाथं भव सिंधु तारी।श्री०।

ॐ ह्रीं प्रसिद्धनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

जो जीव को वांछित देत नीके जिनेश सो ईस सवे जती के।

श्रीपुष्करे विद्युत मालि नामी। पूजों सदा भर्त अतीत स्वामी ॥

ॐ ह्रीं जिनेशस्वामिनेऽर्घं निर्वपामि ॥२४॥

दोहा–पूरन अर्घ बनायकें जजों जुगल कर जोर।

विद्युतमाली भर्तके तीत जिनेसुर ओर ॥२५॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपविद्युन्मालीमेरुभरतातीतजिनेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामि।

अथ जयमाला।

घत्ता–जे जिनगुनसागर सुजश उजागर सेवत नागर नीतमती।

सब विघनविनाशन उन्नत शासन ज्ञान प्रकाशन बुद्धपती।१

छंद दोहा आचलीबंध।

विद्युनमालीमेरके दच्छिन दिश सुखकार।

भरतीतजिनपतिजजों ध्यावों पर अविकार।

भविहो जिनगुनगावो भावशोजी पदमचंद पद्माकरैं श्रीरतनांगअनूप

नमहि अजोग जपो सदा सरवारथ सिव भूप। भवि हो० ॥२॥

करम कृषन कृपनाथहैं श्री हरिचंद दयाल ।
जैति गुणाधिप सुगुन निध जैं परत्रिक गुनमाल ॥ भविहो० ॥
ब्रह्मनाथ आनदमैं नमों मुनिन्द जिनद ।
दीपक जग दीपक भए राज ऋषी सुख कंद । भविहो० ॥
धौ विशाख अभिलाष मम आनंदित जित कर्म ।
रवि स्वामी शिवमग अखैं शोमदत्त निरभर्म । भविहो० ॥५॥
जै स्वामी जै देतु हैं मोक्षनाथ सुख हेत ।
अग्रभाव बुधि दीजिये धनुप अग सुधि लेत । भविहो० ॥६॥
मुक्तनाथ शिवसाथ हैं रोमांचक अघचूर ।
जैति प्रसिद्ध सुसिद्धकों श्री जिनेश सुख पूर । भविहो० ॥७॥
गरभागम पट मासलौं नवथित गरभ मझार ।
इंद रतन वरषा करी दिन त्रिवार मनि धार । भविहो० ॥८॥
जनमत सुरगिर न्होन करि निज नियोग विसतार ।
पिता शौंपि जिनसेवकों राखे सुर सु कुमार । भविहो० ॥९॥

भोग भोगि तज राजकौं जोग धरे अविकार।
त्रेसठ सिद्ध लहैं तवे मौन सहित व्रतधार। भविहो० ॥१०॥
घाति घाति केवल लयो लोकालोक प्रकाश।
समवशरन रचना बनी इन्द्र भए शतदाश। भविहो० ॥११॥
फिर अघाति चकचूरिकै मोक्ष भए जिनचंद।
गुन अनंत इकरूप है वंदत भवि नित "वृंद"। भविहो० ॥१२॥

घत्ता—जै श्रीजिनस्वामी त्रिभुवननामी गुनअभिरामी शिवधामी।
तव पादनमामी हृदय धरामी पाप नशामी सुखपामी।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंचतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

अथाशीर्वाद—जोगीरासा छंद—

पुष्करार्द्ध गिर विद्युतमाली पच्छिम माहि विराजै।
तास भरत तित तीत जिनेसुर आनंदकारी छाजै॥
तिनपद जो भवि साजि समाजनि पूजत भगत धराई।

ी चौ
३२२

सोसुर नरसुख भोगि सकल विधि अनुक्रम शिवपुर जाई ॥

इति श्री विद्युन्मालीमेरुभरतातीतपूजा समाप्ता ।

अथ विद्युन्मालीमेरुभरतभाविजिन पूजा प्रारभ्यते ।

छंद मदावलिप्त कपोल ।

विद्युतमाली मेरु दीप पुष्कर मह छाजत ।
तासु भरत के माहि भविष्यत जिनवर राजत ॥
तिनको थापों इहां जुगलपद पूजन कारन ।
आय प्रभु इत अबे सकल दुखदंद निवारन ॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीभरतभाविचतुर्विंशतिजिनसमूह-अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वानन । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन अत्रमम सन्निहितो भवभव वषट् स्वाहा ।

अथाष्टकम् ।

छद रूपक कविता—

हिमवन गिरगत गंगाजलवर कंचनझारी भरकर लाय ।

मनवचतन पुलकित नित पूजत जनमजरामृत रोग पलाय ॥
विद्युतमाली मेरु भरतके भावी जिनवर जग सुखदाय ।
पूजत चरन हरन दुख संकट इंद वृंद वंदत जसु पाय ॥१॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जल निर्वपामि ।

बावनचंदन कदलीनंदन केसरसंग सुगंध घसाय ।
भवतप हरन चरन जिनवरके पूजत ही भवताप पलाय । वि०

ॐ ह्री विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चंदन निर्वपामि ॥२॥

सेतशालि शुभ शशिसम दमकत गमकत वास नैनसुखदाय ।
पुंजधरत दुखदंदहरत आनंदभरत अनुपम सुखदाय । वि०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशति जिनेभ्यस्तंदुलं निर्वपामि ॥३॥

कमल केतुकी वेलचमेली सुमनसुमन समसुमन सुभाय ।
सुमनमथमदमंथनके कारण सेवों मनमथमथनजिनाय । वि०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥४॥

नव्य गव्य मनमोदन मोदक खाजे ताजे तुरित उपाय ।
छुधारोग निरवारन कारन पूजत हौं पदमंगल गाय वि०।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ॥५॥

जगमग जोत होत दीपक की तासों आरति करौं सुजाय ।
प्रभुतन माहि तास दुति दरशत मानों ध्यानकनी सरसाय ।वि०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

धूप अनूप उखेवत हौं प्रभु तुम ढिग बात होत्र में डाय ।
ध्यान अगनि में करम जरें हैं धूम घूम यह तास उड़ाय। वि०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

आम जाम अभिगम सुफल कलवर्जित पक्व मधुर मनलाय ।
तासों अरचत तुम पदपंकज विघनसघन ततखिन नशिजाय ।वि०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥

जल चंदन तंदुल प्रशून चरु दीप धूप फल अरघ बनाय ।
पूजों चरन करन सुखसंपत तारन तरन जगत वरदाय ॥
विद्युतमाली मेरु भरतके भावी जिनवर जग सुखदाय ।
पूजत चरन हरन दुख संकट इंद वृंद वदत जस पाय ॥

विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामि ॥९॥

अथ प्रत्येकार्घं ।

मोतीदाम छंद--

प्रभाव करैं सुरराजजु आय । प्रभावकदेव, नमों शिरनाय ।
सुविद्युत मालिय मेरु महान । भविष्यत भर्त जजों धरिध्यान ।

ॐ ह्रीं प्रभावकाय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

नमैं नरदेव उमंग समेत । नमों विनतेन्द्र जिनेंद्र सुचेत ।सु०

ॐ ह्रीं विनतेंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

विभावसुभाव विभेदन हार। सुभावकदेव नमों अविकार। सु०

ॐ ह्री सुभावकाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

दिनिंदसमान प्रकाश शरीर। नमों नित श्रीदिनकार सुधीर। सु०

ॐ ह्रीं दिनकराय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

अनंग विकार निवारन देव। सदा जय अंग सुतेज अछेव। सु०

ॐ ह्रीं अनगतेजाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

सुभव्यनिकों धनधान्य करंत। नमों धनदत्त जिनेश महंत। सु०

ॐ ह्रीं धनदत्ताय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

सुपूरव कर्म विपाक विनीत। जिनेसुर पौरव हैं निरभीत। सु०

ॐ ह्री पौरवाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

सदा समदिष्टिय सेवत पाय। सुखाकर श्रीजिनदत्त जिनाय। सु०

ॐ ह्री जिनदत्ताय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

चहूं घनघातियकर्म हनंत। त्रिलोकहितू प्रभु पार्श्वमहंत। सु०

ॐ ह्री पार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

गनांबुधि श्रीमुनिसिन्धु अगाध। जपे नितचित्त पुनीतम साध सु०

ॐ ह्री मुनिसिंधवे अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

सु अस्त रु वस्त प्रशस्त बताय। नमों कमलाधर अस्तक भाय ।सु०

ॐ ह्री अस्तकाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

भवोदधि तारनकों समरथ्थ। सुरेशनमें भवनीकहि मथ्थ।
सुविद्युत मालिय मेरु महान। भविष्यत भर्त जजों धरि ध्यान॥

ॐ ह्रीं भवनीकाय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

छन्द सूर।

नृपनाथ नृपकुल पाल। पूजों सदा गुनमाल।
पञ्चम सुराचल तथ्य। भावी भरत समरथ्थ॥

ॐ ह्रीं नृपनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

नारायनाथ जिनेय। ध्यावों नारायणाध्येय। पञ्चम०।

ॐ ह्री नारायणाय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

प्रशमौक प्रशम प्रदाय। पूजों सुजश गुनगाय । पञ्चम०।

ॐ ह्रीं प्रशमौकसे अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

भूपति भजैं पदकंज । भुपति भजों भैभंज । पञ्चम०।

ॐ ह्री भूपतयेऽर्घं निर्वपामि ॥१६॥

केवल सुदिष्ट विकाश । पूजों सुदिष्ट हुलाश ।पंचम०।

ॐ ह्री सुदिष्टये अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

भवभ्रांति भीत अतीत । भवभीरु जजि जगमीत ।पंचम०।

ॐ ह्रीं भवभीरवाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

आनंद कंद जिनंद । नंदन जजों सुख कंद ।पंचम०।

ॐ ह्रीं नंदनाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

जे शुद्ध बुद्ध अक्रुद्ध । भार्गव जजों जुत रिद्ध ।पचम०।

ॐ ह्रीं भार्गवाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

वासव सदा जसु भक्त । पूजों सु वासव व्यक्त ।पंचम०।

ॐ ह्रीं वासवेऽर्घं निर्वपामि ॥२१॥

वस विश्व जास वसंत । पर वास जिंनहि जजंत ।पंचम०।

ॐ ह्रीं परवासवे अर्घ निर्वपामि ॥२२॥

वनवसत नाशि उपाध । वनवासि साध अराध ।पंचम०।

ॐ ह्रीं वनवासिजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

भरतेश कमला करन । पूजों सकल जन सरन ।

पंचम सुराचल तथ्य । भावी भरत समरथ्य ।

ॐ ह्रीं भरतेशाय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

रथोद्धता छंद—

पूर्ण अर्घ यह अग्र धारिहो । ध्याय गाय जश पाप टारिहों ।

पुष्करार्ध गिर पंचमें सही । भर्त भावि जिन पूजिहों यही ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपविद्युन्मालीमेरुभरतभाविजिनेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामि

अथ जयमाला ।

घत्ता–जै शिवमगमंडन कलुपविहंडन कृतग्रहमंडन शर्म अती
दारिद्दुमखंडन जै भवहंडन हरनप्रचंडन कर्मगती ॥

छंद नमालिनी तामरस चंडी ।

जै प्रभाव शिवराव नमस्ते । विनतेंद्र जुगपाय नमस्ते ।
जै सुभाविक दयाल नमस्ते । श्री दिनकर गुनमाल नमस्ते ॥२॥
अगतेज जसपुंज नमस्ते । धनदत्त सुखभुज नमस्ते ।
पौरव पूरन शर्म नमस्ते । जै जिनदत्त सु पर्म नमस्ते ॥३॥
पार्श्वनाथ शिवसाथ नमस्ते । मुनिसिंधव मम नाथ नमस्ते ।
अस्तिक जिनगुनवत नमस्ते । श्रीभवनीक महंत नमस्ते ॥४॥
श्री नृपनाथ मुनीश नमस्ते । नारायण जगदीश नमस्ते ।
प्रशमांकश जगराश नमस्ते । भूपत विमलविलाश नमस्ते ॥५॥
जै सुदिष्ट जग इष्ट नमस्ते । भवभीरु गुन मिष्ट नमस्ते ।
नंदन आनंद कंद नमस्ते । भार्गव जिन निरफंद नमस्ते ॥६॥

जै सुव्रासव पुनीत नमस्ते। परवासक जगमीत नमस्ते।
श्री वनवास मुनिंद नमस्ते। जै भरतेश जिनद नमस्ते ॥७॥
पुष्कर पंचम मेर नमस्ते। भरत भविष्यन हेर नमस्ते।
चौवीशों जिनराय नमस्ते। गुन अनत समुदाय नमस्ते ॥८॥
पंच कल्यानक राय नमस्ते। शिव मारग दरशाय नमस्ते।
गनधर पूजत पाय नमस्ते। "वृंदावन" शिरनाय नमस्ते ॥९॥

घत्ता—जै जै जशवंतं जिनभगवंतं सुगुन अनंतं शुद्ध मते।
नित ध्यावत संतं जेति महंतं लब्धि लशंतं वुद्धपते ॥

ॐ ह्रीं पुष्कार्धद्वीपविद्युन्मालीमेरुभरतभावीजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि।

अथाशीर्वाद-गीता छंद—

वसु दरब सुंदर साज जो जिनराज चरन जजै नरा।
पुष्कर सु पंचम मेरु भरत भविष्य श्रीमज्जिनवरा ॥
सो सकल पुत्र सुमित्र सपत लहत सार समाज कों।

अनुक्रम वरे शिव परम रमनी भविक जन हितकाजकौं ॥

इति श्री भरतपञ्चमाचलसंबंधीभाविचतुर्विंशति पूजा समाप्ता ।

अथ पुष्करार्धद्वीपविद्युन्मालीऐरावत वर्तमान २४ पूजा ।

दोहा–विद्युन्माली मेरुके ऐरावत छित माहि ।
वरतमान चौवीश जिन थापों इत प्रभु आहि ॥

ॐ ह्रीं पञ्चमात्तैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिन अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा

अथाष्टकं ।

छंद चौबोल–

छीरीदधि सम उज्जल जल शुभ कनक कटोरी माहि भरे ।
जनम जरामृत नाश करनकों श्रीजिन सनमुख धार करे ॥

पुष्करार्ध गिर विद्युतमाली ऐरावत शुभ खेत धरे ।
वरतमान चौवीश जिनसुर सुरपति पूजत प्रीत भरे ॥१॥

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जलं निर्वपामि ।

केशर चंदन दाह निकंदन कदली नंदन गंध भरे ।
जलसगघसि लसि ससिसम समकर पूजत भवआताप हरे ।पु०

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्यो गध निर्वपामि ।

तंदुलसेत निशाकर वारिज छीर छटा हिम हीरहरे ।
कंचनथार विषे तसु पुंज सु युंजत ही दुख दोष टरे । पु०

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्यस्तंदुल निर्वपामि ।

कामवली प्रतिके सबके सब रुद्रनिके सब जेर करे।
तासु विनासनि जानि तुम्हें प्रभु पूजत फूल सुगंध भरे । पु०

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्य पुष्प निर्वपामि ।

रोग छुधा जंगजतुनिकों नित जेर करैं छिन नाहि टरे ।

तासु विनाशन जानि तुमें जिन पूजहु नेवज व्याधि हरे । पु०।

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चरुं निर्वपामि ।

मोह महातम छाय रह्यो जग नाहि हिताहित दिष्ट परे ।

सो तुम नाशि प्रकाश कियो शिव दीप चढ़ावत भर्म हरे।पु०

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ।

काल अनाद वितीत भयो संग कर्मनिके दुख भूरि भरे ।

तुम ढिग धूप अनूप उखेऊं ज्यों वसु कूर प्रचूर जरे ।पु०

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ।

ज्ञान अतिंद्रिय शर्म अनाकुल आतम पर्म सुधर्म धरे ।

सो प्रगटो मम हे जिन स्वामिय सेवतु हो फलधार भरे । पु०

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्यः फलं निर्वपामि ।

जलचंदन तंदुल प्रशून चरु दीप धूप फल अर्घ करे ।

नाचि राचि शिरनाय समरचत भव भवके सवपापहरे ।
पुष्करार्ध गिर विद्युतमाली ऐरावत शुभ खेत धरे ।
वरतमान चौवीश जिनेसुर सुरपति पूजत प्रीत भरे ॥२४॥

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशति जिनभ्योऽर्घं निर्वपामि ।

अथ प्रत्येकार्घ ।

चौपाई छंद---

गंग घटासम अंग विशुद्ध । गांगेयक वंदत वर शुद्ध ।
पुष्कर पंचम मेरु लसंत । ऐरावत जिन संत जजंत ॥

ॐ ह्रीं गांगेयकाय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

मल्लवास जसरास पुनीत । भुक्तमुक्त दानी जगमीत । पु०।

ॐ ह्रीं मल्लवासवे अर्घं निर्वपामि ॥२॥

भीम जिनंद भीम भैहत । सुखकारी जे जे अरिहन्त । पु०।

ॐ ह्रीं भीमाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

दयानाथ सेवंत विदग्धं । रतनरास करि दारिददग्ध । पु०।

ॐ ह्रीं दयानाथाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

श्रीसुभद्र दायक नित भद्र । भद्रभाव जुत सुगुन समुद्र । पु०

ॐ ह्रीं भद्रनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

स्वामीनाम नमों जिनराय । ध्वजा चिन्ह जह बहुत सुहाय ।पु०

ॐ ह्रीं स्वामिजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

हनिक नामजिन गुनमनिमाल । द्वादशसभा सहित जगपाल।पु०

ॐ ह्रीं हनिकाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

नंदघोष जिन जगजन पोष । चतुरानन राजैं निरदोष । पु०

ॐ ह्रीं नंदघोषाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

रूपवीज श्रीजिनगुन खान । कोटि भानु दुति देखि लजान पु०।

ॐ ह्रीं रूपवीजाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

वज्रनाभ वज्राधिप सेव । नटसाला नाचैं नट देव । पु०

ॐ ह्रीं वज्रनाभाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

श्रीसंतोष तोषगद पोष । मंदिर पंक्तिरुचिर चित चोष । पु०

ॐ ह्रीं संतोषाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

श्रीसुधर्म जिन पर्म दयाल । सोहत हे देवद्रुम माल । पु०

ॐ ह्रीं सुधर्माय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

श्रीफनीस पद फनपति ध्यात । पुष्पवाटि फल फूल सुहात ।

ॐ ह्रीं फनीश्वराय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

वीरसेन जश किन्नर सार । गावतु हैं नानाप्रकार । पु०

ॐ ह्रीं वीरचंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

मेधानीक नमों जिनचंद । स्वच्छ छवी छाजत सुखकंद पु०।

ॐ ह्रीं मेधानीकाय अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

स्वच्छनाथ गुन स्वच्छ अनंत । सुर जश गावत ध्यावत संत
पुष्कर पंचम मेर लसत । ऐरावत जिन संत जतंत ।

ॐ ह्रीं स्वच्छनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

दोहा-कोप छय करि कोप छै भापत सर्वहित वैन ।
नग पंचम ऐरावते वरतमान जजि चैन ॥१७॥

ॐ ह्रीं कोपछयाय अर्घ निर्वपामि ॥१७॥

जयति अकामक कामकर समवसरन थित लेन । नग०वर।

ॐ ह्री अकामकाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

धरमधाम अभिराम नमि गंध कुटी छवि देन। नग०वर।

ॐ ह्रीं धर्मधामाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

सुक्तसेन वंदत विवुध वन उपवन जह ऐन । नग०वर ।

ॐ ह्री सुक्तसेनाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

क्षेम करन छेमंग जिन साल फूल सुखदाय ॥
गिर पचम ऐरावते वरतमान पद ध्याय ।

ॐ ह्री क्षेमकराय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

दयानाथ आनंद घन मृगराजा सनसीन ।
गिर पंचम ऐरावते जजों संत अमलीन ॥
ॐ ह्रीं दयानाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥
कीर्तपाय जिनराय जजि प्रश्नोतर करतार ।
गिर पंचम ऐरावते जजों संत सुखकार ॥
ॐ ह्रीं कीर्तपायजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥
शुभकर जिन शुभ करत नित मंगल नित नौदाय।
गिर पंचम ऐरावते जजों संत सुखदाय ॥२४॥
ॐ ह्रीं शुभकराय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥
मालिनी छद–जल फल सब साजे बाजते सार बाजे ।
गिर पनम विराजेरावते वर्त ताजे ॥
चदु जुग जिनराजे पंच कल्यान साजे ।

पद जजि महराजे मर्व कल्यान पाजे ॥

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामि ।

अथ जयमाला ।

घत्ता–जै जिनगुनमालं विरद विसालं सुरनुतभालं सुकुमालं ।
जै कवि कुलभालं अरिपरिजालं जैति कृपालं शिवचालं ॥

पद्धडी छंद—

जै गगदेव शिवसंग सार । जै मल्लवास मदमल्ल टार ।
जै भीम भीम भव हरन देव । जै जैति दयाधिक गुन अछेव ॥२॥
जै जैति भद्र भद्रेश कर्ण । स्वामी जिनवर भवभीत हर्ण ॥
जै हनक हरण मनमल समस्त । जै नंदघोष भाषत सुवस्त ॥३॥
जै रूपबीज वीरज उदार । जै वज्रनाभ भवसिंधुतार ॥
संतोष जैति दुख दोष चूर । जै जिन सुधर्म जिनधर्म पूर ॥४॥
जै जिन फनीश फनपति नमत । जै वीर चंद जिनगुन अनंत ।
मेघानिक मेघा नमत पाय । जै स्वच्छनाथ शिव मग बताय ॥५॥

कोप ठिकन जिन कोप छीन । जै जै अनाथ कामद प्रवीन ॥
धर्मिनाथ गुन परम शुद्ध । जै मुनिसुव्रत गुन विज सिद्ध ॥६॥
नेमीश्वर जिनराजी मर्दीव । जै दयानाथ करुणा अतीव ॥
जै पार्श्वनाथ कीरत उदार । श्रीवृषभ जिनवर भव समुद्र पार ॥७॥
प्रभु पंचम गिर कैलाश जेय । है वरदभान पौनागिर मेय ॥
कुण्डलगिरि पर विराजमान । सरस्वती पावन निर्वान ॥८॥
अब तुम मो दाता पाय आज । क्या जाचौं प्रभु मनारे काज ॥
भव सागर ते मोकों निकार । यह अरज करौं जिनवर विचार ॥९॥
घत्ता- जै दयासागर त्रिभुवन मंडन जनन पुरंदर भवन मग ।
दुर्नय गजभंजन नमत भेदन कल्मष विहंडन कुमति हरा ॥
ॐ ह्रीं पञ्चकल्याणक मानस्तंभ ... पूर्णार्घं निर्वपामि ।
(अडिल्ल छंद)
त्रिभुवनमाही मेरु विराजत भारी ।
फिरत नट शोभित परम उदारी ॥

चौविस जिन तह वरतमान जो पूजई ।

सो भवि सब सुख पाय मुकत पद कूजई ॥

इति श्रीपंचमाचलैरावते वर्तमानचतुर्विंशति पुजा समाप्ता ।

अथैरावतातीतचतुर्विंशति जिन पूजा ।

तोटक छद–

गिर पंचम पुष्कर दीप तनों । अयरावततीत जिनेश भनों ।

चवबीस सुथापतु हों इतही प्रभु आय करो भविके हितही ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिन-अत्रावतरअवतरसवौषट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनअत्रममसन्निहितो भवभववषट्स्वाहा ।

अथाष्टकं ।

लावनी–गही है नाथ शरन तेरी ।

भव पाथ परत जगनाथ गहो अब हाथ तुरित मेरी ।गही०
पुष्कर पंचम मेर विराजत ऐरावत हेरी ।
तीत जिनेसुर पद परिपूजन मिटत जगत फेरी ।ग०टेक।
छीरोदधि सम नीर सीर भरि कनक भृंगमेरी ।
धार करत तुम चरन कमल तर सकल कलुष छेरी ।ग०।
ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जलं निर्वपामि ॥१॥
बावन चंदन कदली नंदन जल संघ घसि लेरी ।
पूजत चरन जुगल करुनानिध भवतप चूरेरी ॥ गही०॥
ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चदन निर्वपामि ।
देवजीर सुखदास वास द्युतिरास तंदुलेरी ।
पुंज धरत दुख कुंज हरत जिनपद सु पूजतेरी । गही०।
ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यस्तदुल निर्वपामि ।

पारजात मंदार सुमन संतान जाति केरी ।
चरचों चरन हरन मनमथ मद शुद्ध शील देरी । गही०

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्प निर्वपामि ।

क्षुधा रोग निरवार निराकुल पद तुमने लेरी ।
नेवज साजि जजों जगनायक हरो व्याध मेरी ।गही०।

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चरुं निर्वपामि ।

केवल भान प्रकाश प्रभू तुम सब परगासेरी ।
दीपक सों आरती उतारों निज प्रकाश देरी । गही०।

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीप निर्वपामि ।

दुष्ट अष्ट तुम नासि पुष्ट पद माहि थिर भयेरी ।
हम पूजें दशगंध धूपसों क्रूर अरि जेरी ॥ गही०।

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥

विघन सघन वन ध्यान अगनिसों तुम परजालेरी ।

हम प्राशुक फलसों पद पुजैं वांछितार्थ देरी । गही०

ॐ ह्री पंचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फल निर्वपामि ॥

तुम अनंत गुन लहे अनूपम अमल अचल हेरी ।
हम पूजैं पद अरघ थार भर मिटो जगत फेरी ।गही है नाथ ।
भवपाथ परत जगनाथ गहो अब हाथ तुरित मेरी ।
पुष्कर पंचम मेरु विराजत ऐरावत हेरी ।
तीत जिनेसुर पद परिपूजत मिटत जगत फेरी । गही है ।

ॐ ह्री पचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो ऽर्घं निर्वपामि ॥

अथ प्रत्येकार्घ ।

हरिणी छद-

भवातप शांत करंत सदा । नमों उपशांति प्रशांति प्रदा ।
सु पुष्कर पंचममेर कहा । जजों अयरावत तीत महा ॥१॥

ॐ ह्रीं उपशांतिजिनराय अर्घ निर्वपामि ॥१॥

शरीर अनूपम सोहत है। सो फल्गु जगज्जन मोहन है। सु०।

ॐ ह्रीं फाल्गुजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

नमों पुरवास सु आस भरे। जिनेश अशेष कलेश हरे।सु०।

ॐ ह्रीं पूर्वाशाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

त्रिलोक सुहावन रूप लसै। नमों जिन सुन्दर पाप नसै।सु०।

ॐ ह्रीं सुदराय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

धरें गुन गौरव गौरवता। नमों जिन गौरव गौरवता। सु०

ॐ ह्रीं गौरवाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

कषाय सवे चकचूर किया। त्रिविक्रम आनंद पूरि दिया।सु०।

ॐ ह्रीं त्रिविक्रमाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

जुरोष गयंद मृगिंद सम। नमों नरसिंघ कुकर्म दमं। सु० ॥

ॐ ह्रीं नरसिंघाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

छहों विधि हास रतादि हनें। नमों मृगवासव सार पने।

सु पुष्कर पंचमेर कहा । जजों अयरावत तीत महा ॥

ॐ ह्रीं मृगवासवे ऽर्घं निर्वपामि ॥८॥

छंद प्रियवदा—

पुरुषवेद निरवार कीन है । परम शोभ जिन सो प्रवीन हैं ।
त्रितिय दीप गिरि पंचमें सही । जजत तीत अयरावते यही ॥

ॐ ह्रीं शोभाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

सुमल लोभ जिह्व सूक्षम नासियो । जिन सुधाव सुबोध भासियो ॥त्रि०

ॐ ह्रीं शुद्धावराय अर्घंनिर्वपामि ॥१०॥

दुखद पंचविधि नाद नासियो । जिन अपाप सवस्तु भासियो ।त्रि०

ॐ ह्रीं अपापजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

दरशनावरन अंत कीन है । जिन विबाध नमते प्रवीन है त्रि०।

ॐ ह्रीं विबाधाय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

मति श्रूतावरन आदि जे कहा । हरन संधिक जिनेशते महा ।

त्रितिय दीप गिर पंचमें सही । जजत तीत अयरावते यही ।

ॐ ह्रीं संधिकाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

छंद रथोद्धता—

विघ्न पंचजिन निघ्नकीन हैं । मान धात्र जिनसों अछीन हैं ।
पुष्करार्ध गिर पंचमें सही । तीत पूजत यरावते मही ॥

ॐ ह्रीं माधात्राय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

शुक्लध्यान दुतिवत शुद्ध हैं । अश्वतेज जिनसों विशुद्ध हैं । पु०

ॐ ह्रीं अश्वतेजाय अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

पुद्गलीक गुनतें सु जे चुतं । सोय देववर विद्यया जुतं । पु० ।

ॐ ह्रीं विद्याधराय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

वंध आधि तन भेद थे जिते । सो सुलोचन हने सहीतिते पु०

ॐ ह्रीं सुलोचनाय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

सर्व संहननसों वितीत हैं । मौनकं निधि नमों सुमीत हैं पु०

ॐ ह्रीं मौननिधाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

पुंडरीक जिनकों नमों सदा । छः प्रकार परजाप्त सों जुदा पु०

ॐ ह्रीं पुंडरीकाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

जैति चित्रगण मित्रजीय के । रक्षपाल षटकाय हीय के पु०

ॐ ह्रीं चित्रगणाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

छन्द द्रुतपा——

त्रिविध जोग जिननें चकचूरे । गुन समुद्र मनि इंद्रजु पूरे ।

पुहकरार्ध गिर पंचम नामी । जजहु तीत अयरावत स्वामी ॥

ॐ ह्रीं मुनिंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

गुननिधान परघात दला है । सरव पूज निज सर्व कला है पु०

ॐ ह्रीं सर्वकलाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

सकल भूखत्रिष रोग निवासे । जयति भूरिश्रवने सुखरासे पु०

ॐ ह्रीं भूरिश्रवाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

परमपुन्य जुतकाय अनूपं । जय पुनंग जिनवर जसरूपं ।
पुहकरार्द्ध गिर पंचमनामी । जजहु तीत अयरावत स्वामी २४

ॐ ह्री पुणांगाय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

मुमुणी छद-

पुहकर पंचममेर गनों । तह ऐरावत खेत भनों ।
जिनवर तीत जजामि सदा । कर धर पूरन अर्घ अदा

ॐ ह्री पचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्य: पूर्णार्घं निर्वपामि ॥

अथ जयमाला

घत्ता--जै जिनजगवंदित जन आनंदित जैति अमंदित मौनव्रती
सम दमजुत राजत सब सुख साजत भवभै भाजत है सुअती

छद नयमालिनी तामरस चडी—

उपशांतिक मति मडित जै जै । फल्गू जिन दुख खडित जै जै ।
श्री पूर्वास अखंडित जै जै । सुन्दर जिन भ्रम दंडित जै जै ॥१॥

गौरिक हरिहर वदित जै जै। त्रीविक्रम सु अमदित जै जै।
नरसिंघेस सु छंदित जै जै। मृगवस जगदानंदित जै जै ॥३॥
सोमेसुर सुखदायक जै जै। शुद्धावर सव लायक जै जै।
श्री अपाप गुन छायक जै जै। जिन विवाध शिवनायक जै जै।४।
सधिक भवदधि तारन जै जै। मांधात्रे मद मारन जै जै।
अश्वतेज जगटारन जै जै। विद्याधर उद्धारन जै जै ॥५॥
श्री सुलोचन प्रकाशक जै जै। मौननिधी वृत वासव जै जै।
पुंडरीक जसरासक जै जै। चित्रगुनी गुनरासक जै जै ॥६॥
श्रीमुनिरिंद महंत जै जै। सर्वकला भगवंत जै जै।
भूरिश्रव भवअंत जै जै। जिन पुण्यांग अनंत जै जै ॥७॥
पुष्कर पचम गिरवर जै जै। तीतेरावत जिनवर जै जै।
वदत सुरनर मुनिवर जै जै अमल अचल शिवतिय वर जै जै ८
दास सदा यह जाचतु जै जै। होहु भगत नित शांचतु जै जै।
सुर सुरेश मनरांचतु जै जै। सुजश गाय इमि नाचतु जै जै।९।

पग नूपुर छवि छाजतु जै जै। मांदल द्रिमि द्रिमि वाजत जै जै।
चंग उपंग अवाजत जै जै। थुँगत थुँगत गत गाजत जै जै ।१०।
सारदि सारंगी सुर बाजत जै जै। कटकि किनिनिविराजत जै जै
दुति लखि रवि शशि लाजत जै जै। भगत करत अघ भाजत जै जै ११
मिथ्यामति मल मंजन जै जै। विघनसमूह विभंजन जै जै।
वृन्दावन" मन रंजन जै जै। जै जिन रवि भविकंजन जै जै॥१२॥
घत्ता--जै धरमप्रकाशक भ्रमतमनाशक शिवमगभासक ज्ञानपते
दारिद द्रुमछेदक जैति अखेदक वेद विवेदक वेदमते ॥१३॥

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि ॥

चौबोल छंद।

आठों दरव मिलाय गाय गुन जो भविजन जिनराज जजै।
पुष्करार्ध गिर विद्युतमाली ऐरावत में तीत सजै।
सो लहि पुत्र मित्र सुख संपति भोग मनोग समस्त लिजै।

अनुक्रम करम नासि करि भवि वह मुकत धाम में राज रजै।

अथाशीर्वादः—

इति पचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशति पूजा समाप्ता।

अथ पंचमाचलैरावतभावि २४ पूजा प्रारभ्यते।

तोटक छंद—

गिर पंचम को ऐरावत है। जिन भाविय मो मन भावत है।
जिहि ध्यावत आनद पावत है तिहि थापत पूज रचावत है।

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिन अत्रावतर अवतर सनौषट्।
ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन।
ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिन अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

अथाष्टकं।

चालनदीश्वराष्टक भाषा द्यानतरायजी कृतकी तथा होली गर्भाआदि अनेक चालमे

उज्जल जल शीतल लाय हाटक भृंग भरा।

तुम चरनन देत चढ़ाय मेटत जनम जरा ॥

गिर पंचम परम पुनीत ऐरावत जानो ।

भावी जिनवर जगमीत पूजत धरि ध्यानों ।

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जलं निर्वपामि ॥

शुभ चदन कंदन दंद कदलीनंद लिया ।

जलसों घसि पूजि जिनंद भवतप दूर किया । गि० भा० ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो गधं निर्वपामि ।

मुकताफल हिम हरि हीर दमक गमक धारी ।

धरि तंदुल मंदुल वीर दारिद दुख हारी । गि० भा० ।

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यस्तंदुलं निर्वपामि ॥

शुचि सुमन सुमन सम आन सुमन सुमन नीके ।

करि मदन कदन पनवान पूजत पदजीके । गि० भा० ।

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥

रस रासत नेवज सार कंचन थार भरा ।
तुमकों अरपत अविकार रोग समूह हरा । गि० भा० ।
ॐ ह्री पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ॥
तम भंजन दीप संवार आरति कीन्ह सही ।
मम तिमर मोह निरवार आरत मेंट यही । गि० भा० ।
ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीप निर्वपामि ॥
कृष्णागर अगर कपूर धूप उखेवत हौं ।
सब जरत करम मम कूर तुम पद सेवत हौं० । गि० भा० ।
ॐ ह्री पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूप निर्वपामि ॥
रित फल कलवर्जित लाय सुवरन थार भरा ।
तुम पूजत विघन नशाय वांछित लाभ करा । गि० भा० ।
ॐ ह्री पचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो फलं निर्वपामि ॥
वसु दरव सवार पवित्र अरघ सुहाथ लिया

पद सेवों हे जगमित्र दीजे मुकत प्रिया ॥
गिर पंचम परम पुनीत ऐरावत जानो ।
भावी जिनवर जगमीत पूजों धरि ध्यानों ॥
ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतभावि चतुर्विंशतिजिनेभ्यो ऽर्घं निर्वपामि ॥

अथ प्रत्येकार्घं ।

छंद समुद्रिका मात्रा १४ ।

अमलगुन अदोप में गनो । परम धरम कारने भनों ।
गिर पनमयरावतें जजों । जिन भवतव आँनंदें सजों ॥
ॐ ह्रीं अदोपाय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

छंद सुमुखी मात्रा १४

वृषभ जिनेश कलेश हरें । जिन वृषको उपदेश करें ॥
पुहकर पंचम मेर जजों । भवतव उत्तर खेत सजों ॥
ॐ ह्रीं वृषभाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

छद सूर मात्रा १२—

जिनदेव विनायानंद । आनंद अंबुधि चंद ।
गिर पंचमेरावर्त । भावी भजे मौं तर्त ॥ ३ ॥

ॐ ह्री विनयानंदाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

छद लोलतरग मात्रा १६—

श्रीमुनि भारत आतमज्ञानी । आतम की अनुभूति धरानी ।
पंचमेर जजों सिर नाई । भविय देव यशावत राई ॥ ४ ॥

ॐ ह्री मुनिभारताय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

छद सारस्वती मात्रा १४—

इंद्रक इंद्र फनिंद्र नमे । आतम ऑनंद कंद पमें ।
पुष्कर पंचम मेर सजों । भवियरावत देव जजों ॥५॥

ॐ ह्री इंद्रकाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

छंद इद्रवज्रा मात्रा १८ ।

चंद्राननं चंद्र सुकेत स्वामी । ऑनद वारानिधि वृद्धनामी ।

ऐरावते भावित नाथ पूजों । श्रीपुष्करे पश्चिम मेर दूजो ॥६॥

ॐ ह्रीं चंद्रकेताय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

छंद उपेन्द्रवज्रा मात्रा १५

प्रभाकरक्रांति अनन्त धारी । नमों ध्वजादित्य अनेक तारी ।
सु पुष्करार्द्धा परमेर सोहै । भविष्यतेरावत चित्तमोहे ॥७॥

ॐ ह्रीं ध्वजादित्याय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

छंद इंद्रवज्रा मात्रा १८ ।

जु वस्तुकों एकहि काल जानिहीं ।सु वस्तुवोधं जिन धारिध्यानहीं
स पुष्करार्द्धा परमेर सोहै । भविष्यतेरावत चित्त मोहै ॥८॥

ॐ ह्रीं वस्तुवोधकाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

छंद हारिनी मात्रा १५ ।

नमों नित मुक्तगती जिनकौं । सुरेश नरेश नमैं तिनकौं ।
सु विद्युतमालिय मेरु जजौं। भविष्य यरावत खेत सजौं ॥९॥

ॐ ह्रीं मुक्तगतये ऽर्घं निर्वपामि ॥९॥

छंद वसततिलका वर्ण १४।

श्रीधर्मवोधकप्रवोधकभव्यप्रानीऑनंदकंदनिजआतमरूप ध्यानी
श्रीपुष्करार्ध मह पश्चिममेरजानों।ऐरावतें जजत भवितधारि ध्यानों

ॐ ह्रीं धर्मप्रवोधकाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

छंद आर्या सर्व मात्रा ६०।

श्रीदेवांग जिनेशं, नमें सदा जाहि सर्व देवेशं।
पुष्कर पंच नगेशं, ऐरावत भावि संजजेते ॥

ॐ ह्रीं देवाङ्गाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

छंद प्रियवदा वर्ण १२—

कलुष दारन उदार हैं वली। जिन मरीच अरि मीचकों दली।
पुष्करार्ध गिर पंचमों रजै। जिन भविष्य अयरावतें जजैं।

ॐ ह्रीं मारीचाय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

छंद भुजंगप्रयात वर्ण १२-

सबै जीवके नाथ हैं जीवनाथं। दयाधर्म दाता सदा मुक्तसाथं।
जजों पंचमे भूभृते भावनीकं। कृपासिन्धु ऐरावते भावनीकं॥

ॐ ह्रीं जीवनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

छंदमोतीदाम वर्ण १२

जसोधर देव महा जसरास। सुरेश नरेश खगेसुर दास।
जु पुष्कर पंचममेरु लसंत। जजों अयरावत भावित संत॥

ॐ ह्रीं जशोधराय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

छंद लक्ष्मीधरा वर्ण १२

गौतमंनाथकों गौतमेशं भजै। जास आराधतें सौख्यसाता सजै॥
पुष्करार्द्धाचले पंचमैरावते। भावि पूजें सबै शांति को पावते॥

ॐ ह्रीं गौतमाय अर्घं निर्वपामि १५॥

छंद द्रुतिविलवित तथा सुन्दरी-

विशद बुद्ध धरें मुनि शुद्धजी। सुजनको नितदायक रिद्धजी॥

जजत पुष्कर पंचम मेरके जिन भविष्य यरावत हेर के ॥

ॐ ह्रीं मुनिसुद्धाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

छंद द्रुतपा वर्ण १२-

चिद विलास सुधि वंदत जाकों जिन प्रबोधक नमों पद ताको।
पुहकरार्ध गिर पंचम सेवों । जिन भविष्य अइरावत वेवो ॥

ॐ ह्रीं प्रबोधकाय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

छंद शिखरनी वर्ण १७-

सदानीकं स्वामी सकल सुख संपत्ति करता ।
सदाज्ञानी ध्यानी जगत जनके क्लेश हरता ॥
जजों विद्युन्माली विशद गिरकेरावत विषें ।
कृपाधारी भावी अमलगुन कारी शिव दिखें ॥

ॐ ह्रीं सदानीकाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

छंद प्रमिताक्षरा वर्ण ॥१२॥-

जिनराज चारित सुनाथ महा । गहि शुद्ध चारित कलंक दहा।

गिर पंचमें सु अयरावत है। भवतव्य सेय सुख पावत हे ॥

ॐ ह्रीं चारित्रनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

छद द्रातिमध्यक प्रथम त्रितियचरन प्रस्तार ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽऽ अर द्वितिय चतुर्थपाद ॥॥ऽ॥ऽ॥ऽऽ या भाति मात्रा १६ सर्वत्र यथा-

आंनंद अंवुधि चंद समाना। अमल सदानंद श्री भगवाना।
पंचम मेर ऐरावत ध्यावों। भवतव सेवत हीं सुख पावों।

ॐ ह्रीं सदानन्दाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

छंद प्रमानिका वर्ण ८

वेदार्थनाथ ध्याइयै सदेव शीस नाइयै।
गिरिंद पंच भावनों जजोंत्तर सु पावनों ॥

ॐ ह्रीं वेदार्थकाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

छद नाराच वरन ॥१६॥

निजातमीक लाभ पर्म धर्म शर्म देत है।

सुधासुनीक देवजी भवाब्धि माहिं सेत हैं ॥
सु पंचमाचले पुनीत उत्तरें सुखेत हैं ।
जजामि भावनीक जो सुबोधको निकेत है ॥
ॐ ह्री सुधानीकाय अर्घ निर्वपामि ॥२२॥

छद चामर वर्ण ॥१६॥

जोति मूर्त देवकों त्रिलोक धोक देत है ।
शोक थोक नाशके प्रमोदकों जुहेत है ।
पंचमाचलें सु उत्तरें पुनीत जानिये ॥
भावनीक देव पूजिगीत नृत्य ठानिये ॥
ॐ ह्रीं जोतिमूर्तयेऽर्घं निर्वपामि ॥२३॥

छद रथोद्धता–वर्ण ११

श्री सुरार्ध सुर सर्व ध्यावहीं । जासके न गुन पार पावहीं ।
पचमाचल यरावतें महा । भावतव्य पर शर्ण मैं गहा ॥२४॥

ॐ ह्रीं सुराद्याय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

छंद पाद्धड़ी लब्वत मात्रा १६

लखि पुष्करार्ध मह अपर मेर। अयगवत जिन भवतव्य हेर।
पर पूजों तिनकों अरघ धार। संसारऽसारतें तार तार ॥

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि ॥

अथ जयमाला।

घत्ता छंद मात्रा ६४

जैजै गुनछायक विघन विनायक दास सहायक जगनायक।
धरि वरवृषिसायक अरिगन घायक सिवसुखदायक सबलायक।

छंद नोटक–

सब दोष अदोष जुचूरत हैं। वृषभेश वृपामृत पूरत हैं।
विनयानंद आनंद सूरत हैं। मुनि भारत भौ भय दूरत हैं ॥१॥
जिन इंद्रक इंद्रनि वंदित हैं। शसिकंत जगत आनदित हैं।
धुज आदित जोति अमदित हैं। जिन वस्तु विवोध सुछंदित हैं २

जिन मुक्तगती भवभंजन हैं। जिन पर्म सुधर्म निरजन हैं।
नित देव सुअग अनजन है। जिन मारिच मीचहि गंजन हैं ॥३॥
जिय नाथ अनाथहि रक्षत हैं। सव वस्तु जशोधर वक्षत हैं।
जिन गौतम भ्यो मग गक्षत हैं। मुनि शुद्ध प्रवुद्ध प्रतक्षत हैं ४
सुखसार प्रवोध उमडित है। अविकार सदानिक पडित हैं।
जिन चारित चारु अखंडित है। जु सदानंद आनँद मडित हैं ५
सु वेदार्थक वेद विवोधन हैं। जु सुधानिक आतम सोधन हैं।
जिन जोति सुमूर्त तपोधन हैं। जु सुराधि जगज्जन वोधन हैं ॥६॥
पनमों अयरावत भाविय हैं। नमतें सव ऑनँद पाविय हैं।
तुम हो भगवंत अनंत गुनी। तुमरो यश मैं निज श्रौन सुनी ७
शरना चरना रज आय गही। मम वछित सिद्ध करो सवही।
तुव भक्ति सदा मन माहि वसौ। उरतें दुख दोष कलंक नसो ८
तुव आगम में चित नित्त रमों नित संगति साधरमीय पमो।
नित ही अनुभो रस पान करों। नित सजम पूजन दान करों ९

रतनत्रय भाव सुभाव मिलौ । मल राग रु दोष कषाय टिलौ ।
भव भौ यह जोग मिलो तबलों । शिव नारि धरो प्रभुजी तबलों १०
नित मगल होहु प्रमोद मई । वर संपति सार मिलो नितई ।
सव विघ्नसमूह विनाश करो । निज दासनिके सब आस भरो ११
जगमें सुखसागर भूरि भरो । निज धर्म उदोत सदैव करो ।
मन वांछित कारज सिद्ध करो । जन "वृंद" तनें वर रिद्ध भरो १२

घत्ता-जे केवल दिनकर तिमिरमोहहर मोखडगर पराकाश करो ।
"वृंदावन" वंदत पापनिकंदत दीजे आनंद कंदवरा ॥

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्घंनिर्वपामि ।

दोहा-जो पूजे मनलायपद भावी जिन चौवीश ।
ऐरावत पंचम तनों सो ह्वै मुकत शतीश ॥

इत्याशीर्वाद ।

इति श्रीपुष्कार्धद्वीपे ऐरावतक्षेत्रचौवीसीपूजा समाप्ता ।

अथ समुच्चय पूर्णार्घ।

छंद माधवी सवैया वर्ण २४

जल चंदन तदुंल पुष्प लसै चरु दीप सुधूप फलोघ गहा।
सब उत्तमसों अति उत्तम है तिनको सजि अर्घ सुथाल लहा
गत आगत वरतत जे दशहू थल तीरथनाथ दयाल कहा।
तिहि पूजत पूरन अर्घ लिये प्रभु देहु हमें शिव धाम महा॥

ॐ ह्रीं ढाई द्वीपके दशक्षेत्रसंबधी गतागतवर्ततजिनेभ्यो ऽर्घंपूर्णार्घं निर्वपामि।

अथ आशीर्वाद—

कवित्त छंद मात्रा ३१

सातसतक अरु बीस बीस जगदीश जजै जो भवि मनलाय
ताके पुन्यतनी अति महिमा को कवि कहै वचन दरशाय॥
मुकत महल को नीव दियो तिन इंद्र सरा है तसु जश गाय।
शक्र चक्र अहमिंद्र तीर्थपति पदलहि सुखसों शिवपुर जाय॥

इत्याशीर्वाद ।

इति श्रीतीसचौबीसीपुजा वृंदावन अग्रवाल गोयलगोत्री कृत संपूर्णा ।

प्रथम सूत्रावतारमिदं पुस्तकं लिखित्त ग्रन्थकारेण निजपरोपकार
भाषा होने का कारण, तथा देश नगर शेली के नामीजन
तथा सहाई तथा कर्ता नाम
कुल वर्णन ।

दोहा छंद–एक समैं काशी विषैं भयौ संसकृत पाठ ।
काशीनाथ कराइयौ वन्यों अनूपम ठाठ ॥१॥
तवसों यह अभिलाप थी भाषा होय मनोग ।
अवै मिल्यो सब जोग तब भयौ सुधारस भोग ॥२॥

मनहरन ३१

काशीजी में काशीनाथ मूलचंदनंतराम,
नन्हूजी गुलाबचंद प्रेरक प्रमानिये ।

तहां धर्मचंदनंद शिष्य सुखलालजी को,
बृंदावन अग्रवाल गोयलगोती ठानिये ॥
ताने रचे पाठ निज पर परमारथ को
सज्जन सो इहां यह वीनती वखानिये ॥
हीनाधिकशोधि शुद्ध कीजिये प्रमोद धारि
बालबुद्ध जानिकें दयाल भाव आनिये ॥

दोहा—दरव तत्त्व गुनकेवलसु सम्मत विक्रमवान ।
माह धवल पांचैं नवल पूरन परम निधान ॥ १ ॥
जो पूजैं इस पाठसों श्रीजिन पद लवलाय ।
मंगल मोद अनेक सुख सो भवि बहु विधिपाय ॥२॥
जिन पूजा फलको सकल को विधि कहै बनाय ।
एक दरवसों पूजिके बहुजन सुरपुर पाय ॥ ३ ॥

तातें पूजो दरव अरु भाव सहित जिनराय ।
जातें हे भवि तुम लहो सुर सुख शिवपुर राय ॥ ४ ॥
जबलों रवि शशि गगनमें उदै अमंद धराय ।
तबलों यह रचना रहो निरमल जश सुखदाय ॥
जिनवानी रचना रचत जो कछु सुख उपजाय ।
सो सुख जानैं केवली के जानै कविराय ॥
जै वंतो जिनराज जो पंच कल्यानक पाय ।
सो इत नितमंगल करो मन वांछित पददाय ॥

इति श्री तीसचौवीसी पूजा भाषा होने का कारन करता देश कुल सैली सहाई फल मगल संपूर्ण वरनन समाप्तम् ।

शिव भूयात् ।



जजत विघन विनशाय, विजयैरावत संत जिन ॥६॥

ॐ ह्रीं नमनाय अर्घं निर्वपामि ।

पद्माकर जिनराय पद्माकर तसुदास यह ।

पूजत विपति पलाय, विजयैरावत संतजिन ॥७॥

ॐ ह्रीं पद्माकराय अर्घं निर्वपामि।

उदयानंद जिनराय, आनंद सिंधु बढ़ावहीं ।

जजतैं दुरित नशाय, विजयैरावत संत जिन ॥८॥

ॐ ह्रीं उदयानंदाय अर्घं निर्वपामि ।

रुक्म इंदु जिनराय, रुक्म इंदुसम द्युति धरैं ।

पूजत व्याधि जाय, विजयैरावत संत जिन ॥९॥

ॐ ह्रीं रुक्मेन्दवे अर्घं निर्वपामि ।

श्रीकृपाल जिनराय, भजत मिटत विनिन अघ ।

पूजत वांछित दाय विजयैरावत संत जिन ॥१०॥

ॐ ह्री कृपालाय अर्घं निर्वपामि ।

लोकालोक लखाय, प्रोष्ठिल केवलज्ञान में ।
जजत जगत सुखदाय, विजयैरावत संत जिन ॥११॥

ॐ ह्री प्रोष्ठिलायार्घं निर्वपामि ।

प्रगट सिद्ध पददाय, सिद्धेसुर सिवतिय रमन ।
पूजत गनफन पाय, विजयैरावत संतजिन ॥१२॥

ॐ ह्री सिद्धेसुराय अर्घ निर्वपामि ।

वचपियूष सरशाय अमृत इंदु जिनराय तें ।
जजत परम पद, पाय विजयैरावत संत जिन ॥१३॥

ॐ ह्रीं अमृतइंदुजिनाय अर्घं निर्वपामि ।

स्वामिनाथ जिनराय सुगत देत शिव हेत नित ।

पूजन मनवचकाय, विजयेगवन मंन जिन ॥१४॥

ॐ ह्रीं [illegible] अर्घं निर्वपामि ।

मेनिलिंग जगराय शिवसाधन हेत हैं ।

पूजन वांछित दाय विजयेगवन संत जिन ॥१५॥

ॐ ह्रीं मेनिलिंगाय अर्घं निर्वपामि ।

नमः अरघ सुभदाय, श्री सग्नाथ सुगुननिध ।

पूजन हों शिग्नाथ विजयेगवन संत जिन ॥१६॥

ॐ ह्रीं [illegible] अर्घं निर्वपामि ।

आनंद घन सगाग मेघनंद जिन त्रिजग गुरु ।

जजन भजन भवभाग विजयेगवन मंत जिन ॥१७॥

ॐ ह्रीं [illegible] अर्घं निर्वपामि ।

नंदकेश जिनराज केशान्यांनि आनंद घर ।

पूजन पाप पलाय विजयेगवन मंत जिन ॥१८॥

ॐ ह्रीं [illegible] अर्घं निर्वपामि ।

हरिहर प्रीत उपाय हरि जिन पदपंकज जजत ।
पूजत विघन विलाय विजयैरावत संत जिन ॥१९॥

ॐ ह्रीं हरिजिनाय अर्घं निर्वपामि।

जै अधिष्ट जिनराय शिष्ट इष्ट दातार वर ।
पूजत अरघ चढाय विजयैरावत संत जिन ॥२०॥

ॐ ह्री अधिष्टाय अर्घं निर्वपामि ।

शांतिक सब सुखदाय जोगारूढ निपुनमती ।
जजों जुगल तसुपाय विजयैरावत संत जिन ॥२१॥

ॐ ह्री शांतिकाय अर्घं निर्वपामि ।

आनंद संपति दाय नंद स्वामि भावि वृंदकों ।
पूजत पाप पलाय विजयैरावत संत जिन ॥२२॥

ॐ ह्री नंदस्वामिने अर्घं निर्वपामि ।

त्रिभुवनपति थिरनाथ कुंद पार्श्व नित सेवहीं ।
जजन जगन उमगाय विजयेरावत संत जिन ॥ २३ ॥
ॐ ह्रीं [illegible] अर्घं निर्वपामि ।

कवि उर अधिक उपाय, देव विगेचनकों भजों ।
विघन हरन सुखदाय, विजयेरावत संत जिन ॥२४॥
ॐ ह्रीं विगेचनाय अर्घं निर्वपामि ।

[illegible]—

सजे वसुदर्व पुनीतपुनीत । वजे मन मान सुनीत सुनीत ।
जजों उर आनंद पाय सुभाय । विजैगिर उत्तर भागसुथाय ॥२५॥
ॐ ह्रीं [illegible] अर्घं ।

अथ जयमाला ।

[illegible] (मात्रा ३२)

जैजै जिनेश अनुपम दिनेश भ्रमतम निरा नाशन अशेष ।

सेवत सुरेश वेवत गनेश महिमा महेश कारन कलेश ॥
गुन अतुल भेश मुनि भजत शेश शिवबल्लभेश हरि अरि प्रवेश ।
हम शरन देश आये जगेश-भवसिंधुते समुद्धर रमेश ॥१॥

चौपाई छद—

जै जिनराय अपश्चिम स्वामी । पुष्पदत जेजै शिवगामी ॥
जै अरिहंत सत जन ध्यावै । देव सु चारित चित हरषावैं ॥२॥
सिद्धानद सुछंद जिनिंदा । जैजै नंदग आॅनंद कंदा ॥
जै पद्मेश परमपद दाता । उदै नंद जै जगविख्याता ॥३॥
जै रुक्मेंदु इंदु दुतिधारी । जै कृपाल करुना विस्तारी ॥
प्रेष्ठिलदेव परम वैरागी । जै सिद्धेश्वर शमता पागी ॥४॥
अमृतदेव ज्ञानामृत पूरे । जै स्वामी जिहि भव भै चूरे ॥
भैनिलांग अनंग मद गंजन । जै सरवारथ जन मन रंजन ॥५॥
मेघनंद आनॅद जल पूरन । नंदकेश जिन भ्रमतम चूरन ।
जै हरि देव जजत हरि पादं । जै अधिष्ट जिन कृतमरजाद ॥६॥

जैजै शांतिक शांति करैया । नंद स्वामी मम विघन हरैया ॥
फुद पार्श्व जस शशि समलोकं । देव विरोचन मोचन शोकं ॥७॥
ग गउरीश ईश गुनसागर । वरतमान जस जगत उजागर ॥
सुविरन सुरनर किंनर नागर । गावत जस नाचत रससागर ॥८॥
द्रिम द्रिम द्रिम द्रिम मांदल बाजै । ठम ठम ठम घुंघरु पग छाजै ।
कटकिंकिनी किनिनिनिनिनि कूजै । पग नूपुर झिनिनिनिनिनि गुंजै ॥९॥
पट पट पट पाटल धुनि है है । धुंधुन धुंधुन गत थेई थेई सो है ॥
तट तट भर पट नाद नदंतै । मधुर मधुर सुर सुजस रटंतै ॥१०॥
इन समान गुन भगत करै है । भव भव जनित कलंक हरै है ॥
जब वंदन पद गुन कर जोरी । करो मन भव बाधा मोरी ॥११॥
जैजै गुनसुंदर भजन पुंधर भजन पुंदर अगतभरा ।
हम जनन सुमंदर मम उरमंदर भगतवंदर भानुवरा ।

भुजंगप्रयात छंद ।

जजै उत्तरैरावतें वर्तमानं । विजै मेरुके जे सुधी बुद्धिवानं ।
लहैं ते इहां सौख्य इन्द्रीजनीत । अतिंद्रि लहैं फेरि होवें निचीतं ।

इत्याशीर्वादः ।

इति श्रीविजैमेरुऐरावतवर्तमान चौवीशीपूजा समाप्ता ।

अथ विजैमेरुऐरावतातीत पूजा लिख्यते ।

स्थापना छंद नंदि श्वराष्टक भापाका—

गिरि विजय सुर उत्तर सार एरावत सो है ।
तित तीत जिनेश उदार सुरनर मन मोहै ॥
थापौं उर प्रीत लगाय पूजन हेत सही ।
प्रभु आपु विराजा आय दायक मुक्तिमही ॥१॥

ॐ ह्रीं धातुकी द्वीप- विजयमेरु ऐरावतातीत जिन-अत्रावतर अवतर संवौ-
षट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं पावापुरीसिद्धक्षेत्रेभ्यो जिन । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं
ॐ ह्रीं पावापुरीसिद्धक्षेत्रेभ्यो जिन अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्थापनं ।

अथाष्टक ।

गेयछन्द मात्रा ३२ ।

सुरसरितवार प्रासुक अपार भरि हेम झार धारा निकार ।
है जग अपार जिनवर उधार सुभिन्न सवार मल करम टार ॥
गिर शिखर धार उत्तर सिंगार नित तीन चारि अरु बीस सार ।
पूजों निहार प्रभु मो अपार संसार सागर तार तार ॥
ॐ ह्रीं पावापुरीसिद्धक्षेत्रेभ्यो जलं निर्वपामि ।
कर घसत सार शीतल निहार चन्दन उदार घसिकैत सार ।
पूजों प्रचार जिनगुन अपार भवताप हार सुखद अपार ॥ गि०
ॐ ह्रीं पावापुरीसिद्धक्षेत्रेभ्यो चंदनं ।
अक्षत विमल इन्दु मनन आमित्य अति सुगन्धकार ।

तसु पुंजरक्ष सुखभुजस्वक्ष कलिकुंजनक्ष शिवगक्षसार ॥ गि०।

ॐ ह्री धातुकीद्वीपविजैमेरुऐरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो तंदुल ।

यह मदनशूल सब जगतमूल कारक अकूल तुमकिय निमूल ।
तातें सुफूल धरिहों अधूल प्रभुदे अतूल शुभ शीलमूल ॥गि०।

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपविजैमेरुऐरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं ।

खाजे रसाल मोदक विशाल भरि कनक थाल प्राशुक सुहाल ।
सो हेदयाल तुमनिकट हाल धरि नमतभाल आकुलनिकाल गि०

ॐ ह्री धातुकीद्वीपविजैमेरुऐरावतातीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो नैवेद्य निर्वपामि

दाहक अमंद दीपत सुछंद सो जजि जिनिंद जगवंद चंद ।
भ्रमतमनिकंद केवलदिनंद प्रगटै अफंद सुखवृंद नंद ॥ गि०

ॐ ह्री धातुकीद्वीपविजैमेरुऐरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं ।

दशगंध आन सौरभ अमान खेवत प्रमान वसुकरम हान ।
दिशिदिशि उड़ान मनु मेघजान निरततसयान केकीसुजान॥गि

ॐ ह्रीं धातुकीखंडद्वीपविजयमेरुसम्बन्धिजिनजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ।

फल पक्व मिष्ट स्वादिष्ट इह मोक्ष वांछित पूजों जगिन्द ।

हनि अष्टदुष्ट शिव दे सुपुष्ट हविशद सिद्ध दायक अभिरामि ।

ॐ ह्रीं धातुकीखंडद्वीपविजयमेरुसम्बन्धिजिनजिनेभ्यः फलं निर्वपामि ।

जल फल मिलाय वसु अंगनाय चाजनवजाय सुख सुजसगाय।

भज श्रीजिनाय मनवचनकाय वंछितलहाय भवभय नशाय ।

गिरि विजयथाय उत्तर दिशाय तिनतान चारअरु बीसमार ॥

पावों निहार प्रभुको अवार संसारपारमें तार तार ॥

ॐ ह्रीं धातुकीखंडद्वीपविजयमेरुसम्बन्धिजिनजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामि

अथ प्रत्येकार्घ ।

चउपाई मात्रा १६

हरिभद्रशाल महागिरि जानों । भद्रक वज्र वज्रजिन मानों ।

दक्षिण दिश गिरिविजय सु पूर्वापरगत अनीत जिन पूजा॥१॥

ॐ ह्रीं वज्राय अर्घं निर्वपामि ।

उदय विशुद्ध सदा जिन धारे। उदयदत्त जिनवर अविकारे ॥दु० ऐ०

ॐ ह्रीं उदयदत्ताय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

सूरवीरवर सूर्य जिनंदा । भजों भविक मोदनगन चंदा । दु० ऐ०।

ॐ ह्रीं सूर्याय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

पुरुषोत्तम नित सेवत जाको। पुरुषोत्तम जिनसदनसुधाको। दु० ऐ०

ॐ ह्रीं पुरुषोत्तमाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

भविकवृंदकों शरन सहाई। शरणस्वामि त्रिभुवनके राई। दु० ऐ०

ॐ ह्रीं शरणाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

भवि समोध दायक शिवधामं। श्री अवबोध करों परनामं। दु० ऐ०

ॐ ह्रीं अवबोधाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

परम पराक्रम क्रांति धरैया । निर्घटकजिन विपति हरैया। दु० ऐ०

ॐ ह्रीं निर्घटकाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

अगम पराक्रम जामें सोहै। सो विक्रमजिन जनमन मोहै॥ दु० पू०

ॐ ह्रीं विक्रमाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

हरिहर इंद्र चंद्र पद वंदें। सो हरिंद केवल अभिनंदें ॥ दु० पू०

ॐ ह्रीं हरींद्राय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

मनि शिवपथ पंथी पायेयं। पवित्रजिन मुनिगन ध्येयं॥ दु० पू०

ॐ ह्रीं पवित्राय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

भविजनकों पद दें निरवानं। जिन निरवान सु भगवानं॥ दु० पू०

ॐ ह्रीं निर्वाणाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

दोनों धर्मधुराधर स्वामी। धर्महेन पद परम नमामी॥ दु० पू०

ॐ ह्रीं धर्महेनाय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

चतुरानन चहुँ दिश बखानें। देव चतुर्मुख मंगल मानें॥ दु० पू०

ॐ ह्रीं चतुर्मुखाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

इंद्र नरिंद चंद पद वंदें। सुकृतइंद्र जन वृंद अनंदें ॥ दु० पू०

ॐ ह्री सुकृतेंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

श्रुति अंबुद्धि भविजन श्रुतिद्धारे ।देव श्रुतंबुधि अंबुधि तारे॥दु ०ऐ०।

ॐ ह्री श्रताम्बुधाये अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

आदितसम तन विमल दिपे है।विमलादित जिन करम खिपे है॥दु.ऐ'

ॐ ह्रीं विमलादित्याय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

देव देवपति नमत अनेकं ।देवदेवजिन नमों चिदेकं ॥ दु० ऐ०।

ॐ ह्री देवदेवाय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

धरनी धर धरनेंद्र सुरेंद्रं । सेवत नित धरनेंद्र जिनेंद्रं ॥दु० ऐं०।

ॐ ह्री धरनेंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥१८ ॥

भविजन भव जलतें उद्धारे। तीरथ नाथ नमों अविकारे॥दु०ऐ।

ॐ ह्री तीर्थनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

परमानंद निरंतर भोगी । उदयानंद शुद्ध उपयोगी ॥दु० ऐं०।

ॐ ह्री उदयानंदाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

सम्वाग्य पद सिद्ध प्रदाना। सम्वाग्य जिन त्रिभुवन ताना॥द्रु०गे
ॐ ह्रीं सर्वांग अर्घं निर्वपामि ॥२७॥

धर्मिक कह धनधान्य चढ़ावें॥धर्मिकजिन जन मुकत चढ़ावें॥द्रु०पे०
ॐ ह्रीं धार्मिकाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

नगर क्षेत्र के भवि शिर नावें। क्षेत्रस्वामि सो प्रीत चढ़ावें॥द्रु०पे०
ॐ ह्रीं क्षेत्रस्वामिने अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

इंद्र चंद्र दिन इंद्र भजे हैं। जिन हरिचंद्र सुबोध सजे हैं।
हुनिगरी गिरि विजय प्रद्युन्नो। भगवन अतीत जिन पूजो॥
ॐ ह्रीं अतिक्रान्त अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

दोहा-सुमन अम्व बनाय वर पूजौं उम्धर ध्यान।
विजयभगवन तीन जिन नमों जोरि जुग पान ॥२५॥
ॐ ह्रीं त्रियभगवतीतानगुर्विंशतिजिनेभ्यो पूर्णार्घं।

अथ जयमाला ।

घत्तानंद छंद ।

अविचल थल जुत्ता, शिवसुख भुक्ता, उक्तिनिरुक्ता, मुक्तिधरा ।
भ्रमतम शतखंडा, आनंद मंडा, जैं जै जै शिव रमनि वरा ॥१॥

कामिनी मोहन छंद—

जयति वज्रेश वज्रेश पूजत चरन ।
जय उदय दत्त सुख उदय भविजन करन ॥
जयति जिनसूर्य भविजलज के सूर है।
जयति पुरुषोत्तमं ज्ञानरस पूर है ॥२॥
शरन स्वामी त्रिजगजीव कों शरन हैं ।
देव अवबोध बुधि विसद विस्तरन हैं ॥
जयति विक्रम करम शत्रु तुम चूरियौ ।
जयति निरधंद तुम सामरस पूरियौ ॥३॥
जजत हरिइंद हरिइंद पद आइकैं ।

भजत परब्रेरितहि त्रिभुवन ध्यानकैं ॥
देत निरवान निरमान निज दासकों ।
हरमके देव जिन पूरि भवि आसकों ॥४॥
चतुरमुख देव जिन चतुर मुख सेवते ।
सकल जिनराज गुन सकल जन वेवते ॥
देव श्रुतिसिंधु मतिसिंधुतें तारहीं ।
त्रिमद आदिक मद मुकत विस्तारहीं ॥५॥
देव सबकों चतुरभेद सुर सेवते ।
देव परमेष्ट गुन सुमन मन देवते ॥
नाथ संसार उगत जालतें कारियो ।
उदय आनंद पानंद मोक्ष धारियो ॥६॥
जगति मध्याग मध्याग दातार को ।
धारियें देव जिन परम आधार को ॥
देव स्वामी सुकल पंच दायक सदा ।

देव हरिचंद पद शरन हमने गहा ॥७॥

ए चतुर बीस जगदीश नित वंदिये ।

विजय ऐरावत तीन अभिनंदिये ॥

तरन तारन हरनें करम जगजन्त के ।

गुन अमल अचल अनुपम लसै संतके ॥८॥

ज्ञान द्रिग शर्म वीरज विशद लसत हैं ।

सो परमदेव मो मन सदा वसत है ॥

अरज कर जोरि जुग करहुँ सुन लीजिये ।

धरम के नदकौं परम सुख दीजिये ॥९॥

गता–जैजै करुनाकर मोह तिमरहर ज्ञानदिवाकर उदयकरा ।
संशयतम भंजन मुनिमन कंजन रंजन जै जै विघन हरा ।

अथाशीर्वादः । चावोले छन्द ।

जो पूजे जिनराय पाय जुग दरव भाव विधि मोदधरे ।
धातु दीप गिरि विजयैरावत तीत जगत जन भीत हरे॥

सो पावै धन धान्य पुत्र प्रिय मित्र कलत्र प्रवीन वरे।
सुगति होय चक्रपति ह्वैकै धर्मचक्र धरि मुकत वरे॥

इति [illegible] जिनपूजा समाप्ता।

अथ भावीचतुर्विंशतिजिन पूजा प्रारभ्यते

[illegible] की चाल।

वर धातुकी दीप विशाल पूर्व मेरु कहा।
तिन एरावत सुरसाल शोभा देत महा।
तहँ भावी जिन चौबीस सब विधि ज्ञायक हो।
थापूं हौं मो जगदीश धाम सहायक हौ॥

ॐ ह्रीं [illegible] आह्वाननं।
ॐ ह्रीं [illegible] स्थापनं।
ॐ ह्रीं [illegible] सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं ।

चाल सुन्दरी छन्द ।

परम पावन वारि सुधारिये । जजत हौं मलकर्म निवारिये ।
दुतिय दीप विजै अइरावते । जिन भविष्य जजौं मनभावते ॥

ॐ ह्रीं विजयैरावतभावीजिनेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल ।

कदलिनंदन चंदन लेइयै । जजतु हौं भवताप उछेइयै ।दु०।

ॐ ह्रीं विजयैरावतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चन्दनं ।

सुरभि तंदुल मंदुल लाइये। निकट धारि अखै पद पाइये ॥दु०॥

ॐ ह्रीं विजयैरावतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो तंदुलं निर्वपामि ।

समरशूल निमूलन कारने । सुभग फूल धरों मदटारने ॥ दु०

ॐ ह्रीं विजयैरावतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ।

चरुरशाल मनोहर लैधरों । सकल आकुलकल्मपकों हरों ।
दुतिय दीप विजैऐरावते । जिन भाविष्य जजों मन भावते ॥

ॐ ह्रीं त्रिजगतभागतानुगतजिनेभ्यो चरु निर्वपामि ।

तिमिरनाशक दीपक भारती करत हौं प्रभु सन्मुख आरती॥दु०

ॐ ह्रीं त्रिजगतभागतानुगतजिनेभ्यो दीप निर्वपामि ।

अगर आदि दशांग सुधूपजी । हवन कर्म जरै सु विरूपजी॥दु०

ॐ ह्रीं त्रिजगतभागतानुगतजिनेभ्यो धूप निर्वपामि ।

फल सु पक मनोग रसाल हैं । जजत वांछित देत विशाल है ।दु०।

ॐ ह्रीं त्रिजगतभागतानुगतजिनेभ्यः फल निर्वपामि ।

जल फलादिक को मजि अर्घ है । जजत आनंद होत अनर्घ है॥

त्रितिय दीप विषै ऐरावते । जिन भविष्य जजो मन भावते ॥

ॐ ह्रीं त्रिजगतभागतानुगतजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामि ।

अथ प्रत्येकार्घ ।

दोधक छंद ।

वीर जिनराज आस्त्र सोभ, राग विनाश नित्यं नित चोखं ।

धातु वजै गिरि उत्तर जाई । भवियदेव जजौं शिरनाई ॥

ॐ ह्री वीरनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

देव विजै अरि जीत विराजै । सुदर श्री उर अंतर छाजै ॥ धा०

ॐ ह्रीं विजयाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

सत्यप्रभु बच सत्य वखानैं । सत्य प्रभाजुत भौतम भानैं ॥धा०

ॐ ह्री सत्यप्रभाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

विष्टर जासु मृगेंद्र लसै है । देव मृगेन्द्र कुकर्म नशै है ॥ धा०

ॐ ह्रीं मृगेन्द्राय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

चिंतित लाभ सुदेत जिंनिंदा । देव सुचिंतमनी सुखकंदा ॥ धा०

ॐ ह्री चिंतामणिनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

शोक समूह विनाश करै हैं । आनंद थोक अशोक भरै हैं ॥धा०

ॐ ह्री अशोकाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

कर्म गयंग मृगेन्द्र समानं । सो द्विमृगेंद्र नमौं भगवानं ॥ धा०

ॐ ह्रीं त्रिगुप्ताय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

नष्ट कियौ अरि अष्ट प्रकारा । श्री उपशान्तिक पर्म उदारा ॥ध्या०

ॐ ह्रीं उपशान्तिकाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

चंद्रसमान सु आनन सो है । पद्मसुचंद्र जगज्जन मो है ॥ध्या०

ॐ ह्रीं पद्मचंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

भव्यक मोदनि इंदु समानं । बोधक इंदु नमौं धरि ध्यानं ॥ध्या०

ॐ ह्रीं बोधेन्दवे अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

छंद चौपाई—

चिंता उनपन्नकों है पाला । चिंता हिम श्री जिनगुनमाला ।

ध्यानु जिनैं गिरि उत्तर आई । चिंतिकेन्द्र जजों शिरनाई ॥११॥

ॐ ह्रीं चिंतिकाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

साहस उर उत्साह धरे हैं । उत्साहक जिन सुक्ख करे हैं ॥ ध्यानु जिनैं०

ॐ ह्रीं उत्साहकाय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

शिव सुख सहित अपासिक देवा। चतुनिकाय करें सुरसेवा॥धा०

ॐ ह्री अपासकाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

करम ज्वाल कँहँ मेघसमाना। जै जलदेव जगत मनमाना॥धा०

ॐ ह्री जलदेवाय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

अरिको घातन जाकौं लागै। नारिकदेव भजें भय भागै ॥धा०

ॐ ह्री नारिकाय अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

शांति सुधारस मेघ जिनिंदा। जै अनिंद्य जिन आनंदकंदा। धा०

ॐ ह्री अनिंद्याय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

नाग इंद आदिक सुर सेवैं। नाग इंद जिन मेटि कुटेवें ॥धा०

ॐ ह्री नागेंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

नीलोत्पल सम श्याम विराजै। नीलोत्पल जिन समता साजैं॥धा०

ॐ ह्री नीलोत्पलाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

मेरु समान अकंप सरुपं। अप्रकंप करुणा रस कूपं ॥धा०

ॐ ह्रीं भगवान अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

हित कारज में पुरुन स्वामी। नमों पुरोहित जिन शिवगामी॥धा०

ॐ ह्रीं पुरोहिताय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

पापताप भव भेदन हारे। भिदकनाय नमों अनिकारे ॥धा०

ॐ ह्रीं भिदकाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

सदा भगतके पास विराजें। पार्श्वनाथ भजतें भय भाजें॥धा०

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

वच प्रवृत्त तज निर्वच स्वामी। दिव्य ध्वनि उपदेशक नामी॥धा०

ॐ ह्रीं निर्वाच्याय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

शेष दोष तजि मग प्रकाशे। नाथ विशेष मोक्ष सुखराशे॥

धातु विजै गिरि उत्तर जाई। भाजिय देव जजों शिरनाई॥२४॥

ॐ ह्रीं विजयिनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

दोहा—आठ दरबके अरघसों पजों त्रय्य जिनेश।

विजयैरावत भावि तत्र नाशत सकल कलेश ॥

ॐ ह्रीं विजयैरावतभावीचतुर्विंशति जिनेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामि ।

अथ जयमालं ।

घत्ता—परपरनति चूरन समता पूरन जै जिनराज अनंतगुनी ।
नित सुर जश जंपत अंत कुकंपत सेवत संपत होत धनी॥१॥

चौपाई छंद ।

बीर जिनेश नमैं धरि धीरं । विजै देत नित विजै गहीरं ॥
सत्य पद्म जिन सत्य प्रभावी । सदा मृगेन्द्र सुरेन्द्र जजावी ॥२॥
चिन्तामनि चितचिंतित पूरैं । सदा अशोक शोक चक चूरैं ॥
मृगपति सदा नमैं दुमृगेंद्रं । उपवाशिक जै जैति जिनेंदं ॥३॥
पद्मचद मुनि कैरव चदा । बोधकेतु भवि कमल दिनदा ॥
चिंताहिम मम आरति नाशैं । उत्साहक उत्साह प्रकाशैं ॥४॥
हे अपाशि जिन हरि भवपाशी । सदा देवजल जिन अविनाशी॥
नारक गति नारक जिन भंजै । जगत पूज अनिद मनरंजै ॥५॥

नाग इन्द्र नागिनिनि ध्यावैं। नीलोत्पल जिन दुति दरसावैं॥
भवकूप पड़े दैत्य अकम्पा। शिव लिय लिये पुंगीन जंपा॥६॥
मेरुक कर्म भलो जिन सिद्धक। पार्श्वनाथ जिन मन आनन्दक॥
निर्वाणा गुनगन अगोचर। श्रीगिरिराज शिर पाँय करोतर॥७॥
त नवनीत भविजन स्वामी। त्रिजगमहं गवावन नामी॥
गनधर अमरनि पार पर ध्यावैं। गुनसागरको पार न पावैं॥८॥
तिनमों अरज करौं कर जोरी। हरो प्रभु भवबाधा मोरी॥
आठ कर्म मोहि घेरि रहे हैं। इन वश दुःख अनंत सहे हैं॥९॥
सो तुम दूरि करो जिन स्वामी। वारंवार पदपदम नमामी॥
मनो आनन्द हिंग ना वारो। भूधरजनको भवदधि तारो॥१०॥
घत्ता-जै जै जिनभानं, भुवनमहानं, भविकमलानं, मोदकरं।
जिनमग परकाशक, जै जगनाशक, केवलबोध अगाधधरं॥[illegible]
[illegible]
भविजन जिनेश पावन थान। श्रीगिरिके सुजजे धरि ध्यान।

मिले मनवंछित आनंद ताहि । अनुक्रम सों शिवधाम लहाहि ॥

इत्याशीर्वाद:

इति श्रीविजैमेरुऐरावतभावीचौवीशीपूजा समाप्ता ।

——*०*——

अथ श्रीधातुकीदीप अचलमेरु संबंधी पूजा ।

(प्रथम चारि विदेहनिके चारि विरहमान पूजा प्रारभ्ते)

द्रुतविलंबित तथा सुन्दरी छंद ।

द्रुतिय दीप सुधातुकि सोहनों, अचलमेरु तहा मनमोहनों ।
तसु विदेहनिमें जिन चार हैं, तिनहिं थापत आपत टार हैं ॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुविदेहसंस्थितविहरमानजिन सूरप्रभ-विशालकीर्ति वज्रधर चंद्रानन अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं अचलमेरुविदेहसंस्थितविहरमानजिन सूरप्रभ-विशालकीर्ति वज्र धर चंद्रानन अत्र तिष्ठ ठ.ठः स्थापन ।

ॐ ह्रीं [illegible] जिन [illegible] स्वाहा ।

अथाष्टक चाल टप्पा की ।

प्रभु पूजों हो चरना । त्रितिय मेरु सुविदेह में॥प्रभू०॥ ॥टेक॥

उज्जल जल भरि कनक भृंगमें धारा मनसुख करना ।

जनम मरन मल धोय दुरित भव, सागर पार उतरना ।

प्रभू पूजों हो चरना । तृतिय मेरु सुविदेह में ॥ प्रभू पूजोहो०॥

ॐ ह्रीं [illegible] जिन [illegible] निर्वपामि स्वाहा ।

केसर चंदन केवली नंदन कुंकुम घसिकर धरना ।

जजत जिनेसुर चरन कमल जुग भवाताप परिहरना ॥प्रभू॥

ॐ ह्रीं [illegible] जिन [illegible] निर्वपामि ।

तंदुल अमल निशाकर से शुभ सुवरन थारी भरना ।
पुंज धरत जिनराज चरन ढिग तुरंत अखै सुख वरना॥प्रभू॥
ॐ ह्रीं अचलमेरुविदेहसंस्थितविहरमान जिन सूरप्रभ-विशालकीर्ति वज्रधर चद्राननाय तदुलं निर्वपामि ।
कमल केतुकी वेलि चमेली सुमन सुमन सम वरना ।
समरशूल निरमूल करनकों जजों जगत गुरु चरना ॥प्रभु०॥
ॐ ह्रीं अचलमेरुविदेहसंस्थितविहरमान जिन सूरप्रभ-विशाल कीर्ति वज्रधर चद्राननाय पुष्पं निर्वपामि ।
नव्य गव्य पकवान विविध मनमोदन मोदक करना ।
अंजुलि मंजुलि जोर जजन पद क्षुधारोग निरवरना ॥प्रभु०॥
ॐ ह्रीं अचलमेरुविदेहसंस्थितविहरमान जिन सूरप्रभ-विशालकीर्ति वज्रधर चद्राननाय चरुं निर्वपामि ।
दीपक जोत उद्योत होत तम खोत धूम विनु धरना ।

तासों जजत जगतिरवि तुमपद तिमिर मोह संहरना ॥प्रभु॥

ॐ ह्रीं अत्मैकविंशतिसंख्याविद्यमानजिन स्वयम्प्रभ-जिनार्कीर्ति रत्न-धर नवरत्नाय दीपं निर्वपामि ।

धूप दशांग सुगंधित लेकर खेवत सनमुख करना ।
आठकाठ अरि कूर जरैं सो धूप धूम विस्तरना ॥प्रभु०॥

ॐ ह्रीं अत्मैकविंशतिसंख्याविद्यमान जिन स्वयम्प्रभ-जिनार्कीर्ति रत्न-धर नवरत्नाय धूपं निर्वपामि ।

आम्र कामरक अनार सार फल भार मिष्ट शुचि वरना ।
तासों जजत विघन परि हरिकर तुरित मुकतफल भरना ॥प्रभु०

ॐ ह्रीं अत्मैकविंशतिसंख्याविद्यमान जिन स्वयम्प्रभ-जिनार्कीर्ति रत्न-धर नवरत्नाय फलं निर्वपामि ।

जलफल सकल मिलाय मनोहर अरघ काम गुन वरना ।
पूजत चरन जुगल जिनवरके पूजत वंछित करना ॥

प्रभु पूजों हो चरना, तृतीय मरुसों विदेहे में। प्रभू पूजोंहो०॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुविदेहसंस्थितविहरमान जिन सूरप्रभ-विशालकीर्ति वज्रधर चंद्राननमाय अर्घं निर्वपामि।

अथ प्रत्येकार्घ।

चाल नंदीश्वराष्टक की

सूरप्रभ सूरज चिन्ह शिवमग दरशावें।
भद्रातें जनम जु लिन्ह विजयपुरी गावें॥
नृप नागराज महाराज सीतोत्तर जानो।
तृतियाचल अचल समान पूजत सुखमानो॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपपश्चिममेरुपद्खंडमंडलमंडितविदेहक्षेत्रस्थ चक्रवर्त्यादि सेवित समवशरणादिविभूतिसंयुक्त श्रीसूरप्रभाय अर्घं।

सीता दिग दक्खिन मान अचलाचल सोहै।
सुविशाल कीर्त भगवान चंद चिहन मोहै।

नर पुंडरीक पुर जान राय विजयापति हैं ।
विजया जननी गुणखान पूजत जा पति हैं ॥

ॐ ह्रीं [illegible] ॥२॥

जिन वज्र धरेश महेश शंख निहन गजे ।
सीतोदा दक्षिन देश अचलाचल छाजे ॥
नगरीय सुसीमा मातु सरस्वति मनमा हैं ।
पद्मरथ नृप मम आतु पूजन सुख हो है ॥

ॐ ह्रीं [illegible] नमः [illegible] ॥३॥

चंद्रानन आनन चंद्र वृषभ ध्वजा धारी ।
पद्मावति मात अमंद अचलाचल भारी ॥

सीतोदा उत्तर धाम पुंडरीक नीमें ।
वल्मीक पिता अभिराम पदमावति जी में ।

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपअचलमेरुसीतोदाउत्तरभागे पट्खडमंडलमडितचक्रवर्त्यादि-सेव्यमानसमवशरणादिशोभाविराजमानविहरमानश्रीचंद्राननाय अर्घं॥४॥

चहुसंग सहित वृपभाप, करत विहार सही ।
गनधर सेवत अभिलाप, पावत मोप मही ॥
पद पूरन अरघ चढ़ाय सेवंत हौं स्वामी ।
मोहि आतमज्ञान वढ़ाय कीजे शिवगामी ॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपअचलमेरुविदेहसस्थितविहरमानजिन सूरप्रभ विशाल कीर्ति वज्रधर चद्राननाय पूर्णार्घं ॥

अथ जैमालं ॥

घत्ता-जै चारि जिनंदा आनंदकंदा विहरमान दुखदंद हरा
समवश्रृत स्वामी त्रिभुवन नामी विश्रामी सुविदेह वरा ।

मोतीदाम छंद—

नमों जिन भूप प्रभु अभिराम। जगज्जन कंजनिको दिनस्वामि।
त्रिकालक सुभोगत जग सरवज्ञ। गनेन्द्र जपैं गुन गावत तज्ञ॥२॥
सदा जग मध्य महेश जिनेश। कुकर्म कुत्मानन्द वध समेश।
नमों जिननंद सु आनंद कंद। सुभव्यकमोद प्रमोदन चंद॥३॥
समवश्रुत मंडित राजत एव। विभूत अनूप लसै स्वयमेव॥
सुरेश सदा पद सेवत आन। गनेश करैं जस तस्त बखान॥४॥
नरेन्द्र अशेष नमों करजोर। अनेक सुभव्य सुनै धुनि भोर।
अनादि मिथ्यात मिटावन हेत। लहै केइ केवल ज्ञान अनंत॥५॥
कोइ नृप श्रावककी गहि शुद्ध। लहै सुरसंपति पूरन बुद्ध॥
केइ सुरसुंदर भक्ति करंत। बजावत गान समाज अनंत॥६॥
नचै केइ भाव बनाय पुनीत। करै पग नूपुर अद्भुत गीत॥
झनांझनझंझनझं झनझोर। करै रनझिं किनि किनिकिनि शोर॥७॥
नवा नवना अवना थिनकार। नचै तन भुजन धुंजन पदझार॥

द्रिम द्रिमि द्रिमिनाद करै मिरदंग। सुरान्बित चग उपंग अभग॥८॥
तनंननतान महानभनंत । इनादि समाज सजत महंत ॥
समौश्रृत माहि वन्यौ सुख साज। बनै नहि भाषत सो सब आज९
हमें यह आश लगी जगदीश। मिलै कव दर्शन हे गुनईश।
वुलाय समीप सुनों तुम वैन। लहौं निज आतम ज्ञान सुचैन १०

घत्ता–जै जै गुन छायक त्रिभुवननायक विघनविनायक बोधमहा
बंदतगननायक नितसुखदायक अव सव लायक शरणागहा

ॐ ह्रीं अचजमेरुविदेहसस्थितविहरमानजिनेंद्रेभ्यो महार्घंनिर्वपामी ।

कवित—

सूरप्रभ सु विशालकीर्त जिन वज्र धरेश अगम गुनधाम ।
चंद्रानन ये चार तीर्थपति अचल विदेहनि में विसराम ॥
कबहुक करहिं विहार कवहुं थित समवशरन शोभित अभिराम
तिनहिं जजत मनवंछित सुखलहि मुकत होहि तिहि करो प्रनाम

शालि अखंडित उज्जली हो, शशिसम द्युति दमकाय ।
पुंज धरत तुम चरन ढिग हो, देहु अखैपद गाय ॥ सदा ॥
ॐ ह्रीं नाम्नेकभरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो अक्षतं निर्वपामि॥३॥
बेल चमेली केतकी हो, सुमन सुमन समलाय ।
तातें तुम पद पूजते हो, समर शूल नशिजाय ॥ सदा० ॥
ॐ ह्रीं नाम्नेकभरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो पुष्पं निर्वपामि ॥४॥
खाजे ताजे साजके हो, मोदन मोदक लाय ।
तासों तुम पद पूजते हो, क्षुधारोग नशि जाय ॥ सदा० ॥
ॐ ह्रीं नाम्नेकभरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि॥५॥
दीपगजोति सुहावनी हो जगमगात सुखदाय ।
तासों आरती करत हों हो, तिमिर मोह निशि जाय ॥सदा०॥
ॐ ह्रीं नाम्नेकभरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो दीपं निर्वपामि॥६॥

कृष्णागर आदिक दशों हों, गंध सुगंधित लाय।
धूप उखेवों चरन ढिग हो, अष्ट करम जरि जाय ॥ सदा० ॥

ॐ ह्वी अचलमेरुभरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेंद्रेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

मधुर रसीले पावने हो, श्रीफल सुंदर लाय।
तासों तुम पूजा करत हो मुकत महाफल पाय ॥ सदा० ॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतवर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥

जल चंदन को आदि दे हों आठों दरव मिलाय।
सो ले तुम आगे धरों हों संकट कोट नशाय ॥
सदा श्रीजिनवरका, पूजा करों सुखदाय।
अचलमेरु दच्छिन दिशा हो भरतक्षेत्र दरशाय।
वरतमान चौबीस जिनको पूजत सुरपत पाय ॥सदा श्रीजिन०

ॐ ह्वी अचलमेरुभरतवर्तमानचतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं निर्वपामि ॥

अथ प्रत्येकार्घ ।

चौपाई ३२—

जगदानंद कंद सुख वृंदा । विश्वचंद जिन आनन चंदा ॥
अचल मेरु भारत सुखदाई । वर्तमान पूजों जश गाई ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं विश्वचन्द्राय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

सकल धरम मारग परगासे । कपिल देव शमता सुख रासे ।
अचल मेरु भारत सुखदाई । वर्तमान पूजों यश गाई ॥ २॥

ॐ ह्रीं कपिलाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

वृषदायक वृषभेन्दु स्वामी । सुभग शील संजुत शिवगामी । अ०

ॐ ह्रीं वृषभाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

आतम ज्योति माहिं मन ल्याया प्रियदर्शन जिन शिवनकल्याणा अ०

ॐ ह्रीं प्रियतेजाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

विषय अंग अनंग मद गंजन । ध्यावो भविक मोद मन रंजन अ०

ॐ ह्रीं विमलनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

चारित रुचिर पात्र अभिरामी । चारित नाथ जिनेस नमामी ।अ०

ॐ ह्रीं चारित्राय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

शमदमप्रशमसहित नितराजे । प्रशमस्वामि जमजीति विराजे ।अ०

ॐ ह्रीं प्रशमस्वामिने अर्घं निर्वपामि ॥७॥

प्रभादित्य पद तिहुं जग वंदें । आदत प्रभा जीति आनंदें ।अ०

ॐ ह्रीं प्रभादित्याय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

छंद पाइता मात्रा १४ ।

जिन मुजकेश पद ध्यावो । मन वांछित आनंद पावो ।
तृतियाचल भारत माहीं । पद पूजों वरततु आहीं ॥९॥

ॐ ह्रीं मुंजकेशाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

तपसों तन दीपत जाको । जिन पीतवास कहि ताको ॥तृ०॥

ॐ ह्रीं पीतवासाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

नर इंद्र नृपगुर इंदं । नमते तु सुमतिम जिनं ॥ नुतीरा० ॥

ॐ ह्रीं सुमतिनाथ [illegible] निर्वापा ॥ [illegible] ॥

दुरगा मुद्रा करि भीनीं । जिन पद्मनाथ अपनीनीं ॥नु०॥

ॐ ह्रीं पद्मनाथ [illegible] निर्वापि ॥ [illegible] ॥

सु नरकुम्भगजिम नम काया । सु नरकुम्भगजिम जिनराया ॥नु०॥

ॐ ह्रीं [illegible] निर्वापि ॥ [illegible] ॥

चतुर्थम गयंद मुनिंद । जिन चिंद्रनाथ सु जिनिंद ॥नु०॥

ॐ ह्रीं [illegible] निर्वापि ॥ [illegible] ॥

हर पेखत हर मोहै । जिन [illegible] मन मोहै ॥नुतीरा०॥

ॐ ह्रीं [illegible] निर्वापि ॥ [illegible] ॥

जिन नाह जगी मुनिराजा । जिनके अधीन मन काजा ॥नु०॥

ॐ ह्रीं [illegible] निर्वापि ॥ [illegible] ॥

नमरथुत नरनीं पामि । श्रीपाल मनोहरि नामि ॥ नुतीरा०॥

ॐ ह्रीं श्रीमालाय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

तिहुँ जोग हनेसु अजोगी । निज जोगे सुधारस भोगी ॥तृ॥

ॐ ह्रीं अयोगाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

सु अजोगनाथ पद सेवो । सब जोग समग्री लेवो ॥तृतीया०॥

ॐ ह्रीं अजोगनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

करिकों हरि जेम विदारें । तिमि काम रिपु मद मारें ॥तृ०॥

ॐ ह्रीं कामरिपवे अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

सब दंभारंभ हरे हैं । शिव हेतारंभ करै हैं ॥तृतीयाचल०॥

ॐ ह्रीं आरभाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

जिन धर्मचक्र रथ नेमं । जिन नेम करैं सब खेमं ॥तृतीया०॥

ॐ ह्रीं नेमिनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

तिहुं ज्ञान गर्भतें धारी । जिन गर्भ ज्ञान अविकारी ॥तृतीया० ॥

ॐ ह्रीं गर्भनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

जयजय यादवकुल जनम [illegible] । जयजय सम्पति रहत मोहि १
जयजय गुन आगन बरनयांन । जयजय अनुभव विकलनिरोग ।
जयजय नागर जन शोभदान । जय जय गुन सगति मिलो मदान १०
जयजय [illegible] संत शोभ । [illegible] गुन मदनजोग ।
[illegible] श्री मो पै दयाल । करि [illegible] करो मगन रसाल ॥ १२ ॥

[illegible] जै हरनागन मोहनमनहरन सकल भव्यजन मोदकरा ।
नदन ' वृंदावन ' प्रीत रों मन हो जिन संपति मदन भरा ॥
[illegible] ।
[illegible] — जौ पजै मनल्याय, अनन्द मगन [illegible] ।
सो मन [illegible] अजगामक पद हौं लहै ॥

[illegible] ।

[illegible] ।

———

अथाचलमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिपूजा प्रारभ्यते ।

तोटकछन्द-

तृतीयाचल भारतभूत जिनं । चौवीश महासुख सिंधु गिनं ।
तिहु थापतु हों इत जोरिकरं । प्रभु आय विराजहु पापहरं ॥

ॐ ह्रीं अचलभरतातीतजिन-अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वाननं स्वाहाः ।
ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतातीतजिन-अत्र मम संनिहितो भवभव वषट् स्वाहाः ।

चाल प्रभू पूजोंरे भाई ।

तुम पद पूजों शिरनाई । जासों पातक जात पलाई ।
अचलमेरु दक्षिण दिशा हो भरततीत जिनराई ॥तुम०॥टेक॥
हिमवन गिरिगत गंगाजल वर, सुवरन भृंग भराई ।
तासों पूजत चरन कमल जुग, तृषा रोग मिटि जाई। तुमपद० ॥

ॐ ह्रीं [illegible] निर्वपामि ॥१॥

कदलीनंदन चंदन बावन कुंकुम संग घसाई ।
विघन ताप निवारन कारन पूजौं पद सुखदाई ॥ सुमत०॥

ॐ ह्रीं [illegible] निर्वपामि ॥२॥

तंदुल शालिविशाल चोखि जुग गमक दमक दरशाई ।
पुंज धरत तुम चरन कमल ढिग लहत अखिल पद भाई ॥ सुम० ॥

ॐ ह्रीं [illegible] निर्वपामि ॥३॥

मदन सुमन तन सुमन थार भर सुमन नयन सुखदाई ।
नाथ सुमनद पदम जजौं जिमि मदनवान नशि जाई ॥ सुम० ।

ॐ ह्रीं [illegible] निर्वपामि ॥४॥

नव्य गव्य मनमोहन मोदक [illegible] ताजे ल्याई ।
सो तुम निकट धरौं जिननायक देह [illegible] ॥ सुम० ॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्य निर्वपामि ॥५॥

घृत पूरित अथवा कपूरमनि दीपक जोति लगाई ।
आरति करत हरत सब आरत आतम जोति जगाई ॥ तुमपद० ॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

अगर तगर कृष्णागर चंदन देवदारु सब लाई ।
धूप उखेवतु हों तुम आगे ज्यौं वसुकरम जराई ॥ तुमपद० ॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्य धूपं निर्वपामि ॥७॥

आम्रकाम्रक अनार सार फल प्राशुक पक्क धराई ।
पूजौं तुम पदप्रीत लाइकैं ज्यों वांछित पदथाई ॥ तुमपद०॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो फल निर्वपामि ॥८॥

जल फल सकल मिलाय मनोहर अरघ कियौ उमगाई ।
नाचिराचि शिरनाई समरचौं ज्यौं अनर्घ पदपाई ।

तुम पद पूजौं गिनगाई जामौं पातक जात पलाई ।
अनन्तमरुत दक्षिण दिशा सो, भगवतीत जिनगई । तुमपदपूजौं०
ॐ ह्रीं [illegible] अर्घं निर्वपामि ।

अथ प्रत्येकार्घं ।

[illegible]—

गुणेग पै ग्राम जानन वसु सवे ।
तुनिधानत्त भागन धार तीन जजामि अबे ॥१॥
ॐ ह्रीं [illegible] अर्घं निर्वपामि ।
गिर मिन मरुत्त जगमीत त्रिभवनकौं प्यारे ।
तुनिशानन्त भगन अनीत पूजन भवतारे ॥२॥
ॐ ह्रीं [illegible] अर्घं निर्वपामि ।
जिन शांतिनाथ जिनवर शांति करो सबही ।

तृतियाचल भरत जिनाय तीत जजौं अवही ॥३॥

ॐ ह्रीं शान्तिनाथाय अर्घं निर्वपामि ।

जिन सुमति सुमति दरशाय सुमतिनकों प्यारे ॥

तृतियाचल भारत ध्याय तीत जजों सारे ॥४॥

ॐ ह्रीं सुमतिनाथाय अर्घं निर्वपामि ।

मनमथ मद मंथनहार आदि जिनेश कहा ।

तृतियाचल भरत उदार भूत जजामि महा ॥५॥

ॐ ह्रीं आदिजिनाय अर्घं विर्नपामि ।

अतिव्यक्त जगोत्तम रीत तीरथ व्यक्त करें ।

तृतियाचल भारततीत पूजत पाप टरें ॥६॥

ॐ ह्रीं अतिव्यक्ताय अर्घं निर्वपामि ।

जिन कलासेन भगवान सकल कलाधारी ।

गिर आनन्द भगत गनवान पूजत नमनागि ॥७॥

ॐ ह्रीं कुन्थुनाथ अर्घं निर्वपामि ।

जिन कर्म पथ मग देव अनमद नृगि दर्यो ।

मुनिनाथनन्द भगत जु भेव नीन पुनीत भयो ॥८॥

ॐ ह्रीं नमिनाथ अर्घं निर्वपामि ।

मुनिनायक शुद्ध प्रकृत जिन क गिरि करें ।

मुनिनानन्द भगत मयुक नीन जजामि वरें ॥९॥

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथ अर्घं निर्वपामि ।

भव भाव प्रकृत निर्गुन देव प्रतून किया ।

मुनिनानन्द भगत अतुल नीन प्रणमि दिया ॥१०॥

ॐ ह्रीं महावीर अर्घं निर्वपामि ।

निगम्य पै जिन चंद मोक्षमग भजें ।

तृतियाचल भारत पर्म तीत जिनेश जजैं ॥११॥

ॐ ह्रीं सौधर्माय अर्घं निर्वपामि ।

तमभानन आनन सार देव तमोदीपं ।

तृतियाचल भरत अधार तीत जजामीपं ॥१२॥

ॐ ह्रीं तमोदीप्ताय अर्घं निर्वपामि ।

जिन वज्र भजैं वज्रेश वज्र शरीर धरें ।

तृतियाचल भरत महेश तीत जजामि वरें ॥१३॥

ॐ ह्रीं वज्राय अर्घं निर्वपामि ।

सुप्रवृद्धनाथ जिन स्वामि सेवत शुद्धमती ।

तृतियाचल भरत जजामि तीत अभीत जती ॥१४॥

ॐ ह्रीं प्रबुद्धनाथाय अर्घं निर्वपामि ।

निरबंध प्रबंध जिनंद कीर्त प्रबंध कहा ।

तुनियानन्द भगन सुछंद नाति जजाणि महा ॥२५॥

ॐ ह्रीं [illegible] धर्मो निर्वपामि ।

केवल तुषिभाव अनीत गति पंकज पोंगें ।

तुनियानन्द भगन अनीत पूजत दुल मोगें ॥२६॥

ॐ ह्रीं [illegible] धर्मो निर्वपामि ।

जिन सुगुण भविक आनंद धारक गुनगावों ।

तुनियानन्द भगन सुछंद नीत जजों पावों ॥२७॥

ॐ ह्रीं [illegible] धर्मो निर्वपामि ।

[illegible] देव पुनीत उपमा नीत नहीं ।

तुनियानन्द भगन अनीत पजन ज्ञान मही ॥२८॥

ॐ ह्रीं [illegible] धर्मो निर्वपामि ।

[illegible] पर्याय विनाश हीन अकोप जिनं ।

तृतियाचल भरत जजास तीत निचीत गिनं ॥१९॥

ॐ ह्रीं अकोपाय अर्घं निर्वपामि ।

जिन निष्ठित देव उदार पूजत इष्ट मिलैं ।

गज भरत तृतिय गिरि सार संकट कोट टलै ॥२०॥

ॐ ह्रीं निष्ठिताय अर्घं निर्वपामि ।

मृगनाभि शरीर सुगंध पावन सुखकारी ।

तृतियाचल भरत अवंध तीत जजों भारी ॥२१॥

ॐ ह्रीं मृगनाभये अर्घं निर्वपामि ।

देवेंद्र जिनेंद्र मुनेंद्र इंद्र भजैं सारे ।

तृतियाचल भरत महेन्द्र तीत जजों प्यारे ॥२२॥

ॐ ह्रीं देवेंद्राय अर्घं निर्वपामि ।

मुनिवृंद पदस्थित देव सेवत गुनगाई ।

तृतियाचल भारत एव तीत जजों भाई ॥२३॥

ॐ ह्रीं गिरनार नमः निर्वपामि।

गिरनार नमों धरि प्रीत श्रावक सुखकारी।

मुनिगणवृन्द अनादिनन पूजत शुभ लही ॥२४॥

ॐ ह्रीं गिरनार नमः निर्वपामि।

दोहा—परम अगम गिरनार के नमों चरन धरि प्रीत।

अनन्त भवन गन ज्ञानगति हरन विघन जगरीत ॥

ॐ ह्रीं गिरनारक्षेत्रसिद्धक्षेत्राय पूर्णार्घं निर्वपामि।

अथ जयमाल।

दोहा—श्री जिन गुणसागर सुजस उजागर निर्मलनागर सेवकरै।

जै जग उद्धारक भवदुखनाशक भविक "वृंद" सुख पावनरै ॥

पद्धड़ी छंद—

[illegible] । गिरनार [illegible] ।

[illegible] ॥२५॥

जिन आदि अनादि विवाद हरैं। अतिव्यक्त चिदातमव्यक्त करैं।
प्रणमामि कलाधर सेन जिनं। जित कर्म जिनं अमलीन गिनं॥३॥
भवि बोधक देव प्रबुद्ध सही। परिवृत्त करै भवि मुक्तमही।
सव धर्म निजातम धर्म धरैं। तम दीपित कर्म कलंक हरे॥४॥
प्रभुवज्र सवै दुख चूर करैं। सुप्रबुद्ध महारिपु क्रुद्ध हरैं।
निरवध प्रबध प्रनाम करो। सुअतीत जपों भवसिंधु तरों॥५॥
सुमुखेश महेश दयाधर हैं। सुपलोपम मोह विथाहर है।
विनुकोप अकोप सु शत्रुहरैं। जिन निष्ठित इष्टित पुष्टकरैं॥६॥
मृगनाभ अनंत गुनाकर हैं। नित देव सुइंद सुधाधर हैं।
अति उच्च पदस्थ पदस्थ करैं। शिवनाथ प्रमोद प्रसस्त भरैं॥७॥
चउवीश येई जगदीश महा। तृतियाचल भारततीत कहा॥
गुनसार अनत धरें नित हैं। द्रगज्ञान सुवीरज सजुत हैं॥ ॥८॥
सुख सूक्षम ना लघुना गुरुता। अवगाह अवाध सदा पुरता॥
निररूप सरूप चिदातम हैं। भवव्याधि व्यतीत शुचातम हैं॥९॥

उर भासत जोति प्रकाशनु हैं । भ्रमभोह मृषामद नाशनु हैं ॥
निरदोष अलोभ अक्रोध भये । अमलीन अछीन अदीन भये ॥
अनर्थ अमन अराग अफन्द । अमद अगद अदम्भ अतन्द ।
इन आदि अनंत धरे गुन हैं । जिन नित्य निका महामुन हैं ॥११॥
सुमतीं करतार नमों तिनकों । भवसागर सों निरवाण भयों ।
निज आतम जोति उदोत करो । सुखदायक निज समूह हरो ॥१२॥
—जै जै जिनस्वामी शिवपुरगामी मुक्त नशनामी देवमहा ।
"वृंदावन" पावन शीश नवावन वांछित अर्थ प्रसन्न ...
[illegible]
—जो जन अनन्त अजीत भगवान जजैं सुभागी ।
[illegible] नाम विधि सहित सु तो नर है बड़भागी ।
[illegible] धन धान्य सकल मनवांछित पाई ।
[illegible] होई पुनि चक्रपति ह्वै शिव जाई ॥

इत्याशीर्वादः ।

इतिश्री अचलभरतातीतचतुर्विंशतिजिनपूजा समाप्ता ।

अथाचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशति जिन पूजा ।

अडिल छन्द ।

दुतिय दीप सुविशाल धातुकी सोहनों ।
पश्चिम अचल सुमेरु भरतमन मोहनों ।
होनहार चोवीश जिनेसुर सारजी ।
थापो पूजन हेत प्रभू सुपधारजी ॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिन अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वानन ।
ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीजिन अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् स्वाहा ।

त्रिभंगी अपनाशक छन्द ।

हिमवनगत गंगा जलभरि भृंगा सुचि सरवंगा सुखकारी ।

नृप पद्मर स्वामी भाग हगमी तृणा नगाणि अतिभारि ॥
गिरि अन्तकिनै आति छविछाजे भवन्नमाजै सुरमाजै ।
तिन भाविवदेने चवाविज पर्व कुलपद् मेवं तुन भाजै ॥
ॐ ह्रीं [illegible] जलं निर्वपामि ॥१॥
जगि वानननदन करली नंदन ह्रासनिकद् गीनवं ।
करि कुणपदनंदन हे जिननदन ह्रोि भवफंदन मवकं ।गि०जि०।
ॐ ह्रीं [illegible] चंदनं निर्वपामि ॥२॥
नंदुल सुनि मडित ज्ञाणि छविमडित पुनउमडित मनहारि ।
सुखदि निकडित गुनगनमडितगतिश्रनिअडित हिनधारि ।गि०।
ॐ ह्रीं [illegible] अक्षतं निर्वपामि ॥३॥
मकरन्द नजानन तुम पमु पावन जील न्टुअन जानितसे ।
[illegible] दिगपन माथन [illegible] आनि [illegible] ॥ गि०।

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥४॥

पटरम करिशजित क्षुधाविभंजेन चरु दुखगंजित मृदुसो हे ।
तुमपद पूजत जगजशकूजत शिववर हूजत मन मोहे । गि०ति०

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्य निर्वपामी ॥५॥

दीपगतमखंडन दुतिदिगमंडन सत्वब्रह्मगंडन मोदकरा ।
सो तुम ढिगवारों श्रुति विस्तारों भ्रमतमटारों बोधकरा ॥ गि०ति०

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीप निर्वपामि ॥६॥

दशगंध बनाई तुम ढिगलाई हे जिनराई जशगाई ।
खेवों उमगाई हरष बढ़ाई करम जराई शिवपाई ॥ गि०ति०

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

फल पक्वसुहावन मनललचावन विघननशावन लै आयौ ।
तुम पदतर धारत दारिदहारित सुखविसतारत उमगायौ ॥गि०ति०॥

ॐ ह्रीं अनन्तकेवलज्ञानप्राप्तायांचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥

जलफल सब साजे बाजत बाजे विविध समाजे सुरराजे ।
नृप सेवन काजै है महाराजे भगत काजे शिवराजे ॥
गिरि अचल विराजे अति छवि छाजे भारत साजे गुणसाजे ।
जिन भाविनके चरचित पदं कुन्दन सेवं दुःखभाजे ॥

ॐ ह्रीं अनन्तनाथजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामि ॥९॥

अथ प्रत्येकार्घ ।

सोरठा—अनन्त जिनराय, करकरि कम है सकल ।
इन्द्रन शिवपद पाय, अनन्त भावनायी जजौं ॥१॥

ॐ ह्रीं अनन्तजिनाय अर्घ्यं निर्वपामि ।

सकलसन्त जिनदेव, भविक चक्र ताक मन ।
ज्ञानक करि सेव, अनन्त नाम भार्ता जजौं ॥२॥

ॐ ह्रीं चक्रहस्ताय अर्घं निर्वपामि ।

वहुनृप सेवत पाय, द्वेष रहित कृतनाथ जिन ।
मोपर होहु सहाय, अचल भरत भावी जजों ॥३॥

ॐ ह्रीं कृतनाथाय अर्घं निर्वपामि ।

परमेसुर जिनचंद चंदवदन छवि देत नित ।
हरत सकल दुखदद अचल भरत भावी जजों ॥४॥

ॐ ह्रीं परमेश्वराय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

मनहर मूरत जास, देवसु मूरत जगत हित ।
जस कीरतकी राश अचल भरत भावी जजों ॥५॥

ॐ ह्रीं सुमूर्तये अर्घं निर्वपामि ॥५॥

मुक्तकांत जिन स्याम, मुकत रमनिवर मुकत कर ।
नमों कांति सुखधाम, अचल भरत भावी जजों ॥६॥

ॐ ह्रीं मुक्तिकान्ताय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

केशसमूह उपार, व्रतधारं निःकेश जिन ।
सो मो पतित उधार, अचल भरत भावी जजों ॥७॥

ॐ ह्रीं निःकेशाय अर्घं निर्वपामि ।

देव प्रशस्तिक सार, देत प्रशस्त महान सुख ।
मम दुखदंद निवार, अचल भरत भावी जजों ॥८॥

ॐ ह्रीं प्रशस्तिकाय अर्घं निर्वपामि ।

निराहार जिनसार कमलाहार वितीत नित ।
सो मम विघन निवार, अचल भरत भावी जजों ॥९॥

ॐ ह्रीं निराहाराय अर्घं निर्वपामि ।

भजों अमूरत देव विमल शांति चिद्रूपघन ।
करत शचीपति सेव, अचल भरत भावी जजों ॥१०॥

ॐ ह्रीं अमूतर्या अर्घं निर्वपामि ।

चार वरग नित जाहि सेवित सो द्विजराज जिन ।
नमों जोरकर ताहि अचल भरत भावी जजों ॥१०॥

ॐ ह्रीं द्विजनाथाय अर्घं निर्वपामि ।

श्रेयनाथ भगवान, श्रेयकैंर पातक हरैं ।
देत सकल सुखखान अचल भरत भावी जजों ॥१२॥

ॐ ह्रीं श्रेयनाथाय अर्घं निर्वपामि ।

छंदनाराच ।

रुजादि दोष नाशिकैं निजात्म शुद्ध भाशियो ।
प्रबोधि भव्य वृंदकों अरुज्जकर्म नाशियौ ॥
नमामि पाद पंकजं सुइंद्र जासकों भजें ।
तृतीय मेरु भारते भविष्यतं जिनं जजैं ॥१३॥

ॐ ह्रीं अरुजाय अर्घं निर्वपामि ।

समस्त देव सेवही सदैव देवनाथकों ।

भवाब्धि डूबते गहो जिनेश वेगि हाथकों । नं०तृ० ॥१४॥

ॐ ह्रीं देवनाथाय अर्घं निर्वपामि ।

समस्त दीनपै दया धरैं दयाधिके जिन ।

निजातम स्वभाव में विराजने सदा तिनं । नं०तृ०१५।

ॐ ह्रीं दयाधिकाय अर्घं निर्वपामि ।

सुपुष्पनाथ नायकं सुपर्म धर्म दायकं ।

सु पुष्पचाप घायकं प्रशस्तशील लायकं । नं०तृ० ॥१६॥

ॐ ह्रीं पुष्पनाथाय अर्घं निर्वपामि ।

नरेश औ सुरेश वृंद जाहि नित्य सेवही ।

नेरनाथ देवमो भवाब्धि नाव खेवही नं०तृ० ॥१७॥

ॐ ह्रीं नरेशाय अर्घं निर्वपामि ।

समस्त जीवपे दया धरैं सदा विराजहीं ।
प्रती सुभूतकों भजें अशेष क्लेश भाजहीं ॥न०तृ०॥१८॥

ॐ ह्रीं प्रतिभूताय अर्घं निर्वपामि ।

दिविंद भाव निंदचंद विंतरेंद ध्यावही ।
सुनाग इंद देव सेवते सुशर्म पावही । न०तृ०॥१९॥

ॐ ह्रीं नागेंद्राय अर्घं निर्वपामि ।

महा तपोदिके धनी तपोधिकं अराधही ।
नमों सदा तिन्हें समस्त पर्म शर्म साधही । न०तृ०॥२०॥

ॐ ह्रीं तपोधिकाय अर्घं निर्वपामि ।

दशोंदिशा विषें सुव्यास कीर्त जास है रह्यौ ।
दशाननाख्य देव सेवते सुबोधको गह्यौ । न०तृ०॥२१॥

ॐ ह्रीं दशाननाय अर्घं निर्वपामि ।

उभे प्रकारको तपादि तासके धनी सही ।
अरण्यनाथकों नमामि देत मुक्तकी मही । न०तृ०॥२२॥

ॐ ह्रीं अरण्यनाथाय अर्घं निर्वपामि ।

अनंगके दशों अनीनकों विनाश कीन हैं ।
दशा सुनीककों नमों सदैव सो प्रवीन हैं । न०तृ०॥२३॥

ॐ ह्रीं दशानीकाय अर्घं निर्वपामि ।

सदा अक्षोभ राजही पुनीत भाव साजही ।
जिनेंद्र शात्विकं भजें दरिद्र दुख भाजही ।
नमामि पादपंकजं सुरेंद्र जासकों भजें ।
तृतीयमेक भारते भविष्यतं जिन जजें ॥२४॥

ॐ ह्रीं शात्विकाय अर्घं निर्वपामि ।

रथोद्धता–अष्टद्रव्य सब ल्याजिकें वरं, नाचिगाच गुनगायहीधरं ।
पूजिहो अचल भारते महा, होनहार चवबीश जे कहा॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामि ।

अथ जयमाला ।

घत्ता–जै जिन कल्पद्रुम दयावेलि तुम सुमन सुजसगम कंतवरा ।
फल शिवसुरमंडित विपति विहंडित वांछितार्थपद पुष्टकरा॥

पाद्धड़ी छंद—

जै रक्तकेश आनंद भेश । जै चक्रहस्त नुत शक्रशेष ॥
कृतनाथ कृतारथ करत भव्व । परमेसुर पूरत ज्ञान सव्व ॥१॥
जय देव सु मूरत मदनभग । जय मुकतकांत शिवकांत संग ॥
निःकेश केश तजि व्रतधराय । जय जय प्रशस्तपद परमदाय ॥२॥
जय निराहार अविकार बुद्ध । जय जय अमूर्त जिन सुगुन शुद्ध
द्विजनाथ मोहि दुखतं निकार । श्रेयो गति मो दै श्रेयसार ॥३॥

जय अरूज हरो मम रोग रूव। जय दयानाथ सुनि वेगि लेव ॥
प्रणमामि दयाधिक दयाधीश। जे पुष्पनाथ गुननिधि जगीश ॥५॥
नरनाथ नमें नरनाथ पाय। प्रनिभूत गहन गुनगन जिनाय ॥
नागेंद्र देव नागेंद्रराज। जिन देव तपोनिध सुखसमाज ॥६॥
जय जैति दशानन सुजशराश। आरणत्रकके सुर असुर दास ॥
जिन नमों दशाधिक निपुन देव। शाश्विक जिनवर पद करों सेव॥
ए धातुद्वीप गिरि अचल नाम। जिन भरत भविष्यत सुगुन धाम
मुनिमंडल जिन चित धरत ध्यान। सुरनरखगगणजन नरन आन॥८॥
ये तारन तरन हरन कलेश। निर्दोष मोक्षपोषक महेश।
त्रिभुवन जनमन पंकज दिनेद। सुखसागर वर्द्धन सदय चंद॥९॥
"वृंदावन" सेवत जुगलपाय। जिमि त्रिनमनन तनछिन विलाय॥
अब शरन गही प्रभु दीन पार। भवसागरतें मोकों निकार ॥१०
घत्ता—जैजै जिननायक सबविधिलायक ज्ञायकभाव अनंतधनी।
भवतापनशायक शांति वदायक तुम गुन नित नित जपत जनी

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि ।

आर्या छं०—जो पूजे मनलाई, तृतियाचल भारतेश सुखदाई ।
भावी त्रिभुवनराई, सो पावै मुक्त मुक्तठकुराई ॥

इत्याशीर्वादः ।

इति अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनपूजा सपूर्णा ।

अथाचलमेरुऐरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिन पूजा ।

रोडक छंद—

दुतियदीप अभिराम अचल पश्चिम छवि छाजे ।
ताकी उत्तर माहि क्षेत्र ऐवरावत गाजे ॥
वरतमान चौवीश तहां त्रिभुवन के नायक ।
थापतु हों करजोर इहां आवो वरदायक ॥

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनअत्रावतरअवतर संवौषट् आह्वाननं

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशति जिन—अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा ।

(चाल षोडश कारण धानतराकृत पूजा नाके अष्टकी)

सकल सुखदान, पूजों चरनकमल्ल अमलान । सकल सुख० ।
अचलाचल्ल ऐरावतथान, वरतमान जनकंजन भान । स०टेक॥
मुनिमनसम जल्लउज्वल्ल आन, धारकरत मन्मुखदुखहान । स०

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जलं निर्वपामि ॥१॥

चंदन केदलिनंदनसान, घसि लशि शशि सम समतादान । स० ।

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चंदनं निर्वपामि ॥२॥

तंदुलखंडुल उज्जल्ल भान, पुजविपुंजन शिवपददान । स०

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो तंदुलं निर्वपामि ॥३॥

सुमन मल्लि अलि गुंजन आन, धरत हरन उर मदन वितान । स०

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥४॥

नेवज तुरितपुरितरसथान, जजतभजत आकुल कलकान । स०

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्य निर्वपामि ॥५॥

दीपक जोत दिपत दुतिवान, जजततुरित उरतिमिर नसान । स०

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

अगरदहतवसुकरम दहान धूम घूम यह तास उडान । स०अ०

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूप निर्वपामि ॥७॥

फलकलदलनचलन शिवथान, तुमढिगधारत विघनविलान । स०

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फल निर्वपामि ॥८॥

जलफलसकल विमल शुभ आन, अरघ जजत करि अनुभो पान ।

सकल सुखदान, पूजों चरन कमल अमलान । सकलसुख०

अचलाचल ऐरावत थान, वरतमान जनकंजन भान । स०॥

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

अथ प्रत्येकार्घ ।

चौपाई ३८—

माधित नाम जिनेश नमामी । जिनको ध्यावत हैं शिवगामी ॥
धातु अचल ऐरावत थानों । वरतमान पूजों धरि ध्यानों ॥१॥

ॐ ह्रीं माधितनाथ अर्घं निर्वपामि ॥१॥

जिनस्वामी त्रिभुवन आधार । सेवत संघ चार परकार ॥धा० व०

ॐ ह्रीं जिनस्वामिने अर्घं निर्वपामि ॥२॥

स्तिमितेंद्रिय जिनद मितिंद्रीय । नमित इंद्र जे अतिइंद्रीय ॥धा० व०

ॐ ह्रीं स्तिमितेंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

अत्यानंद जिनद अभिराम । आनंदमंदिर शिवपुरधाम । धा० व०

ॐ ह्रीं अत्यानंदाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

पुष्पकोत्पुष्पकजिन ईश । फुल्लित कमलनयननिशिदीश । धा०व०

ॐ ह्रीं पुष्पकोत्पुष्पकाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

त्रिभुवन मंडनमुंडन सल्ल। मुंडक नाम नमों निरमल्ल। धा०व०

ॐ ह्रीं मुंडकाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

महतहते कंदर्प प्रचंड। सेवत सुरनरनाग रमंड। धा० व०।

ॐ ह्रीं महताय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

मदनसिंघ प्रणमों करजोर। वेगि प्रभु भवसंकल तोर। धा०व०

ॐ ह्रीं मदनसिंघाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

इंद्र समूह नमैं पदकंज। हसमिंद्र जिन भो भै भंज। धा०व०

ॐ ह्रीं हंसमिंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

इंद्रचंद ढिग सेवत पाय। चंद्र पार्श्वजिन गुनसमुदाय। धा०व०

ॐ ह्रीं चंद्रपार्श्वाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

भविकअब्जबोधकाजिमभान। अब्जबोधजिन सुगुननिधान। धा०

ॐ ह्रीं अब्जबोधाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

जिनको रूप रुचिर दरशात। जिनवल्लभ सो जगविख्यात। धा०
ॐ ह्रीं जिनवल्लभाय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

अद मोतीदाम।

विभूति अनूप लसे जुगजास। विभूत जिनेश नमों सुखराश।
तृतीय सुराचल उत्तर थान। जजों ऐरावत वर्तसु मान ॥१३॥
ॐ ह्रीं विभूताय अर्घं निर्वपामि।

कुकुल्ण जिनेश सुखामृतकुंड नमें जिनको नित वासवझुंड ॥ तृ०
ॐ ह्रीं कुकुल्णाय अर्घं निर्वपामि॥१४॥

सुवर्ण शरीर लसे सुखदाय। सुवर्णशरीर नमों जिनराय॥ तृ०।
ॐ ह्रीं सुवर्णशरीराय अर्घं निर्वपामि॥१५॥

सदा जगमें जयवंत सरूप। नमों हरिवास सुधारस कूप॥ तृ०।
ॐ ह्रीं हरिवासाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

नमैंनित मीतधरं भवि जाहि। नमो प्रियामित्र धरो उर ताहि ।तृ०।

ॐ ह्रीं प्रियमित्राय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

निजातम धर्म समस्त धरेय । सुधर्म जिनेसुर कर्म हरेय। तृ०।

ॐ ह्रीं सुधर्माय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

प्रिया रतनेश जिनेश नमाम । रमाशिव संग कियौ विसराम ।तृ०।

ॐ ह्रीं प्रियारत्नाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

सवैसुर आनंद धारि नमंत । सुनादित नाथ नमों भगवंत ।तृ०।

ॐ ह्रीं नंदनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

अखड पदस्त लियौ जिनराज । नमों असुनीक सवै सुखसाज।तृ०।

ॐ ह्रीं अश्वानीकाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

सुपर्व जिनेशानि गर्व लशेय । सदा समद्रिष्टिय चित्तधरेय ।तृ०।

ॐ ह्रीं पर्वनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

तननतनन ननतन चिततार्ई। मननननननन फिरि फिलकार्ई॥१०॥
झमझमझमझमझमझमझमकंती। दमदमदमदमदमदमकंती॥
भगतभार उर अतुल धरे हैं। सकलकला नृत प्रगट करे हैं॥११॥
निजभव सफलसफल तः करहीं भगति प्रमाद करमदल मलहीं॥
धन्यदेव तुम त्रिभुवन तारन। अशरन शरन जगत उद्धारन॥१२॥
सोपै कृपाकरो जगनायक। देहु मोक्षसुख अविचल दायक।
बसो सदा उर अंतर मोरे। "वृन्दावन" यहत कर जोरे॥१३॥
घत्ता-जै जै शिवमंडन भवशत खंडन इंद्रिनिदंडन शुद्धमती।
तृतिये गतागत सुरपति ध्यावत वरतमान जिन बुद्धपती॥१४॥
ॐ ह्रीं अनागतवर्तमानतृतीयनिजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि।
सोरठा-जो पूजै मनलाय वरतमान जिनराजपद।
तृतियगतागत ध्याय सो नर सुख लहि शिववरै॥
इत्याशीर्वाद।
इति श्री अनागतवर्तमान पूजा समाप्ता।

अथाचलमेरु ऐरावतेऽतीत जिन पूजा प्रारम्भ्यते ।

स्थापना–(चाल नदीश्वराष्टक की)

दुतिदीप अचल गिरराज ऐरावत जानों ।
तित तीत नमों जिनराय चौविश थुति ठानों ॥
थापों त्रिविधा करजोर हे त्रिभुवन स्वामी ।
इत आय हरो दुःख घोर कीजे शिवगामी ॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपाचलमेरुऐरावतातीजिन अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वानन
ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपाचलमेरुऐरावतातीजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपाचलमेरुऐरावतातीजिनअत्रममसन्निहितोभवभववषट्स्वाहा।

अथाष्टक–(प्रभु पूजोरे भाई)

नित पूजोरे भाई मुक्तरमन जिनराजकौं नित० ।
अचलमेरु उत्तर ऐरावततीत सकल सुखदाई ।

सुरसुरेश पद पूजत जाके तनमन प्रीत उपाई । नि० ॥टेक॥
मोहमहामल धोय प्रभु तुम क्षायक समकत पाई ।
जान्हवीय जलसों हम पूजें। क्षायक सम्यक दाई ॥ नि०अ०॥
ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपाचलमेरुऐरावतातीतजिनेभ्यो जलं निर्वपामि ॥१॥
ज्ञाना वरनी नाश प्रभु तुम ज्ञान अनंत उपाई ।
चंदन सो पद पूजों जातें ज्ञान अनंत लहाई ॥ नि०अ० ॥
ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपाचलमेरुऐरावतातीतजिनेभ्यो सुगंधं निर्वपामि ॥२॥
दर्श आवरन नशिनाथ तुम दर्श अनंत जगाई ।
तदुल अमल लेय पद पूजों ज्यों अनंत द्रिग पाई ॥नि०अ०
ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपाचलमेरुऐरावतातीतजिनेभ्योऽक्षतं निर्वपामि ॥३॥
अंतराय अरि चूर प्रभु तुम बल अनंत उपजाई ।
फूल धरों तुम चरन कमल ढिग ज्यों अनंत प्रभुताई ॥नि०अ०

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपाचलमेरुऐरावततातीतजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥४॥

क्षुधावेदनी नाशि लियो तुम निरआकुल ठकुराई ।
चरु चढ़ाय पूजों पदपकज ज्यों अबाध पदपाई ॥नि०अचल०

ॐ ह्री धातुकीद्वीपाचलमेरुऐरावततातीतजिनेभ्यो नैवेद्य निर्वपामि ॥५॥

आयुकरम अवगाहन गुन मम रोकि रह्यो जिनराई ।
दीप चढाय जजों प्रभु तुमको जिमि सों गुन उदय कराई ॥नि०

ॐ ह्री धातुकीद्वीपाचलमेरुऐरावततातीतजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

नाम करम सूछिम गुन ढकिकें जग बहु नाच नचाई ।
धूप दहों तुम चरनन आगे सो गुन प्रकट कराई ॥ नि०अ०॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपाचलमेरुऐरावतातीजिनेभ्यो धूप निर्वपामि ॥७॥

गोत अगुरुलघु गुन मम रोक्यो बहु विधि जग भरमाई ।
फलसों पूजत यह फल पावों अजर अमर ठकुराई ॥नि०अ०॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपाचलमेरुऐरावततातीतजिनेभ्यः फल निर्वपामि ॥८॥

जल फल सकल ललित लेकर में भगत भाव उमगाई ।
जजत तुम त्रिभुवन के नायक मनवांछित सुखपाई ॥
नित पूजोरे भाई, मुक्त रमनि जिनराजकों । नित पूजो रे०
अचलमेरु उत्तर ऐरावत तीत सकल सुखदाई ॥
सुर सुरेश पद पूजत जाके तनमन प्रीत लगाई ॥ नित पू० ।
ॐ ह्री गानुकीर्तिणान्त्रमेरुऐरावतातीतजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामि ॥८॥

अथ प्रत्येकार्घ ।

दोहा—सुरगिर सम गुरु जगतगुरु श्रीसुमेर जिनराय ।
अचलैरावत तीत पद पूजों मन वचकाय ॥१॥
ॐ ह्रीं सुमेरवेऽर्घं निर्वपामि ।

जिनकृत जिनकृत मोद जग मुक्त रमनिपति न्याय ॥ अ०
ॐ ह्री जिनकृताय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

कैटभनाथ जपों सदा मनवांछित उपजाय ॥ अचलै०॥३॥
ॐ ह्रीं कैटभनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥
श्री प्रशस्त जिनचंद कों पूजत पाप पलाय ॥ अचलै०॥४॥
ॐ ह्री प्रशस्ताय अर्घं निर्वपामि ॥४॥
निरदै जिन अरि दमन किय दया धुरंधरं राय ॥ अचलै०॥५॥
ॐ ह्री निर्दयाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥
निजकुल कमल दिनंद हैं श्रीकुलकर जिनराय ॥ अ० ॥६॥
ॐ ह्री कुलकराय अर्घं निर्वपामि ॥६॥
वर्धमान गुन वृद्धजुत उदय अपूरव पाय ॥ अचलै० ॥७॥
ॐ ह्री वर्द्धमानाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥
अमृत इंद्र गुनवृंद प्रभु अमृत इंद्र पदपाय ॥ अचलै० ॥८॥
ॐ ह्री अमृतेंद्रवे अर्घं निर्वपामि ॥८॥
संख्यानंद जिनंद नित आनंद अमित कराय ॥ अच०॥९॥

ॐ ह्रीं मल्यानंदाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

कल्पद्रुम सम देत सुख कल्पकृत जिनराय ॥ अर्च० ॥१०॥

ॐ ह्रीं कल्पकृताय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

मेघत हरि नित तासको श्रीहरिनाथ जिनाय ॥ अर्च०॥११॥

ॐ ह्रीं हरिनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

बहु स्वामी त्रिभुवन तिलक सेवत त्रिभुवन पाय ॥ अ० ॥१२॥

ॐ ह्रीं बहुस्वामिने अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

छंद मारुचन प्रस्तार ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ भान वर्ण १०

भद्र जिनेसुर भद्र भरें । आनंद अबुधि वृद्ध करें ।

भेम्लृतीय ऐरावत है । तीन जजें सुख पावत है ॥१४॥

ॐ ह्रीं भद्रेशाय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

श्रीप्रविपान जिनेश्वर वश कर्म कुलाचल भेद करा ॥ मे०नी

ॐ ह्रीं प्रविपानाय अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

पूरन ब्रह्म विचार जती । ब्रह्म सुचारिय शुद्धमती ॥मे०ती०॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचारित्राय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

मुक्तसती जुत केलि करैं । नाथ वियोखित दुःख हरैं ॥मे०ती०

ॐ ह्रीं वियोपिताय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

शाक्षियरूप त्रिलोक लखैं । नाथ अशाक्षिक शर्म चखैं ॥ मे०

ॐ ह्रीं अशाक्षिकाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

चारित सेन प्रनाम करौं ज्यौं जिन चारित भार धरा ॥मे०ती०

ॐ ह्रीं चारित्रसेनाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

जो परणामिक भाव यंहे सो परणामिक देव कहे ॥ मे०ती०

ॐ ह्रीं परिणामिकाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

शाश्वत आनंद देत हमें शाश्वतनाथ कलंक दमें ॥ मे०ती० ॥

ॐ ह्रीं शाश्वतनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

श्रीनिधिनाथ प्रनाम करों ज्यौं निधि सार सुधाम भरों ॥मे०

ॐ ह्रीं निमिनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

कौशिकनाथ दयाल महा दारिद दुक्ख कुकर्म दहा ॥ मे०ती०

ॐ ह्रीं कौशिकाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

श्रीधरमेश जिनेश नमो आनदकंद समस्त पमो ।
मेरुतृतीय पुरावत है तीन जजें सुखपावत है ॥२४॥

ॐ ह्रीं धर्मेशाय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

गीतावान छंद ।

तृतिय सुराचल उत्तर जान । अतीत जिनेश महागुनवान ।
जजों पद पूरण अर्घ चढाय । कलेश अशेष सबै नशिजाय ॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपमेरुसंबंधिऐरावतक्षेत्रातीतजिनेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामि ।

जयमाला ।

पद्य जै जै करुनाधन मन्दिर पावनतर सेवकजन आनंद करा ।
जै जै जयदायक सब विधिनायक कर्मकलंक अशेष हरा ॥१॥

पाद्धड़ी छंद—

जै जै सुमेरू थिर मेरु जेम। जै जै कृत जिनकृत सुकृत छेम।
जै कैटभ अघकानन हुताश। जै जै प्रशस्त भवि भरत आश ॥२॥
जै निर्दय जिन जुग दयाईश। जै जै कुलकर नुत सकल ईश ॥
जै वर्द्धमान गुन वृद्ध सुष्ट। जै अमितिंद्रिय आनंद पुष्ट ॥३॥
जै सख्यानंद अनंत ज्ञान। जै कलपकृत कृत सुख निधान ॥
हरिसेवत नित हरिनाथ देव। वहुस्वामि सकल सुर करतसेव ॥४॥
जै भार्गव भवतप दमन सूर। जै भद्रदेव भवि भद्रपूर ॥
प्रविपातन जिन दारिद्र हर्ण। जिन ब्रह्मचारि चारित्र भर्ण ॥५॥
जै जैति वियोषित शिव रमेश। जै जैति अशाक्षिक भवतरेश ॥
जै चारितसेन दयाल धीर। परिनामक जिनवर हरत पीर ॥६॥
शाश्वताजिन शाश्वत थान देत। निधिनाथ निधान करत निकेत ॥
कौशिक जिन कौशिकराज देहि। धरमेश तुरित भवतार देहि ॥७॥
ए भूत चतुरविंशति जिनेश। गिरि अचलैरावत सुगुन भेश ॥

गनधर मुनिध्यावत सुजश राश। सुर असुर जासके भये दास॥८॥
नर विद्याधर सेवत त्रिकाल। गुन गावत नाचत चरन भाल॥
किन्नर नारद तुंबर अवश्य। हा हा हू हू विश्वासुवश्य॥९॥
एतानन थेइ थेइ थेइ उमंग। लय तान तान गावत सुरंग॥
नमलां त्रमलां द्रिमि द्रिमि मृदंग। मंनायदि माग्रांदि मारगिसग॥१०॥
पगनूपुर झननन झनननाय। कहि कि किनि किनिनिनिनिनि सुनाय॥
करताल ताल करमें लसंत। किरिकिरि झुकि झुकि भावरि रचंत॥११॥
रसराग प्रगट जुत करत भक्त। पावत सनाज सम्यक्त व्यक्त॥
हम तुम पद वंदत बार बार। नृप चंदनंद भवि "वृंद" तार॥१२॥
घत्ता—जै जै जगगंजन भ्रमतम भंजन भविकंजन जिनराजवरा।
निम मुनिजनवंदन पाप निकंदन पावन आतम ज्ञानवरा॥
ॐ ह्रीं श्रीअनुत्तरौपपादिकस्थानेभ्योऽसंख्यातजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि॥१३॥
मालिनी छंद—मुनिवर अनगारे उत्तरोपावते हैं।
निज आतम जिनेमंभव्य जो भावते हैं॥

तिन पद जुगसारं जो जजै प्रीतलाई ।
सुरनर सुखसार भोगि सो मुक्ति जाई ॥

इत्याशीर्वाद –

इति श्रीअचलमेरुऐरावतातीत चौबीसी पूजा संपूर्णा ।

अथ अचलमेरुऐरावतभावीजिन पूजा प्रारभ्यते

लक्ष्मीधरा छंद ।

मेरु तीजोमहाशोभनीकं लसै । क्षेत्रऐरावते उत्तरे सो वसे ॥
तासमें भावतव्यं जिनेसं कही । थापिहों अत्र आवो प्रभूजीसही

ॐ ह्रीं अचलैरावतभावित्रिचतुर्विंशति जिन अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वानन।

ॐ ह्रीं अचलैरावतभाविचतुर्विंशति जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः स्थापन।

ॐ ह्रीं अचलैरावतभावीजिन अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा।

छंद सारंगी ध्वनि सब गुरु वर्ण ।

गंगा भंगा पानी चंगा झारी धारी आनी है ।

धारा तीनां ताकी दीनों तीनों तापं हानी है ॥
तीजो मेरं ताके हेरं ऐरावतं राजें हैं ।
भावी देवं कीजै सेवं जो आनंदे साजें है ॥
ॐ ह्रीं धातकिखंडद्वीपस्थमेरुपश्चिमभागविदेहक्षेत्रभाविजिनेभ्यो जलं निर्वपामि ॥१॥
कुंकुमाद्यै गंधं सारं करपूरेयं लै आयो ।
अंत्युत्कृष्टा घृपा सुष्टा दुष्टा तापं कूं घायो ॥ ती० भा० ॥
ॐ ह्रीं धातकिखंडद्वीपस्थमेरुपश्चिमभागविदेहक्षेत्रभाविजिनेभ्यश्चन्दनं निर्वपामि ॥२॥
शाला ऋाला शुद्धं बुद्धं मुक्ता के से शुक्ता हैं ।
सो ले सारा पुंजे धारा भो मैं सो हो मुक्ता है ॥ ती० भा०
ॐ ह्रीं धातकिखंडद्वीपस्थमेरुपश्चिमभागविदेहक्षेत्रभाविजिनेभ्यो ऽक्षतं निर्वपामि ॥३॥
नैना घ्राना कों आमोदे गंधे फूले आना है ।

१ [illegible] २ [illegible]

तासों स्वामी सेवों आमी कामों वाना हाना है ॥ती० भा० ॥
ॐ ह्रीं धातुकिद्वीपाचलमेरुऐरावतभाविजिनेभ्य पुष्पं निर्वपामि ॥४॥

फेनी श्रेनी खाजे ताजे साजे मिष्टा पुष्टा है ।
सो लै थारी आगे धारी बाधा नष्टा दुष्टा है ॥ ती० भा० ॥
ॐ ह्री धातुकिद्वीपाचलमेरुऐरावतभाविजिनेभ्यश्चरु निर्वपामि ॥५॥

घी को दीयौ ऐसो लीयो जासौ भांतें नाशा है ।
तासों पूजे ऐसो हूजै तीनों लोकं भाशा है ॥ ती० भा० ॥
ॐ ह्री धातुकिद्वीपाचलमेरुऐरावतभाविजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

गंधा धारं धूपोदारं खेवों वन्ही माही है ।
कूरं कर्म होवे चूरं धूमा घूमोडाही है ॥ ती० भा० ॥
ॐ ह्री धातुकिद्वीपाचलमेरुऐरावतभाविजिनेभ्यो धूप निर्वपामि ॥७॥

पुंगी नारंगी जंवीरा एला केला लाए हैं ।

तासों सेवों आपा वेवों साता "वृंदो" पाये हैं॥ ती० भा०॥

ॐ ह्रीं धातुकिद्वीपाचलमेरुऐरावतभाविजिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥

आठों द्रव्यों सेती पूजों आछे वाजे वाजे है।

नाचों राचों शर्णं आवो मोक्ष स्यानं पाजे हैं॥

तीजो मेरु ताके हेरं ऐरावतें राजे हैं।

भावी देवा कीजे सेवा सो आनंदे साजें हैं॥

ॐ ह्रीं धातुकिद्वीपाचलमेरुऐरावतभाविजिनेभ्यो ऽर्घं निर्वपामि ॥९॥

अथ प्रत्येकार्घं।

सोलनरंग छंद—

श्री रवि इंद्र जिनंद नमामी। स्वेदविवर्जित अजित स्वामी।

मेरु तृतीय ऐरावत थानों। भाविय देव जजों धरि ध्यानों॥१॥

ॐ ह्रीं रवीन्द्रेऽर्घं निर्वपामि ॥१॥

निर्मल काय जसे सुखदाई । श्री सुकुमालक मोहि सहाई । मैं०
ॐ ह्रीं सुकुमालिकाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

प्रथितवंत नमो भगवता । क्षीर समान सुरक्त धरंता । मे० भा०
ॐ ह्रीं प्रथितव्रतेऽर्घं निर्वपामि ॥३॥

श्रीकुलरत्न जिनेसुर मानों । चारित्र यान समान प्रमानों ।मैं०॥४॥
ॐ ह्रीं कुलरत्नाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

धर्म जिनेसुर आनंदकारी । आदि शरीर लसे अविकारी ।मैं०॥५॥
ॐ ह्रीं धर्मनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

शोम जिनंद अमंद प्रतापी । सुंदररूप सुधारस वापी । मे०॥६॥
ॐ ह्रीं शोमजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

श्रीवरुणेंद्र जिनिंद नमामी । सोरभकाय धरें अभिरामी ।मैं०॥७॥
ॐ ह्रीं वरुणेन्द्राय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

श्रीअभिनंदन आनंददाता । साष्ट सहस्र सुलक्षणगाता ।मे० ॥८॥

ॐ ह्रीं अभिनन्दाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

श्रीसरवेश नमों वर ज्ञानी । अप्रमितं वल जासु वखानी ।मिं०॥९॥

ॐ ह्रीं सर्वेनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

नेन महाप्रिय है हितकारी । नाथ सुदिष्ट नमों भवतारी॥मिं०॥१०॥

ॐ ह्रीं सुदिष्टनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

छंद तोटक—

जसु अर्थ सुमागध बेन खिरे । जिन शिष्ट नमों भवसिंधुतिरे ॥

तृतियाचलको पगवत है । भवतव्य जजें सुखपावत है ॥॥११॥

ॐ ह्रीं शिष्टजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

जगजीव परस्परमित्र भये । जिन धन्यतने परभाव लये ॥ तृ०

ॐ ह्रीं सुधन्याय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

फलफूल सबै रितुके निबरे । जह सोमशशी प्रभुजी हुलसे ॥तृ०

ॐ ह्रीं सोमचन्द्राय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

छितदर्पनतुल्य प्रकाश धरैं। जहँ क्षेत्र अधीश निवास करैं ॥तृ०
ॐ ह्रीं क्षेत्राधीशाय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

नित आनंद अंबुधि वृद्ध करै। सु सदंतिकनाथ दरिद्र हरे ॥तृ०
ॐ ह्रीं सदंतिकाय अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

अनुकूल बयार पुनीत वहै। जहँ श्रीजिनराज जयंत अहै ॥तृ०
ॐ ह्रीं जयताय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

तृण कंटक धूलि विनाशित है। जिनराज तमोरिपु मोचित है॥तृ०
ॐ ह्रीं तमोरिपवेऽर्घं निर्वपामि ॥१७॥

जलगंध समेत पुनीत परै। जिन निर्मल सो मम पाप हरै ॥तृ०
ॐ ह्रीं निर्मलाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

नभमें कनकंजन पैं चलही। कृत पारस विघ्न सबै दलही ॥तृ०
ॐ ह्रीं कृतपार्श्वाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

फलभार सबैथल धान्य नये। जिनबोधसुलाभप्रभाव भये ॥तृ०

ॐ ह्रीं अभिनन्दाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

श्रीसरवेश नमों वर ज्ञानी । अप्रमितं वल जासु वखानी ।मे०॥९॥

ॐ ह्रीं सर्वनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

नैन महाप्रिय है हितकारी । नाथ सुदिष्ट नमों भवतारी॥मे०॥१०॥

ॐ ह्रीं सुद्रिष्टनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

छंद तोटक---

जसु अर्थ सुमागध वेन खिरे । जिन शिष्ट नमों भवसिंधुतिरे ॥

तृतियाचलको ऐरावत है । भवतव्य जजें सुखपावत है ॥॥११॥

ॐ ह्रीं शिष्टाजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

जगजीव परस्परमित्र भये । जिन धन्यतने परभाव लये ॥ तृ०

ॐ ह्रीं सुधन्याय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

फलफूल सवै रितुके निवसे । जह शोमशशी प्रभुजी हुलशे ॥तृ०

ॐ ह्रीं शोमचंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

छितदर्पनतुल्य प्रकाश धरैं। जहँ क्षेत्र अधीश निवास करैं ॥तृ०

ॐ ह्रीं क्षेत्राधीशाय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

नित आनंद अंबुधि वृद्ध करै। सु सदंतिकनाथ दरिद्र हरै ॥तृ०

ॐ ह्रीं सदंतिकाय अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

अनुकूल बयार पुनीत वहै। जहँ श्रीजिनराज जयंत अहै ॥तृ०

ॐ ह्रीं जयताय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

तृण कटक धूलि विनाशित है। जिनराज तमोरिपु मोचित है॥तृ०

ॐ ह्रीं तमोरिपवेऽर्घं निर्वपामि ॥१७॥

जलगंध समेत पुनीत परै। जिन निर्मल सो मम पाप हरै ॥तृ०

ॐ ह्रीं निर्मलाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

नभमें कनकंजन पैं चलही। कृत पारस विघ्न सबै दलही ॥तृ०

ॐ ह्रीं कृतपार्श्वाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

फलभार सबैथल धान्य नये। जिनबोधसुलाभप्रभाव भये ॥तृ०

ॐ ह्रीं गोधराभाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

नमनिर्मल औ दिगसुन्दर हे । चकुनन्द नमंत पुरंदर हे ॥ तृ०

ॐ ह्रीं चकुनन्दाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

सुरटेरत हैं भविजीवनिकों । जिनदिष्ट सुभावन पीवनकों । तृ०

ॐ ह्रीं दिष्टस्वामिने अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

वृषचक्र धरे अरिचक्र हरें । जिन कुंकुम आभ सुवर्ण करें ॥तृ०

ॐ ह्रीं कुंकुमाभाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

वसु मंगल द्रव्य पुनीत धरें । जिनवक्ष सु ईश कलेश हरें ॥
तृतीयाचलको ऐरावत है । भवतव्य जजें सुख पावत है ॥

ॐ ह्रीं वक्षेशाय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

यह पूरन अर्घ लियो करमें । पद पूजन हौं प्रभुको घरमें ॥तृ०

ॐ ह्रीं भावीचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽर्घं पूर्णार्घं निर्वपामि स्वाहा ।

जयमाला ।

घत्ता–जै जै जै मंडित पूरन पंडित विघ्न विहंडित ज्ञानधरा ।
सेवक प्रणरक्षक त्रिभुवन लक्षक लक्ष अमदित देतवरा ॥

(छंद तामरस तथा नयमालिनी तथा चंडी)

जै रवीइंद जिनंद नमस्ते । सुकुमालिक जगवंद नमस्ते ॥
प्रभीचंत महंत नमस्ते । जै कुलरत्न भवंत नमस्ते ॥ १ ॥
धर्मनाथ कृत शर्म नमस्ते । शोमनाथ पद पर्म नमस्ते ॥
वरुणानाथ दुखहरण नमस्ते । अभिनंदन सुखकरन नमस्ते ॥ ३ ॥
सर्वनाथ निर्दोष नमस्ते । जिन सुदिष्ट कृतमोक्ष नमस्ते ।
शिष्टनाथ कृत इष्ट नमस्ते । जै गुनन्य धुनि मिष्ट नमस्ते ॥ ४ ॥
शोमचंद निकलंक नमस्ते । क्षेत्राधीश निशंक नमस्ते ॥
जै सदंतक जिनेश नमस्ते । जै जयन वषभेश नमस्ते ॥५॥
देव तमोरिपु पाय नमस्ते । निर्मल जिन सुखदाय नमस्ते ॥
जै कृतपारशनाथ नमस्ते । बोध लाभ शिव साथ नमस्ते ॥६॥

जै चन्दुनंद अमंद नमस्ते। द्रिष्ट स्वामि सुखकंद नमस्ते ॥
कुंकुमाभ निरफद नमस्ते। जै वक्षेश अदंद नमस्ते ॥७॥
ए भावी चौंवीश नमस्ते। अचलैरावत धीश नमस्ते ॥
सेवन इंद समस्त नमस्ते। जानन जुगपत वस्तु नमस्ते ॥८॥
विघ्नमहीधर विज्जु नमस्ते। जै ऊरधगति रिज्जु नमस्ते ॥
मुकतिरमनि मह शिज्जु नमस्ते। त्रिभुवन आनद किज्जु नमस्ते
ध्यावत सज्जन संत नमस्ते। पावतु हैं भव अंत नमस्ते ॥
गुन अनंत अविकार नमस्ते। तारन तरन उदार नमस्ते ॥१०॥
सकल कलेश निरवार नमस्ते। दारिद दुख परिहार नमस्ते ॥
वांछित पद दातार नमस्ते। "वृंदावन" विस्तार नमस्ते ॥११॥

घत्ता—जै जै जिननायक, विघनविनायक सबसुखदायक देववरा।
हम शरनें आये शीशनवाये गुनगन गाये सेवकरा॥१२॥

ॐ ह्रीं धातुकिद्वीपाचलमेरुऐरावतभाविजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि।

अथाशीर्वादः । गीताछंद—

जो दरव अरु वरभाव सेती जजै जिन चौवीशजी ।
वर धातुदीप अचल सुऐरावते भावी ईशजी ॥
सो पुत्रमित्रकलत्र संपत सुख लहै नवनीतजी ।
पुनिशक्र चक्रतनौ सुपद लहिहोइ मुकत निचीतजी ॥

इति श्रीअचलैरावतभावी चौवीशी पजा संपूर्णां ।

तृतियमेरु संबंधी पूजा संपूर्णा ।

अथ पुष्करार्द्धद्वीपमंदिरमेरुसंबंधीविरहमान जिनचारिपूजा प्रारभ्यते ।

छंद अमृतध्वनि त्रिभंगी पर ।

दमकततनसारं रविशशिधारं अतिद्युतिधारं सुखकारं ।
भ्रमतम शतखंडन शिवमगमंडन कलुषविहंडन दुखदारं ॥

त्रितिदीप सुहेरं मंदरमेरं पूरवेदरं श्रुति सज्जै ।
तित विहर सुमानं चहु भगवानं सुगुननिधानं धुनिगज्जै॥१॥
गज्जन्त धुनि सज्जनसुनि रज्जनमन ।
सज्जम नम भज्जम गम मज्जज्जन नन ॥
चंच्चरन सुधासुभभ्भरन सुसच्चस्समकृत ।
ठःठः थपत सुजैजै जपत प्रभादंदमकृत ॥२॥

ॐ ह्रीं मंदिरमेरुविदेहस्थविहरमानजिन चंद्रबाहु-भुजगमभ-ईश्वर-नमीश्वर अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं मंदिरमेरुविदेहस्थविहरमानजिन चंद्रबाहु-भुजगमभ-ईश्वर-नमीश्वर अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापनं ।

ॐ ह्रीं मंदिरमेरुविदेहस्थविहरमानजिन चंद्रबाहु भुजंगमभ ईश्वरनमीश्वर अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा: ।

अथाष्टकं ।

प्रमिताक्षरा छंद —

जल भृंग माहि भरि धार करों । पदपूजि नाथ दुखदोपहरों ।
त्रिति द्वीपमंदिर विदेहनिमें । जिनचार सार जाजि गेहनिमें ॥
ॐ ह्रीं चंद्रबाहु-भुजंगप्रभ ईश्वर-नमीश्वरेभ्यो-जन्ममृत्युविनाशाय जलं ॥१॥
वरगंध चंदन कपूर घसै । जिनराज पूजि भवताप नशै ॥त्रि०
ॐ ह्रीं चद्रबाहु-भुजगप्रभ-ईश्वरनमीश्वरेभ्यो संसारतापनाशाय गंधं ॥२॥
शुभशालि मुक्त मनु शुक्त समांतसुपुंज युंज भवदुःख गमं ॥ त्रि०
ॐ ह्रीं चद्रबाहु-भुजंगप्रभ-ईश्वरनमीश्वरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षत ॥३॥
निरदोप फूल सुख मूल महा । तुव अग्रधारि सरशूल दहा ॥त्रि०
ॐ ह्रीं चद्रबाहु-भुजगप्रभ-ईश्वरनमीश्वरेभ्य कामबाणनाशाय पुष्पं ॥४॥
रसपूर सारचरु भूरिकरा । जजते क्षुधादि अरिक्रूर हरा ॥ त्रि०
ॐ ह्रीं चद्रबाहु-भुजगप्रभ-ईश्वरनमीश्वरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ॥५॥

मनि दीपजोत तम नाशतु हैं। पद सेवतें सुगुन भासतु है॥त्रि०

ॐ ह्रीं चंद्रबाहु-भुजंगप्रभ-ईश्वरनमीश्वरेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

दशगंध खेयमन माचतु है। मनु धूमघूम मिशि नाचतु है ॥त्रि०

ॐ ह्रीं चंद्रबाहु-भुजंगप्रभ-ईश्वरनमीश्वरेभ्यो धूप निर्वपामि ॥७॥

रसमिष्ट शिष्ट फल सुष्ट धरों। जिनचंद वृंद सुखकंद वरों॥त्रि०

ॐ ह्रीं चंद्रबाहु-भुजंगप्रभ-ईश्वरनमीश्वरेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥

वसुद्रव्य सर्व सजि अर्घकरों। पद पूजिसार शिवनारि वरों ॥
त्रिति दीप मंदिर विदेहनिमें। जिन चार सार जाजि गेहनिमें ॥

ॐ ह्रीं चंद्रबाहु-भुजंगप्रभ-ईश्वरनमीश्वरेभ्यो अर्घं निर्वपामि ॥९॥

अथ प्रत्येकार्घ।

आर्या छंद-पुष्करमंदिर एवं, सीतोत्तर विहरमान जिनदेवं।
श्रीचंद्रवाहु सेवं, समवश्रृत संस्थित वसूमेवं ॥१॥

रेणुकमाता ख्याता, नमों पिता देवनंद विख्याता ।
नगर विनीतं जाना,जजों सदा पद्मअंक सुखदाता॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपे . मंदिरमेरुमवधिमीतोत्तरतटे पट्खंडमंडलमंडितचक्रवर्त्यादिसेव्यमानविहरमानजिन चंद्रबाहुस्वामिने अर्घं ॥१॥

पुष्करमंदिर जानं सीता दच्छिन विदेहथित मानं ।
देव भुजंग प्रमानं, पूजों समवशृत भगवानं ॥२॥

महिमा माता जानों, पिता महाबल दयाल गुनवानों ।
लच्छन चंद्र प्रमानों विजया नगरी त्रिलोकपति थानों ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपे मंदिरमेरु सीतादक्षिणतटे पट्खड मडलमंडित चक्रवर्त्यादि सेव्यमान जिन भुजगप्रभाय अर्घं ॥२॥

पुष्करमंदिर जोहे सीतोदा दक्षिणे सुमन मोहे ।
ईश्वर स्वामी सोहैं ताहि जजें सर्व संपदा होहैं ॥१॥

ज्वाला जननी राजैं, नगर सुसीमा अनूप छवि छाजै ।
गलसैन जासु राजै, रवि पदमें चिन्ह कोटि रविलाजै॥२॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपे मंदिरमेरुसीतोदादक्षिणतटे पद्मखंडमंडलमंडित चक्रवर्त्यादिसेव्यमानविहरमानजिन ईश्वरनाथाय अर्घं ॥३॥

पुष्कर मंदिर नामी, सीतोदा उत्तरंसु अभिरामी ।
श्रीनेमीश्वर स्वामी, समवशरनस्थित जजामि शिवगामी ॥१॥
सेना माता जाकी, पिता नमों वीरराण शुभ ताकी ।
वृषलच्छन पदमा की, नगर अयोध्या प्रमोदपद साकी ॥२॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपे मंदिरमेरुसीतोदायाउत्तरतटे पद्मखंडमंडलमंडित चक्रवर्त्यादिसेव्यमानविहरमानजिन नमीश्वराय अर्घं ॥४॥

सुंदरी छंद—

त्रितिय पुष्करद्वीप सुहावनो । प्रथम मंदिर मेरु तहा वनो ॥

तसु विदेहनि में जिन चार हैं । जजत होत भवोदधि पार हैं ॥

ॐ ह्रीं चन्द्रबाहुभुजंगमईश्वरनेमीश्वरेभ्योऽर्घं पूर्णार्घं निर्वपामि ।

अथ जयमाला ।

घत्ता—जैजै जगवंदन कलुषनिकंदन त्रिभुवनजन आनंद करा ।
जै केवलभानं भूमनमहानं भविकमलानं मोदभरा ॥१॥

तोटक छंद—

जै श्रीजिन चंद सुबाहु मना । जै जनि भुजंग प्रवेश फना ।
ईश्वर नाथ अनाथ हितू । नमि ईश्वर नाथ त्रिलोक पितू ॥२॥
दीपहि मदर मेरु वसै । निवसै शुभ जन्म विदेह लसै ॥
शत द्वादश जोजन हैं । मनि सा रत यत्र प्रयोजन हैं ॥३॥
रस को केई पान करें । वसु कर्मनि को भरि ध्यान हरें ॥
करें बहु भांति नहां । गुन गावत नाचत भाल नहां ॥४॥
चतु हैं मननं सननं । धुनि नूपुर है झननं झननं ॥
किनि गुंजत किननं । सुर लेत केई तननं तननं ॥५॥

केइ वारह भावन भावत हैं। अपनो गुन आपु लखावत हैं॥
केइ चारित भार सम्हारत है। केइ कर्म नतच्छन जारत है ॥६॥
यह धन्य विदेह सुथान सही। शिव मारग नित्त चलै चितही॥
जह आपु विहार पुनीत करैं। चवसंघ लिये अघ सघ हरैं ॥७॥
गनराज जहां धुनि झेलत हैं। भवि को सव संशय टेलत हैं॥
रतनत्रय भवि उदोत करैं। सुनिके भविजी शिवनारि वरैं ॥८॥
हम जाचतु है तुमसों जिनजी। निज संनिधि द्यो विनती सुनजी॥
तुव वैन सुधारस पान करों। लखि रूप सवै दुखदद हरों ॥९॥

घत्ता—जैजै जिनदेवं सुरकृत सेवं सुगुनअछेवं शुद्धमती।
शिवसपति दायक विघनाविनायक जै जै जै चिद्रूपपती॥

ॐ ह्रीं चद्रवाहु-सुजंप्रभ-ईश्वर-नमीश्वरेभ्यो महार्घ निर्वपामि ॥१०॥

वसंत तिलका—आशीर्वादः।

श्रीपुष्कराद्धे मह मदिर मेरु काजे।

ताकी विदेहनि विषैं जिनराज राजे ॥
पूजें तिन्हे भविक जो बहु भक्ति लाई ।
सो सर्वसार सुखभुक्त सु मुक्त जाई ॥

इति मदराचलमेरुविराजमानविरहमानजिनपूजा समाप्ता ।

अथ पुष्करार्द्धद्वीपेमंदिरमेरुभरत वर्त्तमानचौवीशीपूजा ।

छंद कुंडलिया—

मदरमेरु विराजई पुष्कर पूरव वोर
ताकी दच्छिन में लसै भरत छेत्र शुभ ठोर ॥
भरत छेत्र शुभ ठोर तहां त्रिभुवन हितकारी ।
वरतमान चोवीश ईश पूजे नर नारी ॥

जिन्ह को गुन उर ध्याय मुदित मन जजत पुरंदर ।
तिन्ह को थापों इहां जहां जिनवर को मंदर ॥

ॐ ह्रीं भरत वर्तमान जिन चतुर्विंशतिअत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।
ॐ ह्रीं भरत वर्तमान चतुर्विंशति जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनअत्रमम सन्निहितो भवभव वषट्सन्निधिकरणं ।

अथाष्टकं ।

(चाल जततात आदि में)

भवसागर तारोजी, दीन दयाल जिनेसुर जी । भव० ।
पुष्करदीप शिखरमंदिर के दच्छिन भरत विराजै ।
वरतमान चौवीश जिनेसुर पूजत भव भै भाजेजी ॥भौ०॥टेक॥
गंगाजल भरि कनक भृंग में तन मन प्रीत उपायो ।
धारा तीन करत पद आगे करम कलंक हरायो जी ॥ भव०॥

ॐ ह्रीं भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनसमूहेभ्यो जलं निर्वपामि ॥१॥

केशर चंदन कदली नंदन दाहनिकंदन लायो ।
शिव तिय जिनवर तुम पद पूजत सब दुखदंद नशायोजी ॥भो०॥

ॐ ह्रीं भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनसमूहेभ्यो गंधं निर्वपामि ॥२॥

तंदुल मंदुल शौरभि मंडित अमल अखंड सोहायो ।
पुंज धरत दुखदंद हरत सुखकंद भरत मनभायोजी ॥ भव० ॥

ॐ ह्रीं भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनसमूहेभ्यस्तंदुलं निर्वपामि ॥३॥

सुमन सुमन सम सुवरन थारी सुवरन थार भरायो ।
मनमथमदमथ नाथ तुम्हे लखि हाथ साथ शिरनायोजी भो०

ॐ ह्रीं भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनसमूहेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥४॥

घेवर बावर फेनी श्रेनी खाजे ताजे भायो ।
क्षुधारोग निरवारन कारन मनमुख ले शिरनायोजी ॥भो०॥

ॐ ह्रीं भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनसमूहेभ्यश्चरुं निर्वपामि ॥५॥

जगमग जोति होत दश दिश में ऐसो दीप अनायौ ।
तासो तुम पद पूजत संशय विभ्रममोह नशायौजी ॥भौ०॥

ॐ ह्रीं भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिन समूहेभ्योदीपं निर्वपामि ॥६॥

दशविध गंध पुनीतम लै करि खेवत शौरभि छायौ ।
अष्ट करम मम दुष्ट जरत है धूम धूमसु उड़ायौजी ॥भौ०॥

ॐ ह्रीं भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनसमूहेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

सुरस वरन रसना मन भावन पक्क सुफल उपगायौ ।
पूजत चरन कमल जिनवर के विघनसमूह नशायौजी ॥भौ०॥

ॐ ह्रीं भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनसमूहेभ्यः फल निर्वपामि ॥८॥

आठों दरव मिलाय मनोहर हरष हरष गुनगायौ ।
पूजत चरन कमल जिनवर के शिवतरु वीज वुवायौ ।

भौ सागर तारो जी दीन दयाल सुरेसुरजी ॥भव॥
पुष्कर दीप शिखर मंदर के दच्छिन भरत विराजे।
वरतमान चौवीश जिनेसुर पूजत भौ भै भाजे जी भवसा० ॥
ॐ ह्रीं भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिन समूहेभ्योऽर्घं निर्वपामि ॥९॥

अथ प्रत्येकार्घं

पाईता छद—

शत आठ कोश सुभिछं। जिन जगन्नाथ क्रिय सुच्छं।
गिरि मंदिर भरत सुहायो। जजि वरतमान सुखपायो ॥१॥
ॐ ह्रीं जगन्नाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१॥
नभ माहि चलै जिन स्वामी। जिन देव प्रभाश नमामी। गि० २।
ॐ ह्रीं प्रभाशाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥
नाहि जीव जहां वध हो हे। जिन सूर स्वामि मम सो है। गि० ३

ॐ ह्रीं सूरस्वामिनेऽर्घं निर्वपामि ॥३॥

नहि कवलाहार करैं हैं । भरतेश कलैश्य हरै हैं ॥ गि० ४ ॥

ॐ ह्रीं भरतेशाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

उपसर्ग वितीत विराजै । जिन दीर्घानन छवि छाजै । गि० ५

ॐ ह्रीं दीर्घाननाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

चतुरानन मूरति दरसै । सुनिजात कीर्त सुख सरसै । गि० ॥६॥

ॐ ह्रीं विजातकीर्तयेऽर्घं निर्वपामि ॥६॥

सब विद्या के पति जानों । अवशानन सो पहिचानों ।गि० ७

ॐ ह्रीं अनशाननाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

तन की न परै परछाई । सुप्रबोधन देव कहाही । गि०॥८॥

ॐ ह्रीं प्रबोधनाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

द्रिग में न निमेष लगे हैं । सुतपोनिधि ज्ञान पगे है गि० ९

ॐ ह्रीं तपोनिधयेऽर्घं निर्वपामि ॥९॥

नखकेश बढे नहि जाको । जिन पावक नाम सुताको ॥गि०

ॐ ह्रीं पावकाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

छन्द रथोद्धता—

शोक चूरन अशोक वृक्ष है । सो जिनेश त्रिपुरेश इच्छहै ।
पुष्करार्द्ध गिरि मंदरें सही । भर्तवर्तत जजामि हों यही ११

ॐ ह्रीं त्रिपुरेशाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

पुष्पवृष्टि नभतें जहां परै । शौगतेश सरशूल कों हरे ॥पु०

ॐ ह्रीं शौगताय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

दिव्यवैन सुखसों जहां खिरै । श्रीयवास सुखराशकों भरै ।पु०

ॐ ह्रीं श्रीवासाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

चोंर चौसठ सुरेश ढारही । श्री मनोहर कलेश टारही ।पु० १५

ॐ मनोहराय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

सिंहपीठ पर जे विराजही । श्री जिनेश शुभकर्म छाजही॥पु०

ॐ ह्रीं शुभकर्मसाय अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

कायकांति कृतमंडला कृतं । इष्ट सेवक सुचित्त में धृतं ॥ पु०

ॐ ह्रीं इष्टसेवकाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

देवदुंदुभि अकाश में वजैं । श्रीजिनेंद्र अमलेंद्र मै भजै ॥ पु०

ॐ ह्रीं अमलेंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

तीनछत्र तिहु रत्नसे लशै । धर्मवाश जिन त्रासकों नशै ॥ पु०

ॐ ह्रीं धर्मत्रासाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

छंद मोतीदाम—

अनंत सुछायक ज्ञान महान । प्रशाद जिनेश धरैं अमलान ।
सुमदर भारत दच्छिन खेत । जजों जिन वर्तत हैं छविदेत ॥

ॐ ह्रीं प्रशादाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

अनंत अगाध लशै द्रिग जास । प्रभामृग अंक भरैं भविआश ॥सु०।

ॐ ह्रीं प्रभामृगांकाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

अनंत सुखामृत अदभुत कूप । नमों अकलंक निशंकसरूप ।।सु०।

ॐ ह्रीं अकलंकाय अर्घं निर्वपामि ।।२१।।

अनंत अवाधित वीरज जास । नमों स्फटिक प्रभुकों शिवआस ।सु०

ॐ ह्रीं स्फटिकप्रभाय अर्घं निर्वपामि ।।२२।।

छंद भुजंग प्रयात ।

हनें दोप अष्टादशौं मूलसेती । गनेंद्रं जिनेंद्रं नमों मुक्तहेती ।
जजों मंदिराख्या चले भर्त थानों गुणग्रामधारी प्रभूवर्तमानों ।।

ॐ ह्रीं गनेंद्राय अर्घं निर्वपामि ।।२२।।

चिदानंदकोध्यानधारे विराजैं । नमोंध्यानस्वामी असह्यध्यान भाजें
जजों मंदिराख्याचले भर्त थानों । गुणग्रामधारी प्रभुवर्तमानों।।

ॐ ह्रीं ध्यानजिनाय अर्घं निर्वपामि ।।२३।।

लोलतरग छंद—

पूरन अर्घ वनाय पुनीतं । पूजतु हौं सवही जिनमीतं ।

अडिल्ल छंद

जो पूजे चौबीस जिनेसुर देवजी ।
पुष्कर मंदर भरत विराजे येवजी ॥
सो मनवांछित सार सरव सुख पायजी ।
शक्र चक्र पद भोगि मुक्त पुर जायजी ॥

इत्याशीर्वादः ।

इतिपुष्करद्वीपभरतवरतमानचौबीशी पूजा समाप्ता ।

अथ मंदरमेरुभरतातीतचौबीशीपूजामाह

छद माधवी सवैया सिंघावलोकन मुक्तपदग्रस्त यथा

मंदिर मेरु विराजतु है नित पुष्करदीप विषैं अति सुंदर ।
सुंदर दच्छिन भर्त वसै तित तीत जिनेसुर धर्म धुरंधर ॥

धर्म धुरंधर सेवतु हे गुन वृंद सुध्यावत जाहि पुरंदर ।
जाहि पुरंदर ध्यावतु ताहि सुथापहु पूजन को जिन मंदर ॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिन अत्रावतरअवतर संवौषट् आह्वानन

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिन-अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापन ॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतजिन अत्र मम संन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा ।

गीता छंद-

कलधौत वरन उतंग कुल गिरि गंग चंग सुवार है ।
भरि कनक झारी धार ढारी जनम मरन निवार है ॥
वर दीप पुष्कर मेरुमंदर पूर्व अति छवि छाजई ।
तसु भरततीत जिनेश पूजत सकल भौ भै भाजई ॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतजिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।

वरमलय चंदन कदलिनंदन सुजलसंग घशात है ।
तुम चरन पुष्कर पूजते भवताप तुरति नशात है ॥वर०॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चंदनं निर्वपामि ॥२॥

शित शालि दुति उजियाल हीर हिमाल ते अति सोहनों।
तसु पुंज परम वियुजते सुख भुंजते मनमोहनों ॥वर द्वीप०॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यस्तंदुलं निर्वपामि ॥३॥

पुष्कर कदंब कुरंड केतक सुमन सुमन समान है।
तुव चरन पुष्कर पूजतें प्रभु नशत मनमथ वान है ॥वर०॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥४॥

पक्वान सुरस सवार सुवरन थार भर कर में लिया।
तासों समच्चत चरन जुग दुख दोष कों पानी दिया ॥वर०॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ॥ ५ ॥

दुति दीप दिपत दिगंतरा ले सकल घटपट भास है।
तासों उतारत आरती जिनपर प्रबोध प्रकाश है ॥वरद्वीप०॥

ॐ ह्रीं मदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीप निर्वपामि ॥६॥

दशगंध खेय हुताश माही मोद उर धरि संत हे।
वसु करम भरम जरंत ताको धूम घूम उडंत हे ॥वरद्वी०॥

ॐ ह्रीं मदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

ऋतु जनित फल कलरहित सुंदर पक्व मिष्ट मनोगता।
तासों समरचत चरनजुग वांछित भविक सुख भोगता ॥व०॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥

जल फल विमल वसुदरव को शुभ अरघ थार विषैं करों।
कर जोरि जुग तुम चरन चरचत तुरित भौसागर तरों।
वर दीप पुष्कर मेरु मंदर पूर्व अति छवि छाजई।
तसु भरत तीत जिनेस पूजत सकल भौ भै भाजई ॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामि ॥९॥

छंद तामरस तथा नाराच ।

तीर्थस्वामी सेइये सदैव शर्म वेइये,
कर्म भर्मनाशि शुद्ध पर्म धर्म लेइये ॥
सुपुष्करार्ध मंदराचले सुभर्त खेत है,
पूजिये अतीत देव भुक्त मुक्त देत है ॥१३॥
ॐ ह्री तीर्थस्वामिने अर्घं निर्वपामि ॥१३॥
धर्म धीश पर्म धर्मको प्रकाश कर्त हैं,
धर्मचंद नंदकौ पुनीत पुन्य भर्त हैं ॥पु०॥
ॐ ह्री धर्माधीशाय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥
क्षमा धरी अधीश धारणेश सीस नावहीं,
पुनीत ध्यान धारिके अमीत शर्म पावही ॥पु०॥
ॐ ह्रीं धरणेशाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

प्रभाव जासु लोक में प्रसिद्धसिद्धदाय है,
नमों प्रभाव देव जो विशुद्धबुद्ध पाय है ।।पु०।।
ॐ ह्रीं प्रभावायऽर्घं निर्वपामि ।।१६।।

अनादि देव ध्याइये निशंकितंग पाइये,
अनादि शुद्ध बुद्ध रिद्ध सिद्ध को उपाइये ।।पुष्करार्ध।।
ॐ ह्रीं अनादिदेवाय अर्घं निर्वपामि ।।१७।।

नमों अनादि सुप्रभं विषादवादवर्जितं,
निकांछितंग दायकं कलंक संत तर्जितं ।।पुष्कारर्ध।।
ॐ ह्रीं अनादि प्रभायऽर्घं निर्वपामि ।।१८।।

सर्व तीर्थनाथकूं सदैव माथ नाइये,
ग्लान भाव नासि शुद्धभावना लहाइये ।।पु०।।
ॐ ह्रीं सर्वतीर्थाय अर्घं निर्वपामि ।।१९।।

निरूपमाय श्रीजिनाय ऊपमा अतीत हैं ।
अमूढ़ भाव देत हैं कलेश सो वितीत हैं ॥पु०॥
ॐ ह्रीं निरूपमाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

कुमार मार वर्जितं सुभव्यवर्ग सर्जितं ।
सु सोपगूहनांग देत अब्द शब्द गर्जित ॥पु०॥
ॐ ह्रीं कुमाराय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

विहार गेह देवने त्रिलोक वस्तुकों लखा,
जु धर्मसों डिगे तिनें सुधर्म में थिरा रखा ॥पु०॥
ॐ ह्रीं विहारग्रहाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

धारणे श्वरेशकों सुरेशवृंद वंदते,
वातसल्य अंग पाय पापकों निकंदते ॥पु०॥
ॐ ह्रीं धारणेश्वराय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

विकाश देवने समस्त वस्तुकों विकाशियौ,
सुमार्ग्ग की प्रभावना दिखाय पाप नाशियौ ॥
सुपष्कराद्धं मंदिराचले सुभर्त खेत है,
सुपूजिये अतीत देव भुक्त मुक्त देत है ॥२४॥

ॐ ह्रीं विकाशाय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

छंद सुंदरी तथा द्रुतविलंबित—

जल फलादि मिलाय मनोहरं । अरघ पूरन कीन सुभोहरं ।
जजत पुष्करमंदिर भर्त है। जिन अतीत महासुख कर्त हैं ॥२५॥

अथ जयमाल ।

घत्ता–जै केवल चंदा उदय अमंदा आनंदकंदा निरदंदा ।
कृतभविक कमोदं परमप्रमोदं ज्ञानमहोदं सुखवृंदा ॥१॥

पद्धड़ी छद ।

जै मदनकदन मदनेंद्र देव, मूरति स्वामी कृत सुख स्वमेव ।
नीराग स्वामी विनु रागदोष, जै जै प्रलवित जगत्तपोष ॥२॥
पृथ्वीपति मो भव उदधि तार, चारित निधि कुमति कलेश टार।
अपराजित प्रभु पद परम देह, जै जै सुबोध सुधि वेग लेह ॥३॥
वुद्धेश करे कमला सुधाम, वैतालिक जिन पद को प्रनाम ।
जै जै त्रिमुष्ट वर इष्ट देत, मुनि बोधक जिन भवसिन्धु सेत ॥४॥
तीरथ स्वामी मेटत कलेस, जै धर्म शीश सेवत सुरेश ।
धरनेश नमत धरनेश शीश, प्रभवेश परमपावन जगीश ॥५॥
जै जै अनादजिन गुन समुद्र, जै जै अनादि प्रभ नमत रुद्र ।
जै सर्वतीर्थ त्रिभुवन पुनीत, निरूपम अनुपम गुन जगत मीत ॥६॥
श्रीजिनकुमार प्रत्यूह खंड, जै जै विहार ग्रह सुख उमंड ।
धरणेश्वर जगदाधार पर्म, जै जै विकासजुत पर्म शर्म ॥७॥
ए तीत जिनेसुर भरत थान, गिर मंदर पुष्करदीप जान ।

चौथे गुन सात प्रकृत विनाश, सातैं त्रय नौ छतीस नाश ॥८॥
दशयेक द्वादशैं सोल चूर, ऐ त्रेसट है केवल प्रपूर ।
चौदहे वहत्तर तेर हान, सिव थान वसे करुना निधान ॥९॥
तुम गुन गावत सुर असुरराय, नाचत ताथेइ थेइ पग चलाय ।
द्रिमि द्रिमि धिधि तवलां मुरजनाद, संसाग्रदि मांरगी मुरपुरतवाद
पगनूपुर झननननननाय, कटकिं किनि किनिनिनिनिनि सुहाय ।
बहु हाव भाव रसको वताय, तननननन तनन तान गाय ॥११॥
पट पटपट पाटह नाद मिष्ट, दुंदुभि वीनादिक साज सिष्ट ।
सजि साज भगत तुव करत देव, निज जनम सफल करते सुमेव १२
तुम धन्य अमल गुनगन निधान, भवसागर तारन तरन जान ।
हम शरन गही मन वचन काय मन वांछित सुख द्यो हे जिनाय १३
घता—जै जनप्रनरक्षक अरिअहितक्षक, वस्तुविचक्षक दक्षपतौ ।
सेवत सुर जक्षक लखि शिवगच्छक जै गुन कक्षक स्वच्छमती
ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतजिनसमूहेभ्यो महार्घं निर्वपामि ।

दोहा—पुष्कर मंदर भरत के, तीत जिनंद दयाल।
जो पूजे सो सकल सुख लहे भविक गुनमाल॥

इत्याशीर्वाद।

इति मंदिराचलभरतातीत चौबीसीपूजा समाप्ता।

अथ भावी चौबीसी पूजा प्रारभ्यते।

छंदचित्र पवर्तवध बाईसा।

आय सही वे हरे अति आरति इंद शुने तिहितें जु सया।
हो इत थापत मंदर के परतच्छ सु भर्त भविष्य तया॥
मर्म विनाशक आतम भाशक भव्यजीव कंहं शर्म दया।
आय सेव तिथु हो पमजी सु जीभव हो श्रुति सेसय आ॥

ॐ ह्रीं मदरमेरुभर्त भावी जिन अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् अह्वानन
ॐ ह्रीं मंदरमेरुभर्त भावी जिन अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभर्त भावी जिन अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् स्वाहाः ।

आ
घ
स
ह्रा वे ह
रैं अ ति आ र
ति ह द धु ने ति हि
तैं जु स या ह्रां इ त था प
त मं द र के प र त छ स्तु भ
र्त भ वि व्य त या भ मं वि ना श क श्रा
त म भा श क भ व्य र्जी व कॅ हॅ श र्म द या
सु

सुदगी तथा द्रुतविलंबित छंद—

सुर नदी जल उज्जल पावनो, त्रिविध कर्मकलंक नशावनों।
त्रितिय दीप सु मंदर जानिये, भरत भाविय पूजन ठानिये ॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरु भरत भावी जिन जन्म जरामृत्यु विनाशाय जल।

कदलिनंदन चंदन सो घसे। जजत ही भवदंदनकों नसे। त्रि०

ॐ ह्रीं मंदरमेरु भरतभावि जिन ससारतापविनाशाय चदनं निर्वपामि ॥२

विमल मंदुल तंदुल आनिये। धरत पुंज सवे दुख हानिये। त्रि०

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतभावी जिनेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये तंदुल निर्वपामि ॥३॥

सुमन सौरभिरंग सोहावनो। जजत शूल समस्त नशावनों। त्रि०

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतभावि जिनेंद्रेभ्यःपुष्प निर्वपामि ॥४॥

शशि सुधासम नेवज लै धरा, जजि पदांबुज रोग क्षुधा हरा। त्रि०

ॐ ह्रीं मंदरमेरु भरत भाविजिनेभ्यश्चरुं निर्वपामि ॥५॥

तमविनाशक दीपक जोत है, करन आरति ज्ञान उदोत है॥ त्रि०

ॐ ह्रीं मंदरमेरु भरत भाविजिनेभ्यो दीप निर्वपामि ॥६॥

अगर चंदन आदिक धूप है, जजत होत सुगंध अनूप है॥ त्रि०

ॐ ह्री मंदरमेरु भरत भाविजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

रित फलोत्तम पक्व रशाल है। जजत आनंद होत विशाल है त्रि०

ॐ ह्री मदरमेरु भरत भाविजिनेभ्य. फलं निर्वपामि ॥८॥

जल फलादिक को सज अर्घ है, जजत पावत थान अनर्घ है।

त्रितिय दीप सुमंदर जानिये, भरत भाविय पूजन ठानिये ॥

ॐ ह्री मंदरमेरु भरत भाविजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामि ॥९॥

अथ प्रत्येकार्घ

छद नंदीश्वराष्टक की

क्षित क्षिमापती गुनवृंद देव वसंत धुजं।

गिर मंदर भरत सुछंद भाविय देव पुजं ॥१॥

ॐ ह्री वसतध्वजाय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

वृषमार्द्दव गुनमनिमाल श्रीत्रिजयंत सही ।
गिर मंदर भरत विशाल भाविय सेवतही ॥२॥

ॐ ह्रीं त्रिजयताय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

वृष आज्र्जव आर्जव एव श्रीस्त्रिस्थंभ कहा ।
जजि मंदिर भरत सुदेव भाविय नाथ महा ॥३॥

ॐ ह्रीं स्त्रिस्थंभाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

वचसत्य रतनके खान खान परम ब्रह्म जिनं ।
गिर मंदर भरत सुथान भाविय सेय तिनं ॥४॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

जुग शौच धरमके मूलनाथ अवालीशं ।
जजिमंदर भरत अतूल भाविय नुतशीशं ॥५॥

ॐ ह्रीं अवालीशाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

जुगसम दमजम जुत देव नाथ प्रवादिक हैं ।
जजिमंदर भरत लखेव भावियतादिक हैं ॥६॥

ॐ ह्रीं प्रवादिकाय अर्घ निर्वपामि ॥६॥

दो विधि तपसागर चंद भूमानंद जिनं ।
गिर मंदर भरत अफंद भावि जजामि तिनं ॥७॥

ॐ ह्रीं भूमानंदाय अर्घ निर्वपामि ॥७॥

जुगत्याग धरमके मूल त्रिनयन जिन जानों ।
गिर मंदर भरत अतूल भावित भजि ध्यानों ॥८॥

ॐ ह्रीं त्रिनयनाय अर्घ निर्वपामि ॥८॥

परिगहग्रह त्याग जिनेश श्रीविद्वेष जती ।
गिर मंदर भरत भवेश पूजत शुद्धमती ॥९॥

ॐ ह्रीं विद्वेषाय अर्घ निर्वपामि ॥९॥

परमातम प्रशंग महेश ब्रह्माचार धरा ।

गिर मंदर भरत जिनेश भाविय सेवकरा ॥१०॥

ॐ ह्रीं परमात्मप्रशंगाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

भूमिंद्र चंद्र नागिंद्र भूमिंद्रेश जपैं ।

गिर मंदर भरत गनिंद भाविय पाप खपैं ॥११॥

ॐ ह्रीं भूमिंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

गोपाल लांगली सेय गोस्वामि हि सदा ।

गिर मंदर भरत भवेय पूजों ताहिअदा ॥१२॥

ॐ ह्रीं गोस्वामिनेऽर्घं निर्वपामि ॥१२॥

कल्यान प्रकाशित स्वामि पंच उछाह धरें ।

गिर मंदर भरत यजामि भाविय विघ्नहरें ॥१३॥

ॐ ह्रीं कल्याणप्रकाशिताय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

दुति मंडित मंडल ईश मंडलनाथ नमें ।

गिर मंदर भरत भवीश पूजत पाप दमें ॥१४॥

ह्रीं मंडलेशाय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

चौपाई-लक्ष्मी जासु पदांबु वसै है, देव महा वसवेस वहै है।
पुष्कर पूरव मंदर जानों भाविय भर्त जजों धरिध्यानों॥ १५॥

ॐ ह्रीं महावसवेऽर्घं निर्वपामि ॥१५॥

जनम स्नान सुमेर पवित्रं,तेज उदै जिनसों जगमित्रं ॥पु० १६

ॐ ह्रीं तेजउदयाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

चारित धारि हरे सव कर्मं, दिव्य जोतिपी जिनगुनपर्मं॥पु० १७

ॐ ह्रीं दिव्यज्योतिपे अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

घाति विघाति प्रवोध धरैया, जेति प्रवोध कुवोध हरैया॥पु० १८

ॐ ह्रीं प्रवोधिताय निर्वपामि ॥१८॥

मुक्तसती आलिंगन होरे, श्री अभयंक नमों जगतारे ॥पु० १९

ॐ ह्रीं अभयंकाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

मुक्तिया जु कटाक्ष चलावैं, जो परसो प्रमितेश कहावैं॥पु० २०

ॐ ही प्रमिताय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

दिव्य स्फारक श्रीजिनदेवा, चार प्रकार करैं सुरसेवा ॥ पु० २१

ॐ ह्रीं दिव्यस्फारकाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

जे व्रतव्रात अघात धरैया । ते व्रत स्वामी दोष हरैया ॥ पु०

ॐ ह्रीं व्रतस्वामिनेऽर्घं निर्वपामि ॥२२॥

जो निधि दुर्लभ है जगमाहीं, सो निधिनाथ जपैं निपजाही॥

ॐ ह्रीं निधिनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

कर्म कलंक निशंक खिपाये, देव निकर्मक नाम कहाये ।
पुष्कर पूरब मंदर जानों, भाविय भर्त जजों धरि ध्यानों ॥२४॥

ॐ ह्रीं निकर्मकाय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

दोहा—श्रीपुष्कर पूरब दिशा भरत भविष्यत देव ।
पूजों पूरन अर्घ सों विघनमिटै स्वयमेव ॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरु भरत चतुर्विंशतिजिनेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामि ।

अथ जयमाला ।

घत्ता—जै जै जनरक्षक शिवमग वक्षक चारितकक्षक स्वक्षवरा ।

जै लक्षअलक्षक सर्वविलक्षक दक्षक पक्षक रक्षकरा ॥

छंद नैमालिनी—

धरम ध्वज वशात धुज जैजै , त्रिजयंते नमों अरुज जैजै ।
त्रिस्थंभन भवभंजन जै जै, परम ब्रह्म मुनि रंजन जै जै ॥२॥
अचालीश छयालिशगुन जै जै, श्री प्रवादिक परमधुन जै जै ।
भूमानंद कंद जस जै जै, त्रिनयन त्रिजग लसत वस जै जै ॥३॥
विद्वेपिक निरसगिक जै जै, परमातम परसगिक जै जै ।
भूमिंदक शतेन्द्र नुत जै जै, गोस्वामी गनेन्द्र नुत जै जै ॥४॥
शुभ कल्यान प्रकाशित जै जै, मंडल आतम भासित जै जै ।
महावसव वासवनुत जै जै, उदै तेज समरस जुत जै जै ॥५॥
दिव्य जोति चतुरानन जै जै, श्रीप्रवोध भवभानन जै जै ।
अभैअंक जगजानन जै जै, प्रमित परम पहिचानन जै जै ॥६॥
दिस्करक सुख सागर जै जै, व्रत स्वामी नुत नागर जै जै ।
श्रीनिधान निधि दायक जै जै, जिन निःकर्म सहायक जै जै ॥७॥

अथाष्टकं ।

लक्ष्मीधरा छंद—

जान्हवी नीरसों हेमझारी भरों, धार दे तीन तीनों विथाकों हरों
पुष्कराद्धं गिरे मंदरैरावते, वर्तमानं जजे शर्मकों पावते ॥

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो जलं निर्वपामि स्वाहा ।

केदलीनंदनौ चंदनं वावना, पूजते तासुसों शांतिता पावना । पु०

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चंदनं निर्वपामि ।

देवजीरादिसे शालि शोभामई पुंजकों धारते शर्म साता लई । पु०

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यस्तंदुलं निर्वपामि ।

पुष्करं पुष्कराद्या धरें पुष्करं, कामनाशै सही पुष्करं दुष्करं पु०

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ।

नव्यगव्यादि नैवेद्यनी के किये, थार में धारते सुक्खसाता लिये पु०

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चरुं निर्वपामि ।

दीपसों हे प्रभू मैं करो आरती, ज्ञान उद्योतता दीजिये भारती । पु०

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीप निर्वपामि ।

अग्नि माही दशों गंध खेवो सही, अष्ट दुष्टैं जरैं धूमघूमे वही पु०

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ।

आम्र काम्रादि एलासु केला लये, पूजतैं विघ्नका आजु पानी दये

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फल निर्वपामि ।

नीर गंधादि ले अर्घ कीनों वरा, पूजतैं कर्मकंतारसों निस्तरा

पुष्करार्द्धे गिरे मंदरैरावते, वर्तमानं जजैं शर्मको पावते ॥

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामि ।

अथ प्रत्येकार्घ ।

द्रुति मध्यक छंद—

शंकर शंकरते जगमाही, धर्म उदोतक सो निज आही ।

---

१ जन्म मरण जरा । २ भारती सरस्वती । ३ ज्ञानावरणादि । ४ कर्मरूपी जंगल ।

मंदर मेरु सु उत्तर जानों, वरततु है अयरावत थानों ॥१॥

ॐ ह्रीं शक्राय अर्घं निर्वपामि ।

कौनन कर्म हुताशनसे है, जिनवर अक्ष सुवाश कहे है। म०२

ॐ ह्रीं अक्षराशाय अर्घं निर्वपामि ।

सर्व उपाधि निवारि सुछदा। अनुभव मग्न सुनग्न जिनंदा। मं०

ॐ ह्रीं नग्नाय अर्घं निर्वपामि ।

नग्न सुआदि महातप धारी, अमल महा नगनाधिप भारी। मं०

ॐ ह्रीं नग्नाधिपाय अर्घं निर्वपामि ।

चौपाई–नष्ट किये पाखंड अनेक, नष्ट पखंड नमों शिरटेक ।

मंदर ऐरावत भगवान वरतत है पूजों धरि ध्यान ॥५॥

ॐ ह्रीं नष्ट पाखडाय अर्घ निर्वपामि ।

---

१ अग्नि ।

षोडशसुपन लखे जसु माय । स्वप्नबोधजिन सो सुखदाय मं०

ॐ ह्री स्वप्नप्रबोधाय अर्घं निर्वपामि॥६॥

द्वादशतप विधि निधि दातार । नमों तपोधन जिन अविकार मं०

ॐ ह्रीं तपोधनाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

पुष्पकांड खंडन दुखदंद । पुष्पकेतु मंडन सुखकंद ॥ मं० ॥

ॐ ह्रीं पुष्पकेतवेऽर्घं निर्वपामि ॥८॥

दशों धरम परकाशक स्वामी । धार्मिक जिन पदपदमनमामी । मं०

ॐ ह्रीं धार्मिकाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

चंद्रकेतु चंद्रानन सुष्ट, किल्विषहरत करत सुख पुष्ट ॥ मं० ॥

ॐ ह्रीं चंद्रकेतवे अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

वीते राग दोष समुदाय । सो निज वीत राग सुखदाय । मं०

ॐ ह्री वीतरागाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

महाजोति धारी धरमज्ञ । श्री अनुक्त जपैं उरतज्ञ ॥ मं० ॥

ॐ ह्रीं अनुरक्ताय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

आतम जोत उदोत करंत । उद्योतक निज शिवतियकंत मं०

ॐ ह्रीं उद्योतकाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

भविउर तिमिर करत चकचूर तमोपेक्ष जिन गुनगन पूर । मं०

ॐ ह्रीं तमोपेक्षाय अर्घं निर्वपामि॥१४॥

माधव मधुसेवें पदपद्म । श्री मधुनाथ देत शिव सद्म । मं०

ॐ ह्रीं मधुनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

चक्र गदाधर गनधर वृंद । श्रीमरु देव नमें सानंद । मं०

ॐ ह्रीं मरुदेवाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

शमदमजमजुत केवलभान श्रीदममाय जपों धरि ध्यान । मं०

ॐ ह्रीं दममाय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

वृषचक्री वृषकेत लशंत । वृषदायक वृषभेसुर संत । मं०

ॐ ह्रीं वृषभेसुराय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

पांडुशिलातन क्रांतिपवित्र। नमों शिलातन त्रिभुवनमित्र। मं०

ॐ ह्रीं शिलानाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

विश्वमाहि जिनसम नहिं नाथ। विश्वनाथ सो हैं शिवसाथ ।मं०

ॐ ह्रीं विश्वनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

मोतीदाम छद ।

गनेंद्र सुरेंद्र नरेंद्र खगेंद्र जपैं नित चित्त महेंद्र जिनेन्द्र ।
सुपुष्कर पूरब मंदर जान । जजों अयरावत संत महान ॥

ॐ ह्रीं महेन्द्राय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

जगज्जन आँनँद अंबुधि चंद। अनंत सुखाकर नंद जिनंद ।सु०

ॐ ह्रीं नंदाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

शरीर प्रभातम भंजन जास। तमोनिभ नाथ महा जशरास । सु०

ॐ ह्रीं तमोनिभाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

सुब्रह्म विचारन तारन ब्रह्म । नमों जिन ब्रह्म सुधारन ब्रह्म ॥
सुपुष्कर मंदर पूरव जान । जजों अयरावत संत महान ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मधारणाय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

शोरठा–आठों दरव बनाय आठों अंग नमायकें ।
जजों हरप उरलाय चदु गिरि ऐरावत जिनं ॥

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामि ।

अथ जयमाला ।

घत्ता–तुव सुजशविशाला गुन मनिमाला परमरशाला सुकुमाला ।
नर सुरगपताला पति तिरकाला कृतनुतमाला सुखसाला ॥

छद कामिनी मोहन तथा आर्या शखला ।

सारसुखकारसंकर जिनसुरमह॥स्वच्छअक्षीणपदअत्तवासी लह॥
मग्न आनंद में नग्न जिननायकं भग्नसंताप नग्नाधिपं लायकं ॥

आर्या—पाखंड मुंड खडन नष्ट पाखंड देवअरि दंडन।
श्रीस्वप्नबोध मडन नमों नमों मेंट मेंट भवहंडन ॥२॥

कामिनीमोहन छंद—

मेटि भवहंडनं तपोधन मुक्त है पुष्पकेतुकजिनं परम सुख जुक्त है।
आतमोद्धरन धरमेशस्वामी कहा चंद्रकेतू नमों होत साता महा॥
आर्या-साता महाउपाई तजि रागै वीतराग जिनराई।
अनुरक्त मुक्तदाई ज्ञानानंद नमों जिनराई ॥४॥

कामिनी मोहन छंद—

नायशिर इंद चंदंति उद्योतित जे तमोपेक्षितं सारसुख जो जितं॥
नमों मधुनाथशिवसाधनिरदोपहै जैति मरुदेव सुखदेव भवि पोपहैं॥
आर्या छद-पोपहि शमदम सुष्ट श्रीदममाय जिनेन्द्र गुनपुष्टं।
जै वृषभेश अदुष्ट लोचकृतं केशपंचकर मुष्टं ॥६॥

कामिनी मोहन छंद—

पंचकरमुष्ट मह शिलातनतपधरे जैति ।जिन त्रिभ्वनाथं शकल भैहरै॥

नमत शतइंद मोहेन्द पद पकजं। नद आनद दाता जगत रजन॥
आर्या छंद–रंजन जन भव भंजन तमोनिधी दोष दुष्ट दुखगंजन।
श्रीव्रतधार भञ्जन नमों नमों ज्ञान नैनन के अंजन॥
अंजनं मोखमगगामिके हैं सही,जैति चऊबीसजगराज सुखकेमाही
पुष्करे मंदिरैरावते वर्त ही,पंचकल्यानपाति ध्याय भवि ततंही॥९॥
आर्या–भवततंहि लखि देवें सुर ध्यावैं नाय भाल पद सेवें।
नाचें चहु गति लेवें साजैं वाजे रसाल वहु भेवे॥१०॥

कामिनी मोहन छंद—

साज बाजैं रसालैं सुवहु भेवजी सम्रादिसंसाम्रादिसारंगी धुनि लेवजी
झिनिनिनिनि झिनिनिनिनि झलरी बाजई।
धिकट धुनि धथप पुनि द्रिम मुरज साजई॥
आर्या–बाजई वीनानाद तननननन तान लेत अहलादं।
सनननाट अवादं कृत सुरसुर साल ताल तलपादं॥१२॥

कामिनी मोहन—

तालतलमाद वादिते जो बाजई,तासु उपमान कछु जगत मे छाजई॥

धन्य जिनचंद गुनवृंदपदवंदही, गायजस आज हम लेत आनंद ही॥

घत्ता—जै मनमथमंथक नित शिव पंथक कृतश्रुत ग्रंथक ग्रंथपती।
जै करुना मंदर जंजत पुरंदर धरम धुरंधर शुद्धमती ॥१४॥

रथोद्धता छंद—

पुष्करार्द्धवर पुव्व में कहा, मंदिराद्रि अयरावते महा।
वर्तमान पद जो जजै सही, वांछितार्थ पदलेत सो सही ॥१५॥

इत्याशीर्वाद।

इति मंदिराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिपूजा समाप्ता।

अथपुष्करार्द्धद्वीपेमंदिराचलैरावतातीत पूजाप्रारभ्यते

स्थापना धनुपबंध—

दोहा—चतुरथ गिरिवर उत्तरैं जिन जे तीत प्रमान।
तिनहि सुथापतु भावसों उपजै पदनिरवान॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपेमंदराचलैरावतातीतजिनअत्रावतरअवतरसंवौषट् आह्वानन
ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपेमंदराचलैरावतातीतजिनअत्रतिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन
ॐह्रींपुष्करार्द्धद्वीपेमंदराचलैरावतातीतजिनअत्रममसंनिहितोभव भव वषट्स॰।

अथाष्टक तालजत्त होली की चाल में

गिर मंदिर उत्तरथान पूजों तीतकों ॥ गिर० ॥ टेक ॥
पदमद्रह गतनीर सार शुभ कनक कुंभ भरिआन ।
धार करत तुम चरनन आगे करम कलंक नशान ॥ पूजों० ॥१॥
ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपे मंदराचलैरावतातीतजिनेभ्यः जलं निर्वपामि ।

बावन चंदन कदली नंदन केशर संग घशान ।
भवतपहरन चरन परि पूजत विघन तपतकी हान ॥पूजों०॥
ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपमंदराचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो गंध निर्वपामि ।

शालि अखंडित शौरभि मंडित शशि सम द्युति दमकान ।
अषै संपदा कारन पूजों हे जिनवर धरि धान ॥ पूजों० ॥३॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमदराचलैरावतातीतजिनेभ्यस्तंदुलं निर्वपामि ।

सुमन सुगंधित प्राशुक लीनों गुंजत अलिगन आन।
पूजत चरन कमल जिनवर तुव मनमथ वान नशांन॥पूजों०॥३॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमदराचलैरावतातीतजिनेभ्य. पुष्प निर्वपामि ॥

घेवर वावर फेनी श्रेनी सौरभ सरस महान ।
क्षुधा रोग निरवारन कारन जजों निराकुल दान ॥ पूजों० ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमदराचलैरावतातीतजिनेभ्यश्चरु निर्वपामि ॥

मनिमय दीप उदोत होतवर हे जिन भ्रमतमभान ।
तासों आरति करत जगत गुरु उपजे आतम ज्ञान ॥पूजों०॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमदराचलैरावतातीतजिनेभ्य' दीपं निर्वपामि ॥

अगर तगर कृष्णागर चंदन धूप सुगंध अमान ।
खेवत धूमकेतु माँहि ताको जरत दुरित दुख दान ॥पूजों०॥

ओं ह्री पुष्करार्धद्वीपमंदराचलैरावतातीत जिनेभ्यो धूप निर्वपामि ।

श्रीफल पक्व मनोहर पावन । मधुर रसीले आन ।
पूजत मनवांछित परिपूजत अनुक्रम अनुपम थान । पूजों०

ॐ ह्रीं पष्करार्धद्वीपमंदराचलैरावतातीतजिनेभ्यः फल निर्वपामि ।

जलफल आदि दरव वसु साजे अरघ ललित वरदान ।
नाचिराचि शिरनाय समरचत मिलत विमल सुखथान । पूजों०॥

ओं ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमंदराचलैरावतातीतजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामि ।

अथ प्रत्येकार्घ ।

लोलतरंग छन्द—

जे उपगारिय वैन बखानैं । ते कृतनाथ नमों धर ध्यानैं ।
पुष्कर मंदिर उत्तर मानों । तीत जजों अईरावत थानों ॥१॥

ॐ ह्री कृतनाथाय अर्घं निर्वपामि ।

इष्ट विसिष्ट प्रविष्ट करैं हैं । श्री उपविष्ट अरिष्ट हरैंहैं ॥पु०॥

ॐ ह्रीं उपविष्टाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

मोहमहा तमभंजन भानं । आदित देवनमों गुनखानं ॥ पु० ॥

ॐ ह्रीं आदितदेवाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

अष्टम भूमि सुथानकवासी।श्रीअसथान नमों अविनासी ॥पु०॥

ॐ ह्रीं अस्थानिकाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

चन्द्रसमान प्रमोद प्रकाशी । देव प्रचंद नमों सुखरासी ॥पु०॥

ॐ ह्रीं प्रचंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

वेणूके जस गावत देवा । वेनुक गावत हैं वहुभेवा ॥ पु० ॥

ॐ ह्रीं वेणुकाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

कोटिकभानु छिपे छविदेखें। नाथत्रिभानु विभूतिविशेखें ॥पु०॥

ॐ ह्रीं त्रिभानवे अर्घं निर्वपामि ॥७॥

ब्रह्मसु ब्रह्म जिनेसुर स्वामी । ब्रह्मविकाशक ब्रह्म नमामी॥पु०

ॐ ह्रीं ब्रह्मब्रह्माय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

वज्रशरीर लसे जसु आदी वज्र सुअंग नमों निरवादी ॥पु०॥
ॐ ह्रीं वज्रागाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

वेरविरोध निरोधन हारे, श्रीअविरोधन है अविकारे । पुष्कर० ॥
ॐ ह्रीं अविरोधनाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

पापप्रकृत्त सवे चकचूरे, जैति अपाप जिनाधिप पूरे ॥ पु० ॥
ॐ ह्रीं अपापाय अर्घनिर्वपामि ॥११॥

लोक अलोक लखे जसरासी लोक सुउत्तर ग्यान प्रकाशी॥पु०॥
ॐ ह्रीं लोकोत्तराय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

इंद्रवज्रा छंद—

जलाधिशेपं जिनराज स्वामी जगत्रयी ईशपदं नमामी ।
सुपुष्करे मंदर मेरु सोहै । ऐरावतं तीत जजामि जोहै ॥१३॥
ॐ ह्रीं जलाधिशेपाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

विद्योदितु द्योतित बोधलोके। विद्यापती सेवत देय धोके ॥सु०॥

ॐ ह्री विद्योतिताय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

सुमेरसे गौर सुमेरनाथ भवाब्धि में डूबत थाभि हाथ ॥सु०॥

ॐ ह्रीं सुमेरवे अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

श्रीभावितं भव्य समस्त सेवें। आनंद देवें भवनाव खेवें ॥सु०॥

ॐ ह्रीं भाविताय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

समस्त पे वच्छल लच्छकारी। नमों नमों वच्छल स्वच्छधारी॥सु०

ॐ ह्रीं वच्छलाय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

अतिंद्रियज्ञान प्रकाश कीनों। नमों जिनालं जिन ध्यानभीनों॥सु०

ॐ ह्रीं जिनालयेऽर्घं निर्वपामि ॥१८॥

पापं सरोजं दहने तुषारं। नमों तुषारं जिन शर्मकारं॥सु०॥

ॐ ह्रीं तुषाराय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

निर्विघ्नदाता भुवनेस स्वामी। आनंद वारानिध चंद्रनामी ॥सु०॥

ॐ ह्रीं भुवनेशाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

कंदर्प सर्प्पापहरं खगेशं सुकामस्वामी प्रणामें जिनेशं ॥सु०॥

ॐ ह्रीं सुकामाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

आनंदकंदं जिनचंद वंदं देवाधिदेवं प्रणामें अमंदं ॥ सु० ॥

ॐ ह्रीं देवाधिदेवाय अर्घ निर्वपामि ॥२२॥

आकारिमं देवपरं पवित्रं निरूपमं रूप अरूपचित्रं ॥ सु० ॥

ॐ ह्रीं आकारिमाय अर्घ निर्वपामि ॥२३॥

विनीतनें नीत सबै बतायो विनीत सेयें निज नीत पायौ ॥
सुपुष्करें मंदरमेर सोहे ऐरावते तीत जजामि जोहै ॥२४॥

ॐ ह्रीं विनीताय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

वसततिलका छद—

जै तीततीर्थपति मंदरपुष्करार्धे। ऐरावते परमआतम धर्मसाधे।

ताकों समर्चंत सुपूरन अर्घधारी पावै समस्तसुख सो उभयप्रकारी॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपमंदराचलैरावततातीतजिनेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामि ।

अथ जयमाला ।

घत्ता—जे जिन मलवर्जित अरिकरितर्जिति घनमिवगर्जित वैनवरं

भवि जनमनसर्जित सुमति उपर्जित विघनविवर्जित चैनकरं॥

३० मात्रा का छंद—

वंदामो कृत नंदा मदा चंदासे आनंदा दान ।

इष्टं शिष्टं नष्टानिष्टं श्रीउपविष्टं पुष्टादान ॥

शुद्धं बुद्धं हैं निःक्रुद्धं देवादित्यं सुष्टामान ।

स्वक्षक्षेमा हृद्दा वृद्दा स्थानीकं संरम्भोमान ॥२॥

त्रिभ्वव्यापि हैं अव्यापी प्राप्तदापी लक्ष्मीमान ।

शोभाधारी जे भौतारी श्रीवेणांक जै जै जै वान ।

मार्तंडा भास्वंडं मह चंड जोत श्रीश्रीमान् ।

क्षमक्षमा क्षमऽपापी क्षमापेक्षी क्षमध्यान ॥३॥
वज्राधीशं कृतनुतशीसं श्रीवज्रांगा वज्रांगान ।
ध्याता ध्येयं ग्याता गेयं अवबोधनजुत शर्सैहान ।
पापात्यक्ता आपाजुक्ता भुक्ता मुक्ता शंमौंधान ।
लोकालोक सर्वविलोकं लोकोत्तर श्रीशोभावान ॥४॥
हेयादेय समुद्र विमंथन ग्रंथ निग्रंथ जलाधिपवान ।
अद्वितियद्भुत ज्ञानोद्योत विद्योत सद्विद्यादान ।
ध्यानी ग्यानी हैं निःकंपी मानो मेरु सुमेरु समान ।
मानी भावैं भावित के गुन धीरज वीरज सुकृत खान ॥५॥
निच्छल स्वच्छल सत सुवच्छल वच्छल लच्छित लच्छविधान
चक्री शक्रधरें वृषचक्र जिनाले देव नमैं हैं आन ।
सातासाता जुग्मविमुक्ता जुक्तुपारं मुक्तस्थान ।
तातातीनां लोकतने हैं श्रीभुनेसुर कृतकल्यान ॥६॥
जीवाजीवादे प्रत्यक्षं वक्तेलक्ष सुकामजितान ।

धर्माधर्म विशेष विकाशे श्रीदेवाधिमुदेवमहान् ॥
कर्त्ताकर्ता मुक्ता मुक्ता आकारिक कीनों विख्यान् ।
नीतानीत विनीत बताये नीतमती माने है आन ॥७॥

जे चौबीसा पुष्करमंदर ऐरावर्ते हैं तातान् ।
ताकों इंदैं चंद गनिंदैं, वंदैं हैं नागिंद आन ।
ताकों सेवैं हैं जे प्रानी ते होवैं श्रीशोभावान्
पूजाठानै शुनउर आनै "वृंद" नरिंद धरै हैं ध्यान ॥८॥

घत्ता—जे श्रीजिनकुंजर हरि भवपिंजर कीरति गुंज रही जगमें
जे मुक्तधरापति जुक्तमहामति मंगलदायक श्यो मगमें ॥
ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपमंदरगनऐरावतातीतजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि ।

अथाशीर्वाद । अडिल्लछंद–

पुष्करमंदरऐरावत जिन तीत जी ।
पूजत सुरनर नारि तिन्हे धरि प्रीतजी ।

जो सेवै मनलाय हरष उमगायजी ।
सो सुरनर सुख भोगि परमपददायजी ।

इति श्रीपुष्करार्धं पूर्वमंदराचलैरावत २४ पुजा संपूर्णा ।



अथ पुष्करार्द्धं मंदराचलैरावते भाविपूजा प्रारम्भ्यते।

कमलवद्ध चित्र—

दोहा—चवथवग्नि वर वतावते वंनै वरावतवनाव
भावदेव भव भाव सव आव आव सिवराव ॥

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविजिन अत्रावतरअवतर सवौषट् आह्वानन ।
ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापन ।
ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविजिन अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहाः

अथाष्टकम् ।

(चाल नंदीश्वराष्टक भाषाधानतरायजी कृततालजत्तादिमें बने है)

यह सलिल कलिल मलहार झारी माही भरा ।
पदपंकज पूजत सार मेटत जनम जरा ॥
वर पुष्कर मंदर मेर उत्तर माहि वसे ।
ऐरावत भावत हेर पूजत पाप नसे ॥१॥
ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविजिनेभ्यो जन्मादिविनाशाय जलं निर्वपामि ।
घसि चंदन केसर सार सौरभि भृंग भरा ।
तुम चरन कमल परवार भौ आताप हरा ।वर०॥२॥
ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चंदनं निर्वपामि ।
हिम हीर शशीसम सेत तंदुल मंदुल से ।
तसु पुंज विपुंज धरेत वारिद दुःख नसै।वर०॥३॥
ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यस्तंदुलं निर्वपामि ।
यह काम महाजग शूल आपु निमूल किया ।

यातैं लेकर वर फूल पूजत खोल हिया।वर०॥४॥

ॐ ह्री मन्दराचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ।

जग रोगवली इक भूख दूपत सब प्रानी ।

ताको तुम नासि अरूप नेवज में आनी।वर०॥५॥

ॐ ह्रीं मन्दराचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ।

तुम ज्ञान प्रकाश जिनेश लोकालोक लखें ।

हम दीप चढ़ाय महेश आपा आप चखें।वर०॥६॥

ॐ ह्री मन्दराचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो दीपं निर्वपामि ।

तुम कर्म कलंक विनाश आतम शुद्ध भये ।

हम खेवत धूप सुवास नाचत कर्म चये।वर०॥७॥

ॐ ह्री मन्दराचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ।

तुम पाय अतिंद्रिय शर्म पर्म पुनीत फलं ।

फलसों पूजों तजि भर्म दीजो मोक्ष थलं। वर०॥८॥

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः फलं निर्वपामि ।

तुम आनँद कंद जिनंद सब दुख दंद हरे ।
हम अरघ लेय अभिनंद पूजत भक्त धरे ॥
वर पुष्कर मंदर मेर उत्तर माहि वसै ।
ऐरावत भावत हेर पूजत पाप नसै ॥९॥

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामि ।

अथ प्रत्येकार्घं ।

चौपाई छंद ।

विसद सुखद जस पूरन चंद । नमों जशोधर जगदानंद ।
पुष्कर पूरव मंदर मेर । जजों भाविष्यैरावत हेर ॥१॥

ॐ ह्रीं यशोधराय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

परम सुकृत पद दायक पर्म। सुकृतदेव कृत नितजिनधर्म।पु०॥
ॐ ह्री सुकृताय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

अभै घोषनाकृत जगजेन। अभैघोष जिन निजगुन देन।पु०॥
ॐ ह्री अभैघोपाय अर्घं निवपामि ॥३॥

दायक पद निर्वाण उदार। श्रीनिर्वाण नमों भवतार। पु० ॥
ॐ ह्री निर्वाणाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

शुद्ध सकलव्रत जिनके पास। सो व्रतवास भरत भविआश।पु०॥
ॐ ह्रीं व्रतवासाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

राजनिके राजा पदसेय। सो अतिराज राजपद देय। पु० ॥
ॐ ह्रीं अतिराजाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

ध्यान अश्व चढ़के शिवलीन नमों अश्वजिन परमप्रवीन। पु०॥
ॐ ह्री अश्वजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

अर्जुनवर्न विवर्जित मान,जै अर्जुन जिन गुनमनि खान।पु०।

ॐ ह्रीं अर्जुनजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

धरम सुधाधरतें मिय चखें, तपश्चंद्र सो चिद्गुन लखें ॥ पु० ॥

ॐ ह्रीं तपश्चंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

पंच परावर्तन चकचूर । शारीरिक जिन समता पूर ।पुष्कर०।

ॐ ह्रीं शारीरिकाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

मनवांछित पद देत मिलाय। नमों महेश्वर जिनके पाय ।पु०।

ॐ ह्रीं महेश्वराय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

सुंदर ग्रीव लखत द्रिगचैन । श्रीसुग्रीव नमों निरऐन ।पुष्कर०।

ॐ ह्रीं सुग्रीवाय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

दिढ़ प्रहारतें अरि खैकीन । दिढ़प्रहार समतारस भीन । पु० ।

ॐ ह्रीं दिढ़प्रहाराय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

दयानीत जग जस विख्यात दयानीत जिनवर वरगात ॥ पु०॥

ॐ ह्रीं दयानीताय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

पाडता छंद–जिन अंबरीख पद सेवों निरदोप निजातम वेवों ।
गिरि मंदर पूज रचावों अयरावत भारत भावों॥१५॥

ॐ ह्रीं अवरीपाय अर्घं निर्वपामि १५।

जश नारद तुंवर गावें । जिन तुंवर सों लय लावें ॥गिरि०॥

ॐ ह्रीं तुवराय अर्घं निर्वपामि॥ १६॥

विफलीकृत कामकलका । जिन सर्व शील जु अटका ॥ गि०॥

ॐ ह्रीं सर्वशीलाय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

जनमोच्छव सार धरें हैं । प्रतिजातक पाप हरेहैं । गिरि०॥

ॐ ह्रीं प्रतिजातकाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

जित इंद्रिय दिव्य भए हैं । सुअतिंद्रिय शर्म लए हैं । गि०॥

ॐ ह्रीं जितेंद्रियाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

तप आदिततें अति तेजा । तप आदित भवि शिवभेजा । गि०

ॐ ह्रीं तपादित्याय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

रतनत्रय क्रांत धेरं हैं। शिव रतनकीर्ण सुवेरं हैं। गिरि०॥
ॐ ह्रीं रतनकिरणाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

दिवसाधिप सेवत आई। प्रणमामि दिवेश सदाई ॥ गिरि०॥
ॐ ह्रीं दिवेशाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

शुभ लच्छन लच्छित गीता। जिन लांछित सो जग तीता॥गि०॥
ॐ ह्रीं लाछनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

निज शुद्ध प्रदेश करैया। सुप्रदेश कलेश हरैया।
गिरि मंदर पूज रचावों। अयरावत भावित भावों ॥२४॥
ॐ ह्रीं सुप्रदेशाय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

लोलतरंग छंद।

पूरन अर्घ बनाय पुनीतं। पूजत हौं जिनके नुत मीतं ॥
मंदर उत्तर भाविय सारं। वदत "वृंद" करो भवपारं ॥२५॥
ॐ ह्रीं मंदराचलैरावत भाविचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामि।

अथ जयमाला ।

घत्ता—जै चिदगुन दर्पन भविसंतर्पन शिवदिव अर्पन विघ्नहरा।
जै जै भगवंतं कृत भव अंतं अतुल अनंतं ज्ञानधरा ॥१॥

तोटक छंद—

प्रणमामि जशोधरसार जसी । कृत सुकृत सुकृत देव वसी ।
जय घोष अभै जिन शुद्धमती । निरवान नमों निर्दोष जती ॥२॥
व्रतवास सदा भवत्रास हरैं । अतिराज नमों सुखकंद करैं ॥
नित अश्वजिनेश विषाद हरैं । जिन अर्ज्जुन अर्ज्जुन कीर्ति करैं ३
चंद जिनद गनिंद भजे । सु सरीरिक पाय सतंद जजैं ।
र मेर महेश महा । पद ग्रीवक ग्रीवसु देत कहा ॥४॥
सु प्रहार दिढप्रहर । प्रणमामि दयानिन नीत धरं ॥
संवर अवर ईष गहा । जश गावत तुंवर तुंवरहा ॥५॥
सब सील महामनि भूखन हैं । प्रतिजात सदा निरदूखन है ।
सुख शुद्ध अतिंद्रिय चूखन है । तप आदित ज्ञान अदूखन हैं ॥६॥

रतनत्रय रत्न सु कर्ण धरैं। सु दिवेश महामल जीर्ण करैं।
जिन लांछन लांछित बोधकला। सुप्रदेश अशेष कलेश दला ॥७॥
वर पुष्कर मंदर मेर लसै। अघरावत उत्तर तास वसै।
तसु भाविय तीरथ नाथ सही। गुनध्यावत पावत मोच्छ मही ८
तिनसों अरदास करों नितही। प्रभु भक्ति सदा निवसो चित ही।
तव आगमज्ञान रहो हियमें। नित आतमध्यान जगो जियमें ९
रतनत्रय प्रापत होहु सही। जिहिं ते झट पाइय मोच्छ मही।
जब लौं न मिलै जिनराज हमें। तवलों इतनों हम नित्त पमें ॥१०॥
शिवसाधन जोग सदैव मिलो। अनुभौ रस अद्भुत चित्त पिलो।
दु खदारिद विघ्न विनाशकरो। सुखसंपतसार सु गेह भरो ॥११॥

घत्ता—जै शिवसरमंजन कलमलभंजन मुनिमनकंजन रंजकरा।
जै सदयनिरंजन भविद्रिगअंजन विपतिविगंजन तंज हरा॥

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभावि चतुर्विंशति जिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि।

अथाशीर्वादः । चौबोल छंद-

आठों दरव मिलाय गाय गुन जो पूजे जिनराज जती ।
पुष्करद्वीप तुरित मंदिर गिर ऐरावन भावत सुमती ॥
सो जन पुत्र मित्र धन जोवन वांछित लाभ लहत है अती ।
शक्र चक्र अनुभूति पायके "वृंदावन" है मुक्तपती ॥

इति श्रीपुष्करार्द्धद्वीपे मंदराचलैरावतभावित्रिपूजा समाप्ता ।
इति चतुर्थमेरुपूजा संपूर्णा ।

अथ पुष्करार्द्धदीपे मेरुसंबंधी विदेहक्षेत्र संस्थित विहरमान पूजा प्रारभ्यते ।

छंद सारंगी धुनिवर्ण १५

आपा शुद्ध चैतन्यं मे जे धीरं साधें बैठे ।

जा देखें है हों शं जीमें निग्रथायों श्यो पेठे ॥

सो ह्यांते मे चाहों तेरो सेवा स्वामी नौ मामी ।

पावै मेरं वेदे हों में थापों ह्यां चारों स्वामी ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धद्वीपपश्चिमविधुन्मालीमेरुकेविदेहक्षेत्रसंबंधी चारिविहरमान श्रीवीरसेनमहाभद्र देवजशअजितवीर्य जिन-अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठतिष्ठ ठःठ स्थापनं । अत्रमम सन्निहितो भवभव वषट् स्वाहाः ।

अथाष्टकम् ।

(चाल भाषा सिद्धाष्टक धानतविलासकी)

नीर विमल शीतलमहा भरि कंचनझारी लाय ।

तुम पद पदम चढ़ाइयौ मम करम कलंक नशाय ॥

विद्यन्माली मेरुके लखि चारि विदेह महान ।

समवसरन जुत पूजिहों चहु विहरमान भगवान । वि०।

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपपश्चिमविद्युन्मालीमेरुविदेहस्थचतुर्विंहरमानजिनेभ्यःश्री-
वीरसेन-महाभद्रदेवजश-अजितवीर्येभ्य जन्मजरामृत्युविनाशाय जल निर्वपामि ।

केशर चंदन बावनों घसि कदलीनंद मिलाय ।
तुम चरनन पर पूजते सब विघन सघन मिटिजाय ॥वि०॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपपश्चिमविद्युन्मालीमेरुविदेहस्थचतुर्विंहरमानजिनेभ्यः श्री
वीरसेन-महाभद्र-देवजश-अजितवीर्येभ्यश्चंदन निर्वपामि ।

शालि अखंडित सेत हैं शुभ पुंज धरंत सुधाय ।
दारिद द्रुम दुखनाशिकूं सुख अखय संपदा पाय ॥वि०॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपपश्चिमविद्युन्मालीमेरुविदेहस्थचतुर्विंहरमानजिनेभ्य
श्रीवीरसेनमहाभद्र-देवजश-अजितवीर्येभ्यस्तंदुलं निर्वपामि ।

फूल सुगंध सुवास है अलिगुंजत जापै आय ।
सो तुम आगे धारते सब समरशूल नशिजाय ।वि०।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपपश्चिममेरुविदेहस्थचतुर्विंहरमानजिनेभ्यःश्रीवीरसेन-म-

हाभद्र-देवजश अजितवीर्येभ्यः पुष्पं निर्वपामि ।

नेवज सज सुरस सुगंधता मन नेन स्सन दुखदाय ।

सो लै तुम आगे धरों मम रोग क्षुधा नशिजाय ॥ वि०॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपपश्चिममेरुविदेहस्थचतुर्विंहरमानजिनेभ्यः श्रीवीरसेन-महाभद्रदेवजश अजितवीर्येभ्यः नैवेद्यं निर्वपामि ।

यह दीप प्रकाश महालसे निरधूम नयन प्रिय लाय ।

तासों तुम आरति करों उर आरततम छै जय । वि०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुविदेहक्षेत्रस्थविहरमानजिनेभ्यः श्रीवीरसेन-महाभद्रदेवजश-अजितवीर्येभ्यः दीपं निर्वपामि ।

दशगंध सुगंध उखेइये जिन तुम चरनन ढिग लाय ।

करम कलंक जरैं सही मो धूम घ्रम उडाय ।विहरमा०॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुविदेहक्षेत्रस्थविहरमानजिनेभ्यः श्रीवीरसेन महाभद्रदेवराज अजितवीर्येभ्यः धूपं निर्वपामि ।

फल पक्क रसीले पावने भरि हाटक थार मगाय ।
दारिद विघन विनाशिये हम पूजत हैं शिरनाय ॥ वि० ॥

ॐ ह्री विद्युन्मालीमेरुविदेहक्षेत्रस्थविहरजिनेभ्यः श्रीवीरसेन महाभद्रदेव जश अजितवीर्येभ्यः फलं निर्वपामि ।

जल फल वसु दरव संजोयके कर जोरि जजों शिवराय ।
आनंद संपति दीजिये अरिनाश करो जिनराय ॥ वि० ॥

ॐ ह्री विद्युन्मालीमेरुविदेहक्षेत्रस्थविहरमानजिनेभ्यः श्रीवीरसेन महाभद्रदेव जश अजितवीर्येभ्यो अर्घं निर्वपामि ॥

अथ प्रत्येकार्घ ।

चौपाई छंद—

पुष्कार्द्ध गिर पश्चिम शीता । उत्तर पुंडरीक नी मीता ।
भानु मातु भुविपाल नरिंदा वीरसेन ऐरावत छंदा ॥

ॐ ह्री वीरसेनाय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

पुष्करार्द्ध गिर पश्चिम शीता दच्छिन विजै नगर नवनीता ।
देवराज सुउमादे जननी । महाभद्र जजि शशि पग जननी ॥

ॐ ह्री महाभद्राय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

पुष्करार्द्ध गिर पश्चिम लसे सीतोदा जम सुशिमा वसे ।
गंगा माश्रव भूत नरेसुर स्वस्ति लन्छ देवजस जिनेसुर ॥

ॐ ह्री देवजशाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

पुष्करार्द्ध गिर पश्चिम गनों सीतोदा उत्तर तट भनों ।
अजितवीर्य नगरीय अजोध्या मातु कननिका कमल सुवोध्या

ॐ ह्री अजितवीर्याय अर्घ निर्वपामि ॥४॥

दोहा—समव शरन शोभा सहित विहरमान भगवान ।
पूजत सुरनर नागपति हम पूजत धरिध्यान ॥

ॐ ह्री त्रिगुनमाल्ही मेघविदेह क्षेत्रस्थविहरमानजिनेभ्यः श्रीवीरसेन महाभद्र

देवजश अजितवीर्येभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामि ॥

अथ जयमाला

घत्ता—जै केवलदिनमनि मोहतिमिरहनि भव्यसरोजनि मोदकरा
शिवराय दिखावन जे जगपावन पापनशावन विघ्नहरा १

नैमालनी तामरस चंडी छंद—

वीरसैन गुनसेन नमस्ते । महाभद्र सुखदेव नमस्ते ॥
सदा देव जेशदाय नमस्ते । अजित वीर्यं पदध्याय नमस्ते ॥२॥
तीर्थंकर अमलान नमस्ते । संजुत केवलज्ञान नमस्ते ।
समवसरन थित देव नमस्ते । इंद चंद गनसेव नमस्ते ॥३॥
छ्यालिश गुनभंडार नमस्ते अशरन जन आधार नमस्ते ।
वानी खरत त्रिकाल नमस्ते । झेलत गनधर ह्वाल नमस्ते ॥४॥
दरसावत सब तत्त्व नमस्ते । गहत जहां भविसत्व नमस्ते ।
केइ श्रावक व्रतधार नमस्ते । केई होत अनगार नमस्ते ॥५॥
केई करम प्रजाल नमस्ते । लहत केवल विशाल नमस्ते ।

केइ अघान विघात नमस्ते । शिवपुरकौं मुनिजात नमस्ते ॥६॥
केइ आतम अनुभवत नमस्ते । सांत सुधारस पवन नमस्ते ।
इत्यादिक वृष रीत नमस्ते । चलन मुकतमग नीत नमस्ते ॥७॥
सदा अगम गुनवंत नमस्ते । जै जै शिवतिय कंत नमस्ते ।
मम मनमा परिपूर नमस्ते । रहो सु आप हजूर नमस्ते ॥८॥
सेवो जुगपद कंज नमस्ते । भवबाधा मम भंज नमस्ते ।
तुम प्रसाद हानि कर्म नमस्ते । होहु आप सम पर्म नमस्ते ॥९॥

घता–जे जे गुनसंचन दूषन रंच न देव अवंचन ज्ञानघने ।
तुम सेवत सज्जन वाजतवज्जन गावतभज्जन भावरते १०

ओं ह्रीं विद्युन्मालीमेरुविदेहक्षेत्रस्थविहरमान जिनेभ्यः श्रीवीरसेन महाभद्र देवजश अजितवीर्येभ्यः महार्घं निर्वपामि ।

अथाशीर्वादः-गीताछंद—

जश गाय गुन उर ध्याय दरव मिलाय जो शिरनाईजी ।

पूजै सदा जिनराय पुष्कर अरध पश्चिम जाइजी ॥
श्री वीरसेन सु आदि चार विहारमान विदेहमें ।
सोनर सुरग सुख भोग आतम सुख लहे शिवगेहमें ॥

इति श्री विद्युन्माली मेरु के विदेहक्षेत्रस्थ विहरमान पूजा समाप्ता ।

अथ विद्युन्मालीमेरुके भरतक्षेत्र संबंधी वर्तमाना २४ जिनपूजा ।

लोलतरंग छंद—

विद्युतमालिय मेरु विराजै । दक्खिनभर्त सुतामधि छाजै ।
चौविश वर्तसुमान जिनंदा । थापतु हों सुखसागर चंदा ॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरत वर्तमानजिनअत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वाननं अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहाः ।

अथाष्टकं ।

(चाल-मोहि राखो हो शरना) टप्पा—

हम पूजैं हो चरना । वर्तमान जिनराजके ।हम०।
विद्युन्माली मेरु विराजत दच्छिन भरत सु वरना
चौविश जिन सुरनरमुनिगन धर सेवत पातकहरना।हम०टेक।
प्राशुक जलभरि कनकभृंगमें धार तीन सो ढरना ।
जनम मरन मल धोय तुरित भो सागर पार उतरना ।हम०।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेभ्योजन्मादिविनाशाय जलंनिर्वपामि

बावनचंदन कदलीनंदन घस सुगंध विसतरना ।
भवतप हरन चरन जुग पूजत विघन ताप निरवरना ।हम०॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतवर्तमानाजिनेभ्यो गधं निर्वपामि ।।२॥

तंदुल मंदुल शशिसम शोभत अजिय जुगत जसु वरना ।

पुंज धरत तुम चरनकमल ढिग अखै संपदा करना ॥हम०॥

ॐ ह्री त्रिद्युन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेभ्योऽक्षतं निर्वपामि ॥ ३ ॥

सुवरन सुमन सुगंधित शोभित सुवरन थारी भरना ।

मनमथ मथन चरनतर धारत समरशूल छैकरना ।हम०।

ॐ ह्रीं त्रिद्युन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेन्द्रेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥ ४ ॥

नव्य गव्य पकवान बनायौ मधुर सुरस मृदु धरना ।

क्षुधा रोग निरवारन कारन पूजत हौं तुम चरना ।हम०॥

ॐ ह्रीं त्रिद्युन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेन्द्रेभ्यश्चरुं निर्वपामि ।

जग मग जोत होत दीपगकी तासों आरति करना ।

तिमरमोह निरनासि तुरित निज आतमजोत सुधरना ।हम०।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेन्द्रेभ्यो दीपं निर्वपामि ।

दशविध गंध मनोहर लै जिन सनमुख खेवन करना ।

करम काठकों जारि प्रभू यह विनती वहुविध करना ।हम०॥

ॐ ह्री विद्युन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेन्द्रेभ्यो धूप निर्वपामि ।

सुरस मधुर रितु फल कलवर्जित रसन नैनमन हरना ।

चरचत चरन जुगल जिनवरके मुकतरमनिकूं वरना ।हम०॥

ॐ ह्री विद्युन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेन्द्रेभ्यः फलं निर्वपामि ।

जल फल सकल मिलाय अरघकरि सुजश विविधविधिवरना ।

जजों तुमें त्रिभुवनपति जिनवर भवबाधा परिहरना ।

हम पूजैं हो चरना, वरतमान जिनराजके । हम पूजें० ।

विद्युन्माली मेरु विराजित दच्छिन भरत सु वरना ।

चौविश जिन सुरनर मुनिगनधर सेवत पातक हरना ।हम०।

ॐ ह्रीं विद्युन्माली मेरु भरत वर्तमान जिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामि ।

अथ प्रत्येकार्घ ।

दोहा—हितकारी सर वांगके श्री सर्वांग जिनेश ।
जजों भर्त वर्तत महा विद्युत नाम नरेश ॥१॥

ॐ ह्रीं सर्वांगस्वामिनेऽर्घं निर्वपामि ॥१॥

प्रभव अनूपमकूं धरें देव प्रभाकर भेस । ज० वि०॥२॥

ॐ ह्रीं विद्युत्प्रभाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

श्री पदमाकर पद्मद्युति पद्मा देत अशेश । ज० वि०॥३॥

ॐ ह्रीं पद्माकराय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

बल अनंत बलनाथमें शोभत नवल निवेश ।ज० वि०॥४॥

ॐ ह्रीं बलनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

तिहू जोग निरवार निज जोगनाथ गुनभेस ।ज० वि०॥५॥

ॐ ह्रीं जोगीश्वराय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

सूक्ष्म क्रिया प्रतिपात क्रिय । सूक्ष्म अंग निपुनेस ।ज०वि०॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्मांगाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

चल मल दोप वितीत है । चला तीत वृतदेश ।ज०वि० ॥

ॐ ह्रीं चलातीताय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

ध्वांत ध्वंस करता अखिल । देव कलंक येश ।ज०वि०॥

ॐ ह्रीं कलंककाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

पर परनत परित्याग क्रिय । श्रीपरित्याग महेश ।ज०वि०॥

ॐ ह्रीं परित्यागाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

विधि पोपक सोपक अविधि श्रीनिषेधक जिनेस ।ज०वि० ॥

ॐ ह्रीं निषेधकाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

पाप हरन सुख करन सब ॥ पाप प्रहार जगेस ।ज०॥

ॐ ह्रीं पापप्रहारकाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

मुकत बधू वर-विमल गुन । मुक्त चंद बुधि भेस ।

जजों भर्त्त वर्त्तन महा । विभुन मालि नगेस ॥१२॥

ॐ ह्रीं मुक्तचंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

छंद सारवती—

ग्यान मई अप्रकाश जिनं । वासव सेवत पाय तिनं ।
विद्युत मालिय भर्तमहा । वर्त्तन पूजत सुक्खलहा ॥१३॥

ॐ ह्रीं अप्रकाशाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

अस्त रु नास्त पदार्थ कहे । श्री जै चंद कलेस दहे ।त्रि०॥

ॐ ह्रीं जैचंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

अन्तर बाह्य हरे मलको । देहु मलाधर ग्यो पलको ।त्रिभु०॥

ॐ ह्रीं मलधारिणे अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

स्याद सु अस्त पदार्थ कहे । जैति सु संजत कर्म दहे ।त्रि०॥

ॐ ह्रीं सुसंजताय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

स्याद सु नास्तिय वस्तु भने । निरमल श्रीमल सिंधुवने ।त्रि०॥

ॐ ह्रीं मलैसिन्धवे अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

स्याद्कंथचित अस्त परं । स्वक्ष गुनाकर अक्ष धरं ।त्रि०॥

ॐ ह्रीं अक्षधराय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

अस्त अकथ्य कंथचित है । जैति धरा गुन संचित है ।वि०॥

ॐ ह्रीं धराय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

नास्ति अकथ्य कथचित है । देव गणाधिप दोष दहे ।वि०॥

ॐ ह्रीं गणाधिपाय अर्घ निर्वपामि ॥२०॥

अस्त रु नास्त अवाच कथं । त्रित्त अकामिक पाप मथं ।वि०॥

ॐ ह्रीं अकामिकाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

सातहु भंग अभंग भने । नित्य विनीत अनीत हने ।त्रि०।

ॐ ह्री विनीताय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

राग रु दोष वितीत सदा । वीतित राग जिनेश वदा ।त्रि०।

ॐ ह्रीं वीतरागाय अर्घ निर्वपामि ॥२३॥

आनंद अंबुधि वृद्ध करै। शुद्ध रतानंद मोद भरैं।
विद्युत मालिय भर्त महा। वर्तत पूजत शर्म लहा ॥२४॥

ॐ ह्रीं रतानदाय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

शोरठा छंद-विद्युत माली मेरु, पुष्करार्ध पूरव दिशा।
भरत संत जिन हेर, पूजों पूरण अर्घ सों ॥२५॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपविद्युन्मालीमेरुभरतस्थवर्तमानजिनेभ्यो पूर्णार्घं।

अथ जयमाला।

घता-जै जै जगवंदित पाप निकंदित नित आनंदित शुद्धमती।
जुत विभव अमंदित सदयसुछंदित जै निरफंदित बोधपती।

पद्धड़ी छंद—

जय जगतहितू सरवांगदेव। वंदामि प्रभाकर गुन अछेव।
जै पद्माकर पदमानिधान। बलनाथ तनें मुनि धरत ध्यान ॥२॥
जै जोगीश्वर सुर नमत पाय। सूक्ष्मांग नमों मन वचन काय।

जै चलातीत निश्चल सरूप । जै जैति फलंयक सुख अनूप ॥३॥
परित्याग नमों करजोर चित्त । जै जै निषध जिन जगपवित्त ।
जै पापप्रहारी हरन पाप । जै मुक्तचंद भयिहरन ताप ॥४॥
जै अप्रकाशक प्रकाश ज्ञान । जयचंद जिनंद दयानिधान ।
मल धारी जिन शिवधाम देत । जै जैति सुसंजत सुगुनसेत ॥५॥
मलसिंधु विमल गुन देत सार । प्रणमामि अच्तधर जगत तार ।
जै धरादेव मिव धरा दाय । जै जैति देवगण नितसहाय ॥६॥
सुरगज अगामिक नमत आन । नित नीत निपुन सु विनीतवान
जै वीतराग करुना निधान । लख देतु रतानंद सकल थान ॥७॥
ए चौविंश जिनवर धरतमान । निश्रुतमाली गिर भरत जान ।
जिन्हि सेवत वासव मुदित अंग । गुन ध्यावत गावत साजसंग८
द्रिमि द्रिमि धिधिकटवाजत मृदंग । ससाग्रदि साग्रादिसारगिचंग
किनिनिनिनिनिनिनि किंकिनि करत । करतलसुरान्वितधुनिधुरन्त
ता थेइ थेइ थेइ थेइ धरत पाव । ताना थेइ थुँगत थुँगत चलाव ।
धृगतां धृगता गतवजे पुष्ट । तननननन तान अलापि सुष्ट ॥१०॥

इत्यादि समाज मिलाय इंद । तुव जशगावतु हैं हे जिनंद ।।
तुम पच कल्यानक ईश पर्म । गुन सागर अगम अनत शर्म ११॥॥
हम शरन गही दुख खड खड । मन वांछित आनंद मंड मड ॥
भव वाधा मेरी मेंट मेंट । शिवराधा सों कर भेंट भेंट ॥१२॥

घत्ता—जै जै गुनमूरत अनुपमसूरत आनँद पूरत पर्मपती ।
"वृंदावन" ध्यावत शीसनवावत वांछित पावत शर्म अती १३

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपविद्युन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि ॥

अथाशीर्वाद—शार्दूलविक्रीडित छंद—

जो पूजे मनलय पाय जिनके सद्द्रव्य औ भावसों ।
विद्युन्मालिय भर्त वर्ततु महा ताकों जपैं चावसों ॥
सो पावे धन धान्य शर्म सकलं शक्राधि ह्वै के सही ।
चक्री होय अतिंद्रि आनंद लहै श्रीसिद्ध की जो मही ॥

इति विद्युन्माली मेरुभरतवर्तमान पुजा समाप्ता ।

अथ विद्युन्माली मेरुभरतातीत जिन पूजा प्रारभ्यते।

दोहा—विद्युन्मालीय मेरु के भरततीत जिनराय ।
थापों चौविश सुगुननिधि आय आय प्रभु आय ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपे विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनसमूह अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा

अथाष्टकं ।

वसंततिलका छंद—

सज्ज्ञान्हवीय जल उज्जल हेमझारी धाराकरों त्रिविध रोग हरो हमारी
श्रीपुष्करार्द्ध गिरिविद्युतमालिनामी पूजों सुभर्तवरतीतजिनेशस्वामी।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जलं निर्वपामि ॥

काश्मीरचंदनकपूरसुगंधपूरेतसोंसमरचतप्रभु भवतापचूरे।श्री०।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चदनं निर्वपामि ॥

मुक्ता समान सित तंदुलसार सोहे,

धारंत पुंज मनवांछित सुक्ख हो है । श्री० ।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यस्तंदुलं निर्वपामि ॥

कुंदारु विंदवर केतुकि पुष्पसारे,

हे नाथ धारहुँ इहां हर शूलम्हारे । श्री० ।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥

नानाप्रकार चरुसार रसाल लायो,

तासों समरचत क्षुदा दुखको नशायो । श्री० ।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चरू निर्वपामि ॥

बाती कपूर घृत पूरित दीपकीनों,

ताकों चढ़ाय निज आतम ज्ञान लीनों । श्री० ।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥

कृष्णागरु प्रमुख धूप अनूप खेवों,
कर्मौघ दाहि निज आतमरूप वेवों । श्री० ।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥

कामाम्रजाम शुभ पक्वलवंग एला,
इत्यादि सोचत मिले शिव संगवेला । श्री० ।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥

गंगा जलादि सब द्रव्यफलर्घ साजे,
बाजे बजे जजत पाप समस्त भाजे ।

श्रीपुष्करार्द्ध गिरि विद्युतमालिनामी,
पूजों सुभर्तवरतीत जिनेशस्वामी ।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामि ॥

अथ प्रत्येकार्घं ।

मोदक छंद—

पद्मसुचंद महा छवि आनन । भाषतधर्म अदोप पुरानन ।
विश्रुतमालियभर्त विराजत तीतजजें भवि ऑनंद साजत ॥

ॐ ह्रीं पद्मचंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

सद्गुणरत्न विभूषन भूषित रत्नशरीर नमों निरदूषित । वि० ।

ॐ ह्रीं रत्नांगाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

जोगि यजोगनि द्वार निहारत । देव अजोग निजोगनिवारत । वि०

ॐ ह्रीं अजोगाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

दायकसिद्ध सु अर्थ पुनीतम । श्रीसरवारथ सिद्ध अभीतम । वि०

ॐ ह्रीं सिद्धार्थाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

श्रीकृपनाथ किये कृप कर्मनि । दीस शरीर हरो भवि भर्मनि । वि०

ॐ ह्रीं कृपनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

इंद सुचंद सदा पद सेवत । श्रीहरिचंद निजातम वेवत ॥वि०।

ॐ ह्रीं हरिचन्द्राय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

द्वादशभेव सभा जशगावत । सद्गुणजुक्त गुणाधिप ध्यावत॥वि०।

ॐ ह्रीं गुणाधिपाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

या भव औ परभौ सुख कारन । देव परत्र कलेश निवारन॥वि०

ॐ ह्रीं परत्रेकाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

पूरन ब्रह्म पदाविन्त राजत । ब्रह्म सु नाथ प्रभाछवि छाजत॥वि०

ॐ ह्रीं ब्रह्मनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

आँनँदकंद चिदानँद स्वामिय । श्रीमुनिचंद नमैं शिवगामियवि०

ॐ ह्रीं मुनिचन्द्राय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

श्रीकुल दीपक दीपक वंदिय । दायक मोखपुरी अभिनंदियवि०

ॐ ह्रीं कुलदीपकाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

राजनिके पाति पूजत पंडित । राजरिपी रिपिपंकति मंडित वि०

ॐ ह्रीं राजर्षये अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

भव्यप्रबोधक धर्म सु भाषत । देव विशाख निजानंद चाखत वि०

ॐ ह्रीं विशाखाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

नाथ अनंदित आनंद मंदिर । हैं निकलंक नमंत पुरंदर ॥वि०।

ॐ ह्रीं आनंदिताय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

छंद इन्द्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्रा ।

जे भानुसे दीप्त धरें शरीरं वंदों रवि स्वामि जिनें सधीरं ।
श्रीपुष्करे विद्युत मालि नामी पूजों सदा भर्त अतीत स्वामी ॥

ॐ ह्रीं रविस्वामिनेऽर्घं निर्वपामि ॥१५॥

श्रीसोमदत्तं प्रणमामि देव । आनंदकंदं शतइंद सेव ।श्री०।

ॐ ह्रीं सोमदत्ताय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

जेकाम शत्रू कहि छीन कीनों नमों जयस्वामि महाप्रवीनों श्री०

ॐ ह्रीं जयस्वामिनेऽर्घं निर्वपामि ॥१७॥

जे मोक्षलक्ष्मी जुत केल कर्तें। ते मोक्षनाथं भवतीन हर्तें।श्री०

ॐ ह्रीं मोक्षनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

निसर्गसम्यक्तसुव्यक्त दाता सो अग्रभावी जगमेंविख्याता।श्री०

ॐ ह्रीं अग्रभानवेऽर्घं निर्वपामि ॥१९॥

ध्यावों सदा सो धनुपांग स्वामी धनुर्धरेशार्चित मुक्तधामी।श्री०

ॐ ह्रीं धनुपांगाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

सुधाधरं व्यक्त उतंगकाया श्रीमुक्तनाथं प्रणमों जिनाया।श्री०

ॐ ह्रीं मुक्तनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

रोमांचकों ध्यावत शर्म पावे आनंद रोमांच तुरंत आवे।श्री०

ॐ ह्रीं रोमान्चाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

प्रसिद्ध संबंध सुसिद्ध धारी।प्रसिद्ध नाथं भव सिंधु तारी।श्री०।

ॐ ह्रीं प्रसिद्धनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

जो जीव को वांछित देत नीके जिनेश सो ईस सबे जती के।

श्रीपुष्करे विद्युत मालि नामी। पूजों सदा भर्त अतीत स्वामी ॥

ॐ ह्रीं जिनेशस्वामिनेऽर्घं निर्वपामि ॥२४॥

दोहा--पूरन अर्घ बनायकें जजों जुगल कर जोर।

विद्युतमाली भर्तके तीत जिनेसुर ओर ॥२५॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपविद्युन्मालीमेरुभरतातीतजिनेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामि।

अथ जयमाला।

घत्ता–जे जिनगुनसागर सुजश उजागर सेवत नागर नीतमती।

सब विघनविनाशन उन्नत शासन ज्ञान प्रकाशन बुद्धपती।१

छंद दोहा आचलीबंध।

विद्युनमालीमेरके दच्छिन दिश सुखकार।

भरतीतजिनपतिजजों ध्यावों पर अविकार।

भविहो जिनगुनगावो भावशोजी पदमचंद पद्माकरैं श्रीरतनांगअनूप

नमहि अजोग जपो सदा सरवारथ सिव भूप। भवि हो० ॥२॥

करम कृषन कृपनाथहैं श्री हरिचंद दयाल ।
जैति गुणाधिप सुगुन निध जै परत्रिक गुनमाल ॥ भविहो० ॥
ब्रह्मनाथ आनदमैं नमों मुनिन्द जिनद ।
दीपक जग दीपक भए राज ऋषी सुख कंद । भविहो० ॥
धौ विशाख अभिलाष मम आनंदित जित कर्म ।
रवि स्वामी शिवमग अखैं शोमदत्त निरभर्म । भविहो० ॥५॥
जे स्वामी जे देतु हैं मोक्षनाथ सुख हेत ।
अग्रभाव बुधि दीजिये धनुप अग सुधि लेत । भविहो० ॥६॥
मुक्तनाथ शिवसाथ हैं रोमांचक अघचूर ।
जैति प्रसिद्ध सुसिद्धकों श्री जिनेश सुख पूर । भविहो० ॥७॥
गरभागम पट मासलौं नवथित गरभ मझार ।
इंद रतन वरषा करी दिन त्रिवार मनि धार । भविहो० ॥८॥
जनमत सुरगिर न्होन करि निज नियोग विसतार ।
पिता शौंपि जिनसेवकौं राखे सुर सु कुमार । भविहो० ॥९॥

भोग भोगि तज राजकौं जोग धरे अविकार।
त्रेसठ सिद्ध लहैं तबै मौन सहित व्रतधार। भविहो० ॥१०॥
घाति घाति केवल लयो लोकालोक प्रकाश।
समवशरन रचना बनी इन्द्र भए शतदाश। भविहो० ॥११॥
फिर अघाति चकचूरिकै मोक्ष भए जिनचद।
गुन अनत इकरूप है वंदत भवि नित "वृंद"। भविहो० ॥१२॥

घत्ता—जै श्रीजिनस्वामी त्रिभुवननामी गुनअभिरामी शिवधामी।
तव पादनमामी हृदय धरामी पाप नशामी सुखपामी।
ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

अथाशीर्वाद—जोगीरासा छद—

पुष्करार्द्ध गिर विद्युतमाली पच्छिम माहि विराजै।
तास भरत तित तीत जिनेसुर आनंदकारी छाजै॥
तिनपद जो भवि साजि समाजनि पूजत भगत धराई।

सोसुर नरसुख भोगि सकल विधि अनुक्रम शिवपुर जाई ॥

इति श्री विद्युन्मालीमेरुभरतातीतपूजा समाप्ता ।

अथ विद्युन्मालीमेरुभरतभाविजिन पूजा प्रारभ्यते ।

छंद मदावलिप्त कपोल ।

विद्युतमाली मेरु दीप पुष्कर मह छाजत ।
तासु भरत के माहि भविष्यत जिनवर राजत ॥
तिनको थापों इहां जुगलपद पूजन कारन ।
आय प्रभु इत अबै सकल दुखदंद निवारन ॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीभरतभाविचतुर्विंशतिजिनसमूह-अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वानन । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन अत्रमम सन्निहितो भवभवः वषट् स्वाहाः।

अथाष्टकम् ।

छंद रूपक कविता—

हिमवन गिरगत गंगाजलवर कंचनझारी भरकर लाय ।

मनवचतन पुलकित नित पूजत जनमजरामृत रोग पलाय ॥
विद्युतमाली मेरु भरतके भावी जिनवर जग सुखदाय ।
पूजत चरन हरन दुख संकट इंद वृंद वंदत जसु पाय ॥१॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जल निर्वपामि ।

वावनचंदन कदलीनंदन केसरसंग सुगंध घसाय ।
भवतप हरन चरन जिनवरके पूजत ही भवताप पलाय । वि०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चंदन निर्वपामि ॥२॥

सेतशालि शुभ शशिसम दमकत गमकत वास नैनसुखदाय ।
पुंजधरत दुखदंदहरत आनंदभरत अनुपम सुखदाय । वि०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशति जिनेभ्यस्तदुलं निर्वपामि ॥३॥

कमल केतुकी वेलचमेली सुमनसुमन समसुमन सुभाय ।
सुमनमथमदमंथनके कारण सेवों मनमथमथनजिनाय । वि०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥४॥

नव्य गव्य मनमोदन मोदक खाजे ताजे तुरित उपाय ।
छुधारोग निरवारन कारन पूजत हौं पदमंगल गाय वि०।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्य निर्वपामि ॥५॥

जगमग जोत होत दीपक की तासों आरति करौ सुजाय ।
प्रभुतन माहि तास दुति दरशत मानों ध्यानकनी सरसाय ।वि०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

धूप अनूप उखेवत हों प्रभु तुम ढिग बात होत्र में डाय ।
ध्यान अगनि में करम जरें हैं धूम धूम यह तास उड़ाय। वि०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

आम जाम अभिराम सुफल कलवर्जित पक्व मधुर मनलाय ।
तासों अरचत तुम पदपंकज विघनसघन ततखिन नशिजाय ।वि०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥

जल चंदन तंदुल प्रशून चरु दीप धूप फल अरघ बनाय ।
पूजों चरन करन सुखसंपत तारन तरन जगत वरदाय ॥
विद्युतमाली मेरु भरतके भावी जिनवर जग सुखदाय ।
पूजत चरन हरन दुख संकट इंद वृंद वदत जस पाय ॥

विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामि ॥९॥

अथ प्रत्येकार्घं ।

मोतीदाम छंद--

प्रभाव करैं सुरराजजु आय । प्रभावकदेव, नमों शिरनाय ।
सुविद्युत मालिय मेरु महान । भविष्यत भर्त जजों धरिध्यान ।

ॐ ह्रीं प्रभावकाय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

नमैं नरदेव उमंग समेत । नमों विनतेन्द्र जिनेंद्र सुचेत ।सु०

ॐ ह्रीं विनतेंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

विभावसुभाव विभेदन हार। सुभावकदेव नमों अविकार। सु०

ॐ ह्रीं सुभावकाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

दिनिंदसमान प्रकाश शरीर। नमों नित श्रीदिनकार सुधीर। सु०

ॐ ह्रीं दिनकराय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

अनंग विकार निवारन देव। सदा जय अंग सुतेज अथेव। सु०

ॐ ह्रीं अनगतेजाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

सुभव्यनिकों धनधान्य करंत। नमों धनदत्त जिनेश महंत। सु०

ॐ ह्रीं धनदत्ताय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

सुपूरव कर्म विपाक विनीत। जिनेसुर पौरव हैं निरभीत। सु०

ॐ ह्रीं पौरवाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

सदा समदिष्टिय सेवत पाय। सुखाकर श्रीजिनदत्त जिनाय। सु०

ॐ ह्रीं जिनदत्ताय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

चहूं घनघातियकर्म हनंत। त्रिलोकहितू प्रभु पार्श्वमहंत। सु०

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

गनांबुधि श्रीमुनिसिन्धु अगाध। जपे नितचित्त पुनीतम साध सु०

ॐ ह्रीं मुनिसिंधवे अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

सु अस्त रु वस्त प्रशस्त बताय। नमों कमलाधर अस्तक भाय ।सु०

ॐ ह्रीं अस्तकाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

भवोदधि तारनकों समरथ्थ । सुरेशनमें भवनीकहि मथ्थ ।
सुविद्युत मालिय मेरु महान। भविष्यत भर्त जजों धरि ध्यान ॥

ॐ ह्रीं भवनीकाय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

छन्द सूर ।

नृपनाथ नृपकुल पाल । पूजों सदा गुनमाल ।
पञ्चम सुराचल तथ्य । भावी भरत समरथ्थ ॥

ॐ ह्रीं नृपनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

नारायनाथ जिनेय । ध्यावों नारायणाध्येय । पञ्चम०।

ॐ ह्रीं नारायणाय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

प्रशमौक प्रशम प्रदाय। पूजों सुजश गुनगाय । पञ्चम०।

ॐ ह्रीं प्रशमौकसे अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

भूपति भजैं पदकंज । भुपति भजों भेभंज । पञ्चम०।

ॐ ह्रीं भूपतयेऽर्घं निर्वपामि ॥१६॥

केवल सुदिष्ट विकाश । पूजों सुदिष्ट हुलाश ।पंचम०।

ॐ ह्रीं सुदिष्टये अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

भवभ्रांति भीत अतीत । भवभीरु जजि जगमीत ।पंचम०।

ॐ ह्रीं भवभीरवाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

आनंद कंद जिनंद । नंदन जजों सुख कंद ।पंचम०।

ॐ ह्रीं नंदनाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

जै शुद्ध बुद्ध अक्रुद्ध । भार्गव जजों जुत रिद्ध ।पञ्चम०।

ॐ ह्रीं भार्गवाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

वासव सदा जसु भक्त । पूजों सु वासव व्यक्त ।पंचम०।

ॐ ह्रीं वासवेऽर्घं निर्वपामि ॥२१॥

वस विश्व जास वसंत । पर वास जिंनहि जजंत ।पंचम०।

ॐ ह्रीं परवासवे अर्घ निर्वपामि ॥२२॥

वनवसत नाशि उपाध । वनवासि साध अराध ।पंचम०।

ॐ ह्रीं वनवासिजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

भरतेश कमला करन । पूजों सकल जन सरन ।

पंचम सुराचल तथ्य । भावी भरत समरथ्य ।

ॐ ह्रीं भरतेशाय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

रथोद्धता छंद—

पूर्ण अर्घ यह अग्र धारिहो । ध्याय गाय जश पाप टारिहों ।

पुष्करार्ध गिर पंचमें सही । भर्त भावि जिन पूजिहों यही ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपविद्युन्मालीमेरुभरतभाविजिनेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामि

अथ जयमाला ।

घत्ता–जे शिवमगमंडन कलुपविहंडन कृतग्रहमंडन शर्म अती
दारिद्रुमखंडन जै भवहंडन हरनप्रचंडन कर्मगती ॥

छंद नमालिनी तामरस चंडी ।

जै प्रभाव शिवराव नमस्ते । विनतेंद्र जुगपाय नमस्ते ।
जे सुभाविक दयाल नमस्ते । श्री दिनकर गुनमाल नमस्ते ॥२॥
अगतेज जसपुंज नमस्ते । धनदत्त सुखभुज नमस्ते ।
पौरव पूरन शर्म नमस्ते । जै जिनदत्त सु पर्म नमस्ते ॥३॥
पार्श्वनाथ शिवसाथ नमस्ते । मुनिसिंधव मम नाथ नमस्ते ।
अस्तिक जिनगुनव्रत नमस्ते । श्रीभवनीक महंत नमस्ते ॥४॥
श्री नृपनाथ मुनीश नमस्ते । नारायण जगदीश नमस्ते ।
प्रशमीकश जगराश नमस्ते । भूपत विमलविलाश नमस्ते ॥५॥
जै सुदिष्ट जग इष्ट नमस्ते । भवभीग्व गुन मिष्ट नमस्ते ।
नंदन आनंद कंद नमस्ते । भार्गव जिन निरफंद नमस्ते ॥६॥

जै सुव्रासव पुनीत नमस्ते। परवासक जगमीत नमस्ते।
श्री वनवास मुनिंद नमस्ते। जै भरतेश जिनद नमस्ते ॥७॥
पुष्कर पंचम मेर नमस्ते। भरत भविष्यन हेर नमस्ते।
चौवीशों जिनराय नमस्ते। गुन अनत समुदाय नमस्ते ॥८॥
पंच कल्यानक राय नमस्ते। शिव मारग दरशाय नमस्ते।
गनधर पूजत पाय नमस्ते। "वृंदावन" शिरनाय नमस्ते ॥९॥

घत्ता—जै जै जश्रवंतं जिनभगवंतं सुगुन अनंतं शुद्ध मते।
नित ध्यावत संतं जेति महंतं लब्धि लशंतं वुद्धपते ॥

ॐ ह्रीं पुष्कार्धद्वीपविद्युन्मालीमेरुभरतभावीजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि।

अथाशीर्वाद-गीता छंद—

वसु दरव सुंदर साज जो जिनराज चरन जजै नरा।
पुष्कर सु पंचम मेरु भरत भविष्य श्रीमज्जिनवरा ॥
सो सकल पुत्र सुमित्र सपत लहत सार समाज कों।

अनुक्रम वरे शिव परम रमनी भविक जन हितकाजकों ॥

इति श्री भरतपञ्चमाचलसंबंधीभाविचतुर्विंशति पूजा समाप्ता ।

अथ पुष्करार्धद्वीपविद्युन्मालीऐरावत वर्तमान २४ पूजा ।

दोहा-विद्युन्माली मेरुके ऐरावत छित माहिं ।
वरतमान चौवीश जिन थापों इत प्रभु आहिं ॥

ॐ ह्रीं पञ्चमान्यैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिन अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा

अथाष्टकं ।

छंद चौबोल-

छीरोदधि सम उज्जल जल शुभ कनक कटोरी माहि भरे ।
जनम जरामृत नाश करनकों श्रीजिन सनमुख धार करे ॥

पुष्करार्ध गिर विद्युतमाली ऐरावत शुभ खेत धरे ।
वरतमान चौवीश जिनसुर सुरपति पूजत प्रीत भरे ॥१॥

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जलं निर्वपामि ।

केशर चंदन दाह निकंदन कदली नंदन गंध भरे ।
जलसगधसि लसि ससिसम समकर पूजत भवआताप हरे ।पु०

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्यो गंध निर्वपामि ।

तंदुलसेत निशाकर वारिज छीर छटा हिम हीरहरे ।
कंचनथार विषे तसु पुंज सु युंजत ही दुख दोष टरे । पु०

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्यस्तंदुल निर्वपामि ।

कामवली प्रतिकै सबके सब रुद्रनिके सब जेर करे।
तासु विनासनि जानि तुम्हें प्रभु पूजत फूल सुगंध भरे । पु०

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्य पुष्प निर्वपामि ।

रोग छुधा जगजंतुनिकों नित जेर करैं छिन नाहि टरे ।

तासु विनाशन जानि तुमें जिन पूजहु नेवज व्याधि हरे । पु०।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चरुं निर्वपामि ।

मोह महातम छाय रह्यो जग नाहि हिताहित दिष्ट परे ।
सो तुम नाशि प्रकाश कियो शिव दीप चढ़ावत भर्म हरे।पु०

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ।

काल अनाद वितीत भयो संग कर्मनिके दुख भूरि भरे।
तुम ढिग धूप अनूप उखेऊं ज्यौं वसु कूर प्रचूर जरे ।पु०

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ।

ज्ञान अतिंद्रिय शर्म अनाकुल आतम पर्म सुधर्म धरे।
सो प्रगटो मम हे जिन स्वामिय सेवतु हो फलथार भरे । पु०

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्यः फलं निर्वपामि ।

जलचंदन तंदुल प्रशून चरु दीप धूप फल अर्घ करे ।

नाचि राचि शिरनाय समरचत भव भवके सवपापहरे ।
पुष्करार्ध गिर विद्युतमाली ऐरावत शुभ खेत धरे ।
वरतमान चौवीश जिनेसुर सुरपति पूजत प्रीत भरे ॥२४॥

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशति जिनभ्योऽर्घं निर्वपामि ।

अथ प्रत्येकार्घ ।

चौपाई छंद—

गंग घटासम अंग विशुद्ध । गांगेयक वंदत वर शुद्ध ।
पुष्कर पंचम मेरु लसंत । ऐरावत जिन संत जजंत ॥

ॐ ह्रीं गांगेयकाय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

मल्लवास जसरास पुनीत । भुक्तमुक्त दानी जगमीत । पु०।

ॐ ह्रीं मल्लवासवे अर्घं निर्वपामि ॥२॥

भीम जिनंद भीम भैहत । सुखकारी जे जे अरिहन्त । पु०।

ॐ ह्रीं भीमाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

दयानाथ सेवंत विदग्धं । रतनरास करि दारिददग्ध । पु०।

ॐ ह्रीं दयानाथाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

श्रीसुभद्र दायक नित भद्र । भद्रभाव जुत सुगुन समुद्र । पु०

ॐ ह्रीं भद्रनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

स्वामीनाम नमों जिनराय । ध्वजा चिन्ह जह बहुत सुहाय ।पु०

ॐ ह्रीं स्वामिजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

हनिक नामजिन गुनमनिमाल। द्वादशसभा सहित जगपाल।पु०

ॐ ह्रीं हनिकाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

नंदघोष जिन जगजन पोष। चतुरानन राजैं निरदोप । पु०

ॐ ह्रीं नंदघोपाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

रूपवीज श्रीजिनगुन खान। कोटि भानु दुति देखि लजान पु०।

ॐ ह्रीं रूपवीजाय अर्घ निर्षपामि ॥९॥

वज्रनाभ वज्राधिप सेव । नटसाला नाचैं नट देव । पु०

ॐ ह्रीं वज्रनाभाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

श्रीसंतोष तोषगद पोप । मंदिर पंक्तिरुचिर चित चोप । पु०

ॐ ह्रीं संतोषाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

श्रीसुधर्म जिन पर्म दयाल । सोहत है देवद्रुम माल । पु०

ॐ ह्रीं सुधर्माय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

श्रीफनीस पद फनपति ध्यात । पुष्पवाटि फल फूल सुहात ।

ॐ ह्रीं फनीश्वराय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

वीरसेन जश किन्नर सार । गावतु हैं नानाप्रकार । पु०

ॐ ह्रीं वीरचंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

मेधानीक नमों जिनचंद । स्वच्छ छवी छाजत सुखकंद पु०।

ॐ ह्रीं मेधानीकाय अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

स्वच्छनाथ गुन स्वच्छ अनंत । सुर जश गावत ध्यावतसंत

पुष्कर पंचम मेर लसत । ऐरावत जिन संत जतंत ।

ॐ ह्रीं स्वच्छनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

दोहा-कोप छय करि कोप छै भापत सर्वहित वैन ।
नग पंचम ऐरावते वरतमान जजि चैन ॥१७॥

ॐ ह्रीं कोपछयाय अर्घ निर्वपामि ॥१७॥

जयति अकामक कामकर समवसरन थित लेन । नग०वर।

ॐ ही अकामकाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

धरमधाम अभिराम नमि गंध कुटी छवि देन । नग०वर ।

ॐ ह्रीं धर्मधामाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

सुक्तसेन वंदत विबुध वन उपवन जह ऐन । नग०वर ।

ॐ ह्री सुक्तसेनाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

क्षेम करन छेमंग जिन साल फूल सुखदाय ॥
गिर पचम ऐरावते वरतमान पद ध्याय ।

ॐ ह्री क्षेमकराय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

दयानाथ आनंद घन मृगराजा सनसीन ।
गिर पंचम ऐरावते जजों संत अमलीन ॥

ॐ ह्रीं दयानाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

कीर्तपाय जिनराय जजि प्रश्नोतर करतार ।
गिर पंचम ऐरावते जजों संत सुखकार ॥

ॐ ह्रीं कीर्तपायजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

शुभकर जिन शुभ करत नित मंगल नित नौदाय ।
गिर पंचम ऐरावते जजों संत सुखदाय ॥२४॥

ॐ ह्रीं शुभकराय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

मालिनी छंद—जल फल सब साजे बाजते सार बाजे ।
गिर पनम विराजेरावते वर्त ताजे ॥
चहु जुग जिनराजे पंच कल्यान साजे ।

पद जजि महराजे मर्व कल्यान पाजे ॥

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामि ।

अथ जयमाला ।

घत्ता–जै जिनगुनमालं विरद विसालं सुरनुतभालं सुकुमालं ।
जै कवि कुलभालं अरिपरिजालं जैति कृपालं शिवचालं ॥

पद्धडी छंद—

जै गगदेव शिवसंग सार । जै मल्लवास मदमल्ल टार ।
जै भीम भीम भव हरन देव । जै जैति दयाधिक गुन अछेव ॥२॥
जै जैति भद्र भद्रेश कर्ण । स्वामी जिनवर भवभीत हर्ण ॥
जै हनक हरण मनमल समस्त । जै नंदघोष भाषत सुवस्त ॥३॥
जै रूपवीज वीरज उदार । जै वज्रनाभ भवसिंधुतार ॥
संतोष जैति दुख दोष चूर । जै जिन सुधर्म जिनधर्म पूर ॥४॥
जै जिन फनीश फनपति नमत । जै वीर चंद जिनगुन अनंत ।
मेधानिक मेधा नमत पाय । जै स्वच्छनाथ शिव मग बताय ॥५॥

सीर ठिकर जिन कोप तीन । ते ते अकाम कामद प्रवीन ॥
नमिनाथ जुन परम सुर । ते मुनिसुव्रत जुन सिद्ध मिद्ध ॥६॥
सेनांग क्षेमराशि मद्रांच । ते दशानाथ फल्गुना अनीत ॥
ते कीर्तिनाग कीरत इद्रांन । श्रीशुभ जिनवर भव समुद्र पीत ॥७॥
प्र पंचम गिर गैराव्तेन । है वरतमान चौवीस सेव ॥
कल्याणक पर विराजमान । शरणागत पालन विरद्वान ॥८॥
अब तुम मो दाता पाव आज । क्या जाचौं प्रभु समार काज ॥
भवसागर ते मोको निकाल । नर भरत तरौ जिनवरौं त्रिकाल॥६॥
दोहा–ओं दयानुगंधर त्रिपुर मंदर जजन पुंदर भगत भग ।
दुःनय गतगंजन नमकृत मंडन कलुष विहंडन कुमति हुग॥
ॐ ह्रीं पंचमेरु संबंधी अस्सी जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामि ।
मध्यलोक श्री पूजा–
त्रिभुवनमाही मेरु विराजत भावज्ञो ।
फरदन नव शोभित परम उदारज्ञो ॥

चौविस जिन तह वरतमान जो पूजई ।

सो भवि सब सुख पाय मुकत पद कूजई ॥

इति श्रीपंचमाचलैरावते वर्तमानचतुर्विंशति पुजा समाप्ता ।

अथैरावतातीतचतुर्विंशति जिन पूजा ।

तोटक छद–

गिर पंचम पुष्कर दीप तनों । अयरावततीत जिनेश भनों ।

चववीस सुथापतु हों इतही प्रभु आय करो भविके हितही ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिन-अत्रावतरअवतरसवौषट् आह्वानन ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनअत्रममसन्निहितो भवभववषट्स्वाहा ।

अथाष्टकं ।

लावनी–गही है नाथ शरन तेरी ।

भव पाथ परत जगनाथ गहो अब हाथ तुरित मेरी ।गही०
पुष्कर पंचम मेर विराजत ऐरावत हेरी ।
तीत जिनेसुर पद परिपूजन मिटत जगत फेरी ।ग०।टेक।
छीरोदधि सम नीर सीर भरि कनक भृंगमेरी ।
धार करत तुम चरन कमल तर सकल कलुष छेरी ।ग०।

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जलं निर्वगामि ॥१॥

वावन चंदन कदली नंदन जल संघ घसि लेरी ।
पूजत चरन जुगल करुनानिध भवतप चूरेरी ॥ गही०॥

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चदन निर्वपामि ।

देवजीर सुखदास वास दुतिरास तंदुलेरी ।
पुंज धरत दुख कुंज हरत जिनपद सु पूजतेरी । गही०।

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यस्तदुल निर्वपामि ।

पारजात मंदार सुमन संतान जाति केरी ।
चरचों चरन हरन मनमथ मद शुद्ध शील देरी । गही०
ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्प निर्वपामि ।

क्षुधा रोग निरवार निराकुल पद तुमने लेरी ।
नेवज साजि जजों जगनायक हरो व्याध मेरी ।गही०।
ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चरुं निर्वपामि ।

केवल भान प्रकाश प्रभू तुम सब परगासेरी ।
दीपक सों आरती उतारों निज प्रकाश देरी । गही०।
ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीप निर्वपामि ।

दुष्ट अष्ट तुम नासि पुष्ट पद माहि थिर भयेरी ।
हम पूजें दशगंध धूपसों क्रूर अरि जेरी ॥ गही०।
ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥

विघन सघन वन ध्यान अगनिसों तुम परजालेरी ।

हम प्राशुक फलसों पद पुजैं व्रांछितार्थ देरी । गही०

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फल निर्वपामि ॥

तुम अनंत गुन लहे अनूपम अमल अचल हेरी ।
हम पूजैं पद अरघ थार भर मिटो जगत फेरी ।गही हे नाथ ।
भवपाथ परत जगनाथ गहो अब हाथ तुरित मेरी ।
पुष्कर पंचम मेरु विराजत ऐरावत हेरी ।
तीत जिनेसुर पद परिपूजत मिटत जगत फेरी । गही है ।

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो ऽर्घं निर्वपामि ॥

अथ प्रत्येकार्घ ।

हरिणी छद–

भवातप शांत करंत सदा । नमों उपशांति प्रशांति प्रदा ।
सु पुष्कर पंचममेर कहा । जजों अयरावत तीत महा ॥१॥

ॐ ह्रीं उपशांतिजिनराय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

शरीर अनूपम सोहत है । सो फल्गु जगज्जन मोहन है। सु०।

ॐ ह्रीं फाल्गुजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

नमों पुरवास सु आस भरे । जिनेश अशेष कलेश हरे ।सु०।

ॐ ह्रीं पूर्वाशाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

त्रिलोक सुहावन रूप लसै । नमों जिन सुन्दर पाप नसै।सु०।

ॐ ह्रीं सुदराय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

धरें गुन गौरव गौरवता । नमों जिन गौरव गौरवता । सु०

ॐ ह्रीं गौरवाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

कषाय सवे चकचूर किया । त्रिविक्रम आनंद पूरि दिया ।सु०।

ॐ ह्रीं त्रिविक्रमाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

जुरोष गयंद मृगिद सम । नमों नरसिंघ कुकर्म दमं । सु० ॥

ॐ ह्रीं नरसिंघाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

छहों विधि हास रतादि हनें । नमों मृगवासव सार पने ।

सु पुष्कर पंचमेर कहा । जजौं अयरावत तीत महा ॥
ॐ ह्रीं मृगवासवे ऽर्घं निर्वपामि ॥८॥

छंद प्रियवदा—

पुरुषवेद निरवार कीन है । परम शोभ जिन सो प्रवीन हैं ।
त्रितिय दीप गिरि पंचमें सही । जजत तीत अयरावते यही ॥
ॐ ह्रीं शोभाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

सुमल लोभ जिह्न सूक्षम नासियो । जिन सुधाव सुबोध भासियो ॥त्रि०
ॐ ह्रीं शुद्धावराय अर्घनिर्वपामि ॥१०॥

दुखद पंचविधि नाद नासियो । जिन अपाप सवस्तु भासियो ।त्रि०
ॐ ह्रीं अपापजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

दरशनावरन अंत कीन है । जिन विवाध नमते प्रवीन है त्रि०।
ॐ ह्रीं विवाधाय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

मति श्रुतावरन आदि जे कहा । हरन संधिक जिनेशते महा ।

त्रितिय दीप गिर पंचमें सही । जजत तीत अयरावते यही ।

ॐ ह्रीं संधिकाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

छंद रथोद्धता—

विघ्न पंचजिन निघ्नकीन हैं । मान धात्र जिनसों अछीन हैं ।
पुष्करार्ध गिर पंचमें सही । तीत पूजत यरावते मही ॥

ॐ ह्रीं माधात्राय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

शुक्लध्यान दुतिवत शुद्ध हैं । अश्वतेज जिनसों विशुद्ध हैं । पु०

ॐ ह्रीं अश्वतेजाय अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

पुद्गलीक गुनतें सु जे चुतं । सोय देदवर विद्यया जुतं । पु० ।

ॐ ह्रीं विद्याधराय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

वंध आधि तन भेद थे जिते । सो सुलोचन हने सहीतिते पु०

ॐ ह्रीं सुलोचनाय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

सर्व संहननसों वितीत हैं । मौनकं निधि नमों सुमीत हैं पु०

ॐ ह्रीं मौननिधाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

पुंडरीक जिनकों नमों सदा । छः प्रकार परजाप्त सों जुदा पु०

ॐ ह्रीं पुंडरीकाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

जैति चित्रगण मित्रजीय के । रक्षपाल्त षटकाय हीय के पु०

ॐ ह्रीं चित्रगणाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

छन्द दुतपा——

त्रिविध जोग जिननें चकचूरे । गुन समुद्र मनि इंद्रजु पूरे ।
पुहकरार्ध गिर पंचम नामी । जजहु तीत अयरावत स्वामी ॥

ॐ ह्रीं मुनिंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

गुननिधान परघात दला है । सरब पूज निज सर्व कला है पु०

ॐ ह्रीं सर्वकलाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

सकल भूखत्रिष रोग निवासे । जयति भूरिश्रवने सुखरासे पु०

ॐ ह्रीं भूरिश्रवाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

परमपुन्य जुतकाय अनूपं । जय पुनंग जिनवर जसरूपं ।
पुहकरार्द्ध गिर पंचमनामी । जजहु तीत अयरावत स्वामी २४

ॐ ह्री पुण्यांगाय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

सुमुखी छंद-

पुहकर पंचममेर गनों । तह ऐरावत खेत भनों ।
जिनवर तीत जजामि सदा । कर धर पूरन अर्घ अदा

ॐ ह्री पंचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्य: पूर्णार्घं निर्वपामि ॥

अथ जयमाला

घत्ता--जै जिनजगवंदित जन आनंदित जैति अमंदित मौनव्रती
सम दमजुत राजत सब सुख साजत भवभै भाजत हे सुअती

छंद नयमालिनी तामरस चंडी—

उपशांतिक मति मंडित जै जै । फल्गू जिन दुख खंडित जै जै ।
श्री पूर्वास अखंडित जै जै । सुन्दर जिन भ्रम दंडित जै जै ॥१॥

गौरिक हरिहर वदित जै जै । श्रीविक्रम सु अमदित जै जै ।
नरसिंघेस सु छंदित जै जै । मृगवस जगदानंदित जै जै ॥३॥
सोमेसुर सुखदायक जै जै । शुद्धावर सव लायक जै जै ।
श्री अपाप गुन छायक जै जै । जिन विवाध शिवनायक जै जै ।४।
सधिक भवदधि तारन जै जै । मांधात्रे मद मारन जै जै ।
अश्वतेज जगटारन जै जै । विद्याधर उद्धारन जै जै ॥५॥
श्री सुलोचन प्रकाशक जै जै । मौननिधी वृत वासव जै जै ।
पुंडरीक जसरासक जै जै । चित्रगुनी गुनरासक जै जै ॥६॥
श्रीमुनिरिंद महंत जै जै । सर्वकला भगवंत जै जै ।
भूरिश्रव भवअंत जै जै । जिन पुण्यांग अनंत जै जै ॥७॥
पुष्कर पचम गिरवर जै जै । तीतेरावत जिनवर जै जै ।
वदत सुरनर मुनिवर जै जै अमल अचल शिवतिय वर जै जै ८
दास सदा यह जाचतु जै जै । होहु भगत नित शांचतु जै जै ।
सुर सुरेश मनरांचतु जै जै । सुजश गाय इमि नाचतु जै जै ।९।

पग नूपुर छवि छाजतु जै जै। मांदल द्रिमि द्रिमि बाजत जै जै।
चंग उपंग अवाजत जै जै। थुंगत थुंगत गत शाजत जै जै ।१०।
साग्रदि सांरगी सुर बाजत जै जै। कटकि किनिनिविराजत जै जै
दुति लखि रवि शशि लाजत जै जै। भगत करत अघ भाजत जै जै ११
मिथ्यामति मल मजन जै जै। विघनसमूह थिंगजन जै जै।
वृन्दावन" मन रंजन जै जै। जै जिन रवि भविकंजन जै जै॥१२॥

घत्ता--जै धरमप्रकाशक भ्रमतमनाशक शिवमगभासक ज्ञानपते
दारिद द्रुमछेदक जैति अखेदक वेद विवेदक वेदमते ॥१३॥

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि ॥

चौबोल छंद।

आठों दरव मिलाय गाय गुन जो भविजन जिनराज जजै।
पुष्करार्ध गिर विद्युतमाली ऐरावत में तीत सजै।
सो लहि पुत्र मित्र सुख संपति भोग मनोग समस्त विजै।

अनुक्रम करम नासि करि भवि वह मुकत धाम में राज रजै।

अथाशीर्वादः—

इति पचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशति पूजा समाप्ता ।

अथ पंचमाचलैरावतभावि २४ पूजा प्रारभ्यते ।

तोटक छंद—

गिर पंचम को ऐरावत है । जिन भाविय मो मन भावत है।
जिहि ध्यावत आनद पावत है तिहि थापत पूज रचावत है ।

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिन अत्रावतर अवतर सनौषट् ।
ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन।
ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिन अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

अथाष्टकं ।

चालनदीश्वराष्टक भाषा द्यानतरायजी कृतकी तथा होली गर्भाआदि अनेक चालमे

उज्जल जल शीतल लाय हाटक भृंग भरा ।

तुम चरनन देत चढ़ाय मेटत जनम जरा ॥

गिर पंचम परम पुनीत ऐरावत जानो ।

भावी जिनवर जगमीत पूजत.धरि ध्यानों ।

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जलं निर्वपामि ॥

शुभ चंदन कंदन दंद कदलीनंद लिया ।

जलसों घसि पूजि जिनंद भवतप दूर किया । गि० भा० ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो गधं निर्वपामि ।

मुकताफल हिम हरि हीर दमक गमक धारी ।

धरि तंदुल मंदुल वीर दारिद दुख हारी । गि० भा० ।

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यस्तंदुल निर्वपामि ॥

शुचि सुमन सुमन सम आन सुमन सुमन नीके ।

करि मदन कदन पनवान पूजत पदजीके । गि० भा० ।

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥

रस रासत नेवज सार कंचन थार भरा ।
तुमकों अरपत अविकार रोग समूह हरा । गि० भा० ।

ॐ ह्री पंचमाचलैरावतभावि चतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ॥

तम भंजन दीप संवार आरति कीन्ह सही ।
मम तिमर मोह निरवार आरत मेंट यही । गि० भा० ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीप निर्वपामि ॥

कृष्णागर अगर कपूर धूप उखेवत हौं ।
सब जरत करम मम कूर तुम पद सेवत हौं० । गि० भा० ।

ॐ ह्री पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूप निर्वपामि ॥

रित फल कलवर्जित लाय सुवरन थार भरा ।
तुम पूजत विघन नशाय वांछित लाभ करा । गि० भा० ।

ॐ ह्री पचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो फलं निर्वपामि ॥

वसु दरव सवार पवित्र अरघ सुहाथ लिया

पद सेवों हे जगमित्र दीजे मुकत प्रिया ॥

गिर पंचम परम पुनीत ऐरावत जानो ।

भावी जिनवर जगमीत पूजों धरि ध्यानों ॥

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतभावि चतुर्विंशतिजिनेभ्यो ऽर्घं निर्वपामि ॥

अथ प्रत्येकार्घ ।

छंद समुद्रिका मात्रा १४ ।

अमलगुन अदोप में गनो । परम धरम कारने भनों ।

गिर पनमयरावतें जजों । जिन भवतव आँनंदें सजों ॥

ॐ ह्रीं अदोपाय अर्घ निर्वपामि ॥१॥

छंद सुमुखी मात्रा १२

वृषभ जिनेश कलेश हरें । जिन वृषको उपदेश करें ॥

पुहकर पंचम मेर जजों । भवतव उत्तर खेत सजों ॥

ॐ ह्रीं वृषभाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

छद सूर मात्रा १२—

जिनदेव विनायानंद । आनंद अंबुधि चंद ।
गिर पंचमैरावर्त । भावी भजे भौ तर्त ॥ ३ ॥

ॐ ह्री विनयानंदाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

छद लोलतरग मात्रा १६—

श्रीमुनि भारत आतमज्ञानी । आतम की अनुभूति धरानी ।
पंचमेर जजों सिर नाई । भविय देव यशवत राई ॥ ४ ॥

ॐ ह्री मुनिभारताय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

छद सारस्वती मात्रा १४—

इंद्रक इंद्र फनिंद्र नमे । आतम ऑनंद कंद पमें ।
पुष्कर पंचम मेर सजों । भवियरावत देव जजों ॥५॥

ॐ ह्री इंद्रकाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

छंद इद्रवज्रा मात्रा १८ ।

चंद्राननं चंद्र सुकेत स्वामी । ऑनद वाराानिधि वृद्धनामी ।

ऐरावते भावित नाथ पूजों । श्रीपुष्करे पश्चिम मेर दूजो ॥६॥

ॐ ह्रीं चंद्रकेताय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

छंद उपेन्द्रवज्रा मात्रा १६

प्रभाकरक्रांति अनन्त धारी । नमों ध्वजादित्य अनेक तारी ।
सु पुष्करार्द्धा परमेर सोहे । भविष्यतेरावत चित्तमोहे ॥७॥

ॐ ह्रीं ध्वजादित्याय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

छंद इंद्रवज्रा मात्रा १८ ।

जु वस्तुकों एकहि काल जानिहीं । सु वस्तुबोधं जिन धारिध्यानहीं
स पुष्करार्द्धा परमेर सोहे । भविष्यतेरावत चित्त मोहे ॥८॥

ॐ ह्रीं वस्तुबोधकाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

छंद हारिनी मात्रा १५ ।

नमों नित मुक्तगती जिनकों । सुरेश नरेश नमें तिनकों ।
सु विद्युतमालिय मेरु जजों । भविष्य यरावत खेत सजों ॥९॥

ॐ ह्रीं मुक्तगतये ऽर्घं निर्वपामि ॥९॥

छंद वसततिलका वर्ण १४।

श्रीधर्मबोधकप्रबोधकभव्यप्रानीऑनंदकंदनिजआतमरूप ध्यानी
श्रीपुष्करार्ध मह पश्चिममेरजानों।ऐरावतें जजतभवितधारि ध्यानों

ॐ ह्रीं धर्मप्रबोधकाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

छंद आर्या सर्व मात्रा ६०।

श्रीदेवांग जिनेशं, नमें सदा जाहि सर्व देवेशं।
पुष्कर पंच नगेशं, ऐरावत भावि संजजेते॥

ॐ ह्रीं देवाङ्गाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

छंद प्रियवदा वर्ण १२—

कलुष दारन उदार हैं वली। जिन मरीच अरि मीचकों दली।
पुष्करार्ध गिर पंचमों रजै। जिन भविष्य अयरावतें जजैं।

ॐ ह्रीं मारीचाय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

छंद भुजंगप्रयात वर्ण १२-

सबै जीवके नाथ हैं जीवनाथं। दयाधर्म दाता सदा मुक्तसाथं।
जजों पंचमे भूभृते भावनीकं। कृपासिन्धु ऐरावते भावनीकं॥

ॐ ह्रीं जीवनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

छंदमोतिदाम वर्ण १२

जसोधर देव महा जसरास। सुरेश नरेश खगेसुर दास।
जु पुष्कर पंचममेरु लसंत। जजों अयरावत भावित संत॥

ॐ ह्रीं जशोधराय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

छंद लक्ष्मीधरा वर्ण १२

गौतमंनाथकों गौतमेशं भजै। जास आराधतें सौख्यसाता सजै॥
पुष्करार्द्धाचले पंचमैरावते। भावि पूजें सबै शांति को पावते॥

ॐ ह्रीं गौतमाय अर्घं निर्वपामि १५॥

छंद द्रुतिविलवित तथा सुन्दरी-

विशद बुद्ध धरें मुनि शुद्धजी। सुजनको नितदायक रिद्धजी॥

जजत पुष्कर पंचम मेरके जिन भविष्य यरावत हेर के ॥

ॐ ह्रीं मुनिसुद्धाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

छंद द्रुतपा वर्ण १२-

चिद विलास सुधि वंदत जाकों जिन प्रबोधक नमों पद ताको।
पुहकरार्ध गिर पंचम सेवों । जिन भविष्य अइरावत वेवो ॥

ॐ ह्रीं प्रबोधकाय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

छंद शिखरनी वर्ण १७-

सदानीकं स्वामी सकल सुख संपत्ति करता ।
सदाज्ञानी ध्यानी जगत जनके क्लेश हरता ॥
जजों विद्युन्माली विशद गिरकेरावत विषें ।
कृपाधारी भावी अमलगुन कारी शिव दिखें ॥

ॐ ह्रीं सदानीकाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

छंद प्रमिताक्षरा वर्ण ॥१२॥-

जिनराज चारित सुनाथ महा । गहि शुद्ध चारित्त कलंक दहा।

गिर पंचमें सु अयरावत है । भवतव्य सेय सुख पावत है ॥

ॐ ह्रीं चारित्रनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

छंद द्रातिमध्यक प्रथम त्रितियचरन प्रस्तार SIISIISIISS अर द्वितिय

चतुर्थपाद IIIISIISIISS या भाति मात्रा १६ सर्वत्र यथा-

आंनंद अंबुधि चंद समाना । अमल सदानंद श्री भगवाना ।

पंचम मेर ऐरावत ध्यावों । भवतव सेवत हीं सुख पावों ।

ॐ ह्रीं सदानन्दाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

छंद प्रमानिका वर्ण ८

वेदार्थनाथ ध्याइयै सदेव शीस नाइयै ।

गिरिंद पंच भावनों जजोंत्तर सु पावनों ॥

ॐ ह्रीं वेदार्थकाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

छंद नाराच वरन ॥१६॥

निजातमीक लाभ पर्म धर्म शर्म देत है ।

सुधासुनीक देवजी भवाब्धि माहिं सेत हैं ॥
सु पंचमाचले पुनीत उत्तरें सुखेत हैं ।
जजामि भावनीक जो सुबोधको निकेत है ॥
ॐ ह्री सुधानीकाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

छद चामर वर्ण ॥१६॥

जोति मूर्त देवकों त्रिलोक धोक देत है ।
शोक थोक नाशके प्रमोदकों जुहेत है ।
पंचमाचलें सु उत्तरें पुनीत जानिये ॥
भावनीक देव पूजिगीत नृत्य ठानिये ॥
ॐ ह्रीं जोतिमूर्तयेऽर्घं निर्वपामि ॥२३॥

छद रथोद्धता—वर्ण ११

श्री सुरार्ध सुर सर्व ध्यावहीं । जासके न गुन पार पावहीं ।
पचमाचल यरावतें महा । भावतव्य पर शर्ण मैं गहा ॥२४॥

ॐ ह्रीं सुराद्याय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

छंद पाद्धड़ी लघ्वत मात्रा १६

लखि पुष्करार्ध मह अपर मेर। अयगवत जिन भवतव्य हेर।
पर पूजों तिनकों अरघ धार। संसारऽसारतें तार तार॥

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि॥

अथ जयमाला।

घत्ता छंद मात्रा ६४

जैजै गुनछायक विघन विनायक दास सहायक जगनायक।
धरि वरबुधिसायक अरिगन घायक सिवसुखदायक सबलायक।

छंद तोटक–

सब दोष अदोष जुचूरत हैं। वृषभेश वृपामृत पूरत हैं।
विनयानँद आनँद सूरत हैं। मुनि भारत भौ भय दूरत हैं॥१॥
जिन इंद्रक इंद्रनि वंदित हैं। शसिकेत जगत आनंदित हैं।
धुज आदित जोति अमंदित हैं। जिन वस्तु विबोध सुछंदित हैं २

जिन मुक्तगती भवभंजन हैं। जिन पर्म सुधर्म निरजन हैं।
नित देव सुअग अनजन है। जिन मारिच मीचहि गंजन हैं ॥३॥
जिय नाथ अनाथहि रक्षत हैं। सव वस्तु जशोधर वक्तत हैं।
जिन गौतम श्यो मग गक्तत हैं। मुनि शुद्ध प्रवुद्ध प्रतक्षत हैं ४
सुखसार प्रवोध उमडित है। अविकार सदानिक पडित हैं।
जिन चारित चारु अखंडित है। जु सदानंद आनँद मडित हैं ५
सु वेदार्थक वेद विवोधन हैं। जु सुधानिक आतम सोधन हैं।
जिन जोति सुमूर्त तपोधन हैं। जु सुराधि जगज्जन वोधन हैं ॥६॥
पनमों अयरावत भाविय हैं। नमतें सव ऑनँद पाविय हैं।
तुम हो भगवंत अनंत गुनी। तुमरो यश मैं निज श्रौन सुनी ७
शरना चरना रज आय गही। मम वछित सिद्ध करो सवही।
तुव भक्ति सदा मन माहि वसो। उरतें दुख दोष कलंक नसो ८
तुव आगम में चित नित्त रमों नित संगति साधरमीय पमो।
नित ही अनुभो रस पान करों। नित सजम पूजन दान करों ९

रतनत्रय भाव सुभाव मिलौ । मल राग रु दोष कषाय टिलौ ।
भव भौ यह जोग मिलो तबलों । शिव नारि धरो प्रभुजी तबलों ?०
नित मंगल होहु प्रमोद मई । वर संपति सार मिलो नितई ।
सब विघ्नसमूह विनाश करो । निज दासनिके सब आस भरो ??
जगमें सुखसागर भूरि भरो । निज धर्म उदोत सदैव करो ।
मन वांछित कारज सिद्ध करो । जन "वृंद" तनें घर रिद्ध भरो ?२
घत्ता-जे केवल दिनकर तिमिरमोहहर मोखडगर पराकाश करो ।
"वृंदावन" वंदत पापनिकंदत दीजे आनंद कंदवरा ॥
ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्घंनिर्वपामि ।
दोहा-जो पूजे मनलायपद भावी जिन चौबीश ।
ऐरावत पंचम तनों सो है मुकत शतीश ॥
इत्याशीर्वाद ।
इति श्रीपुष्करार्धद्वीपे ऐरावतक्षेत्रचौबीसीपूजा समाप्ता ।

अथ समुच्चय पूर्णार्घ ।

छंद माधवी सवैया वर्ण २४

जल चंदन तदुंल पुष्प लसै चरु दीप सुधूप फलोघ गहा ।
सब उत्तमसों अति उत्तम है तिनको सजि अर्घ सुथाल लहा
गत आगत वरतत जे दशहू थल तरिथनाथ दयाल कहा ।
तिहि पूजत पूरन अर्घ लिये प्रभु देहु हमें शिव धाम महा ॥

ॐ ह्रीं ढाई द्वीपके दशक्षेत्रसंबधी गतागतवर्ततजिनेभ्यो ऽर्घंपूर्णार्घं निर्वपामि।

अथ आशीर्वाद—

कवित्त छद मात्रा ३१

सातसतक अरु बीस वीस जगदीश जजै जो भवि मनलाय
ताके पुन्यतनी अति महिमा को कवि कहै वचन दरशाय ॥
मुकत महल को नीव दियो तिन इंद्र सरा है तसु जश गाय ।
शक्र चक्र अहमिंद्र तीर्थपति पदलहि सुखसों शिवपुर जाय ॥

इत्याशीर्वाद ।

इति श्रीतीसचौबीसीपुजा वृंदावन अग्रवाल गोयलगोत्री कृत संपूर्णा ।

प्रथम सूत्रावतारमिदं पुस्तकं लिखितं ग्रन्थकारेण निजपरोपकार
भापा होने का कारण, तथा देश नगर शेली के नामीजन
तथा सहाई तथा कर्ता नाम
कुल वर्णन ।

दोहा छंद–एक समैं काशी विषैं भयौ संसकृत पाठ ।
काशीनाथ कराइयौ वन्यो अनूपम ठाठ ॥१॥
तवसों यह अभिलाष थी भाषा होय मनोग ।
अवै मिल्यो सव जोग तव भयो सुधारस भोग ॥२॥

मनहरन ३१

काशीजी में काशीनाथ मूलचंदनंतराम,
नन्हूजी गुलावचंद प्रेरक प्रमानिये ।

तहां धर्मचंदनंद शिष्य सुखलालजी को,
बृंदावन अग्रवाल गोयलगोती ठानिये ॥
ताने रचे पाठ निज पर परमारथ को
सज्जन सो इहां यह वीनती वखानिये ॥
हीनाधिकशोधि शुद्ध कीजिये प्रमोद धारि
बालबुद्ध जानिकें दयाल भाव आनिये ॥

दोहा–दरव तत्त्व गुनकेवलसु सम्मत विक्रमवान ।
माह धवल पांचैं नवल पूरन परम निधान ॥ १ ॥
जो पूजै इस पाठसों श्रीजिन पद लवलाय ।
मंगल मोद अनेक सुख सो भवि बहु विधिपाय ॥२॥
जिन पूजा फलको सकल को विधि कहै बनाय ।
एक दरवसों पूजिके बहुजन सुरपुर पाय ॥ ३ ॥

तातें पूजो दरव अरु भाव सहित जिनराय ।
जातें हे भवि तुम लहो सुर सुख शिवपुर राय ॥ ४ ॥
जवलों रवि शशि गगनमें उदै अमंद धराय ।
तवलों यह रचना रहो निरमल जश सुखदाय ॥
जिनवानी रचना रचत जो कछु सुख उपजाय ।
सो सुख जानैं केवली के जानै कविराय ॥
जै वंतौ जिनराज जो पंच कल्यानक पाय ।
सो इत नितमंगल करो मन वांछित पददाय ॥

इति श्री तीसचौवीसी पूजा भाषा होने का कारन करता देश कुल सैली सहाई फल मगल संपूर्ण वरनन समाप्तम् ।

शिव भूयात् ।





George Printing Works, Kalbhairo Benares City.